श्री धनमुनि 'प्रथम'

६

वक्तृत्वकला के बीज

भाग ६

वक्तृत्व-कला के बीज

श्री धनमुनि "प्रथम"

[सर्वाधिकार सुरक्षित–प्रबन्ध संपादक के लिए]

वक्तृत्वकला के बीज, भाग ९

समन्वय-प्रकाशन

● प्रवंध संपादक

मोतीलाल पारख

● प्रकाशक

श्रीमती लक्ष्मी देवी बैंगानी
(धर्म पत्नी) श्री जतनलाल जी बैंगानी

● प्राप्तिस्थान

१. सदासुख जतनलाल बैंगानी,
बैंगानीयों की पिरोल, बीकानेर. (राज०)

२. मालचंद बैंगानी, दूगड़ निवास,
विराटनगर (नेपाल)

३. ज्योतिकुमार बैंगानी, दूगड़ निवास,
कान्ति पथ, काठमांडू

● प्रथम संस्करण
वि० सं० २०३१ आषाढ़
जुलाई १९७४
२१०० प्रतियां

मुद्रक
श्रीचन्द सुराना 'सरस' के लिए
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस, आगरा

मूल्य : छह रुपये पचास पैसे

उन जिज्ञासुओं को,

जिनकी उर्वर-मनोभूमि में

ये बीज

अंकुरित

पुष्पित

फलित हो

अपना विराट्‌रूप प्राप्त कर सकें !

मंगल-संदेश

मनुष्य विभिन्न शक्तियों का स्रोत है। नहीं, वह अनन्तशक्तियों का स्रोत है।

पर, जिन-जिन शक्तियों को अभिव्यक्त होने का समय और साधन मिल पाता है वही हमारे सामने विकसित रूप से प्रकट होती हैं, शेष अनभिव्यक्त रूप में अपना काम करती रहती हैं।

संग्राहक शक्ति भी उन्हीं में से एक है, जो अन्वेषण-प्रधान है और दूसरों के लिए बहुत उपयोगी बन जाती है।

मक्खन का आस्वादन करना एक बात है, पर उसे दही में से मथकर निकालकर संग्रहीत करना एक विशिष्ट शक्ति है।

मुनि श्री धनराजजी (सिरसा) में यह शक्ति अच्छी विकसित हुई है। शुरू से ही उनकी यह धुन रही है, आदत रही है, वे बराबर किसी न किसी रूप में खोज करते रहते हैं और फिर उसको संग्रहीत कर एक आकार दे देते हैं। वह साहित्य बन जाता है, जन-जन की खुराक बन जाता है।

"वक्तृत्वकला के बीज" एक ऐसी ही कृति हमारे समक्ष प्रस्तुत है जो मुनि धनराजजी की संग्राहकशक्ति का एक विशिष्ट उदाहरण है। उसमें प्राचीन, अर्वाचीन अनेक ग्रन्थों का मन्थन है, अनेक भाषाओं का प्रयोग है। मूल उद्धरण के साथ हिन्दी अनुवाद देकर भी और सरसता उसमें लाई गई है। बड़ा सुन्दर प्रयास है। अपनी वक्तृत्वकला का विकास चाहनेवाले वक्ता के लिए बहुत उपयोगी है यह ग्रन्थ, जो अनेक भागों में विभक्त है। मेरा विश्वास है—यह प्रयत्न बहुजन हिताय—बहुजन सुखाय सिद्ध होगा।

चूरू

११ सितम्बर १९७२

—आचार्य तुलसी

प्राक्कथन

मानव-जीवन में वाचा की उपलब्धि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि में वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वयं सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचाररूप रोगों को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावों को एक दूसरे तक पहुंचाने का एक बहुत बड़ा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओं की तरह भीतर-ही-भीतर घुटकर समाप्त नहीं हो जाता ? मनुष्य, जो गूंगा होता है, वह अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छट-पटाता है फिर भी अपना सही आशय कहां समझा पाता है दूसरों को ?

बोलना वाचा का एक गुण है, किन्तु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुतः एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नहीं है, किन्तु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय में ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हें जीवन भर नहीं भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान् महावीर, तथागत बुद्ध, व्यास और भद्र-बाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान प्रवक्ता थे, जिनकी

---

१ यजुर्वेद १९।१२

वाणी का नाद आज भी हजारों-लाखों लोगों के हृदयो को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओं में भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नहीं बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एवं अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चिंतन एवं अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एवं चिरस्थायी बनाता है। बिना अध्ययन और विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोंकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे ; यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नहीं है, तो वह सभा में हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसलिए बहुत प्राचीनयुग में एक ऋषि ने कहा था – 'वक्ता शतसहस्रेषु', अर्थात् लाखों में कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनिश्री धनराजजी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता है। उनका प्रवचन, वस्तुतः प्रवचन होता है। श्रोताओं को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एवं मन्त्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बड़े व्यापक एवं गम्भीर अध्ययन पर आधारित है। उनका संस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी ! मालूम होता है, उन्होंने पांडित्य को केवल छुआ भर नहीं है, किन्तु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक 'वक्तृत्वकला के बीज' में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति में जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदों से लेकर उपनिषद्

ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएं—इस प्रकार श्रृंखलाबद्धरूप में संकलित हैं कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्वकला के अगणित बीज इसमें सन्निहित हैं। सूक्तियों का तो एक प्रकार से यह रत्नाकार ही है। अंग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रंथों के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसंग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नहीं है,उनमें विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है जैसे मुनिश्री जी वाङ्मय के रूप में विराट् पुरुष हो गए हैं। जहाँ पर भी दृष्टि पड़ती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है, जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसंगतः अपने भाषण में उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओं के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के बीज' में मुनिश्री का अपना क्या है? यह एक संग्रह है और संग्रह केवल पुरानी निधि होती है; परन्तु मैं कहूँगा—कि फूलों की माला का निर्माता माली जब विभिन्न जाति एवं विभिन्न रंगों के मोहक पुष्पों की माला बनाता है तो उसमें उसका अपना क्या है? बिखरे फूल है, माला नहीं। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रंग-बिरंगे फूलों का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप में संयोजन करना—यही तो मालाकार का काम है, जो स्वयं में एक विलक्षण एवं विशिष्ट कलाकर्म है। मुनिश्री जी वक्तृत्वकला के बीज में ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विषयों का उपयुक्त चयन एवं तत्सम्बन्धित सूक्तियों आदि का संकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का संकलन अन्यत्र इस रूप में नहीं देखा गया।

एक बात और—श्री चन्दनमुनिजी की संस्कृत-प्राकृत रचनाओं ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशंसक रहा हूँ। श्री धनमुनि जी उनके बड़े भाई है—जब यह मुझे ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओं का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब कैसे कहूँ कि इन दोनों में कौन बड़ा है और कौन छोटा? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूँ। उनकी बहुश्रुतता एवं इनकी संग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनिश्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। विभिन्न भागों में प्रकाशित होनेवाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एवं स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेंगे। वे जब भी चाहेंगे, वक्तृत्व के बीज में से उन्हें कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नहीं रहेंगे—ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनिश्रीजी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा।

—उपाध्याय अमरमुनि

●●

सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एवं परिस्थितियों का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणों की साधना एवं विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुतः हजारों लाखों में कोई एकाध ही मिलते हैं।

तेरापंथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी में वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढंग से विकसित हुए हैं। उनकी वाणी का जादू श्रोताओं के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओं के मध्य लाखों नर-नारियों ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उनके मधुर प्रभाव को जीवन में अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनिश्री धनराजजी भी वास्तव में वक्तृत्व-कला के महान गुणों के धनी एक कुशल प्रवक्ता संत हैं। वे कवि भी हैं, गायक भी हैं, और तेरापंथ शासन में सर्वप्रथम अवधानकार भी हैं; इन सबके साथ-साथ बहुत बड़े विद्वान् तो हैं ही। उनके प्रवचन जहाँ भी होते हैं, श्रोताओं की अपार भीड़ उमड़ आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपको याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करे और उसका सदुपयोग करे, अतः जनसमाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियों का यह विशाल संग्रह प्रस्तुत किया है।

बहुत समय से जनता की, विद्वानों की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियों की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जनहिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगों को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारना प्रारंभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने में श्री डूंगरगढ़, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, उकलाना, कैथल, हाँसी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियों एवं युवकों ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियों में यह सामग्री संकलित हुई है। हम इस विशाल संग्रह को विभिन्न भागों में प्रकाशित करने का संकल्प लेकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं।

परमश्रद्धेय आचार्य प्रवर ने पुस्तक के लिए अपना मंगल संदेश देकर इस प्रयत्न को प्रोत्साहित किया—उनके प्रति मैं हृदय की असीम श्रद्धा व्यक्त करता हूँ। तथा पुस्तक की महत्ता और उपयोगिता के अनुसार ही इसकी भूमिका लिखी है जैनसमाज के बहुश्रुत विद्वान् तटस्थ विचारक उपाध्याय श्री अमरमुनि जी ने। उनके इस अनुग्रह का मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन का समस्त अर्थभार श्रीमती लक्ष्मीबाई बैंगानी, धर्मपत्नी श्री जतनलाल जी बैंगानी ने वहन कर मुझे प्रोत्साहित किया है। श्रीमती लक्ष्मीबाई बड़ी ही विनम्र, सेवाभावी और धर्म-परायण प्रवृत्ति की है। उन्होंने दो वर्षीतप किये हैं, तीसरा चल रहा है। तप और त्याग की भावना उनके हृदय में ओत-प्रोत है। उनके इस सहयोग के लिए मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ। प्रूफ संशोधन-मुद्रण आदि की समस्त व्यवस्था 'संजय-साहित्य-संगम' के संचालक श्री श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' ने की है—उनके प्रति भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है कि यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओं और लेखकों के लिए एक संदर्भग्रंथ (बिब्लोग्राफी) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा।....

● ●

आत्म निवेदन

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन में जब मैं कलकत्ता—श्री जैनश्वेताम्बर तेरापंथी-विद्यालय में पढ़ता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्रायः प्रति-दिन एक आना मिलता था। प्रकृति में संग्रह करने की भावना अधिक थी, अतः मैं खर्च करके भी उसमें से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी में रखा करता था।

विक्रम संवत् १९७९ में अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपांजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपये-पैसों का संग्रह छोड़ दिया, फिर भी संग्रहवृत्ति नहीं छूट सकी। वह धनसंग्रह से हटकर ज्ञानसंग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणों में हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ़ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढ़ने में अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हें लिख लेता या संसार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा संग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा में कह दिया करते थे कि "धन्नू तो न्यारा में जाने की [अलग विहार करने की] तैयारी कर रहा है।" उत्तर में मैं कहा करता—क्या आप गारंटी दे सकते हैं कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही रखेंगे? क्या पता, कल ही अलग विहार करने का फर-

मान करदें ! व्याख्यानादि का संग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने में सफलता मिलेगी।

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियों का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० सं० १९८६ में श्रीकालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनों भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ संग्रह उस चातुर्मास में बहुत काम आया एवं भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसंग्रह करने की भावना बलवती बनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे ! उनके दिवंगत होने के पश्चात् दोनों भाई अग्रगण्य के रूप में पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढ़ी। उसमें वक्ता बनने के विषय में खासी अच्छी बातें बताई हुई थीं। पढ़ते-पढ़ते यह पंक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढ़ो, उसमें जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पंक्ति ने मेरी संग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरन्त लिख लेता। फिर जो उनमें विशेष उपयोगी लगतीं, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप में गूंथ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओं में निबद्ध स्वरचित सैकड़ों भजन और सैकड़ों व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथासाहित्य एवं तात्त्विक साहित्य की और रुचि बढी। फलस्वरूप दोनों ही विषयों पर अनेक पुस्तकों की रचना हुई। उनमें छोटी-बड़ी लगभग २० पुस्तकें तो प्रकाश में आ चुकीं, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार संगृहीत-सामग्री के विषय में यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन संग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन-संग्रह को व्यवस्थित करने में जुट गया। लेकिन

पुराने संग्रह में कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के हैं अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के हैं—यह प्रायः लिखा हुआ नहीं था। अतः ग्रन्थों या शास्त्रों आदि की साक्षियाँ प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों में वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शनशास्त्र, संगीतशास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, मराठी एवं पंजाबी सूक्तिसंग्रहों का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया संग्रह बना और प्राचीन संग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने में सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तियां एवं श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षियां नहीं मिल सकीं। जिन-जिन की साक्षियां मिली हैं, उन-उनके आगे वे लगा दी गई हैं। जिनकी साक्षियां उपलब्ध नहीं हो सकीं, उनके आगे स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है। कई जगह प्राचीन-संग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकिरामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थों के नाममात्र लगाए हैं, अस्तु !

इस ग्रन्थ के संकलन में किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नहीं है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है ? यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियों के मतों का संकलन होने से ग्रन्थ में भाषा की एकरूपता नहीं रह सकी है। कहीं प्राकृत, संस्कृत, पारसी, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा है तो कहीं हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पंजाबी और बंगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओं के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा में कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ में भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थों, कवियों, लेखकों एवं विचारकों ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा में व्यक्त किए हैं तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा में ही बोले हैं। मुझे जिस रूप में जिसके जो विचार मिले हैं, उन्हें मैंने उसी रूप में अंकित किया है लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निरवद्य-सिद्धान्तों के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता—इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानों के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमों के गम्भीर पद्य हैं, वेदों, उपनिषदों के अद्भुत मंत्र हैं, स्मृति एवं नीति के हृदयग्राही श्लोक हैं, वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियां, लोकोक्तियां, हेतु, दृष्टान्त एवं छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अतः यह ग्रंथ निःसंदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योंकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एवं हृदयग्राही बना सकेंगे एव अद्भुत विचारों का विचित्र चित्रण करके उनमें निखार ला सकेंगे, अस्तु !

ग्रंथ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल बीज इकट्ठे किए गए है। बीजों का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहां करना—यह वप्ता [बीज बोनेवालों] की भावना एवं बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपद-प्राप्तिरूप फलों के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रों में इन बीजों का वपन करेंगे।

यहां मैं इस बात को भी कहे बिना नहीं रह सकता कि जिन ग्रन्थों, लेखों, समाचार पत्रों एवं व्यक्तियों से इस ग्रन्थ के संकलन में सहयोग मिला है—वे सभी सहायकरूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

यह ग्रन्थ कई भागों में विभक्त है एवं उनमें सैकड़ों विषयों का संकलन है। उक्त संग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्यश्री तुलसी को भेंट किया। उन्होंने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एवं फरमाया कि इसमें छोटी-छोटी कहानियां एवं घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी बन जाए। आचार्यश्री का आदेश स्वीकार करके इसे संक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओं से सम्पन्न किया गया।

मुनि श्री चन्दनमलजी, डूंगरमलजी, नथमलजी, नगराजजी, मधुकर जी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एवं साध्वियों ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर महोत्सव पर कई संतों का यह अनुरोध रहा कि इस संग्रह को अवश्य धरा दिया जाए।

सर्व प्रथम वि० सं० २०२३ में श्री डूंगरगढ़ के श्रावकों ने इसे धारना शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एवं पंजाब के अनेक ग्रामों-नगरों के उत्साही युवकों ने तीन वर्षों के अथक परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढ़ विश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एवं मनन से अपने बुद्धि वैभव को क्रमशः बढ़ाते जायेंगे—

वि० सं० २०२७ मृगसरवदि ७ —धनमुनि 'प्रथम'
मंगलवार, रामामंडी (पंजाब)

अनुक्रमणिका

पहला कोष्ठक **पृष्ठ १ से ८२**

१. ब्राह्मण, २. ब्राह्मण के लक्षण, ३. ब्राह्मण के अनेक रूप, ४. ब्राह्मण के विषय में विशेष ज्ञातव्य, ५. वैदिक संस्कृति में ब्राह्मण और शूद्र, ६. शूद्र के विषय में विशेष, ७. स्नान, ८. स्नान-निषेध, ९. तीर्थ, १०. मानसतीर्थ, ११. जंगम तीर्थ की प्रतीक्षा में गंगा, १२. मनःशुद्धि के बिना जलादि में आत्मशुद्धि नहीं, १३. आध्यात्मिक तीर्थ, १४. शुद्धि-शौच, १५. व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से वस्तुओं की शुद्धि, १६. यज्ञ, १७. हिंसात्मक यज्ञ, १८. हिंसात्मक यज्ञों का निषेध, १९. आत्मयज्ञ-अहिंसात्मक यज्ञ, २०. आत्म-यज्ञ की श्रेष्ठता, २१. तीर्थ-यज्ञ एवं बाह्य-क्रियाकांडों को महत्व देने वालों के लिए, २२. श्राद्ध, २३. श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण, २४. श्राद्ध को न मानने वालों का मन्तव्य, २५. श्राद्ध आदि में मांस का विधान और निषेध, २६. व्यसन, २७. सात व्यसन और उनसे हानि, २८. द्यूत, २९. मांस, ३०. मांस-निषेध, ३१. मांस त्याग का महत्व, ३२. मांस की ताकत कम, ३२. मांसाहार से होनेवाले भयंकर रोग, ३४. अमांसाहारी, ३५. मांसभक्षकों के लिए ध्यान देने योग्य बातें, ३६. मनुष्य का कलेजा खाने वाला औघड़, ३७. मद्य—(मद्यनिषेध), ३८. मद्यपान की मात्रा, ३९. मद्यपान के दुर्गुण, ४०. शराबियों की दुर्दशा, ४१. तमाखू—तमाखू का प्रचार, ४२. तमाखू में जहर, ४३. तमाखू में २४ घातक विष एवं उसका दुष्प्रभाव, ४४. सिगरेट, ४५. तमाखू का निषेध, ४६. तमाखू के समर्थक, ४७. चाय ।

दूसरा कोष्ठक पृष्ठ ८३ से १६४

१. राजनीति, २. भारत की राजनीतिक स्थिति, ३. राजनीतिज्ञ, ४. राष्ट्रपति के विषय में चिंतन, ५. राजा—राजा की महिमा, ६. श्रेष्ठ राजा, ७. राजा के धर्म-कर्तव्य, ८. राजा की कमियाँ, ९. अयोग्य राजा १०. राजाओं के प्रकार, ११. राज-गुरु, १२. राज्यमंत्री, १३. कितने मंत्री हों ? १४. अयोग्य मंत्री, १५. राजदूत, १६. विदेशों में भारतीय दूतावास एवं उच्चायुक्त, १७. भारत में विदेशी दूतावास एवं उच्चायुक्त, १८. राजकर्मचारी, १९. गुप्तचर, २०. प्रजा, २१. यथाराजा तथाप्रजा, २२. राज्य, २३. सुराज्य (अच्छी सरकार) २४. कुराज्य, २५. अराजकता, २६. स्वराज्य—प्रजातंत्र राज्य, २७. राष्ट्र-देश, २८. दुर्ग—किला, २९. राज्यकोश—खजाना, ३०. बल-सेना, ३१. शस्त्र, ३२. युद्ध, ३३. युद्ध से पहले विचारणीय बातें, ३४. युद्ध के कतिपय नियम, ३५. युद्ध का प्रोत्साहन, ३६. प्राचीन युद्ध के चित्र, ३७. विश्व के कतिपय उल्लेखनीय युद्ध, ३८. जय-पराजय।

तीसरा कोष्ठक पृष्ठ १६५-२४५

१. नेता, २. स्वामी, ३. स्वामी के कर्तव्य, ४. स्वामी का प्रसाद, ५. निन्दनीय स्वामी, ६. सेवक, ७. सेवक की दयनीय दशा, ८. सेवा, ९. राजसेवा, १०. राजसेवक, ११. नौकरी, १२. नौकर, १३. स्वाधीन-स्वतंत्र, १४. स्वतन्त्रता, १५. स्वाधीनता—आजादी, १६. पराधीनता, १७. शासक, १८. शासन, १९. सत्ता, २०. क्रांति और संघर्ष, २१. कानून, २२. नियम २३. न्याय, २४. न्यायाधीश, २५. पंच, २६. न्यायकर्ताओं के उदाहरण, २७. वैश्य—वणिक, २८. वणिक-प्रशंसा, २९. वणिक-निंदा, ३०. वाणिज्य-व्यापार. ३१. व्यापारी, ३२. कृषक, ३३. कृषि-खेती, ३४. चारण—चारण जाति की विशेषता, ३५. सोनार, ३६. जाट, ३७. असंभव, ३८. असमानता, ३९. समानता—बराबरी, ४०. श्रेष्ठ, ४१. न्यूनाधिकता, ४२. बिगाड़. ४३. वृद्धि, ४४. लाभ और हानिकारक, ४५. निरुपाय, ४६. दुर्ज्ञेय, ४७. नहीं, ४८. नहीं के समान, ४९. नहीं से कुछ अच्छा।

चौथा कोष्ठक **पृष्ठ २३६ से ३१८**

१. नीतिमान और नैतिकता, २. नैतिक शिक्षाएँ, ३. सामान्य नीति, ४. विज्ञान-प्रश्नोत्तरी, ५. पर्व-त्योहार, ६. जैनपर्व, ७. हिन्दुपर्व, ८. ईसाई पर्व ९. मुस्लिमपर्व, १०. आश्चर्य, ११. आश्चर्य के भेद, १२. आश्चर्यजनक वृक्ष, १३. आश्चर्यजनक पशु-पक्षी, १४. आश्चर्यजनक बहुमूल्य पुस्तकें, १५. आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ १६. आश्चर्यजनक स्मरणशक्ति, १७. अन्तरिक्ष में मानव की आश्चर्यजनक उड़ान, १८. आश्चर्यजनक अन्य कई वस्तुएँ १९. कतिपय अद्भुत व्यक्ति, २०. शकुन, २१. शुभाशुभ शकुन, २२. शकुनज्ञ और उनकी आश्चर्यजनक बातें, २३. जादूगर और उनके आश्चर्य, २४. ज्योतिष की जानकारी, २५. ज्योतिषियों की चमत्कारी बातें, २६. वायु, २७. रेलगाड़ी एवं मोटरें, २८. डाक व तार, २९. संख्या, ३०. प्रकीर्णक. ३१. रामायण में प्रयुक्त किये जाने वाले भाषा श्लोक ।

चार कोष्ठकों में १६५ विषय ।

परिशिष्ट : ३१९—३२८

प्रयुक्त ग्रन्थों व व्यक्तियों के नाम की सूची

वक्तृत्वकला के बीज

[भाग ९]

अकारादि क्रम-विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ
१	अंतरिक्ष में मानव की	
०	आश्चर्यजनक उड़ान	२८३
२	अमांसाहारी	६०
३	अयोग्य मंत्री	११५
४	अयोग्य राजा	१०५
५	अराजकता	१३७
६	असंभव	२२५
७	असमानता	२२८
८	आत्मयज्ञ (अहिंसात्मक	
०	यज्ञ)	३४
९	आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता	३७
१०	आध्यात्मिक तीर्थ	२४
११	आश्चर्य	२६९
१२	आश्चर्य के भेद	२७१
१३	आश्चर्यजनक अन्य कई	
०	वस्तुएँ	२७०
१४	आश्चर्यजनक पशु-पक्षी	२७५
१५	आश्चर्यजनक प्रतियोगिताएँ	२७८
१६	आश्चर्यजनक बहुमूल्य	
०	पुस्तकें	२७७
१७	आश्चर्यजनक वृक्ष	२७४
१८	आश्चर्यजनक स्मरण-शक्ति	२८१
१९	ईसाई पर्व	२६६
२०	कतिपय अद्भुत व्यक्ति	२९४
२१	कतिपय उल्लेखनीय युद्ध	२५२
२२	कानून	१९०
२३	कितने मंत्री हों	११४
२४	कुराज्य	१३२
२५	कृषक	२१६
२६	कृषि-खेती	२१७
२७	क्रान्ति और संघर्ष	१८९
२८	गुप्तचर	१२४
२९	चारण-चारणजाति की	
०	विशेषताएँ	२१९
३०	चाय	८२
३१	जंगमतीर्थ की प्रतीक्षा में	
०	गंगा	२३२
३२	जय-पराजय	१६२
३३	जाट	२२३
३४	जादूगर एवं उनके आश्चर्य	२२६

३५ जैन एवं बौद्ध पर्व २५९
३६ ज्योतिष की जानकारी २७०
३७ ज्योतिष की चमत्कारी
० बातें ३२१
३८ डाक एवं तार १११
३९ तमाखू का निषेध ७९
४० तमाखू के समर्थक ८१
४१ तमाखू—तमाखू का प्रचार ७४
४२ तमाखू में जहर ७५
४३ तीर्थ १६
४४ तीर्थ, यज्ञ एवं बाह्य क्रिया
० काण्डों को महत्व देनेवालों
० के लिये ३८
४५ दुर्ग (किला) १४०
४६ दुर्ज्ञेय २४०
४७ द्यूत ४९
४८ नहीं २४१
४९ नहीं के समान २४३
५० नहीं से कुछ अच्छा २४४
५१ निन्दनीय स्वामी १७०
५२ नियम १९२
५३ निरुपाय २३९
५४ नीतिमान और नैतिकता २४५
५५ नेता १६५
५६ नैतिक शिक्षाएँ २४६
५७ नौकर १८०
५८ नौकरी १७९
५९ न्याय १९३
६० न्यायकर्ताओं के उदाहरण १९९
६१ न्यायाधीश १९५
६२ न्यूनाधिकता २३३
६३ पंच १९७
६४ पराधीनता १८४
६५ पर्व-त्योहार २५८
६६ प्रकीर्णक ५५५
६७ प्रजा १२५
६८ प्राचीन युद्ध के चित्र १५५
६९ बल (सेना) १४२
७० बिगाड़ २३५
७१ ब्राह्मण १
७२ ब्राह्मणों के अनेक रूप ६
७३ ब्राह्मण के लक्षण ४
७४ ब्राह्मण के विषय में
० विशेष ज्ञातव्य ८
७५ भारत की राजनैतिक
० स्थिति ८५
७६ भारत में विदेशी दूतावास
० एवं उच्चायुक्त १२१
७७ मद्य—मद्यनिषेध ३६५
७८ मद्यपान की मात्रा ६७
७९ मद्यपान के दुर्गुण ६८
८० मनः शुद्धि के बिना जलादि
० से आत्मशुद्धि नहीं २२
८१ मनुष्य का कलेजा खाने
० वाला औघड़ ६४
८२ मांस ५१

८३	मांस की ताकत कम	५६	१०८	राज्य	१३०
८४	मांस त्याग का महत्व	५५	१०९	राज्य-कोष (खजाना)	१४१
८५	मांस-निषेध	५३	११०	रामायण में प्रयुक्त	
८६	मांस भक्षकों के लिये ध्यान		०	किये जाने वाले भाषा-	
०	देने योग्य बातें	६२	०	श्लोक	१२६
८७	मांसाहार से होने वाले		१११	राष्ट्र-देश	१३९
०	भयंकर रोग	५७	११२	राष्ट्रपति पद के विषय	
८८	मानस तीर्थ	१७	०	में चिन्तन	९४
८९	मुस्लिम पर्व	२६८	११३	रेलगाड़ी एवं मोटरे	३२४
९०	यज्ञ	३०	११४	लाभ और हानिकारक	२३८
९१	यथा राजा तथा प्रजा	१२७	११५	वणिक्-निन्दा	२०८
९२	युद्ध (युद्ध निषेध)	१४८	११६	वणिक प्रशंसा	२०४
९३	युद्ध के कतिपय नियम	१५२	११७	वाणिज्य व्यापार	२११
९४	युद्ध को प्रोत्साहन	१५३	११८	व्यापारी	२१३
९५	युद्ध से पहले विचारणीय		११९	वायु	३२२
०	बातें	१५०	१२०	विज्ञान-प्रश्नोत्तरी	२५६
९६	राजकर्मचारी	१२३	१२१	विदेशों में भारतीय	
९७	राज-गुरु	११२	०	दूतावास एवं उच्चायुक्त	११९
९८	राजदूत	११७	१२२	विश्व के कतिपय उल्लेख-	
९९	राजनीति	८३	०	नीय युद्ध	१२९
१००	राजनीतिज्ञ	९३	१२३	वृद्धि	२३७
१०१	राजा-मन्त्री	११३	१२४	वैदिक संस्कृति में ब्राह्मण	
१०२	राजसेवक	१७७	०	और शूद्र	९
१०३	राज-सेवा	१७६	१२५	वैश्य (वणिक)	२०२
१०४	राजा (राजा की महिमा)	९५	१२६	व्यावहारिक एवं आध्यात्मि	
१०५	राजाओं के प्रकार	१०८	०	दृष्टि से वस्तुओं की शुद्धि	२७
१०६	राजाओं की कमियाँ	१०३	१२७	व्यसन	४६
१०७	राजा के धर्म-कर्तव्य	१००	१२८	शकुन	११

१२९ शकुनज्ञ एवं उनकी
० आश्चर्यजन बातें ७१
१३० शराबियों की दुर्दशा ७२
१३१ शस्त्र १४५
१३२ शासक १८६
१३३ शासन १८७
१३४ शुद्धि-शौच २६
१३५ शुभाशुभशकुन ३०१
१३६ शूद्र के विषय में विशेष ११
१३७ श्राद्ध ४०
१३८ श्राद्ध आदि में मांस का
० विधान और निषेध ४४
१३९ श्राद्ध के योग्य-अयोग्य
० ब्राह्मण ४२
१४० श्राद्ध के मानने वालों
० का मन्तव्य ४३
१४१ श्रेष्ठ २३२
१४२ श्रेष्ठ राजा ९७
१४३ संख्या ३३
१४४ सत्ता १८८
१४५ समानता (बराबर) २२९
१४६ सात व्यसन और उनसे
० हानि ४७
१४७ सामान्यनीति २५३
१४८ सिगरेट ७७
१४९ सुराज्य (अच्छी सरकार) १३१
१५० सेवक १३१
१५१ सेवक की दयनीय दशा १७३
१५२ सेवा १७४
१५३ सोनार २२२
१५४ स्नान १२
१५५ स्नान-निषेध १४
१५६ स्वतन्त्रता १८२
१५७ स्वराज्य (प्रजातंत्र राज्य) १३८
१५८ स्वाधीनता-आजादी १८३
१५९ स्वाधीन-स्वतन्त्र १८१
१६० स्वामी १६७
१६१ स्वामी का प्रसाद १६९
१६२ स्वामी के कर्तव्य १६८
१६३ हिंसात्मक यज्ञ ३२
१६४ हिंसात्मक यज्ञों का निषेध ३२
१६५ हिन्दु पर्व २६२

भाग ६

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

१ ब्राह्मण

१ न जात्या ब्राह्मणो लोके, वृत्तेन तु विधीयते ।
वृत्तस्थितस्तु शूद्रोऽपि, ब्राह्मणत्वं नियच्छति ।

—महाभारत—अनुशासनपर्व अ० १४३ श्लोक ५१

वास्तव में जाति (जन्म) से कोई भी ब्राह्मण नहीं होता, आचरण-चरित्र से होता है। सदाचार में रहा हुआ शूद्र भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो जाता है।

२ न जटाहि न गोत्तेहि, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
यम्हि सच्चं च धम्मो च, सो सुची सो च ब्राह्मणो ।

—धम्मपद ३६।३

न जटा से, न गोत्र से और न जाति से ही ब्राह्मण होता है। जिसमें सत्य और धर्म है वही पवित्र है एवं वही ब्राह्मण है।

३ न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो ।
न मुणी रन्नवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ।।३१।।
समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
णाणेण य मुणी होइ, तवेण होइ तावसो ।।३२।।
कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइसो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ।।३३।।

—उत्तराध्ययन २५

केवल सिर मुंडवाने से श्रमण नहीं होता, ओंकार का उच्चारण करने से ब्राह्मण नहीं होता, वन में निवास करने से मुनि नहीं होता और वल्कल-वस्त्र पहनने से तपस्वी नहीं होता ।।३१।।

समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है, ज्ञान से मुनि होता है और तप करने से तपस्वी होता है ॥३२॥

कर्म से (ब्राह्मण के योग्य काम करने से) ब्राह्मण होता है, और कर्म से क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र होता है ॥३३॥

४ हरिणीगर्भसंभूतः, ऋष्यश्रृङ्गो महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तेन कारणम् ॥२६॥
श्वपाकीगर्भसंभूतः, पिता व्यासस्य पार्थिव !
तपसा ब्राह्मणो जात, संस्कारस्तेन कारणम् ॥२७॥
उलूकीगर्भसंभूतः, कणादाख्यो महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः, संस्कारस्तेन कारणम् ॥२८॥
गणिकागर्भसंभूतो, वशिष्ठश्च महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः, संस्कारस्तेन कारणम् ॥२९॥
नाविकागर्भसंभूतो, मन्दपालो महामुनिः ।
तपसा ब्राह्मणो जातः, संस्कारस्तेन कारणम् ॥३०॥

—भविष्यपुराण, ब्राह्मपर्व १, अ ४२

ऋष्यश्रृंग महामुनि हरिणी के गर्भ से पैदा हुए थे, किन्तु तपस्या से ब्राह्मण हो गये अतः ब्राह्मणत्व का कारण संस्कार ही है, जाति नहीं। इसी प्रकार व्यास जी के पिता चाण्डालिनी के गर्भ से, कणाद महामुनि उलूकी के गर्भ से, वशिष्ट ऋषि वेश्या के गर्भ से एवं मन्दपाल महामुनि नाविका के गर्भ से उत्पन्न हुए थे किन्तु ये सभी तपस्या के कारण ब्राह्मण बन गए। अतः संस्कार ही ब्राह्मणत्व का कारण है, जाति—जन्म नहीं।

५ सभी जातियो में ब्राह्मण और चाण्डाल—

ब्रह्मचर्य—तपोयुक्ताः, समकाञ्चनलोष्ठवः ।
सर्वभूतदयायुक्ता, ब्राह्मणाः सर्वजातिषु ।१।
सर्वजातिषु चाण्डालाः, सर्वजातिषु ब्राह्मणाः ।
ब्राह्मणेष्वपि चाण्डाला—श्चाण्डालेष्वपि ब्राह्मणाः ।२।
अहिंसा सत्यमस्तेयं, ब्रह्मचर्योऽपरिग्रहः ।
काम-क्रोध निवृत्तश्च, ब्राह्मणः स युधिष्ठिर !।३।

सत्यं नास्ति तपो नास्ति, नास्ति चेन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदया नास्ति, ह्येतच्चाण्डाललक्षणम् ।४।
वार्द्धकाः सेवकाश्चैव, नक्षत्रतिथिसूचकाः ।
एते शूद्रसमा विप्रा, मनुना परिकीर्तिताः ।५।

—प्राचीन संग्रह से

जो ब्रह्मचर्य एवं तप से युक्त हैं, कांचन और मिट्टी को समान मानते हैं, सब जीवों पर दया रखनेवाले हैं—ऐसे गुणी ब्राह्मण सब जातियों में हो सकते हैं ।

सब जातियों में चाण्डाल हैं एवं सब जातियों में ब्राह्मण हैं । ब्राह्मणों में चाण्डाल हैं और चाण्डालों में ब्राह्मण हैं ।

हे युधिष्ठिर ! जो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह से युक्त है और काम-क्रोध से निवृत्त है । वही ब्राह्मण है ।

जिसमें सत्य, तप, इन्द्रिय निग्रह और दया नहीं है, वह चाण्डाल है । ब्याज कमाने वाले, सेवावृत्ति से जीने वाले तथा नक्षत्र-तिथि की सूचना देने वाले ब्राह्मण भी महर्षि मनु ने शूद्र तुल्य कहे हैं ।

ब्राह्मण के लक्षण

१ सम्यग्दर्शनसंपन्नाः, समाधिस्था हतक्रुधाः ।
स्वाध्याय-भक्तहृदया-स्त्यक्तसङ्गा विमत्सराः ।।३।।
विशोका विमदाः शान्ताः, सर्वप्राणिहितैषिणः ।
सुख-दुःखसमा लोके, विविक्तस्थानवासिनः ।।४।।
व्रतोपयुक्तसर्वाङ्गा, धार्मिकाः पापभीरवः ।
निर्ममा निरहंकारा, दानशूरा दयापराः ।५।।
वागीश्वरेण देवेन, नाभेयेन भवच्छिदा ।
ब्राह्मणाः कृतमर्यादा-स्तएव ब्राह्मणाः स्मृताः ।।७।।

—भविष्यपुराण ब्राह्म पर्व-१ अध्याय-४४

जो सम्यग्दर्शन युक्त हैं, समाधि में रहते हैं, क्रोध को नष्ट कर चुके हैं, स्वाध्याय द्वारा जिनका हृदय भक्त हो गया है, जो संग के त्यागी हैं, मत्सरभाव से रहित हैं ।।३।।

शोक एवं मद से दूर हैं, शांत हैं, सब जीवों के हितैषी हैं, सुख-दुख में समान हैं, एकान्त स्थान में रहने वाले हैं ।।४।।

जिनके सब अंग संयमयुक्त हैं, जो धार्मिक हैं, पाप-भीरु हैं, निर्मम हैं, निरहंकार हैं, दानी हैं, दयालु हैं ।।५।।

इस प्रकार मर्यादित जीवन वाले ब्राह्मणों को ही भवच्छेदी भगवान् नाभेय (ब्रह्मा) ने ब्राह्मण कहा है ।।७।।

२ जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतं मलपावगं ।
रागद्दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहणं ।।२१।।
तसपाणे वियाणेत्ता, संगहणे य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ।।२२।।

कोहा वा जइवा हासा, लोहा वा जइवा भया ।
मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ।।२३।।
चित्तमन्तमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गेण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ।।२४।।
दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ।।२५।।
जहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ।।२६।।
अलोलुयं मुहाजीवी, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ।।२७।।

—उत्तराध्ययन-२५

अग्नि में तपाकर शुद्ध किये हुए और घिसे हुए सोने की तरह जो विशुद्ध है तथा राग-द्वेष और भय से रहित है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२१।।

जो त्रस और स्थावर जीवों को भली भांति जानकर मन, वाणी और शरीर से उनकी हिंसा नहीं करता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२२।।

जो क्रोध, हास्य, लोभ या भय के कारण असत्य नहीं बोलता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२३।।

जो सचित या अचित कोई भी पदार्थ, थोड़ा या अधिक कितना ही क्यों न हो, उसके अधिकारी के दिए बिना नहीं लेता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२४।।

जो देव, मनुष्य और तिर्यञ्च-सम्बन्धी मैथुन का मन, वचन और काय से सेवन नहीं करता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२५।।

जिस प्रकार जल में उत्पन्न हुआ कमल जल से लिप्त नहीं होता, इसी प्रकार काम-भोग के वातावरण में उत्पन्न हुआ जो मनुष्य उससे लिप्त नहीं होता, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२६।।

जो लोलुप नहीं है, निर्दोष भिक्षा से जीवन का निर्वाह करता है, गृह-त्यागी है, अकिंचन हैं और गृहस्थों में अनासक्त है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं ।।२७।।

★

३ ब्राह्मण के अनेक रूप

१ एकाहारेण सन्तुष्टः, षट्कर्मनिरतः सदा ।
ऋतुकालाभिगामी च, स विप्रो द्विज उच्यते ।।११।।
लौकिके कर्मणि रतः, पशूनां परिपालकः ।
वाणिज्य-कृषिकर्मा यः, स विप्रो वैश्य उच्यते ।।१२।।
लाक्षादि-तैल-नीलीनां, कौसुम्भ-मधु-सर्पिषाम् ।
विक्रेता मद्यमांसानां, स विप्र शूद्र उच्यते ।।१३।।
परकार्यविहन्ता च, दाम्भिकः स्वार्थसाधकः ।
छली द्वेषी मृदुः क्रूरो, विप्रो मार्जार उच्यते ।।१४।।
वापी-कूप-ताडागाना - माराम - सुरवेश्मनाम् ।
उच्छेदने निराशङ्कः, स विप्रो म्लेच्छ उच्यते ।।१५।।
देवद्रव्यं गुरुद्रव्यं, परदाराभिदर्शनम ।
निर्वाहः सर्वभूतेषु, विप्रश्चाण्डाल उच्यते ।।१६।।

— **चाणक्यनीति ११**

एक बार खाकर अध्ययन-यज्ञ-दान आदि षट्कर्म में अनुरक्त रहने वाला, एवं केवल ऋतुकाल में स्त्री-प्रसंग करने वाला ब्राह्मण **द्विज** कहलाता है ।।११।।

सांसारिक कार्यों से प्रेम, पशुपालन, व्यापार एवं खेती करने वाला ब्राह्मण **वैश्य** कहलाता है ।।१२।।

लाक्षादि पदार्थ, तेल, नील, कुसुम्भां, मधु, घी, मद्य एवं मांस को बेचने वाला ब्राह्मण **शूद्र** कहलाता है ।।१३।।

दूसरों का काम बिगाड़ने वाला, पाखण्डी, मतलबी, छली द्वेषी, ऊपर मीठा और हृदय से क्रूर-ऐसा ब्राह्मण **मार्जार** कहलाता है ॥१४॥

वापी, कुआँ, तालाब, बगीचा और देव स्थान आदि को नष्ट करने वाला ब्राह्मण **म्लेच्छ** कहलाता है ॥१५॥

देवद्रव्य, गुरुद्रव्य का हरण करने वाला, परस्त्री-गामी एवं धर्म-कर्म की परवाह न करके हर एक के साथ मिल जाने वाला ब्राह्मण **चाण्डाल** कहलाता है ॥१६॥

४ ब्राह्मण के विषय में विशेष ज्ञातव्य

१ ब्राह्मणस्य हि देहोऽयं, क्षुद्रकामाय नेष्यते ।
कृच्छ्राय तपसे चेह, प्रेत्यानन्तसुखाय च ॥

—श्रीमद्भागवत ११।१७।४२

ब्राह्मण का यह शरीर क्षुद्र-कामवासनाओं के लिए नहीं है। वह तो इस लोक में घोरतप के लिए और परलोक में शाश्वतकल्याण के लिए है।

२ लशुनं गृञ्जनं चैव, पलाण्डुं कवकानि च ।
अभक्ष्याणि द्विजातीना-ममेध्यप्रभवानि च ॥

—मनुस्मृति ५।५

लशुन, गाजर, प्याज, धरती के फूल और अशुचि (विष्टा आदि) में उत्पन्न चौलाई आदि शाक ब्राह्मणों के लिए अभक्ष्य हैं।

३ अनधीत्य द्विजो वेदा-ननुत्पाद्य तथा सुतान् ।
अनिष्ट्वा चैव यज्ञैश्च, मोक्षमिच्छन् व्रजत्यधः ॥

—मनुस्मृति ६।३७

जो ब्राह्मण वेद पढ़े बिना, पुत्र पैदा किए बिना एवं यज्ञ किए बिना अर्थात् ऋषिऋण, पितृऋण एवं देवऋण से उऋण हुए बिना सन्यास धारण की इच्छा करता है, वह नीचगति को प्राप्त होता है। (उत्तराध्ययन अ. १४ में भृगु के पुत्रों ने तथा महाभारत शांतिपर्व अ. १७५ में एक ऋषि-पुत्र ने इस वैदिक मान्यता का विरोध किया है।)

४ **ब्राह्मण के कर्म**—

अध्यापनमध्ययनं, यजनं याजनं तथा ।
दानं प्रतिग्रहं चैव, ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥

—मनुस्मृति ३।८८

ब्राह्मणों के लिए पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, दान लेना, ये छः कर्म निश्चित किये गये हैं।

५ वैदिक-संस्कृति में ब्राह्मण और शूद्र

१ अविद्वांश्चैव विद्वांश्च, ब्राह्मणो दैवतं महत् ।

—मनुस्मृति ९।३१७

ब्राह्मण पण्डित हो या मूर्ख हो, महान् देवता है ।

२ चाहे जैसे अनिष्टकार्य में संलग्न रहने पर भी ब्राह्मण सर्वथा पूज्य है ।

—मनुस्मृति ९।३१९

३ हत्वा लोकानपीमांस्त्री-नश्नन्न-मपि यतस्ततः ।
ऋग्वेदं धारयन् विप्रो, नैनः प्राप्नोति किंचन ।।

—मनुस्मृति ११।२६१

तीनों लोकों की हत्या करके और इधर-उधर भोजन करके भी ऋग्वेद को धारण करनेवाला ब्राह्मण कुछ भी पाप का भागी नहीं बनता ।

४ पड़ा धन ब्राह्मण को मिल जाय तो सब लेले, क्योंकि वह सबका प्रभु है ।

—मनुस्मृति ८।३७

५ ब्राह्मण मारने आवे तो अपना शिर उसके पैरों में रख देना उचित है ।

—श्रीमद्भागवत १०।६४

६ न जातु ब्राह्मणं हन्यात्, सर्वपापेष्वपि स्थितम् ।

—मनुस्मृति ८।३८०

ब्राह्मण को कभी न मारना चाहिए, चाहे वह सब पापों में लीन हो जाय ।

७ दुःशीलोऽपि द्विजः पूज्यो न तु शूद्रो जितेन्द्रियः ।

—पराशरसंहिता ८।३३

दुराचारी हो तो भी ब्राह्मण पूज्य है, शूद्र जितेन्द्रिय भी पूज्य नहीं ।

८ पूजिये विप्र शील-गुण हीना,
शूद्र न गुण-गण ज्ञान-प्रवीना ।

—रामचरित मानस

९ ब्राह्मण शूद्र की स्त्री से समागम करे तो उसे देश से निकाल दें और शूद्र ब्राह्मण की स्त्री से समागम करे तो उसे प्राणदण्ड दें ।

—आपस्तम्ब-धर्मसूत्र, प्रश्न-२, पटल १०, खंड २७, सूत्र—८-९

६ शूद्र के विषय में विशेष

१ तपसे शूद्रम् ।

—यजुर्वेद ३०।५

परिश्रम से होनेवाले कार्यों के लिए शूद्र है ।

२ न शूद्राय मतिं दद्या-नोच्छिष्टं न हविष्कृतम् ।
न चास्योपदिशेद्धर्मं, न चास्य व्रतमादिशेत् ।।८०।।
यो ह्यस्य धर्ममाचष्टे, यश्चैवादिशति व्रतम् ।
सोऽसंवृतं नाम तमः, सह तेनैव मज्जति ।।८१।।

—मनुस्मृति ४

शूद्र को बुद्धि मत दो ! उच्छिष्ट और हवि का शेषांश मत दो ! उसे धर्म और व्रत का उपदेश भी मत दो !।।८०।।

जो शूद्र को धर्म का उपदेश और व्रत का आदेश करता है, वह उस शूद्र के साथ असंवृत नामक अन्धकारमय नरक में जा गिरता है ।।८१।।

३ उच्छिष्टमन्नं दातव्यं, जीर्णानि वसनानि च ।
पुलाकाश्चैव धान्यानां, जीर्णाश्चैव परिच्छदाः ।।

—मनुस्मृति १०।१२५

शूद्रों को जूठा-अन्न, पुराने कपड़े, पुराना धान्य और पुराने बिछौने देने चाहिएं ।

४ यदि शूद्र जप-होम आदि शुभकार्यों में लगा है, तो वह राजा से दण्ड पाने योग्य है, क्योंकि जप-होम में तत्पर होने के कारण वह राजा के देश का नाश करने वाला है, जैसे—अग्नि का नाशक जल है ।

—अत्रिस्मृति ६

५ दण्डक वन में तपस्या करते हुए निरपराध शंबुक-राक्षस को राम ने मारा ।

—वाल्मीकिरामायण, उत्तरकांड, सर्ग ७३ से ७६ तक

७ स्नान

१ श्रमस्वेदालस्यविगमः स्नानस्य फलम् ।

— **नीतिवाक्यामृत २५।२५**

स्नान करने से शरीर की थकावट, पसीना और आलस्य दूर हो जाता है।

२ स्नानं नाम मनःप्रसादजननं दुःस्वप्न-विध्वंसनं,
शौचस्यायतनं मलापहरणं संवर्धनं तेजसः ।
रूपोद्योतकरं गदप्रशमनं कामाग्निसंदीपनं,
नारीणां च मनोहरं श्रमहरं स्नाने दशैते गुणाः ।

—**सुभाषितरत्न भांडागार पृष्ठ १५०**

स्नान में ये दश गुण हैं—

(१) स्नान मन को प्रसन्न करने वाला है।
(२) दुःस्वप्न को विध्वंस करने वाला है।
(३) शुद्धि का स्थान है।
(४) मल का अपहरण करने वाला है।
(५) तेज को बढ़ाने वाला है।
(६) रूप को चमकाने वाला है।
(७) रोग को उपशांत करने वाला है।
(८) कामाग्नि को उद्दीप्त करने वाला है।
(९) स्त्रियों के मन को आकृष्ट करने वाला है।
(१०) श्रम को दूर करने वाला है।

३ **स्नान के भेद—**

आग्नेयं वारुणं ब्राह्म्यं, वायव्यं दिव्यमेव च ।
पार्थिवं मानसं चैव, स्नानं सप्तविधं स्मृतम् ।।

—**स्थानांग ५।३ टीका**

स्नान सात प्रकार का कहा है—

(१) **आग्नेय**—भस्म लगाना,

(२) **वारुण**—जल में नहाना

(३) **ब्राह्म**—ज्ञान पढ़ना

(४) **वायव्य**—गोरज: कणों से नहाना

(५) **दिव्य**—सूर्य के ताप से नहाना

(६) **पार्थिव**—मिट्टी से शुद्धि करना,

(७) **मानस**—मन की शुद्धि करना।

४ स्नानं मनोमल त्यागो, योगश्चेन्द्रियरोधनम्।
अभेददर्शनं ज्ञानं ध्यानं, निर्विषयं मनः॥

—**प्राचीनसंग्रह से**

वास्तव में मन के मैल को धोना **स्नान** है, इन्द्रियजन्य विकारों को रोकना **योग** है, अभेद बुद्धि से देखना **ज्ञान** है और मन का निर्विषय होना **ध्यान** है।

८ स्नान-निषेध

१ नैव स्नायादनुव्रज्य, बन्धून् कृत्वा च मङ्गलम् ।

— विवेक विलास

बन्धुजनों को विदा करके और मङ्गलकार्य करके स्नान नहीं करना चाहिए ।

२ न स्नानमाचरेद् भुक्त्वा, नातुरो न महानिशि ।
न वासोभिः सहाजस्रं, नाविज्ञाते जलाशये ।।

—मनुस्मृति ४।१२९

भोजन के बाद, रोग अवस्था में, मध्य रात्रि के समय, वस्त्रों सहित और अजाने जलाशय-नदी आदि में स्नान नहीं करना चाहिए ।

३ कूपे ह्रदेऽधमं स्नानं, नद्यामेव च मध्यमम् ।
गृहे चैवोत्तमं स्नानं, जलं चैव तु शोधितम् ।
वाप्यां च वर्जयेत् स्नानं, तटाके नैव कर्हिचित् ।

—प्राचीन संग्रह से

कूप और द्रह में नहाना अधम स्नान है, नदी में नहाना मध्यम स्नान है और छाने हुए पानी से घर में नहाना उत्तम स्नान है । वापी और तालाब में स्नान नहीं करना चाहिए ।

४ परकीयनिपानेषु, न स्नायाच्च कदाचन ।
निपानकर्तुः स्नात्वा तु,दुष्कृतांशेन लिप्यते ।।२०१।।
यानशय्यासनान्यस्य, कूपोद्यानगृहाणि च ।
अदत्तान्युपभुञ्जान, एनसः स्यात्तुरीयभाक् ।।२०२।।

—मनुस्मृति ४

दूसरों के तालाब आदि में कभी न नहाना चाहिए । नहानेवाला जलाशय बनाने वाले के पाप से लिप्त होता है ।।२०१।।

किसी के रथ, शय्या, आसन, कुआं, बगीचा और गृह, दाता के दिए बिना इन सबका उपभोग करने वाला उसके पाप के चतुर्थांश का भागी होता है ॥२०२॥

५ स्नानं मद-दर्पकरं, कामाङ्गं प्रथमं स्मृतम्।
तस्मात् कामं परित्यज्य, नैव स्नान्ति दमेरताः।

—**धर्मरत्न प्रकरण, अधिकार १ गुण १०**

स्नान मद और दर्प का करने वाला है एवं काम का पहला अङ्ग है अतः काम का परित्याग करने वाले इन्द्रिय दमन में अनुरक्त मुनि स्नान नहीं करते।

६ **जीवन भर नहीं नहाने वाले स्पीतियन :—**

हिमालय की गोद में बसा एक बड़ा ही रमणीक अंचल है स्पीति। यह भारत का एक अत्यन्त अगम छोर है। चन्द्रा घाटी में १३,५०० फुट राह तंग और १४,६०० फुट कुंजुम दर्रों को पार कर स्पीति की भूमि में प्रवेश मिलता है। यहाँ के निवासी स्पीतियन जीवन में केवल दो ही बार स्नान करते हैं—जन्म के समय और मृत्यु के बाद। इन दोनों के बीच के समय में वे अपने-अपने शरीर और बालों में याक का मक्खन लपेटे रहते हैं। इनके शरीर से इतनी दुर्गन्ध निकलती है कि अगर हम में से कोई भर-पेट भोजन कर दो-चार स्पीतियन के बीच किसी कमरे में बैठकर बातें करें तो निश्चित ही वमन हो जाएगी। दुर्गन्ध के कारण हमारा सिर चकराने लगेगा।

—**'देश-विदेश की अनोखी प्रथाएँ' पुस्तक से**

६ तीर्थ

१ तीर्यतेऽनेनेति तीर्थम् ।

जिसके द्वारा तरा जाय, उसे तीर्थ कहते हैं। वह द्रव्य और भाव के भेद से दो प्रकार का है। नदी आदि का घाट। तथा वह भूभाग जो सम हो और अपाय से रहित हो। अथवा भूतवादियों (पंच भूतवादी या चार भूतवादी) का प्रवचन **द्रव्यतीर्थ** है। इसी प्रकार ज्ञान-दर्शन चारित्र का संघात (पिंड) होने से साधु-साध्वी-श्रावक श्राविका रूप संघ **भाव तीर्थ** है। तथा प्रवचन (वीतराग वाणी) भी श्रुत ज्ञान रूप है अत: भाव तीर्थ ही है।

—स्थानांग १ टीका तथा विशेषावश्यक भाष्य गाथा १३८० के आधार से

२ वह पवित्र या पुण्यस्थान तीर्थ है, जहाँ धर्म भाव से श्रद्धा सहित लोग यात्रा, पूजा या स्नान के लिये जाते हैं।

हिंदुशास्त्र में तीर्थ तीन प्रकार के माने गये हैं—

(१) जंगम, (२) मानस, (३) स्थावर।

(१) **जंगम**—साधु-ब्राह्मणादि

(२) **मानस**—सत्य-क्षमा-दया-दान-संतोष आदि।

(३) **स्थावर**—काशी, प्रयाग, गया आदि।

—नालन्दा-विशाल-शब्द सागर पृष्ठ ५२५

१० मानस तीर्थ

१ सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं, तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदया तीर्थं, तीर्थमार्जवमेव च ।।
दानं तीर्थं दमस्तीर्थं, संतोषस्तीर्थमुच्यते ।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं, तीर्थं च प्रियवादिता ।।
ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थं, तपस्तीर्थमुदाहृतम् ।
तीर्थानामपि तत्तीर्थं, विशुद्धिमनसः पराः ।।

—स्कन्दपुराण, काशीखण्ड अध्याय ६

सत्य, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, जीवदया, सरलता, दान, दम, सन्तोष, ब्रह्मचर्य मीठी वाणी, ज्ञान, धृति और तप—ये सब तीर्थ हैं किंतु मन की विशुद्धि सब तीर्थों में उत्कृष्टतीर्थ मानी गई है ।

२ तीर्थं परं किं ? स्वमनो विशुद्धम् ।

—शंकर प्रश्नोत्तरी ९

उत्कृष्ट तीर्थ कौन-सा है ? अपना विशुद्ध मन ।

३ यस्य हस्तौ च पादौ च, मनश्चैव सुसंयतम् ।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च, स तीर्थफलमश्नुते ।।

—पद्मपुराण पातालखण्ड १९।२४

जिसके हाथ, पैर एवं मन संयमित है तथा जो विद्या [ज्ञान] तप और कीर्तिमान है, उसी को तीर्थ का फल मिलता है ।

४ निगृहीतेन्द्रियग्रामो, यत्रैव निवसेन्नरः ।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं, नैमिषं पुष्कराणि च ।।४।।
२

ध्यानपूते ज्ञानजले, राग-द्वेषमलापहे ।
यः स्नाति मानसे तीर्थे, स याति परमां गतिम् ॥५॥

—स्कन्दपुराण, काशीखंड अध्याय ६

इन्द्रिय दमन करने वाला जहाँ भी निवास करता है, उसके वहीं पर नैमिषारण्य कुरुक्षेत्र एवं पुष्कर है ॥४॥

राग-द्वेष को धोने वाले, ध्यान से पवित्र किये हुए ज्ञान जल वाले, मानस तीर्थ में जो स्नान करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है ॥५॥

११ जंगमतीर्थ की प्रतीक्षा में गंगा

१ चित्तं शमादिभिः शुद्धं, वदनं सत्यभाषणैः।
ब्रह्मचर्यादिभिः कायः, शुद्धो गंगां विनाऽप्यसौ ॥
परदारेष्वनासक्तः, परद्रव्यपराङ्मुखः।
गंगाप्याह कदागत्य, मामयं पावयिष्यति ॥

—स्कन्दपुराण, काशीखंड अध्याय ६

जिसका चित्त शम-दम आदि से, मुख सत्य भाषणों से और शरीर ब्रह्मचर्य आदि से शुद्ध है, वह गंगा के बिना भी शुद्ध है। गंगा कह रही है कि वह महात्मा आकर मुझे कब पवित्र करेगा, जो पर-स्त्री में अनासक्त एवं पर-धन से विमुख है।

२ साधवो न्यासिनः शान्ता, ब्रह्मिष्ठा लोकपावनाः।
हरन्त्यघं तेऽङ्गसंगात्, तेष्वास्ते ह्यघभिद्धरिः ॥

—श्रीमद्भागवत ९।९।६

सब मेरे में पाप धोएंगे, फिर मैं उन पापों का क्या करूंगी ऐसे गंगा के पूछने पर भगीरथ ने कहा—जगत को पवित्र करने वाले शान्त एवं ब्रह्मनिष्ठ साधु-सन्यासी तेरे जल में स्नान करके अपने शरीर के स्पर्श से तेरा सारा पाप हर लेंगे। क्योंकि उनके हृदय में पापों को नष्ट करने वाले हरि-भगवान विराजते हैं।

३ चित्तं कामादिभिः क्लिष्ट-मलीकवचनैर्मुखम्।
जीवहिंसादिभिः कायो, गङ्गा तस्य पराङ्मुखी ॥

—स्कन्दपुराण, काशी खंड अध्याय ६

जिसका चित्त काम आदि से, मुख असत्य वचन से तथा शरीर जीवहिंसा आदि पापों से अशुद्ध है, उस व्यक्ति से गंगा सदैव विमुख रहती है।

४ छार ही में ख्वार खर न्हात जात जलचर,
धरत जटा को बड़ बरत पतंग हैं।
ध्यान बक धरत रटत राम-राम शुक,
गाडर मुंडावे पशु अवश निहंग है ।।
सहे तरु ताप घर करके ना रहे साँप,
"किसन" दुराप आप अनभो अभंग है।
रंग बहिरंग सबे मोक्ष को न अंग पर,
यह मन चंग तो कठौत ही में गंग है ।।

५ **संत रैदास और गंगा**—रैदास चर्मकार थे। वे अपना धन्धा करते हुए भी प्रभुभजन में लीन रहते थे अतः संत कहलाते थे। एक ब्राह्मण रघुवंशी क्षत्रिय की ओर से प्रतिदिन गंगा माता को फूल चढ़ाया करता था। वह एक दिन जूतियाँ खरीदने उनकी दूकान पर आया। बात करते-करते गंगा माता की पूजा की चर्चा चल पड़ी।

संत ने कहा—पंडित जी! मैं तो **मन चंगा तो कठोती में गंगा** के सिद्धांत को मानने वाला हूं, पूजा आदि करने आज तक कभी नहीं गया। यहीं पर जो कुछ भजन-स्मरण होता है, कर लेता हूं और गंगा माता यहीं से मेरी सेवा स्वीकार कर लेती है। ब्राह्मण नहीं माना एवं बोला—ऐसा कैसे हो सकता है? तब संत ने एक सुपारी देकर कहा—आप जाइए एवं गंगा माता से कहिये कि संत रैदास ने यह भेंट भेजी है। आप इसे ले लीजिये। इतना कहने पर यदि माता अपना हाथ फैला दे तो आप यह सुपारी दे देना अन्यथा वापस ले आना।

आश्चर्यचकित ब्राह्मण गंगाजी पहुंचा और कहने के साथ में ही गंगा ने दोनों हाथ बाहर निकाले। एक हाथ में सुपारी ली एवं दूसरे हाथ से एक रत्नजड़ित कंकण देते हुए कहा—यह भक्त रैदास को मेरी भेंट देना। ब्राह्मण उसे लेकर चला। पर लोभवश नीयत बिगड़ गई। वह कंकण लेकर घर तो आ गया पर हजम न होता देखकर राजा को भेंट कर दिया। राजा ने उसे बहुत धन व सम्मान दिया। ज्योंही कंकण रानी को दिया गया, वह दूसरा फिर माँगने लगी। समझाने पर भी नहीं मानी और

मरने पर तुल गई। राजा ने ब्राह्मण से कहा—एक कंकण पुनः लाओ। ब्राह्मण ने असमर्थता प्रकट की। राजा ने क्रुद्ध होकर मार देने की धमकी दी, ब्राह्मण गंगा के पास गया। रुष्टमना गंगा ने कहा—नालायक! तूने मेरा कंकण रैदास को क्यों नहीं दिया? चल भाग जा, अन्यथा मार दूंगी जान से। भयभीत ब्राह्मण रैदास के पास जाकर रोया और माफी मांगने लगा तथा साथ-साथ दूसरा कंकण भी।

दयालु संत ने चमड़ा धोये हुए पानीं से भरी एक कुंडी के सामने सुपारी रखकर कहा—गंगामाता! मेरी भेंट लो और कृपया इस ब्राह्मण के लिए एक कंकण दो! बस, तत्काल कुंडी से गंगा के दोनों हाथ बाहर निकल आए और सुपारी लेकर कंकण दे गये। इस आश्चर्यजनक घटना को देखकर ब्राह्मण को ज्ञान हो गया एवं वह मान गया कि वास्तव में मनः-शुद्धि ही सच्चा गंगास्नान है, ऊपर के क्रियाकांड नहीं।

—श्रुति के आधार पर

१२ मनःशुद्धि के बिना जलादि से आत्मशुद्धि नहीं

१ जलादिशौचं यत्रेदं, मूढविस्मापनं हि तत् ।

—उमास्वाति

इस संसार में केवल जलादि द्वारा आत्मशुद्धि कहना मूर्खों को विस्मय में डालना है ।

२ न जलाप्लुतदेहस्य, स्नानमित्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नातः, शुचिः शुद्धमनोमलः ॥१॥
यो लुब्धः पिशुनः क्रूरो, दम्भिको विषयात्मकः ।
सर्वतीर्थेष्वपि स्नातः, पापो मलिन एव स ॥२॥
चित्तमन्तर्गतं दुष्टं, तीर्थस्नानान्न शुद्ध्यति ।
शतशोऽपि जले धौतं, सुराभाण्डमिवाशुचिः ॥३॥

— स्कन्दपुराण, काशी खंड अ० ६

शरीर को जल से भिगोने मात्र से स्नान नहीं कहा जाता वस्तुतः इन्द्रिय-दमन करनेवाला ही नहाया हुआ, पवित्र एवं निर्मल मनवाला होता है ॥१॥

जो लोभी, चुगल, क्रूर, कपटी एवं विषयी है, वह चाहे सभी तीर्थों में नहाले, पापी एवं मैला ही है ॥२॥

अन्दर का दुष्टमन तीर्थ में नहा लेने मात्र से शुद्ध नहीं होता । जैसे—मद्य का वर्तन सैकड़ों बार धोने पर भी अपवित्र ही रहता है ॥३॥

३ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरन्ति, सायं च पायं उदगं फुसंता ।
उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी, सिज्झिंसु पाणा बहवे दगंसि ।

—सूत्रकृतांग ७।१४

सुबह-शाम स्नान करने वाले जल स्पर्श से ही मुक्ति मानते हैं। किन्तु यदि जल स्पर्श से ही मुक्ति मिलती हो तो बहुत से मच्छ-कच्छ आदि जलचर प्राणियों को भी मुक्ति मिल जानी चाहिए।

४ जायन्ते च म्रियन्ते च जलेष्वेव जलौकसः।
न च गच्छन्ति ते स्वर्ग-मविशुद्धमनोमलाः ॥

—स्कन्दपुराण, काशीखंड, अध्याय ६

जोंकें पानी ही में जन्मती हैं और मरती हैं लेकिन मन का मैल धोए बिना स्वर्ग में नहीं जातीं।

५ मक्का जाकर इट्टां पूजै, गंगा जा के पानी।
बुल्लेशाह ऐसी करनी कर चल्लो, मिट जाए आवण-जाणी।
नहाते-धोते जो रब मिले, पहले मिले डड्डां-मच्छियां।
बुल्शेशाह रब उन्हानु मिलदा, जिन्हांदी किस्मत अच्छियां ॥

—पंजाबी पद्य

१३ आध्यात्मिक तीर्थ

१ धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो, सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥४६॥
एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं, महासिणाणं इसिणं पसत्थं ।
जहिंसि ण्हाया विमला विसुद्धा, महारिसी उत्तमठाण पत्ते ॥४७॥

—उत्तराध्ययन १२

सोमदेव ब्राह्मण के पूछने पर हरिकेशबल मुनि ने कहा—अकलुषित एवं आत्मा का प्रसन्न-लेश्यावाला धर्म मेरा नद (जलाशय) है । ब्रह्मचर्य मेरा शान्ति तीर्थ है । जहाँ नहाकर मैं विमल, विशुद्ध और सुशीतल होकर कर्म-रज का त्याग करता हूं ॥४६॥

यह स्नान, कुशल पुरुषों द्वारा दृष्ट है । यह महास्नान है अतः ऋषियों के लिए यही प्रशस्त है । इस धर्म नद में नहाए हुए मर्हषि विमल और विशुद्ध होकर उत्तम स्थान (मुक्ति) को प्राप्त हुए "ऐसा मैं कहता हूं ।" ॥४७॥

२ अगाधे विमले शुद्धे, सत्यतोये धृतिह्रदे ।
स्नातव्यं मानसे तीर्थे, सत्त्वमालम्ब्य शाश्वतम् ॥३॥
नोदकक्लिन्नगात्रस्तु, स्नात इत्यभिधीयते ।
स स्नातो यो दमस्नातः, स बाह्याभ्यन्तरः शुचि ॥६॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय १०८

भीष्मपितामह युधिष्ठिर से कह रहे हैं कि—जिसमें धैर्यरूप कुण्ड और सत्यरूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल एवं अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थ में सदा परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए ॥३॥

शरीर को केवल पानी से भिगो लेना ही स्नान नहीं कहलाता । सच्चा

स्नान तो उसी ने किया है, जिसने मन-इन्द्रिय के संयम रूपी जल में गोता लगाया है। वही बाहर और भीतर से पवित्र माना गया है ॥६॥

४ पांडवों की तीर्थयात्रा—

कहा जाता है कि गोत्रहत्या के पाप को धोने के लिए श्री कृष्ण की अनुमति लेकर पांडव सपरिवार तीर्थ करने गए। कृष्ण ने उन्हें अपनी तुंबी देते हुए कहा – जिस तीर्थ में तुम एक बार नहाओ उस तीर्थ में इसे दो बार नहला देना। अस्तु ! कहकर पांडव पुष्कर-कुरुक्षेत्र आदि अनेक तीर्थों में घूमे एवं स्वयं नहाकर तुंबी को भी नहलाया। लौटते समय उसे गंगाजल से भर लाए। तुम्बी ज्यों ही कृष्ण के चरणों में उपस्थित की गई, उन्होंने उसका एक टुकड़ा तोड़ कर मुंह में लेते हुए कहा—

एरे तुंबड़ी कड़वी रे भाई ! सब तीरथ फिर आई।
गंगा भी न्हाई गोमती भी न्हाई, अजु न गई कड़वाई।
जिया ! मांजता क्यों न मना रे ! जामें अंतर मैल घना रे।

भाइयो ! तुमने इस तुम्बी को पूरे तीर्थ नहीं करवाये। अन्यथा यह अवश्य मीठी हो जाती। चौंककर पांडवों ने उत्तर दिया—भगवन् ! क्या पानी से धोने पर कड़वी वस्तु कभी मीठी हो सकती है ?

श्रीकृष्ण मुस्कराकर बोले—यदि नहीं होती तो फिर तुम्हारी आत्मा कैसे शुद्ध हुई ? विस्मित युधिष्ठिर ने पूछा—तो फिर पापशुद्धि के लिए हमें क्या करना चाहिए ? उत्तर में श्री कृष्ण ने कहा—

आत्मा नदी संयमपुण्यतीर्था, सत्योदका शीलतटा दयोर्मिः।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र ! न वारिणा शुद्ध्यति चान्तरात्मा।

—हितोपदेश ५।८६

इन्द्रियों का संयम ही जिसका पुण्य तीर्थ है, सत्य जिसका जल है, शील जिसका किनारा है और दया जिसमें लहरियों की माला है। हे युधिष्ठिर ! ऐसी आत्मारूपी नदी में स्नान करो। केवल पानी से स्नान करने पर अन्दर की आत्मा शुद्ध नहीं हो सकती।

—श्री कालूगणी से श्रुत

शुद्धि-शौच

१ पंचविहे सोए पन्नत्ते, तं जहा—
पुढ़विसोए, आउसोए, तेउसोए, मंतसोए, बंभसोए।

—स्थानांग ५।३

शुद्धि पाँच प्रकार से कही है—(१) मिट्टी से (२) पानी से (३) अग्नि से (४) मंत्र से (५) ब्रह्मचर्य से।

२ सत्यं शौचं तपः शौचं, शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
सर्वभूतदया शौचं, जलशौच तु पञ्चमम्॥

—स्कन्दपुराण, काशी खंड अध्याय ६

शौच (शुद्धि) के पाँच कारण हैं—
(१) सत्य (२) तप (३) इन्द्रियनिग्रह (४) सब जीवों की दया और (५) जल। प्रथम चार आत्म-शुद्धि के कारण हैं और पाचवां जल शरीर शुद्धि की अपेक्षा से है।

३ वृत्तं शौचं मनः-शौचं, तीर्थशौचमतः परम्।
ज्ञानोत्पन्नं च यच्छौचं, तच्छौचं परमं स्मृतम्॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय १०८।१२

शुद्धि चार प्रकार की मानी है— आचार शुद्धि, मनःशुद्धि, तीर्थ शुद्धि और ज्ञानशुद्धि। इनमें ज्ञान से प्राप्त होने वाली शुद्धि ही सबसे श्रेष्ठ मानी गयी है।

४ दस विहा विसोही पन्नत्ता, तं जहा—
-उग्गमविसोही, उप्पायणविसोही जाव सारक्खणविसोही॥

—स्थानांग १०।७३९

दस प्रकार की विशुद्धियाँ कही हैं—(१) उद्गम विशुद्धि (२) उत्पादन विशुद्धि (३) एषणा विशुद्धि (४) परिकर्म विशुद्धि (५) परिहरण विशुद्धि (६) ज्ञानविशुद्धि (७) दर्शनविशुद्धि (८) चारित्र विशुद्धि (९) अप्रीतिक विशुद्धि (१०) संरक्षण विशुद्धि।

१५ व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से वस्तुओं की शुद्धि

१ धान्य-दार्वस्थि-तन्तूनां, रस-तेजस-चर्मणाम् ।
कालवाय्वग्निमृत्तोयैः, पार्थिवानां युतायुतैः ॥१२॥
अमेध्यलिप्तं यद् येन, गन्धलेपं व्यपोहति ।
भजते प्रकृतिं तस्य, तच्छौचं तावदिष्यते ॥१३॥

—श्रीमद् भागवत ११।२१

अनाज, लकड़ी, हाथी दांत आदि हड्डी, सूत, मधु, नमक, तेल-घी आदि रस, सोना—पारा आदि तैजस पदार्थ, चाम और घड़ा आदि मिट्टी के बने पदार्थ, समय बीतने पर, हवा लगने से, आग में जलाने से, मिट्टी लगाने से अथवा जल में धोने से शुद्ध हो जाते हैं। देश, काल और अवस्था के अनुसार, कहीं जल-मिट्टी आदि शोधक सामग्री के संयोग से शुद्धि करनी पड़ती है तो कहीं-कहीं एक-एक द्रव्य से भी शुद्धि हो जाती है ॥१२॥

यदि किसी वस्तु में कोई अशुद्ध पदार्थ लग गया हो तो छीलने से या मिटी आदि मलने से जब उस पदार्थ की गंध एवं लेप न रहे और वह वस्तु अपने पूर्वरूप में आ जाय, तब उसको शुद्ध समझना चाहिए ॥१३॥

२ भस्मना शुद्ध्यते कांस्यं, ताम्रमम्लेन शुद्ध्यति ।

—चाणक्यनीति ६।३

कांसी का पात्र राख से और तांबे का पात्र खटाई से शुद्ध होता है।

३ क्षान्त्या शुद्ध्यन्ति विद्वांसो, दानेनाकार्यकारिणः ।
प्रच्छन्नपाप्पो जप्येन, तपसा वेदवित्तमाः ॥१०७॥
मृत्तोयैः शुद्ध्यते शोध्यं, नदी वेगेन शुद्ध्यति ।
रजसा स्त्री मनोदुष्टा, संन्यासेन द्विजोत्तमः ॥१०८॥

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति, मनः सत्येन शुद्ध्यति ।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति ॥१०६॥

—मनुस्मृति ५

विद्वान क्षमा से, अकार्यकारी दान से, प्रच्छन्न पाप करने वाले जाप से, वेदवेत्ता तपस्या से, शोधनीय वस्तु मिट्टी पानी से, दूषित मन वाली स्त्री रजस्वला होने से, ब्राह्मण सन्यास से, शरीर पानी से, मन सत्य से, जीवात्मा विद्या और तप से तथा बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है ।

४ पुत्र-पुत्री के जन्म में माता दस दिन के बाद और पिता स्नान से शुद्ध होता है ।

—मनुस्मृति ५।६२ का टिप्पण

५ शुद्धं भूमिगतं तोयं, शुद्धा नारी पतिव्रता ।
शुचिःक्षेमकरो राजा, सन्तुष्टो ब्राह्मणः शुचिः ॥

—चाणक्यनीति ८।१७

पृथ्वी पर पड़ा हुआ जल, पतिव्रता स्त्री, कल्याणकारी राजा, और सन्तोषी ब्राह्मण—ये चारों शुद्ध-पवित्र माने गए हैं ।

६ **शुद्ध न होने वाले—**

मित्रद्रुहः कृतघ्नस्य, स्त्रीघ्नस्य पिशुनस्य च ।
चतुर्णामपि चैतेषां, निष्कृतिर्नैव विश्रुता ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ १६१

मित्र द्रोही, कृतघ्न, स्त्रीघातक और चुगल—इन चारों की शुद्धि नहीं होती ।

७ **गृहस्थ का शुद्ध होना दुःसंभवः—**

आरम्भे वर्तमानस्य, हिंसकस्य युधिष्ठिर !
गृहस्थस्य कुतः शौचं, मैथुनं येन सेव्यते ॥

—शिवपुराण

हे युधिष्ठिर ! जो आरम्भ में वर्तमान है, हिंसक है और मैथुनसेवन करता है, उस गृहस्थ के शुद्धि कहां ?

८ **स्नान न करने तक अशुद्ध—**

तैलाभ्यंगे चिताधूमे, मैथुने क्षौरकर्मणि ।
तावद् भवति चाण्डालो, न यावत् स्नानमाचरेत् ।

—चाणक्यनीति ८।६

तेल लगाने पर, चिता का धुआँ लगने पर, मैथुन करने के बाद और हजामत कराने के बाद, जब तक स्नान न किया जाय तब तक व्यक्ति चाण्डालवत् अशुद्ध रहता है ।

१ देवों और पितरों के लिए द्रव्य का त्याग करना **यज्ञ** है। देवता और पितर मनुष्यों के दिये हुए भोजन की राह देखते हैं, मनुष्य उनके ऋणी हैं। अगर वे यज्ञ-श्राद्ध न करें तो उनका जीवन ही अपूर्ण रह जाता है। देवता और पितर अग्नि तथा ब्राह्मणों के मुख से खाद्य ग्रहण करते हैं। (इसीलिए यज्ञों और श्राद्धों में ब्राह्मणों को खिलाया जाता है।)

—यज्ञरहस्य के आधार से

२ **यज्ञ के तीन प्रकार**—

(१) **औषधियज्ञ**—यह फल-फूल धान्य आदि से होता है।

(२) **प्राणियज्ञ**—इसमें पशु एवं मनुष्य होमे जाते हैं।

(३) **आत्मयज्ञ**—यह आध्यात्मिक व्रत से सम्पन्न होता है। एवं अहिंसात्मक है।

३ **यज्ञ का मंडन**—

यज्ञात् प्रजा प्रभवति, नभसोऽम्भ इवामलम्।
अग्नौ प्रास्ताहुतिर्ब्रह्म-न्नादित्यमुपगच्छति॥
आदित्याज्जायतेः वृष्टि वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।

—महाभारत शांतिपर्व, अध्याय २६३ श्लोक ११

जिस प्रकार आकाश से निर्मल जल की वर्षा होती है, उसी प्रकार शुद्ध-भाव से किए हुए यज्ञ से योग्य प्रजा की उत्पत्ति होती है। विप्रवर! अग्नि में डाली हुई आहुति सूर्य मंडल को प्राप्त होती है, सूर्य से जल की वृष्टि होती है, वृष्टि से अन्न उपजता है और अन्न से सम्पूर्ण प्रजा जन्म तथा जीवन धारण करती है।

१७ हिंसात्मक यज्ञ

१ यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः, स्वयमेव स्वयंभुवा ।
यज्ञस्य भूत्यै सर्वस्य, तस्माद् यज्ञे वधोऽवधः ॥३९॥
औषध्यः पशवोवृक्षा-स्तिर्यञ्चः पक्षिणस्तथा ।
यज्ञार्थं निधनं प्राप्ता, प्राप्नुवन्त्युत्सृतीः पुनः ॥४०॥

—मनुस्मृति ५

स्वयं ब्रह्मा ने यज्ञ के लिए और सब यज्ञों की समृद्धि के लिये पशुओं का निर्माण किया है अतः यज्ञ में की हुई हिंसा वास्तव में अहिंसा ही है ।

औषधियाँ, वृक्ष, पशु, तिर्यञ्च और पक्षी जो यज्ञ के लिए मरते हैं, वे सब उच्च गति में जाते हैं ।४०।

२ अश्वमेधमखे ह्यश्वं, गोमेधे वृषमेव च ।
नरमेधे नरं राजन् ! वाजपेये तथा ह्यजान् ॥३४॥
राजसूये महाराज ! प्राणिनां घातनं बहु ।
पुण्डरीके गजं हन्याद्, गजमेधेऽथ कुञ्जरम् ॥३५॥

— पद्मपुराण, भूमि खण्ड, अध्याय ३७

अश्वमेध यज्ञ में घोड़ा, गोमेध में वृषभ, नरमेध में मनुष्य, वाजपेय यज्ञ में बकरा, राजसूय यज्ञ में अनेक प्राणी, पुण्डरीक यज्ञ में गज, गजमेध यज्ञ में कुंजर (हाथी की विशेष जाति) का होम किया जाता है ।

३ ऋग्वेद १।६२ में अश्वमेध यज्ञ का विस्तृत वर्णन है एवं पढ़ने लायक है ।

४ सामवेद कौथुभीशाखा गृह्यकर्म-प्रतिपादक गोभिल-गृह्य सूत्र, प्रपाठक २, खण्ड १०, सूत्र १४ से ३१ तक गोमेध यज्ञ का विस्तार है ।

१ प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा, अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म ।
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा, जरा मृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति ।

—मुण्डकोपनिषद् १।२।७

निश्चय ही ये यज्ञरूप अठारह नौकाएँ अदृढ़ (अस्थिर) है, जिनमें निम्न श्रेणी का (उपासनारहित) सकाम कर्म बताया गया है। जो मूर्ख "यही कल्याण का मार्ग है"—यों मानकर ! इसकी प्रशंसा करते हैं, वे बारंबार निःसंदेह वृद्धावस्था और मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं।

२ सुरा मत्स्या मधु मांसमासवं कृशरौदनम् ।
धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥

— महाभारत-शांतिपर्व २६५।६

सुरा, आसव, मधु, मांस, मछली तथा तिल और चावल की खिचड़ी—इन वस्तुओं को धूर्तों ने यज्ञ में प्रचलित किया है किन्तु वेदों में इनके उपयोग का विधान नहीं है।

३ प्रवृत्तं च निवृत्तं च, द्विविधं कर्म वैदिकम् ।
आवर्तेत प्रवृत्तेन, निवृत्तेनाश्नुतेऽमृतम् ॥४७॥
हिंस्रं द्रव्यमयं काम्य-मग्निहोत्राद्यशान्तिदम् ।
दर्शश्च पौर्णमासश्च, चातुर्मास्यं पशुः सुत ! ॥४८॥
एतदिष्टं प्रवृत्ताख्यं, हुतं प्रहुतमेव च ।
पूर्तं सुरालयाराम-कूपाजीव्यादिलक्षणम् ॥४९॥

—श्रीमद्भागवत ७।१५

वैदिक कर्म दो प्रकार के हैं—प्रवृत्तिपरक और निवृत्तिपरक। **प्रवृत्तिपरक**—ये वृत्तियों को उनके विषयों की ओर ले जाते हैं। **निवृत्तिपरक**—

ये वृत्तियों को उनके विषयों की ओर से लौटाकर शान्त एवं आत्मसाक्षात्कार के योग्य बना देते हैं।

प्रवृत्तिपरक कर्ममार्ग से बार-बार जन्म-मृत्यु की प्राप्ति होती है और निवृत्तिपरक भक्तिमार्ग या ज्ञानमार्ग से परमात्मा की प्राप्ति होती है ॥४७॥

श्येनयागादि हिंसामय कर्म, अग्निहोत्र, दर्श, पौर्णमास, चातुर्मास्य, पशुयाग, सोमयाग, वैश्वदेव, बलिहरण आदि द्रव्यमय कर्म **इष्टकर्म** कहलाते है और देवालय, बगीचा कुंआ आदि बनवाना तथा प्याऊ आदि लगाना **पूर्तकर्म** हैं। ये सभी प्रवृत्तिपरक कर्म हैं और सकामभाव से युक्त होने पर अशान्ति के ही कारण बनते हैं। (४८-४९)

४ इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं, नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढ़ाः ।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेमं, लोकं हीनतरं वाविशन्ति ॥
—**मुण्डकोपनिषद्** १।२।१०

इष्ट और पूर्त कर्मों को ही श्रेष्ठ मानने वाले अत्यन्त मूर्ख लोग उससे भिन्न वास्तविक श्रेय को नहीं जानते। वे पुण्य कर्मों के फलस्वरूप उच्चतम स्थान में जाकर वहाँ के भोगों का अनुभव करके इस मनुष्यलोक में अथवा इससे भी अत्यन्त हीनयोनियों में प्रवेश करते हैं।

आत्मयज्ञ-अहिंसात्मक यज्ञ

१ इन्द्रियाणि पशून् कृत्वा, वेदीं कृत्वा तपोमयीम् ।
अहिंसामाहुतिं कृत्वा, आत्मयज्ञं यजाम्यहम् ।

—**प्राचीन संग्रह से**

जिस में इन्द्रियाँ पशु हैं, तपरूप वेदिका है और अहिंसा की आहुति है—मैं वही आत्मिक यज्ञ करता हूँ ।

२ श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः, श्रद्धा सत्यं तदित्युत्तमं मिथुनम् ।
श्रद्धया सत्येन मिथुनेन, स्वर्गान् लोकान् जयतीति ।।

—**ऐतरेय ब्राह्मण ७।१०**

जीवन यज्ञ में श्रद्धा पत्नी है और सत्य यजमान है । श्रद्धा-सत्य की उत्तम जोड़ी है । इस जोड़ी से मनुष्य दिव्यलोक को प्राप्त करता है ।

३ ब्रह्म का साक्षात्कार पाने वाले विद्वान् संन्यासी के लिए यज्ञ का यजमान आत्मा है, अन्तःकरण की श्रद्धा पत्नी है, शरीर समिधा है, हृदय वेदी है, मन्यु (क्रोध) पशु है, तप अग्नि है और दम दक्षिणा है ।

—**तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक १०, अनुवाक ६४**

४ ज्ञानपालि परिक्षिप्ते, ब्रह्मचर्य दयाम्भसि ।
स्नात्वातिविमले तीर्थे, पापपङ्कापहारिणि ।
ध्यानाग्नौ जीवकुण्डस्थे, दममारुतदीपिते ।
असत्कर्म-समित्क्षेपै-रग्निहोत्रं कुरूत्तमम् ।
कषायपशुभिर्दुष्टै - धर्म-कामार्थनाशकैः ।
शममन्त्रहुतैर्यज्ञं, विधेहि विहितं बुधैः ।

—**व्यास (स्याद्वादमंजरी, पृष्ठ ८४)**

ज्ञान रूप पाल पर गिरे हुए पाप-पंक के नाशक ब्रह्मचर्य एवं दयारूप जल में स्नान करके जीव रूपी कुण्ड में दम रूप हवा से दीप्त ध्यान-अग्नि में अशुभ कर्मरूप काष्ठ को डालकर उत्तम अग्नि-होत्र करो। शमरूप मंत्र से आहुति को प्राप्त हुए, धर्म, काम एवं अर्थ का नाश करने वाले—ऐसे दुष्ट कषाय रूप पशुओं से यज्ञ करो! पूर्वकाल में ज्ञानियों ने ऐसा ही किया है।

५ शान्ति यज्ञरतो दान्तो, ब्रह्मयज्ञे स्थितो मुनिः।
वाङ्-मनः-कर्मयज्ञश्च, भविष्याम्युदगायने ॥३२॥
पशुयज्ञैः कथं हिंस्रै-र्मादृशो यष्टुमर्हति।
अन्तवद्भिरिव प्राज्ञः, क्षेत्रयज्ञैः पिशाचवत् ॥३२॥

—महाभारत, शान्तिपर्व, अध्याय १७५

मैं निवृत्तिपरायण होकर शांतिमय यज्ञ में तत्पर रहूंगा, मन और इन्द्रियों को वश में रखकर ब्रह्मयज्ञ (वेद-शास्त्रों के स्वाध्याय) में लग जाऊंगा और मुनिवृत्ति में रहूंगा। उत्तरायण के मार्ग से जीने के लिए मैं जप और स्वाध्याय रूप वाग्यज्ञ, ध्यानरूप मनोयज्ञ एवं गुरुशुश्रूषादि रूप कर्मयज्ञ का अनुष्ठान करूंगा ॥३२॥

मेरे जैसा विद्वान् नश्वर फल देने वाले हिंसायुक्त पशुयज्ञ और पिशाचों के समान अपने शरीर के ही रक्त, मांस द्वारा किए जाने वाले तामस यज्ञों का अनुष्ठान कैसे कर सकता है ॥३३॥

६ सुसंवुडो पंचहिं संवरेहिं, इह जीवियं अणवकंखमाणो।
वोसट्ठकाओ सुइचत्तदेहो, महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥४२॥
तवो जोई जीवो जोइठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मेहा संजमजोगसन्ती, होमं हुणामी इसिणं पसत्थं ॥४४॥

—उत्तराध्ययन १२

जो पाँच संवरों से सुसंवृत होता है, जो असंयम-जीवन की इच्छा नहीं करता, जो काय का व्युत्सर्ग करता है, जो शुचि है और जो देह का त्याग करता है, वह महाजयी श्रेष्ठ यज्ञ करता है ॥४२॥

इस यज्ञ में तप ज्योति है। जीवज्योति स्थान है। योग (मन, वचन और

काया की सत् प्रवृत्ति) घी डालने की करछियाँ हैं। शरीर अग्नि जलाने के कण्डे हैं। कर्म ईंधन है। संयम की प्रवृत्ति शान्तिपाठ है। इस प्रकार मैं ऋषि-प्रशस्त (अहिंसक) होम (यज्ञ) करता हूं ॥४४॥

७ **अश्वमेध यज्ञ और नेवला**—युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया एव अत्यधिक दान दिया। वहाँ एक नेवला आया (जिसका आधा शरीर सोने जैसा था) एवं बोला—तुम्हारा यज्ञ कुरुक्षेत्रवासी उंच्छवृत्ति—ब्राह्मण के एक सेर सत्तू के भी बराबर नहीं है।

एकदा उस ब्राह्मण परिवार को उंच्छवृत्ति से एक सेर सत्तू मिला। ब्राह्मण-ब्राह्मणी, पुत्र-पुत्रवधू चारों ने पाव-पाव बाँटा। इतने में एक भूखा ब्राह्मण आया। चारों ने दान दिया। ब्राह्मण ने भोजन करके हाथ धोए। उसके कीचड़ में लोटने से मेरा आधा शरीर सोने का हो गया। तुम्हारा नाम सुनकर यहाँ आया था लेकिन कुछ लाभ नहीं मिला, कारण द्रव्य न्यायोपार्जित नहीं है।

—महाभारत, अश्वमेध पर्व, अध्याय ९०

२० आत्मयज्ञ की श्रेष्ठता

१ श्रेयो द्रव्यमयाद् यज्ञाज्, ज्ञानयज्ञो परंतप !

—गीता ४।३३

द्रव्यमय यज्ञ से ज्ञानयज्ञ श्रेष्ठ है।

२ विधियज्ञाज् जपयज्ञो, विशिष्टो दशभिर्गुणैः।
उपांशुः स्याच्छतगुणः, साहस्रो मानसः स्मृतः।

—मनुस्मृति २।८५

विधि (दर्श-पौर्णमास) यज्ञ से **जपयज्ञ** (बोल-बोलकर जाप करना) दस गुणा उससे **उपांशुयज्ञ** (केवल जीभ एवं होठ हिलें ऐसा जाप) सौ गुणा, और उससे **मानसयज्ञ** (जिसमें जीभ भी न हिले ऐसा जाप) हजार गुणा फल देता है।

३ संसारवृद्धि हेतोः यज्ञादि रूपाद् धूममार्गाद् विपरीतो यम-नियमादि रर्चिमार्गः।

— **वेदान्तदर्शन (स्याद्वादमंजरी, पृष्ठ ८४)**

संसार की वृद्धि करने वाले यज्ञादि रूप धूममार्ग से विपरीत यम-नियमादि रूप अर्चिमार्ग है।

२१ तीर्थ, यज्ञ एवं बाह्य क्रिया-कांडों को महत्त्व देनेवालों के लिए

१ यस्यात्मबुद्धिः कुणपे त्रिधातुके,
स्वधीः कलत्रादिषु भौम इज्यधीः ।
यत्तीर्थबुद्धिः सलिलेन कर्हिचिज्,
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः ॥

—**श्रीमद्भागवत १०।८४।१३**

जो वात-पित्त-कफ रूप तीन धातुओं से बने हुए शवतुल्य शरीर को आत्मा (मैं) समझता है, स्त्री-पुत्र आदि को अपना मानता है, मिट्टी-पत्थर-काष्ठ आदि पार्थिव-विकारों को अर्थात् मूर्तियों को इष्टदेव मानता है तथा पानी को तीर्थ समझता है, वह गोसदृश-ज्ञानियों के बीच गर्दभ के समान है ।

२ **व्यास और शुकदेव**—स्कन्द-पुराण, नागर-खण्ड, पूर्वार्ध, अध्याय १५० में कहा है कि शुकदेव १२ साल गर्भ में रहे, मां को कष्ट होने लगा । तब व्यास ने पूछा—तू कौन है ?

शुकदेव—चौरासी में भटकने वाला ।

व्यास—बाहर आ जा !

शुकदेव—माया में फँस जाऊँगा ।

व्यास—नहीं फँसेगा ।

शुकदेव गर्भ से बाहर आये और तपस्यार्थ चलने लगे । व्यास ने उसे रोकते हुए कहा—बेटा ! ठहर जा, अभी तो तेरे जन्मादि संस्कार करूंगा ।

शुकदेव—इन संस्कारों ने ही तो मुझे संसार में फँसाया है।

व्यास—बेटा ! क्रमशः चारों आश्रमों का पालन करना चाहिये। इनके पालन से ही मुक्ति मिल सकती है।

शुकदेव—पिताजी ! यदि ऐसा ही है तो सबसे पहले हिंजड़ों, गृहस्थों, मृगों एवं भिखारियों को मुक्ति मिलनी चाहिये क्योंकि ये क्रमशः स्वभाव से ही ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं अकिंचन (संन्यासी) हैं।

व्यास—पुत्र-पौत्रादि होने से पितृऋण-देवऋण से मुक्ति एवं स्वर्ग मिलता है।

शुकदेव—तो फिर कुत्तों, सूअरों (इनके पुत्र अधिक होते हैं) एवं गीधों (ये कई पीढ़ियाँ देखते हैं) का कल्याण सर्वप्रथम होना चाहिए। यों कहकर शुकदेव विदा हो जाते हैं।

३ **भार्गव और सुमति**—मार्कण्डेय पुराण, अध्याय १०, श्लोक १० से ४२ तक पिता-पुत्र भार्गव एवं सुमति की चर्चा है। पिता पुत्र को वैदिक मान्यतानुसार वेदपाठ, गृहस्थाश्रम एवं यज्ञ आदि करने का उपदेश देता है। पुत्र को विशेष ज्ञान उत्पन्न होने से वह कहता है—

एवं संसारचक्रेऽस्मिन्, भ्रमता तात ! संकटे।
ज्ञानमेतन्मया प्राप्तं, मोक्षसंप्राप्तिकारकम् ॥२७॥
विज्ञाते यत्र सर्वेयं, ऋग्-यजुः - सामसंहिता।
क्रियाकलापो विगुणो, न सम्यक् प्रतिभाति मे ॥२८॥

पिताजी ! संसार चक्र में भटकते-भटकते मुझे मोक्ष दिलाने वाला यह सद् ज्ञान प्राप्त हुआ है।२७।

इस ज्ञान के प्रभाव से अब मुझे ऋग्, यजु एवं सामवेद में कहे हुए क्रियाकलाप गुणशून्य एवं असम्यक् लगते हैं।२८।

१ प्रेतं पितॄंश्च निर्दिश्य, भोज्यं यत् प्रियमात्मनः ।
श्रद्धया दीयते यत्र, तच्छ्राद्धं परिकीर्तितम् ।।
—**महर्षि मरीचि (निर्णयसिन्धु, परिच्छेद ३)**

प्रेतों और पितरों के लिए श्रद्धा से जो अपना प्रिय भोजन दिया जाता है, उसका नाम श्राद्ध है ।

२ पितॄनुद्दिश्य विप्रेभ्यो, दत्तं श्राद्धमुदाहृतम् ।
—**अगस्त्यमुनि (श्राद्ध-पितृमीमांसा)**

पितरों के निमित्त से जो ब्राह्मणों को दिया गया है, उसे श्राद्ध कहा है ।

३ **पितर**—पितरों की उत्पत्ति महर्षि मनु के पुत्र मरीचि आदि ऋषियों से हुई है । इनके अग्निष्वात्त आदि अनेक गण हैं । जैसे—मरीचि पुत्र, **अग्निष्वात्त** देवों के पितर है । विराट् पुत्र **सोमसद** साध्यगण के पितर हैं । अत्रिपुत्र **बर्हिषद्** दैत्य-दानव-गांधर्व-राक्षस आदि के पितर हैं । भृगुपुत्र **सोमप** ब्राह्मणों के, अङ्गिरापुत्र **हविर्भुज** क्षत्रियों के, पुलस्त्यपुत्र **आज्यप** वैश्यों के और वशिष्ठपुत्र **सुकालिन** शूद्रों के पितर हैं ।

पितृलोक दक्षिण में है, उसका स्वामी यम है, वहीं सब पितर रहते हैं, वे अदृश होते हैं, उनका भोजन भी अदृश है, वे ब्राह्मणों के मुख से खाते हैं । ब्राह्मण जब श्राद्ध में भोजन करते हैं, तब मंत्राहूत पितर उनके शरीर में आ जाते हैं । भोजन से तृप्त होकर वे श्राद्धकर्ता के मृत पूर्वजों को विभिन्न रूप से तृप्त करते हैं अर्थात् देवों को अमृत रूप से, प्रेतों को रुधिर रूप से, राक्षसों को मांस रूप से, पशुओं को तृण रूप से और मनुष्यों को अन्नादि रूप से श्राद्ध में खाया हुआ अन्न भेज देते हैं और

श्राद्धकर्ता को आयु-धन-प्रजा-विद्या-स्वर्ग व मोक्ष देते हैं। जो अपुत्र होते हैं, वे कल्पपर्यन्त प्रेत रूप से निर्जन वन में घूमते हैं।

(मनुस्मृति अ० ३ तथा निर्णयसिन्धु-परिच्छेद ३ के आधार से)

४ आसोज वदी में कर्ण राजा ने दान दिया था, इसलिए श्राद्धों को कनागत (कर्णागत) भी कहते हैं।

५ श्राद्ध का वास्तविक अर्थ मृत पूर्वजों का स्मरण करना है एवं उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है।

२३ श्राद्ध के योग्य-अयोग्य ब्राह्मण

१ श्रोत्रियायैव देयानि, हव्य-कव्यानि दातृभिः ।
अर्हत्तमाय विप्राय, तस्मै दत्तं महाफलम् ।।

—मनुस्मृति अध्याय ३।१२८

दाता को वेदाध्यायी को ही हव्य-कव्य देना चाहिए क्योंकि उस पूज्यतम ब्राह्मण को देवान्न या श्राद्धान्न देने से बहुत फल होता है ।

२ जटिलं चानधीयानं, दुर्बलं कितवं तथा ।
याजयन्ति च ये पूगास्तांश्च श्राद्धे न भोजयेत् ।।१५१।।
चिकित्सकान् देवलकान् मांसविक्रयिणस्तथा ।
विपणेन च जीवन्तो, वर्ज्याः स्युर्हव्यकव्ययोः ।।१५२।।

—मनुस्मृति अध्याय ३

वेदपाठ रहित, जटाधारी-ब्रह्मचारी, दुर्बल (अजितेन्द्रिय), जुआरी और ग्राम्य-पुरोहित— इनको श्राद्ध न खिलावे ।

वैद्य, पुजारी (देवांश खाने वाले), मांस बेचने वाले और वणिक् वृत्ति से (व्यापार से) जीनेवाले ब्राह्मण यज्ञ और श्राद्ध दोनों में त्याज्य हैं ।१५२।

●

२४ श्राद्ध को न माननेवालों का मंतव्य

१ मृतानामपि जन्तूनां, श्राद्धं चेत् तृप्तिकारणम्।
तन्निर्वाणप्रदीपस्य, स्नेहः संवर्द्धयेच्छिखाम्।

—स्याद्वादमंजरी, कारिका ११ टीका

मृत व्यक्तियों को भी यदि श्राद्ध तृप्ति का कारण है, तो बुझे हुए दीप की शिखा को तेल भी बढ़ा देगा।

२ यदि श्राद्ध में दिया हुआ द्रव्य पितरों को मिलता है तो आज की दृश्य दुनिया में सभी को कुछ-न-कुछ तो खाने के लिए मिलता ही है, तो क्या संभव है कि पीछे सभी के पुत्र-पौत्रादि श्राद्ध करते ही हैं? नहीं, क्योंकि मनुष्यों के सिवा (पशु आदि) तो कोई श्राद्ध करते ही नहीं तथा मनुष्यों में भी श्राद्ध करने वाले मनुष्य अपेक्षाकृत बहुत कम हैं।

—वैदिकविचारविमर्शन—श्राद्ध प्रकरण

३ गुरु नानक एक बार हरिद्वार गये। वहां गंगा के किनारे अनेक व्यक्ति पूर्व की ओर मुख करके हाथों से गंगाजल उछाल रहे थे। पूछने पर वे बोले कि पितरों (मृत पूर्वजों) की शान्ति के लिए तर्पण कर रहे हैं। उन्हें शीतल जल पहुँचा रहे हैं। गुरु नानक पश्चिम की तरफ मुख करके गंगा-जल फेंकने लगे। लोगों ने पूछा—यह क्या कर रहे हैं? नानक ने कहा—हमारे देश में दुष्काल पड़ गया है। पानी के अभाव में खेती सूख रही है अतः उन्हें जल पहुँचा रहा हूँ। विस्मित लोगों ने कहा—क्या ऐसे जल पहुँच सकता है? नानक बोले—यदि नहीं पहुँचता तो आपका दिया हुआ—यह जल पितरों को कैसे पहुँचेगा? (सब चुप)।

२५ श्राद्ध आदि में मांस का विधान और निषेध

१ **विधान—**

(क) प्राणात्यये तथा श्राद्धे, प्रोक्षितं द्विज-काम्यया ।
देवान् पितॄन् समभ्यर्च्य, स्वादन् मांसं न दोषभाक् ।।

—याज्ञवल्क्यस्मृति १।१७९

अन्नाभाव में प्राण जाते हों, रोग हों एवं श्राद्ध में निमन्त्रित हों, तो वेदोक्तविधि से संस्कृत मांस, जो देव, द्विज एवं पितरों के लिए बनाया हो, उनकी पूजा करके उसे खाने में दोष नही लगता ।

(ख) नियुक्तस्तु यथान्यायं, यो मांसं नात्ति मानवः ।
स प्रेत्य पशुतां याति, संभवादेकविंशतिम् ।।

—मनुस्मृति ५।३५

श्राद्ध और मधुपर्क में नियुक्त मनुष्य जो मांस नहीं खाता, वह मरकर संभवतः २१ बार पशु होता है ।

(ग) न मांसभक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ।
प्रवृत्तिरेषा भूतानां, निवृत्तिस्तु महाफला ।।

—मनुस्मृति ५।५६

मांस, मद्य और मैथुन सेवन करने में दोष नहीं है क्योंकि यह प्राणियों की प्रवृत्ति है, किंतु इन सब से निवृत्त होना महान् फलदायी है ।

० यह भी पढ़ने में आया है कि "**न मांसभक्षणेऽदोषो**" इस पद्य में लुप्त अकार लगाकर कई विद्वानों ने इस श्लोक का यह अर्थ भी किया है कि मांसभक्षण आदि क्रियाओं में अदोष नहीं है अर्थात् दोष तो अवश्य है किन्तु ये क्रियाएं संसारी जीवों की प्रवृत्ति बन गई हैं, फिर भी इनसे निवृत्त होना महान् फल है ।

—स्याद्वादमंजरी

२ **निषेध—**

न दद्यादामिषं श्राद्धे, न चाद्याद् धर्मतत्त्ववित् ।
मुन्यन्नैः स्यात्परा प्रीतिर्यथा न पशुहिंसया ॥

—**श्रीमद् भागवत ७।१५।७**

धम का मर्मज्ञ पुरुष श्राद्ध में मांस का अर्पण न करे और न उसे स्वयं खाए क्योंकि पितरों की प्रसन्नता जैसी हविष्यान्न से होती है, वैसी पशु-हिंसा से नहीं होती ।

• व्यस्यति पुरुषं श्रेयसः इति व्यसनम् ।।१।।
व्यसनं द्विविधं सहजमाहार्यं च ।।२।।

—नीतिवाक्यामृत १६

जो दुष्कर्म मनुष्य को कल्याण-मार्ग से गिराते हैं, उन्हें व्यसन कहते हैं। व्यसन दो प्रकार के हैं - सहज और आहार्य।

(१) **सहज**—जन्म के साथ उत्पन्न होने वाले व्यसन सहज कहलाते हैं।

(२) **आहार्य**—कुसंग के कारण उत्पन्न होने वाले व्यसन (द्यूतक्रीड़ा, मद्यपान आदि) आहार्य माने जाते हैं।

२ व्यसनस्य च मृत्योश्च, व्यसनं कष्टमुच्यते।
व्यसन्यधोऽधो व्रजति, स्वर्यात्यव्यसनी मृतः।

—मनुस्मृति ७।५३

मृत्यु और व्यसन को ही कष्ट कहा है क्योंकि व्यसनी मरने पर नरक में गिरता है और अव्यसनी मरने पर स्वर्ग को जाता है।

२७ सात व्यसन एवं उनसे हानि

१ द्यूतं च मांसं च सुरा च वेश्या, पापर्द्धि-चौर्ये परदारसेवा ।
एतानि सप्त व्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरकं नयन्ति ॥

—जैनसिद्धान्त बोलसंग्रह, भाग ६, पृष्ठ १५५

(१) जुआ, (२) माँस, (३) मदिरा, (४) वेश्या, (५) शिकार, (६) चोरी, (७) परस्त्रीगमन—ये सात व्यसन आत्मा को घोरातिघोर नरक में ले जाते हैं ।

२ चोरी जारी जो करे, खावे मदिरा-मांस ।
निश्चय करिके नानका ! नरकां करे निवास ॥
पुनः नरक से निकल कर, महापातकी जंत ।
सूकर-कूकर योनि में, भटके काल अनन्त ॥
अन्न-उदक के होत ही, जो खावे मद-मांस ।
काक-गीध का रूप धर, भटके बीच आकाश ॥

—गुरु नानक

३ ये जो हैं, शराब और जुआ, मूढ-विश्वास और मांस—सब शैतान के गंदे काम हैं ।

—कुरान ५।९३

४ जुए पसत्तस्स धणस्स नासो, मंसप्पसत्तस्स दयापणासो ।
वेसापसत्तस्स कुलस्स नासो, मज्जे पसत्तस्स जसस्स नासो ॥
हिंसापसत्तस्स सुधम्मनासो, चोरी-पसत्तस्स सरीरनासो ।
तहा परत्थीसु पसत्तयस्स, सव्वस्स नासो अहमा गई य ॥

—गौतमकुलक

जुए में आसक्त व्यक्ति के धन का नाश होता है, मांस के लोलुप पुरुषों में दया नहीं रहती । वेश्यासक्त पुरुष का कुल नष्ट होता है, मद्यमूर्च्छित

व्यक्ति की अपकीर्ति होती है। हिंसानुरागी धर्म से भ्रष्ट हो जाता है, चोरी का व्यसनी शरीर से हाथ धो बैठता है। परस्त्रीगामी अपना सर्वस्वनाश कर देता है और नीच गति में जाता है।

५ व्यसनों के कुफल—

(क) द्यूताद् राज्यविनाशनं नलनृपः प्राप्तोऽथवा पाण्डवा,
मद्यात् कृष्णनृपश्च राघवपिता पापर्धितो दूषितः।
मांसाच्छ्रेणिक भूपतिश्च नरके चौर्याद् विनष्टा न के।
वेश्यातः कृतपुण्यको गतधनोऽन्यस्त्रीमृतो रावणः।

द्यूत से नल राजा अथवा पाण्डव राज्य-भ्रष्ट हुए। मद्य से कृष्ण का वंश नष्ट हुआ, शिकार से दशरथजी दूषित हुए, मांस-लोलुपता से राजा श्रेणिक नरक गया। चोरी से अनेक जीव नष्ट हुए, वेश्या के कारण कयवन्ना सेठ निर्धन हुआ तथा परस्त्री के निमित्त से राजा रावण की मृत्यु हुई।

(ख) प्रथम पाण्डवां भूप, खेलि जूआ सब खोयो।
मांस खाय बकराय, पाय विपदा बहु रोयो।
बिन जाने मदपान, जोग जादोंगन दज्झे।
चारुदत्त दुख सह्यो, वेसवा-विसन अरुज्झे।
नृप ब्रह्मदत्त आखेट सों, तिम शिवभूति अदत्तरति।
पररमनि-राचि रावन गयो, सातों सेवत कौन गति।

—भूधरदास

(वेश्या-शिकार-चोरी-परस्त्रीगमन—इन चारों व्यसनों का विवेचन पहले-दूसरे भाग में आ गया है अत; द्यूत आदि प्रथम तीन व्यसनों का विवरण यहाँ पढ़िये।)

द्यूत

१ अट्ठावयं न सिक्खेज्जा !

—सूत्रकृतांग ६।१०

द्यूत खेलना मत सीखो !

२ अक्षैर्मादीव्यः !

—ऋग्वेद १०।३४।१३

पासों से मत खेलो !

३ श्रियस्तत्र न तिष्ठन्ति, यत्र द्यूतं प्रवर्तते।
न वृक्षजातयस्तत्र, विद्यते यत्र पावकः।

जहाँ द्यूत क्रीड़ा होती है, वहाँ लक्ष्मी नहीं ठहरती। जहाँ अग्नि जलती है, वहाँ वृक्ष की जातियाँ नहीं ठहरतीं।

४ जुआ खेल क्या है गले में जुआ है।
न आखिर किसी का यह हर्गिज हुआ है। —रतन कवि

५ **व्यसनों का मूल द्यूत**

भिक्षो ! कन्था श्लथा ते ?
नहि सफरिवधे जालमश्नासि मत्स्यान् ?
ते वै मद्योपदंशाः
पिबसि मधु ? समं वेश्यया यासि वेश्याम् ?
दत्वाङ्घ्रि मूर्ध्न्यरीणां
किमु तव रिपवो ? भित्तिभेत्ताऽस्मि येषां,
चौरोऽसि ? द्यूतहेतो—
स्त्वयि सकल गुणा नास्ति नष्टे विचारः।

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ ६४

एक भिक्षु जा रहा था। उससे एक व्यक्ति ने पूछा—हे भिक्षुराज! तुम्हारी कंथा इतनी ढीली कैसे?

उत्तर—भाई! यह कंथा नहीं, किंतु मच्छी मारने के लिए जाल है।

प्रश्न—क्या तुम मच्छी खाते हो?

उत्तर—मछलियां तो मद्य के उपदंश हैं।

प्रश्न—क्या तुम मद्य पीते हो?

उत्तर—वेश्या के साथ पी लिया करता हूँ।

प्रश्न—क्या वेश्या के पास जाते हो?

उत्तर—शत्रुओं के मस्तक पर पैर देकर जाता हूँ।

प्रश्न—क्या तुम्हारे भी शत्रु हैं?

उत्तर—जिनकी भींत फोड़ी थी, वे शत्रु ही हैं।

प्रश्न—क्या तुम चोर हो?

उत्तर—द्यूत खेलने के कारण कभी-कभी चोरी भी कर लेता हूँ। प्रश्न-कर्ता चकित होकर कहने लगा—भाई! तुम्हारे में तो सारे ही गुण अर्थात् दुर्गुण आ गए हैं क्योंकि बुद्धिभ्रष्टों के विचार नहीं होता। तत्त्व यह है कि एक द्यूत के कारण सभी व्यसन आ जाते हैं।

६ द्यूतं समाह्वयं चैव, राजा राष्ट्रान्निवारयेत्।
राज्यान्तकरणावेतौ, द्वौ दोषौ पृथिवीक्षिताम् ॥२२१॥
अप्राणिभिर्यत्क्रियते, तल्लोके द्यूतमुच्यते।
प्राणिभिः क्रियते यस्तु, स विज्ञेयः समाह्वयः ॥२२३॥

—**मनुस्मृति ६**

राजा अपने राज्य में जुआ और समाह्वय दोनों को न होने दे क्योंकि ये दोनों दोष राजाओं के राज्य का अन्त कर देते हैं ॥२२१॥ संसार में निर्जीव वस्तुओं (पासा आदि) से बाजी लगाकर जो खेल खेलते हैं, उसे द्यूत कहते हैं और जो जीवों (मेढ़ा, तीतर, वटेर आदि) से बाजी लगाकर खेल खेलते हैं, उसे **समाह्वय** कहते हैं।

२६ मांस

१ मां स भक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्म्यहम् ।
इति मांसस्य मांसत्वं, प्रवदन्ति मनीषिणः ।।

—मनुस्मृति ५।५५

यहाँ मैं जिसका मांस खाता हूँ, वह परभव में मुझे खाएगा। विज्ञजन मांस शब्द का यह रहस्य बतलाते हैं। (मांस शब्द को उल्टा लिखने से "स मां" हो जाता है)

२ अनुमन्ता विशसिता, निहन्ता क्रयविक्रयी ।
संस्कर्ता चोपहर्ता च, खादकश्चाष्ट घातकाः ।।

—मनुस्मृति ५।५१

(१) अनुमोदन करनेवाला (२) काटनेवाला (३) मारनेवाला (४) मांस को खरीदनेवाला (५) बेचनेवाला (६) पकानेवाला (७) परोसनेवाला (८) खानेवाला—ये आठों घातक-हिंसक माने गए हैं।

३ न हि मांसं तृणात् काष्ठा-दुपलाद् वापि जायते ।
हत्वा जन्तुं ततो मांसं, तस्माद् दोषस्तु भक्षणे ।।

—महाभारत, अनुशासन पर्व ११५।२४

तृण से, काठ से अथवा पत्थर से मांस नहीं पैदा होता, वह जीव की हत्या करने पर ही उपलब्ध होता है, अतः उसके खाने में महान् दोष है।

४ पंचेंदियवहभूयं, मंसं दुग्गंध-असुइबीभच्छं ।
रक्खपरितुलिय भक्खग, मामयजणयं कुगइमूलं ।

मांस पञ्चेन्द्रिय जीवों के वध से उत्पन्न होता है। वह दुर्गन्धमय है,

अपवित्र है, घृणोत्पादक है, रोग पैदा करनेवाला है एवं दुर्गति का मूल कारण है। मांसभक्षक व्यक्ति राक्षस के समान होता है।

५ आत्मार्थं यः परप्राणान्, हिंस्यात् स्वादुफलेप्सया।
व्याघ्र-गृध्र-शृगालैश्च, राक्षसैश्च समस्तु सः॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ४५

जो स्वाद की इच्छा से अपने लिए दूसरे के प्राणों की हिंसा करता है, वह बाघ, गीध, सियार और राक्षसों के समान है।

मांस-निषेध

१ नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां, मांसमुत्पद्यते क्वचित् ।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्य-स्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ॥४८॥
समुत्पत्तिं च मांसस्य, वध-बन्धौ च देहिनाम् ।
प्रसमीक्ष्य निवर्तेत, सर्वमांसस्य भक्षणात् ॥४९॥

—मनुस्मृति-५

जीवों की हिंसा बिना किये कभी मांस उत्पन्न नहीं हो सकता और न ही पशुओं का वध स्वर्ग देने वाला है। इसलिए मांस खाना छोड़ देना चाहिए ॥४८॥

मांस की उत्पत्ति को और जीवों के वध-बन्धन को अच्छी तरह सोचकर सब प्रकार के मांस-भक्षण को त्याग देना चाहिए ॥४९।

२ मांसं पुत्रोपमं मत्वा, सर्वमांसानि वर्जयेत् ।
ध्यान-दानविशुद्ध्यर्थ-मृषिभिर्वर्जितं पुरा ॥४४॥
किं जापहोमनियमै-स्तीर्थस्नानैश्च भारत !
यदि खादन्ति मांसानि, सर्वमेव निरर्थकम् ॥४९॥

—धर्मसंग्रह

मांस को पुत्र के तुल्य समझकर सब प्रकार के मांस का त्याग कर देना चाहिए। ध्यान-दान की विशुद्धि के लिए ऋषियों ने इसका निषेध किया हैं ।४४।

जो व्यक्ति मांस खाता है, उसके जाप, होम, नियम और तीर्थस्नान आदि सभी क्रियायें निरर्थक हैं ।

३ अपने पेट को जानवरों का कब्रिस्तान मत बनाओ ! जिसने जानवरों के मृत्यु समय की करुणा भरी चिल्लाहट सुनी है, वह उनका मांस खा नहीं सकता ।

४ जे रत्त लग्गे कपड़े, जामा होय पलीत।
जे रत्त खाये माणसा, निर्मल कैसे चित्त ॥

—पंजाबी पद्य

५ एन विस्मिल्ला एन झड़का कीन्हा, दया दोनों से भागी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो! आग दोयां घर लागी ॥

६ जिन देशों में मांसाहार अधिक है, उनमें डाक्टरों की संख्या भी अधिक है। भारत में आज से सौ वर्ष पूर्व, वैद्य-डाक्टर बहुत कम थे। ज्यों-ज्यों मांसाहार बढ़ा, वैद्य-डाक्टर भी बढ़ते ही गए।

मांस-त्याग का महत्त्व

१ सप्तर्षयो बालखिल्या स्तथैव च मरीचिपाः ।
अमांसभक्षणं राजन् ! प्रशंसन्ति मनीषिणः ॥९॥
न भक्षयति यो मांसं, न च हन्यान्न घातयेत् ।
तन्मित्रं सर्वभूतानां, मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् ॥१०॥
ददाति यजते चापि, तपस्वी च भवत्यपि ।
मधुमांसनिवृत्त्येति, प्राह चैवं बृहस्पतिः ॥१३॥
सर्वे वेदा न तत् कुर्युः, सर्वे यज्ञाश्च भारत !
यो भक्षयित्वा मांसानि, पश्चादपि निवर्तते ॥१६॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ११५

भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कह रहे हैं कि—राजन् ! सप्तर्षि, बालखिल्य तथा सूर्य की किरणों का पान करने वाले अन्यान्य मनीषी महर्षि मांस न खाने की प्रशंसा करते हैं ॥९॥

स्वायम्भुव मनु का कथन है कि जो मनुष्य न मांस खाता, न पशु की हिंसा करता और न दूसरे से हिंसा करवाता, वह संपूर्ण प्राणियों का मित्र है ॥१०॥

बृहस्पति जी का कथन है—जो मद्य और मांस त्याग देता है, वह दान देता है, यज्ञ करता है और तप करता है अर्थात् उसे दान, यज्ञ और तपस्या का फल प्राप्त होता है ॥१३॥

भारत ! जो पहले मांस खाता रहा हो और पीछे उसका सर्वथा परित्याग कर दे, उसको जिस पुण्य की प्राप्ति होती है, उसे सम्पूर्ण वेद और यज्ञ भी नहीं प्राप्त करा सकते ॥१६॥

२ इष्टं दत्तमधीतं च क्रतवश्च सदक्षिणाः ।
अमांसभक्षणस्यैव, कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥

—महाभारत, अनुशासन पर्व, अध्याय ४५

यज्ञ, दान, वेदाध्ययन तथा दक्षिणा सहित अनेकानेक यज्ञ ये सब मिलकर मांस-भक्षण के परित्याग की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं होते । ●

३२ मांस की ताकत कम

१ अन्नाद् दशगुणं पिष्टं, पिष्टाद्द शगुणं पयः।
पयसोऽष्टगुणं मांसं, मांसाद् दशगुणं घृतम् ॥

—चाणक्यनीति १०।१६

अनाज से दस गुना बल आटे में, आटे से दस गुना दूध में, दूध से आठ गुना मांस में और मांस से दस गुना बल घृत में होता है।

२ बादाम में ९१ प्रतिशत, चना, चावल, मक्खन एवं घी में ८५ प्रतिशत, गेहूँ-मक्कई में ८६, किसमिस में ७३, मलाई में ६६, मांस में २६, अंडे में २६ और मछली में १३ प्रतिशत शक्ति मानी जाती है।

— श्रावकधर्मप्रकाश पुंज ८

३ डाक्टर फोर्ड एम. डी. कहते हैं कि मटर, चना, आदि धान्यों में २३ से ३० प्रतिशत नाइट्रोजन, ५० से ५८ तक नशास्ता एवं तीन प्रतिशत के लगभग नमक वाले पदार्थ होते हैं, किन्तु मांस में नाइट्रोजन केवल ८ से ९ प्रतिशत होती है तथा नशास्ता तो नहीं के समान होता है, अतः मांस मस्तिष्क की नसों को शक्ति नहीं पहुँचा सकता।

३३ मांसाहार से होने वाले भयङ्कर रोग

१ मांसाहार शक्ति प्रदान करने के बदले निर्बलता का शिकार बनाता है और उससे जो नाइटोजीनस पदार्थ उत्पन्न होता है, वह स्नायु पर जहर का काम करता है।

—सर टी. लोडर ब्रंटन

२ डाक्टर एल्फ्रेड साहब ने लंदन के डाक्टरों की सभा में अपना निबन्ध पढ़ते हुए कहा था कि मांस में ८० से ९० प्रतिशत कीड़े होते हैं।

३ मांसाहारियों के प्राय: कैंसर, क्षय, पायेरिया, गठिया, मृगी, उन्माद, अनिद्रा, लकवा, पथरी आदि भयंकर रोग अधिक उत्पन्न होते हैं। देखिये उनके कतिपय उदाहरण।

४ **कैंसर—**

(क) मांसाहार से युरीक एसीड की वृद्धि होती है और युरीक एसीड बढ़ने से कैंसर होता है।

—डा० डौग्लास मेकडोनल्ड

(ख) मेरे गहरे अनुभव के बाद यह सिद्ध हुआ है कि इंगलैंड में कैंसर का दर्द अधिक होने का कारण खासकर मांस की खुराक का बढ़ना ही है।

—डा० सर जेम्स सयिर एम. डी., एफ. आर. ओ. पी.

(ग) चिकागो की विश्वस्त गिनती के अनुसार ३३ वर्ष के अन्तर्गत कैंसर के रोगियों में ८१ प्रतिशत वृद्धि हुई है। कोपनहेगन और म्युनीच में भी यह रोग बहुत ज्यादा मात्रा में बढ़ रहा है। मांस खानेवाले २५ देशों के कैंसर रोगियों का मिलान करने पर पता लगा है कि १९ देशों में कैंसर के रोगियों की संख्या अधिक, ५ देशों में अत्यन्त अधिक और एक

देश की संख्या साधारण निकली। जबकि मांस का सूक्ष्म-उपयोग करने वाले अथवा मांस नहीं खाने वाले ३६ देशों में कैंसर के रोगियों का प्रमाण अधिक नहीं मिला।

० एक रोगी को तीन वर्ष से यह रोग हुआ था। मांसाहार का त्याग करने से वह नीरोग हो गया। जबकि उसके बहुत ही भयंकर जाति का कैंसर था।

—डा. जे. ऐच. केलोग

(घ) एक उनचास वर्ष की स्त्री को कैंसर का दर्द था। उसे अन्न-फलाहार पर रखने से वह नीरोग हो गई।

—डा. विलियम लेम्ब

५ दांत का दर्द—

(क) मांसाहार बराबर नहीं चबाया जाने से दांत, गला और नाक के दर्दों को उत्पन्न करता है।

—प्रो० किथ

(ख) इंगलैण्ड, अमेरिका (जहां मांसाहार प्रचलित है) में १५० वर्ष पहले की बजाय अब दांत के दर्द दस गुने अधिक पाये जाते हैं।

—मि० आर्थर एण्ड वुड

(ग) ब्रिटिश डेण्टल एसोसिएशन को स्कूल के विद्यार्थियों के दांतों का परीक्षण करने से मालूम हुआ कि १०५०० में से ८६२५ दंत-रोगी हैं।

— मि० थोमस जे० रोगन

६ एपेण्डीसाइटीज—

(क) रुमानिया के २०००० किसान जो अन्न, फल एवं शाक पर निर्वाह करते हैं, उनमें से सिर्फ एक व्यक्ति को यह रोग था, जब कि मांस-भक्षण करने वालों में से हर २२१ मनुष्य के पीछे १ मनुष्य को इस रोग का शिकार पाया गया।

—डा. लुकास शेम्पोनीअर

(ख) फ्रेंच-सिपाही मांस पर निर्वाह करते हैं, इसी कारण उनको एपेण्डी-

साइटीस का दर्द विशेष रूप में होता है और अरब लोग अन्न-फल-शाक पर रहते हैं अतः वे इस रोग से मुक्त हैं।

— **फ्रेंच सेना के सर्जन जनरल**

(ग) अन्न-फल-शाक पर रहने वाले ईस्ट अफ्रीका निवासियों को यह दर्द नहीं होता था। — **चीकागो के डा० सेन**

७ **हृदय पर असर—**

(क) मांस खाने वालों के हृदय अन्न-फल-शाक खाने वालों के हृदय से दस गुना अधिक जोर से धड़कता है। मांसाहारियों का हृदय एक मिनट का विचार करते हुए १० गुना अधिक चलता है तो एक घंटे में ६०० गुना अधिक दौड़ता है। फलस्वरूप शरीर के यंत्र घिस जाते हैं।

—मि० जे० एच० ओलीवर

(ख) दिमाग एवं ज्ञान तन्तुओं के ऊपर मांस की खुराक का बहुत बुरा असर पड़ता है और इसी कारण मांसाहारी देशों में पागलपन के रोगों की अधिकता देखी जाती है। सरकारी सूत्रों के अनुसार इंगलैंड की जनता में प्रति २५० मनुष्यों में से एक मनुष्य पागल होता है और पाँच-पाँच अपराधियों में से एक पागल है। यतीमखानों में हर तीन मनुष्यों में से दो कमजोर दिमाग के ज्ञात हुए हैं। इसी प्रकार स्कूलों में पढ़ने वाले लड़कों की जांच होने पर इंगलैंड में करीब १,५०,००० लड़के कमजोर दिमाग के मालूम पड़े हैं।

—डा० रेन्टोल

८ **गठिया** - जलोदर आदि लीवर एवं किडनी से सम्बन्ध रखने वाले रोगों का मुख्य कारण युरीक एसीड गिना जाता है और वह युरीक एसीड मांस की खुराक में अधिक प्रमाण में होने से मांसाहारियों में यह दर्द खास कर दृष्टिगोचर होता है।

मांस सदृश नाइट्रोजन वाले पदार्थों से लीवर, किडनी तथा ऐसे ही दूसरे भागों पर भी अधिक बोझ पड़ता है और उससे संधिवात, लीवर तथा किडनी सम्बन्धी अन्यान्य दर्द उत्पन्न होते हैं।

—डा० वोननुरडन

३४ अमांसाहारी

१ अमांसादा निरोगाश्च, बलवन्तः सुखान्विताः ।

—इतिहाससमुच्चय

मांस नहीं खाने वाले निरोग, बलवान एवं सुखी होते हैं ।

२ अमांसाहारी कमजोर नहीं होते । अध्ययन से पता लगता है कि प्रो० राममूर्ति एव महाबली मरहठे मांस नहीं खाते थे । राजा विक्रमादित्य, सम्राट् अशोक, राम, कृष्ण, महावीर, दयानन्द, नानक, सुकरात, अरस्तू, मिस्टर एडीसन, सर बर्नार्ड शा, जनरल बोथा, ब्रिगेडियर उस्मान तथा महात्मा गांधी आदि अनेक महान व्यक्ति भी शाकाहारी ही थे ।

—अध्ययन के आधार पर

३ शेर, साँप, बाघ आदि मासाहारी जंतुओं की अपेक्षा हाथी, ऊंट, बैल, घोड़ा आदि अधिक बोझ उठा सकते हैं ।

४ यूरोप के ब्रुसेल्स विश्वविद्यालय आदि में जो परीक्षाएं हुई हैं, उनमें भी मांसाहारियों से शाकाहारी ही श्रेष्ठ प्रमाणित हुए हैं । इन परीक्षाओं में दस हजार विद्यार्थी बैठे थे, उनमें से पांच हजार को केवल शाक, फल, फूल एवं अन्न आदि पर और पांच हजार को मांसाहार पर रखा गया था । छः महीनों के बाद जाँच करने पर मालूम हुआ कि शाक-आहारी सब बातों में तेज रहे । मांस-आहारियों में क्रोध, क्रूरता आदि दुर्गुण एवं शाक-आहारियों में क्षमा, दया, प्रेम आदि सद्गुण विशेष मिले ।

—जैनत्व की झांकी, पृष्ठ ६४-६५

५ समणा भगवंतो जहा मंसं न खायंति ।

—निशीथचूर्णि ३।१

श्रमण भगवंत मांस नहीं खाते ।

६ अमज्ज-मंसासिणो ।

—सूत्रकृतांग श्रु० २, सूत्र २३

—दशवैकालिक चूलिका २, गा० ७

—प्रश्नव्याकरण, अध्ययन ६

मुनि अमद्य-मांसाशी होते हैं अर्थात् मद्य-मांस का सेवन नहीं करते ।

३५ मांसभक्षकों के लिए ध्यान देने योग्य बातें

१ शुक्र-शोणित संभूतं, मांसं यः स्वादते नरः ।
स जनः कुरुते शौचं, हसन्ति तत्र देवताः ।।

—प्राचीन संग्रह से

रज-वीर्य से उत्पन्न मांस को जो मनुष्य खाता है और फिर वह यदि शुद्धि रखना चाहता है, तो देवता उसका उपहास करते हैं।

२ य आममांसमदन्ति, पौरुषेयं च ये क्रविः गर्भा न खादन्ति के शवा, स्नानितो नाशयामसि ।।

—अथर्ववेद ८।६।२३

जो कच्चा-पक्का मांस खाते हैं तथा गर्भ (अण्डे) खाते हैं, वे शरीर को कब्र बनाते हैं। उनका नाश कर देना चाहिए, उन्हें राज्य में नहीं रहने देना चाहिए।

३ हे अग्नि ! तू मांसभक्षकों को अपने ज्वालामय मुख में रख ले !

—ऋग्वेद १०।८७२

४ यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते, यो अश्व्येन पशुना यातुधानः ।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने ! तेषां शीर्षाणि हर सापि वृश्च ।।

—ऋग्वेद ८।४।८।१६

जो मनुष्य-राक्षस घोड़े और गाय का मांस खाता हो एवं गाय के दूध को चुरा लेता हो, हे अग्नि देव ! उसका मस्तक काट डालो।

५ मांस-मांस सब एक है, मुर्गी हिरनी गाय।
आंख देख नर खात है, ते नर नरकहि जाय ।।

—नानक

६ बकरी खाती पात है, ताकि काढ़त खाल।
जो नर बकरी खात है, ताको कवण हवाल ॥

—कबीर

७ मांस मछरिया खात है, सुरापान से हेत,
वे नर नरक हि जाएंगे, माता-पिता समेत ॥
तिलचर मछली खाय के, कोटि गऊ दे दान,
काशी करवत ले मरे, तो भी नरक निदान ॥

—कबीर

८ तुहं पियाइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि य।
खाविओमि समंसाइं, अग्गिवन्नाइं णेगसो।

—उत्तराध्ययन १९।६९

तुझे खण्ड किया हुआ और शूल में खोंस कर पकाया हुआ मांस प्रिय था, यह याद दिलाकर मेरे शरीर का मांस काटकर उसे अग्नि जैसा लाल कर मुझे खिलाया गया। (मृगापुत्र अपनी माता से कह रहा है)

९ धन्वन्तरि वैद्य ने स्वयं मत्स्य-गाय-महिष आदि का मांस खाया और रोगी को खिलाया, अतः वह मरकर छठी नरक में गया।

—विपाक० श्रु० १, अ० ६

३६ मनुष्य का कलेजा खानेवाला औघड़

१ औघड़ अपना नाम वसंत, पिता का नाम मंगरू और निवास स्थान का नाम हजारीबाग बताता है। पहले यह वाराणसी (बनारस) के श्मशान में जाकर चिताओं से इधर-उधर छिटके हुये गरम मांस के लोथड़ों को बड़े शौक से खाता था। एक दिन गंगा में बहाई हुए एक लाश को चीरते हुए देखकर इसे वहां से भगा दिया गया। यह औघड़ २-३ वर्ष से गंगा पार फतेहपुर गांव में रहा करता था और **सिद्ध बाबा** के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। इसी बीच में कई जगह कुछ ठठरियों, खोपड़ियों और खून के छींटे देखकर पुलिस ने छानबीन की और वह इसी सिलसिले में उक्त औघड़ की झौंपड़ी तक पहुँच गई। बताया जाता है कि पुलिस ने इसे झौंपड़ी में खून से सना हुआ पाया और मानव-कलेजे का कलेवा करते हुए देखा। पास में रक्त से भरी हुई एक बोतल भी थी। पुलिस ने जमीन में गड़ी हुई सम्बन्धित मानव की लाश का सिर बरामद किया। पुलिस का अनुमान है कि कुष्ठ के रोगियों को कुष्ठ अच्छा कर देने का आश्वासन देकर औघड़ बाबा अपनी झौंपड़ी में ले आता और किसी बहाने से उनकी हत्या कर अपनी हविश पूरी करता। बाराणसी की पुलिस ने इसे हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ कर जिला-जेल में भेज दिया। (मांसाहारी कितने निर्दय एवं निघृंण होते हैं, यह इस घटना से समझने योग्य है।)

—नवभारत १९७२, फरवरी १५

३६ मद्य, मद्यनिषेध

१ मज्जं पुण कट्ठपिट्ठनिप्फन्नं ।

—स्थानांग ४।१

मद्य काष्ठ एवं अनाज को सड़ाकर बनाया जाता है।

२ सुरा वै मलमन्नानां, पाप्मा च मलमुच्यते ।
तस्माद् ब्राह्मणराजन्यौ, वैश्यश्च न सुरां पिबेत् ॥९३॥
गौड़ी पैष्टी च माध्वी च, विज्ञेया त्रिविधा सुरा ।
यथैवैका तथा सर्वा, न पातव्या द्विजोत्तमैः ॥९४॥

—मनुस्मृति, अध्याय ११

सुरा (मदिरा) अन्न के मल को कहते हैं। मल को पाप कहते हैं। इस लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य सुरा को न पीवें ॥९३॥

सुरा तीन प्रकार की है—गौड़ी, पैष्टी और माध्वी ।

१ **गौड़ी**—गुड़ से बनी हुई ।

२ **पैष्टी**—अनाज को सड़ा कर बनाई हुई ।

३ **माध्वी**—महुवे से बनी हुई ।

इनमें जैसी एक है, वैसी ही तीनों हैं। इसलिए ब्राह्मण उनका पान न करें।

३ सुरं वा मेरगं वा वि, अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खु, जसं सारक्खमप्पणो ॥

—दशवैकालिक ५।२।३६

अपने संयम का संरक्षण करता हुआ भिक्षु सुरा, मेरक या अन्य किसी भी प्रकार का मादक रस आत्म-साक्षी से न पीएं।

४ बुद्ध ने पंचशील में मद्य-निषेध की पंचम शील (मज्जं न पायव्वं) के रूप में स्थापना की। जातककथा में बतलाया गया है कि एक बार सुरा-महोत्सव पर मदिरा पीकर पांच सौ स्त्रियों ने बुद्ध की धर्मसभा में बहुत ही अभद्रता का प्रदर्शन किया। बुद्ध ने और कोई चारा न देखकर अपने योग-बल से उनका मद उतारा एवं उनकी अश्लीलता का निवारण किया।

—नैतिकविज्ञान, पृष्ठ ५६

५ फ्रेंच सरकार मद्यपान को रोकने के लिए २० करोड़ डालर प्रतिवर्ष खर्च करती है। वारसा-पोलेण्ड में १३ चिकित्सालय चालू हैं। सोवियत कजाकिस्तान में मद्य पीकर गाड़ी चलाने वाले ड्राइवरों को गोली से उड़ा देने तक का विधान है।

—जैनभारती, १९६५ मई ३०, डा० जेठमल भंसाली के लेख से

६ न चेत् सुरां पिबन्ति।

—ऋग्वेद ३।३।१३।२

दानव भी विवेकी बन सकते हैं, यदि वे सुरापान छोड़ दें!

३७ मद्यपान की मात्रा

१ फ्रांस मद्यपान में सर्वोपरि है, फ्रांसवासी अनुमानतः २० करोड़ गैलन मदिरा प्रतिवर्ष पीते हैं। पोलेण्ड में ६० प्रतिशत स्कूल के बच्चे शराब पीते हैं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका एवं ब्रिटेन में भी प्रायः यही स्थिति है।

—जैन भारती, १९६५ मई ३, डा० जेठमल भंसाली के लेख से

२ **भारत में १६ अरब रुपयों की शराब**—भारत में प्रतिवर्ष १६ अरब रु० की शराब पीई जाती है। यदि इस विशाल धनराशि का अन्य कार्यों में व्यय किया जाए तो जहां १०००० मध्यम दर्जे के उद्योग स्थापित हो सकते हैं। वहाँ ५० लाख लोगों को प्रत्यक्ष और १ करोड़ को अप्रत्यक्ष रोजगार मिल सकता है।

अ० भा० मद्यनिषेध परिषद् के महामन्त्री श्री रूपनारायण ने आज यहाँ बताया कि सरकार को शराब से राजस्व के रूप में २ अरब रु० की प्राप्ति होती है।

उन्होंने ने बताया कि १९४७ में यह राजस्व केवल ४७ करोड़ रु० था, जो गत २५ वर्षों में ४ गुना बढ़ गया। इसी अवधि में शराब की खपत २० गुनी बढ़ गयी है।

—हिन्दुस्तान, सितम्बर २५।१९७२

३८ मद्यपान के दुर्गुण

१ विवेकः संयमो ज्ञानं, सत्यं शौचं दया क्षमा।
मद्यात् प्रलीयते सर्वं, तृण्यां वह्निकणादिव।

—योगशास्त्र ३।१६

आग की चिनगारी से घास के ढेरवत् मदिरापान से विवेक, संयम, ज्ञान, सत्य, शौच, दया एवं क्षमा आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं।

२ मधुपानाद् मतिभ्रंशो, नराणां जायते खलु।

मद्यपान से मनुष्यों की निश्चय ही बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

३ मद्ये हि प्रकटो दोषः श्रीह्रीनाशादिरैहिकः।

मद्यपान में श्री (लक्ष्मी) ह्री (लज्जा) नाशादि इहलोक सम्बन्धी भी अनेक दोष हैं।

४ वैकल्यं धरणीपात—मयथोचितजल्पनम्।
सन्निपातस्य चिह्नानि, मद्यं सर्वाणि दर्शयेत्।

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १०४

विकलता, पृथ्वी पर गिरना, अनुचित बोलना आदि सन्निपात के सभी लक्षण मद्य दिखलाता है।

५ कृमिरास कुवास शरीर दहै, शुचिता सब छीबत जात सही,
जिहिं पान किए सुधि जात हिये, जननी जन जानत नार यही।
मदिरा सम आन निषिद्ध कहा, यह जान भले कुल में न गही,
धिक है उनको वह जीभ जलो, जिन मूढ़न के मत लीन कही।

—भूधरदास

६ वैरूप्यं व्याधिपिण्डः स्वजनपरिभवः कार्यकालातिपातो।
विद्वेषो ज्ञाननाशः स्मृतिमतिहरणं विप्रयोगश्च सद्भिः॥
पारुष्यं नीचसेवा कुलबलविलयो धर्मकामार्थ-हानिः।
कष्टं वै षोडशैते निरुपचयकरा मद्यपानस्य दोषाः॥

—हरिभद्रीयाष्टक-टीका

१ मद्यपान से शरीर कुरूप और बेडौल हो जाता है।

२ व्याधियाँ शरीर में घर कर लेती हैं।

३ घर के लोग तिरस्कार करते हैं।

४ कार्य का उचित समय हाथ से निकल जाता है।

५ द्वेष उत्पन्न होता है।

६ ज्ञान का नाश होता है।

७-८ स्मृति और बुद्धि का नाश हो जाता है।

९ सज्जनों से जुदाई होती है।

१० वाणी में कठोरता आती है।

११ नीचों की सेवा करनी पड़ती है।

१२ कुल की हीनता होती है।

१३ शक्ति का ह्रास होता है।

१४-१६ धर्म, काम एवं अर्थ की हानि होती है।

इस प्रकार आत्मा को गिराने वाले मद्यपान के सोलह कष्टदायक दोष हैं।

७ एकतश्चतुरो वेदा, ब्रह्मचर्यं तथैकतः।
एकतः सर्वपापानि, मद्यपानं तथैकतः।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०४

जैसे चारों वेद एक तरफ हैं और ब्रह्मचर्य एक तरफ है, उसी प्रकार जगत के सारे पाप एक तरफ हैं और मद्यपान का पाप एक तरफ है।

८ पीकर शराब होता है शर बशर।
यक तो शर बशर में है, दोयं शराब में।

—उर्दू शेर

९ पहले शराब को आदमी पीता है और फिर शराब को शराब पीती है—बार-बार इच्छा होती है एवं अंत में शराब आदमी को पी जाती है

—जापानी लोकोक्ति

१० शराब पीना और कुछ भी नहीं, केवल अपनी इच्छा से पागल बनना है।

—सेनेका

११ **अंब फलै पत लायके, महू फले पत खोय।**
पत खोये को आचरै, ताकी पत किम होय ?

१२ एक प्याला बुद्धिहीन, दूसरा पागल और तीसरा मूर्च्छित कर देता है।

—शेक्सपियर

१३ शराब की बोतल—

मंत्री के हाथ में शराब की बोतल थी। शराबी राजा ने पूछा—क्या है ?

मंत्री—कुछ नहीं।
राजा—क्या कहा ?
मंत्री—नहीं-नहीं घोड़ा है।
राजा—झूठ बोलता है। कहां है घोड़ा ?
मंत्री—नहीं-नहीं, हाथी है।
राजा—फिर झूठ ?
मंत्री—नहीं-नहीं, कुत्ता है।
राजा—फिर वही बात ?
मंत्री—नहीं-नहीं, मुर्दा है।

राजा ने फिर आग्रह किया। तब मंत्री ने बोतल दिखला दी।

राजा ने पूछा—इतनी देर झूठ क्यों बोला ?

मंत्री ने कहा—मैंने बिल्कुल सत्य बोला है। सुनिये ! इसका रहस्य। पीने से पहले यह शराब कुछ भी नहीं है। एक बोतल पीने के बाद मनुष्य घोड़े की तरह विकारी बन जाता है। दूसरी बोतल पी लेने पर हाथीवत्

मन्दोन्मत्त हो जाता है। तीसरी पीने से कुत्ते की तरह भोंकने लगता है और अत्यधिक पी लेने से मनुष्य मुर्दे की तरह बेहोश हो जाता है। राजा को ज्ञान हुआ एवं उसने शराब पीनी छोड़ दी।

१४ शहरों का राक्षस—

बादशाह—शहरों का राक्षस कहाँ रहता है?

वजीर—शीर्ष महल में।

बादशाह—उसके साथी कौन-कौन हैं?

वजीर—दरिद्रता, बीमारी, मार-पीट एवं पागलपन ये चार उसके साथी हैं।

बादशाह—नाम क्या है?

वजीर—शराब।

३६ शराबियों की दुर्दशा

१ हुत्सु पिता सो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।
उधर्न नग्ना जरन्ते ।

—ऋग्वेद ८।२।१२

दिल खोलकर शराब पीने वाले बदमस्तों की तरह लड़ते हैं और नंगों की तरह रात को कोलाहल करते हैं ।

२ मद्यपस्य शवस्येव, लुठितस्य चतुष्पथे ।
मूत्रयन्ति मुखे श्वानो, व्यात्ते विवरशङ्कया ।।१११।।
मद्यपानरसे मग्नो, नग्नः स्वपिति चत्वरे ।
गूढं च स्वमभिप्रायं प्रकाशयति लीलया ।।११२।।

—योगशास्त्र, ३

मुर्दों की तरह सड़क पर पड़े हुए शराबियों के फटे हुए मुख में खड्ढा समझकर कुत्ते मूत जाते हैं ।।१११।।

मद्यपान में निमग्न मनुष्य नग्न होकर राजमार्ग में सो जाता है और न कहने की गुप्त बात कह डालता है ।।११२।।

३ तुहं पिया सुरा सीहू, मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि य ।।

—उत्तराध्ययन, १६।७०

तुझे सुरा, सीधु, मैरेय और मधु ये मदिराएं प्रिय थीं, यह याद दिलाकर मुझे जलती हुई चर्बी और रुधिर पिलाया गया । (मृगापुत्र अपनी माता से कह रहा है)

४ सन् १७८६ की बात है—रूस की रानी कैथरिना के कहने से मुख्यमंत्री शहजादे वाटुसकिन ने किसानों को एक बृहद् राजभोज दिया । उस अव-

सर पर किसानों को मनमानी शराब पिलाई गई। मादकता में बेभान किसान रात को इधर-उधर खेतों में पड़े रहे। उस रात सर्दी इतनी कड़ाके की पड़ी कि प्रातःकाल होने तक सोलह हजार किसान मौत की गोद में सोये हुए मिले।

—नैतिकविज्ञान, पृष्ठ ५६

५ जयपुर (गुलाब-बाग) के चिड़ियाघर में नशे में झूमते हुए एक मनुष्य ने शेर के पिंजरे की सलाखा में अपना एक हाथ डाला एवं शेर उसे खा गया। ज्यों ही दूसरा हाथ डालने लगा—चौकीदार ने आकर उसे रोका।

—नवभारत, १६ जनवरी १९६९

६ मध्यावधि चुनाव के प्रचारार्थ कई आदमी एक गाँव में गए। शराब पीकर पागल हो गए एवं जिस दल का प्रचार करना था, उसी की निन्दा करने लगे।

—नवभारत, १५ जनवरी १९६९

७ एक बार मद्रास सरकार से स्त्रियों ने प्रार्थना की थी कि—हमारे पतियों को कानून द्वारा शराब छुड़वाइए ! बच्चे भूखे मर रहे हैं।

८ पीथल के तोख पार्‌यो महम्मद को मान गार्‌यो,
बुद्धिसिंह को बिगार्‌यो नीके निरधारों में,
खून विन जेत खोयो डूंगरसिंह को डबोयो,
जोर को मरन जोयो हियामांझ हारों मैं,
तखत को कीन्हों तंग सज्जन को मृत्यु संग,
कोटापति को अपंग **ऊमर** उचारों मैं
तोष पोष ओस मारु काहे अफसोस कोष—
हाय दारु ! तेरो दोष कहा लों पुकारों मैं।

—कवि ऊमरदान

४० तमाखू, तमाखू का प्रचार

१ सन् १४९२ नवम्बर में कोलंबस ने 'क्यूबा' टापू ढूंढ़ा एवं उसने वहां के जंगली मनुष्यों को पत्ते लपेट कर मुंह में डाले हुए धुआं निकालते देखा। वह कुछ पत्ते यूरोप में लाया, चर्चा चली और लोग पीने लगे। सन् १४९४ में कोलंबस ने दुबारा अमेरिका की यात्रा की, वहां लोगों को तमाखू सूंघते देखा। सुनकर यूरोपियन स्त्रियां तमाखू सूंघने लगीं। सन् १५०३ में स्पेनिश लोग "पेरागुआ" पर विजय करने गये। वहां के सिपाही तमाखू खाते थे एवं शत्रुओं की आंखों में तमाखू का रस थूकते थे। तब से यूरोप में तमाखू का खाना चला।

—अध्ययन के आधार पर

२ सन् १९१६ के विश्वयुद्ध के बाद फ्रांस में तमाखू के अभाव में वहां की स्त्रियां एक सिगरेट के बदले सिगरेटदाता को अपना सतीत्व देने लगी थीं।

—सेक्षुअल लाइफ ड्यूरिङ् दि वर्ल्डवार

३ रामायण-महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में तमाखू का वर्णन दृष्टिगोचर नहीं होता। मुसलमान लोग हुक्का पीते थे, ऐसा वर्णन शिवराजविजय काव्य में मिलता है।

४१ तमाखू में जहर

१ एक वैज्ञानिक कहता है कि एक रत्तल अच्छी तमाखू में इतना 'निकोटीन' विष है जो तीन मिनट में २५०० कुत्तों को मारने में समर्थ है। दूसरा विष 'कोलोडाइन' है, जिसकी एक बूंद का बीसवाँ भाग बिजली के धक्के के समान स्थिति पैदा करके मेंढक को मार डालता है। तीसरा विष 'फरफरोल' भी भारी नुकसान करने वाला है।

२ अमेरिका में तमाखू के लाखों मन रस से कृषि-विनाशक कीड़े मर जाते हैं – हाटनाटाट के निवासी तमाखू के तेल से सांपों को मारते हैं—एक बूंद तेल से काला नाग मर जाता है।

—संजीवनी बूटी, पृष्ठ ८६

३ शिकागो के शरीर-शास्त्री के मत से तमाखू में जो नीकोटीन विष होता है। उसके एक ओंस के $\frac{१}{४००}$ भाग यदि इंजेक्सन द्वारा मनुष्य के खून में मिला दिया जाय तो वह मर जाएगा। इसका $\frac{१}{५}$ प्रत्येक सिगरेट में रहता है।

४२ तम्बाखू में २४ घातक विष एवं उसका दुष्प्रभाव

१ (१) **निकोटीन विष**—से कैंसर पैदा होता है।

(२) **कार्बन मोनोक्साइड विष**—से दिल की बीमारी, सांस रोग, दमा और आंखों की रोशनी धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

(३) **मोर्श गैस विष**—से शक्ति नष्ट होकर नपुंसकता प्राप्त होती है।

(४) **अमोनिया विष**—से पाचन शक्ति और जिगर बिगड़ जाते हैं।

(५) **कोलीडीन विष** से सिर चकराने लगता है, नसें कमजोर पड़ जाती हैं।

(६) **पीरिडीन विष**—से आंतों में खुश्की और पेट में कब्ज रहने लगता है।

(७) **कार्बोलिक एसिड विष**—से अनिद्रा, स्मरण शक्ति का विनाश और चिड़चिड़ेपन का स्वभाव बनता है।

(८) **परफेरोल विष** - से दांत पीले, मैले और कमजोर बनते हैं।

(९-१०) **एजालिन और सायलोजन विष**—से खून खराब हो जाता है।

(११-१२) **फुरफुरल विष और प्रूसिक एसिड विष**—से थकान, जड़ता और उदासी पैदा होती है। तम्बाकू में पाये जाने वाले अन्य विषों के कारण खांसी, टी० बी०, अन्दरूनी सूजन, लकवा तथा खून का पानी तक बन जाता है।

—भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिका, ११-२-६५

४३ सिगरेट

१ एक सिगरेट से १८ मिनिट आयु कम होती है।

—अमरीका के डॉक्टर स्पेंस

२ सिगरेट पीने वाले के हृदय को २४ घण्टों में तीन हजार बार अधिक धड़कन पड़ती है। कारण, निकोटीन से हृदय की गति बढ़ जाती है।

— शिकागो के शरीरशास्त्री

३ **सिगरेट का धुँआ पड़ौसी को भी हानिकारक—**

दो ब्रिटिश डाक्टरों ने बताया है कि यदि किसी कमरे में हवा आने-जाने की व्यवस्था ठीक न हो और उसमें कोई व्यक्ति धूम्रपान करनेवाले किसी अन्य व्यक्ति के पास बैठा रहे तो उसके शरीर में सिगरेट का धुआं जाएगा और इस प्रकार सिगरेट न पीनेवाले व्यक्ति के भी शरीर में कार्बन मॉनो आक्साइड गैस पहुँच जाएगी। यह कॉर्बन मॉनो आक्साइड गैस धूम्रपान न करने वाले व्यक्ति के रक्त के हैमोग्लोबिन से मिलकर कारबोक्सी हेमोग्लोबिन बनाएगी, जो उसके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होगी।

डाक्टरों ने एक कमरे में ८० सिगरेट और दो सिगार जलाकर तथा उसमें १२ व्यक्तियों को ७८ मिनट तक रखकर परीक्षण किया। इससे इन व्यक्तियों के शरीर में विषैली कारबोक्सी हेमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ गई।

— हिन्दुस्तान, मार्च २५, १९७३

४ (क) **सिगरेट से बहरापन**—फिलोडेलफिया के डॉ० विलियम वेस के अनुसार अत्यधिक सिगरेट पीने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या धीमी आवाज को नहीं सुन पाती है।

यह निष्कर्ष व्यापारिक क्षेत्र में काम करने वाले ९७ व्यक्तियों के (जिनमें ७७ सिगरेट पीने वाले और २० न पीनेवाले शामिल थे) स्वास्थ्य-परीक्षण द्वारा निकाला गया है।

डॉ० वेस का कहना है कि तमाखू के धुएँ से श्वांस-संस्थान को जो क्षति पहुँचती है, उससे सुनाई नहीं पड़ता।

(ख) **सिगरेट से कैंसर**—दस सिगरेट प्रतिदिन बीस वर्ष तक पीने से श्वास नलियों में कैंसर हो जाता है।

एक जर्मन विशेषज्ञ के अनुसार ७०,००० सिगरेट पीने के बाद कैंसर के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। चाहे यह मात्रा दस प्रतिदिन के हिसाब से बीस वर्षों में ली जाए अथवा बीस प्रतिदिन के हिसाब से दस वर्षों में ली जाए।

—हिन्दुस्तान, अप्रैल १२, १९७०

५ **सिगरेट से मार-काट**—कलकत्ता में तस्करी से अमेरिका से लायी गई एक ऐसी नशीली सिगरेट बिकती है, जिसे पीकर वहाँ के वीटनिक युवक अपने घर के अन्य सदस्यों को मारते हैं, दांत से काटते हैं और शृगालों की तरह तबतक चिल्लाते हैं, जबतक वे बेहोश नहीं हो जाते। (देखिए चित्र)—

— धर्मयुग

४४ तमाखू का निषेध

१ तमाखुपत्रं राजेन्द्र ! भज मा-ज्ञानदायकम् ।
तमाखुपत्रं राजेन्द्र ! भज माऽज्ञानदायकम् ।।

राजन् ! उस लक्ष्मी और ज्ञान देने वाले आखुपत्र श्री गणेशजी का भजन करो ! लेकिन अज्ञानदाता तमाखू-पत्र का सेवन मत करो । (इस श्लोक के दो अर्थ होते हैं ।)

२ **तमाखू भक्षण पर खेद—**

समझ तमाखू सूगली कुत्ता न खावै काग ।
ऊंट टाट खावै नहीं, अपणो जाण अभाग ।
अपणो जाण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ो ।
सूकर भूंडी समझ, निपट निकलै नहिं नेड़ो ।
बुरा पशु बच जाय, अहर निशि खाय न आखू ।
बड़ा सोचरी बात, तिका नर खाय तमाखू ।

—भाषा श्लोकसागर

३ **तमाखू सूंघने का निषेध—**

रग बग मूंछां रीठ, फबै छोड़ो फुरणारै,
क्यूंहिक उतरै कंठ, चिपै क्यूंहिक चरणांरै,
खांसी आवै खलक, सूग लख आवे सारां ।
मजलस बिगड़े मजो, ठचक जद पड़ै ठचारां ।
हूँ कहूँ सुणो हितु हुओ, छाजां भर-भर छार दो ।
सूगली सूंघ सैणा सुघड़, नाक न कीजे नारदो ।

—भाषा श्लोकसागर

४ हुक्का-निषेध—

होका से हुजमत गई, लाज शरम गई ऊठ।
घृत बेचकर लायो तमाखू, गई हियारी फूट।
गई हियारी फूट, घर-घर आग नैं डोलै।
ऊँचा कुल रो होय, बचन तिहां निरता बोलै।
कहै **गिरधर** कविराय, सुनो रे सज्जन लोकों।
हिवड़ो दाझणहार, दूर तज दीजे होको।

५ तमाखू का त्याग—

अमरीकी कैंसर सोसाइटी के अनुसार १ अक्टूबर तक दो करोड़ १० लाख व्यक्तियों ने सिगरेट पीनी छोड़ दी, उनमें १ लाख तो डाक्टर हैं। (वहां सिगरेट पीने वाले २ लाख डाक्टर हैं) सन् १९६८ में ६५ हजार व्यक्ति फेफड़ों के कैंसर से मरे थे।

—हिन्दुस्तान २२, अक्टूबर १९६८

तमाखू के समर्थक

१ बिडौजा पुरा पृष्ठवान् पद्मयोनिं, धरित्रीतले सारभूतं किमस्ति।
चतुर्भिर्मुखैरित्यवोचद् विरञ्चि-स्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुः।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०४

इन्द्र ने ब्रह्मा से पूछा कि पृथ्वी में सारभूत चीज क्या है ? ब्रह्मा ने अपने चारों मुखों से कहा—तमाखु-तमाखु-तमाखु-तमाखु।

(यह तमाखू के समर्थकों का कथन है)

२ बादशाह और बीरबल तमाखू के खेत के पास होकर कहीं जा रहे थे। वहाँ एक गधा खड़ा था। बादशाह ने हंसकर कहा—तमाखू को गधे भी नहीं खाते। बीरबल ने उत्तर दिया—हां हजूर ! जो गधे होते हैं, वे नहीं खाते।

(बीरबल तमाखू का व्यसनी था)

३ **वैष्णवों की कल्पना—**

श्रीकृष्णः पूतनायाः स्तनमलमपिबत्, कालकूटेन पूर्णं,
प्रस्कन्नं भूप्रदेशे किमपि च पिबतो यत्तदा तस्य वक्त्रात्।
तस्मादेषा तमाखुः सुरवरपरमोच्छिष्टमेतद् दुरापं,
स्तुत्वा नत्वा मिलित्वा ह्यनिशमतिमुदा सेव्यते वैष्णवाग्र्यैः।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०४

श्रीकृष्ण ने जब पूतना राक्षसी के स्तन पर लगे हुए कालकूट का पान किया था, उस समय उनके मुख से उसका कुछ अंश पृथ्वी पर गिर पड़ा। बस उसीसे यह तमाखू बनी है, अतः विष्णु भगवान् का उच्छिष्ट मानकर वैष्णवों के अग्रगण्य लोग भी इस तमाखू का स्तुति एवं विनय-पूर्वक सेवन करते हैं।

६

४५ चाय

१ कफ कट्टण सुस्ती हरण, नींद-नाश बल क्षीण।
लोही का पानी करे, गुण दो, अवगुण तीन।

—एक अनुभवी

२ भ्रातः कस्त्वं ? तु चायो।
गमनमिह कुतो ? वारिधेः पूर्वपारात्।
कस्य त्वं दण्डधारी ?
किमु नहि विदितं श्रीकलेरेव राज्ञः ॥
चातुर्वर्ण्यं विधात्रा
विरचितममलं ब्रह्मणा धर्महेतो—
रेकीकर्तुं बलात्तन्
निखिलजगति रे ! शासनादागतोऽस्मि।

एक पथिक ने चाय से पूछा—भाई ! तू कौन है ?

चाय—मेरा नाम चाय है।

पथिक—कहां से आये हो ?

चाय—समुद्र के पूर्वतट से आया हूं।

पथिक—किसके दंडधारी हो ?

चाय—कलि महाराज का सिपाही हूं।

पथिक—किसलिए आए हो ?

चाय—ब्रह्मा ने धर्म के लिए जो चार वर्ण बनाये थे, उन्हें एकाकार करने के लिए मैं कलि महाराज के शासन से आया हूं।

दूसरा कोष्ठक

१ राजनीति

१ सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च,
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या।
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च,
वारांगनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥

—भर्तृहरि नीतिशतक, ४७

राजनीति वेश्या के समान अनेक प्रकार से बरतती है। यह कहीं सत्य, कहीं असत्य, कहीं कठोर, कहीं प्रियभाषिणी, कहीं हिंसक, कहीं दयालु, कहीं कृपण, कहीं उदार तथा कहीं अधिक व्यय करनेवाली और कहीं अधिक संचय करने वाली हो जाती हैं।

२ नीति एक साधारण नाड़ी की धड़कन है और राजनीति उसका ज्वर है।

—बैन्डेल फिलिप

३ राजनीति कहती है कि हाथ आए दुश्मन को छोड़ना और अपनी हार खरीदना, एक ही चीज के दो नाम हैं।

४ मूर्ध्न्यारोपितखड्गस्य, प्रणाम इति कः क्रमः।

—महापुराण

जो मस्तक पर तलवार रखे, उसे प्रणाम करना (राजनीति में) संगत नहीं है।

५ बिल्वं बिल्वेन हन्यताम्।

—कौटलीय-अर्थशास्त्र ९।२

बेल से बेल तोड़ना चाहिए अर्थात् शत्रुओं को परस्पर भिड़ाये रखना चाहिए।

६ धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति।

—शुक्लयजुर्वेद १।८

मारते हुए को मारो! जो हम पर आघात करता है, उसे नष्ट कर दो।

७ सत्यधर्मविहीनेन, न संदध्यात् कथंचन।
सुसंधितोऽप्यसाधुत्वादचिराद् याति विक्रियाम्।

—पञ्चतन्त्र, ३।२४

सत्यधर्म विहीन-शत्रु के साथ कभी संधि न करो क्योंकि दुष्ट होने के कारण वह तुरन्त बदल जायेगा।

८ राजनीति व धर्म वे वस्तुएँ हैं, जिनमें प्राय: सामंजस्य नहीं होता।

—बर्क

९ राजनीति के सदृश दूसरा कोई जुल्म नहीं।

—डिजरायली

१० राजनीति साधु के लिए नहीं है।

—महात्मा तिलक

११ धर्मनीति में जो हुआ, राजनीति का मेल।
कांजी-मिश्रित दूध-सा, **चन्दन**! होगा खेल॥
धर्मनीति सहती नहीं, दंभ बराये नाम।
राजनीति का तो भला, कूटनीति है नाम॥

—चन्दनमुनि

१२ सभी राजनीतिक संस्थाएं अपने झूठों के परिणामस्वरूप ही अन्त में मिट जाती हैं।

—जॉन आरबुथनॉट

१३ वास्तविक राजनीति यथार्थता को स्वीकार करने में है।

—हैनरी एडम

२ भारत की राजनीतिक स्थिति

१ **संविधान**—२६ जनवरी, १९५० से भारत का संविधान अमल में है। भारत-संघ के अन्तर्गत १८ राज्य और ९ संघीय-क्षेत्र हैं। भारत सर्वप्रभु-सत्तासम्पन्न लोकतंत्रीय गणराज्य है, और राष्ट्रमण्डल (कामनवेल्थ) का सदस्य है। इस देश की सरकार संसदीय-प्रणाली की है तथा प्रत्येक वयस्क (२१ वर्ष य अधिक आयु के) नागरिक को मताधिकार प्रदान किया गया है। इसका संवैधानिक-प्रमुख राष्ट्रपति है, जो संसद के दोनों सदनों और राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों से बने निर्वाचक-मण्डल द्वारा पांच साल के लिए चुना जाता है।[1] उपराष्ट्रपति राज्यसभा और लोकसभा के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होता है और वह राज्यसभा की पदेन अध्यक्षता करता है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में बना मंत्रिमंडल राष्ट्रपति को सहायता व परामर्श देता है।

(क) संसद—संघ या यूनियन के विधान-मण्डल को संसद (पार्लियामेंट) कहते हैं। इसके दो सदन हैं—राज्यसभा और लोकसभा।

० **राज्यसभा**—राज्यसभा में २५० से अधिक सदस्य नहीं होते। इनमें से १२ सदस्य साहित्य, कला, विज्ञान, समाजसेवा आदि के क्षेत्रों में अपनी ख्याति के कारण राष्ट्रपति द्वारा नामजद किए जाते हैं। शेष राज्य की आबादी के अनुसार राज्यों की विधानसभाओं द्वारा सानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर एकल परिवर्तनीय प्रणाली से चुने जाते हैं।

नोट १, विधानसभाओं, राज्यसभा और लोकसभा के सदस्य राष्ट्रपति को चुनते हैं—उनकी संख्या भारत में ८ लाख ४५ हजार है, इनमें काँग्रेस के पास ४ लाख ५१ हजार हैं एवं विपक्ष में ३ लाख ९४ हजार हैं।

—**हिन्दुस्तान अप्रैल ७, १९६७**

राज्यसभा कभी भंग नहीं होती। हर दूसरे वर्ष एकतिहाई सदस्य सदस्यता से मुक्त होते जाते हैं। राज्यसभा की सदस्यता के लिए न्यूनतम आयु ३० वर्ष होनी चाहिए।

० **लोकसभा**—लोकसभा के सदस्यों की इस समय संख्या ५१८ है। ये सदस्य वयस्क मताधिकार के आधार पर राज्यों के निर्वाचन-क्षेत्रों से प्रत्यक्ष मतदान से चुने जाते हैं।[1] लोकसभा यदि बीच में भंग न कर दी जाए तो साधारणतः इसका कार्य-काल पांच साल होता है।

(ख) **राज्य**—राज्यों की शासन-पद्धति केन्द्रीय सरकार के अनुरूप है। प्रत्येक राज्य के विधान-मण्डल में राज्यपाल के अतिरिक्त दो या एक सदन होते हैं विधान परिषद् और विधान सभा। कुछ राज्यों में एक सदन की ही व्यवस्था है। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में वना मंत्रिमंडल राज्यपाल को सहायता व परामर्श देता है।

संघ या यूनियन और राज्यों के विधि-नियामक अधिकारों का नियमतः तीन सूचियों द्वारा होता है। संघ की संसद को अखिल भारतीय स्तर के ९७ विषयों पर कानून बनाने का अधिकार है। राज्यों की सूची में ६६ विषय हैं। तीसरी सूची समवर्ती है और इसमें ४७ विषय हैं, जिनके संबंध में केन्द्र और राज्य दोनों ही कानून बना सकते हैं। परन्तु राज्य व केन्द्रीय कानून में भेद होने पर केन्द्रीय कानून मान्य होता है।

संविधान ने केन्द्रीय सरकार को संसद द्वारा निर्धारित सीमा तक कर्ज लेने का अधिकार दिया है। राजस्व आय के वितरण के बारे में समय-समय पर सिफारिश करने के लिए राष्ट्रपति वित्तआयोग नियुक्त करते हैं। केन्द्र व राज्यों के हिसाब-किताब की निगरानी व नियंत्रण के लिए राष्ट्रपति एक लेखानियंत्रक एवं एक महालेखा-परीक्षक नियुक्त करते हैं। इसके प्रतिवेदन संसद और विधानसभाओं के सम्मुख पेश किए जाते हैं।

नोट १—पांच-पांच लाख व्यक्तियों के प्रतिनिधि लोकसभा के सदस्य होते हैं।

(ग) **संशोधन**—संविधान में संसद ही संशोधन कर सकती है। अब तक २१ संशोधन हो चुके हैं। संशोधन विषयक विधेयक प्रत्येक सदन में प्रस्तुत किया जाना चाहिए और सदन के कुल सदस्यों एवं उपस्थित सदस्यों में कम से कम दो-तिहाई सदस्यों के बहुमत से स्वीकृत और राष्ट्रपति द्वारा संपुष्ट होना चाहिए।

(घ) **न्यायपालिका**—भारत के सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीमकोर्ट) का एक मुख्य न्यायाधिपति होता है, और अधिक से अधिक उसमें १३ न्यायाधीश होते हैं, जो राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किए जाते हैं। ये ६५ वर्ष की आयु तक कार्य कर सकते हैं। न्यायाधिपति के लिए भारत का नागरिक होना अनिवार्य है और उसे भारत के एक या एक से अधिक उच्च न्यायालयों (हाईकोर्टों) के कार्य का कम से कम १० वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

(ङ) **निर्वाचन**—संसद व विधानसभाओं के निर्वाचन-कार्य के वास्ते एक निर्वाचन-आयोग है। देश भर में होने वाले निर्वाचनों के नियंत्रण और निरीक्षण का इसको अधिकार दिया गया है। यह राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त मुख्य आयुक्त की देख-रेख में कार्य करता है। मुख्य निर्वाचन-आयुक्त की सेवा सम्बन्धी अवधि और शर्तें सर्वोच्च न्यायालय के ही समान होती हैं।

(च) **राजभाषा**—अनुच्छेद ३४३ की व्यवस्था के अनुसार संघ की राजभाषा नागरी लिपि में लिखी हिन्दी मानी गई है, जिसमें अंकों के अन्तर्राष्ट्रीयरूप (रोमन अंकों) का प्रयोग होता है। किन्तु अहिन्दी भाषी जनता की सुविधा के वास्ते २६ जनवरी, १९६५ के बाद भी अंग्रेजी का व्यवहार हिन्दी के साथ-साथ अनन्त काल तक होता रहेगा। राज्य अपने-अपने क्षेत्र के लिए अपने यहाँ प्रचलित किसी भाषा को कानून बनाकर राज्य की राज्यभाषा घोषित कर सकते हैं।

(छ) **संकटकालीन व्यवस्था** – संविधान के अनुच्छेद ३५२ के अनुसार, यदि राष्ट्रपति को यह विश्वास हो जाय कि युद्ध के कारण, बाहरी हमले की वजह से या आन्तरिक गड़बड़ के कारण संकटकालीन अवस्था है, तो वह आपदकाल की घोषणा कर सकता है।

किसी राज्य की वैधानिक व्यवस्था भंग होने पर या होने की आशंका होने से राष्ट्रपति मब या जिसमें देश की सुरक्षा खतरे में पड़ने की आशंका है, कुछ शासकीय कार्य अपने हाथ में ले सकता है। राज्य के राज्यपाल द्वारा यह रिपोर्ट भेजने पर कि राज्यकार्य वैधानिक दृष्टि से चलाना सम्भव नहीं या वह अन्य कारणों से यह विश्वास करले कि राज्य का शासन संवैधानिक विधियों से संभव नहीं है. तो वह स्वयं उस राज्य का कार्यभार ग्रहण कर सकता है।(अनुच्छेद ३५६)।

(ज) नागरिक उड्डयन—नागरिक उड्डयन का महत्त्व तेजी से बढ़ रहा है। इस समय सरकारी क्षेत्र में ८६ हवाई अड्डे हैं। इनमें तीन-दमदम (कलकत्ता), सान्ताक्रुज (बम्बई) और पालम (नई दिल्ली) अन्तर्राष्ट्रीय हैं। ६ कस्टम हवाई अड्डे घोषित किए गए हैं। इलाहाबाद में सिविल एविंयेशन ट्रेनिंग सेण्टर है। १२ सहायता प्राप्त उड्डयन क्लब हैं। हवाई परिवहन पूर्णतः सरकारी क्षेत्र में है। इसका संचालन दो निगम करते हैं, एयर इण्डिया और इण्डियन एयर लाइन्स।

(झ) सड़कें—भारत में सड़कों की कुल लम्बाई ४,८०,००० मील है। सड़कें, राजपथ, प्रदेशपथ, जिलारोड और ग्रामपथ, इन चार भागों में विभक्त हैं। राजपथ, राज्यों की राजधानियों, बन्दरगाहों, विदेशी राज-पथों को मिलता है। देश में संचार की यह मुख्य प्रणाली है। प्रदेशपथ राज्यों में मुख्यतः ट्रंकरोड है। जिलारोड जिलाओं के मुख्य कार्यालयों में पहुंचता है और ग्रामपथ, देहात की आवश्यकताएं पूरी करते हैं।

(ञ) जहाजरानी—भारत का समुद्रतट ३,५३५ मील से अधिक लम्बा है। सब देशों के व्यापारिक जहाज इसके बंदरगाहों में आते हैं। तटवर्ती व्यापार एकमात्र भारतीय जहाजों द्वारा होता है। भारत की जहाजरानी अब तेरह लाख टन की सीमा पार कर गई है। भारत में ६ मुख्य बन्दर-गाह हैं—कलकत्ता, विशाखापत्तनम्, मद्रास, कोचीन, बम्बई और कांडला।

(ट) कृषि—भारत कृषि-प्रधान देश है। शायद ही कोई ऐसी फसल हो, जो यहां न होती हो। मुख्यतः चावल, गेहूं, ईख, तिलहन, कपास, पटसन और चाय की खेती होती है। प्रतिएकड़ उपज कम है। भारतीय कृषि

आज भी प्रकृति की दया पर निर्भर है। बाढ़ और सूखा दोनों ही इसके शत्रु हैं। इन पर विजय पाने के लिए जल-विद्युत की अनेक विशाल योजनाएं शुरू की गई हैं। इनमें दामोदर-घाटी, भाखड़ानंगल, हीराकुंड, तुंगभद्रा, मयूराक्षी, भवानी और गंगापुर तथा रिहन्द परियोजनाएँ मुख्य हैं।

—**भारतज्ञानकोष** १९७१-७२, पृष्ठ ६१

२ **आमचुनाव**—भारत में वयस्क मताधिकार की पद्धति संविधान के अनुच्छेद ३२६ के अन्तर्गत अपनाई गई। इसके अन्तर्गत उन सभी को मताधिकार प्राप्त हैं, जो २१ वर्ष के हो चुके हैं। किसी को भी लिंग, जाति और धर्म के आधार पर मतदान के अधिकार से वंचित नहीं किया गया है। ऐसी भी कोई शर्त नहीं है कि मतदान का अधिकार पाने वाला शिक्षित हो, या कर देता हो या किसी सम्पत्ति का मालिक हो। केवल वे लोग ही मतदान के अधिकार से वंचित हैं, जो देश के नागरिक नही हैं, पागल हैं, अथवा किसी अपराध व भ्रष्टाचार के लिए दंडित किए जा चुके हैं।

चुनाव-आयोग के अनुसार वयस्क मताधिकार भारत के सर्वसाधारण में, उसकी व्यावहारिक सूझबूझ में निष्ठा की अभिव्यक्ति है।

पिछले आम चुनावों में मतदाताओं की सूची वयस्क मताधिकार के आधार पर तैयार की गई और १९७१ के चुनावों में भी ऐसा ही किया गया।

सन् १९५२ के प्रथम आम चुनाव में १७ करोड़ ३० लाख लोगों को मत देने का अधिकार था। सन् १९६२ के आम चुनाव में २१ करोड़ से भी अधिक मतदाता थे, सन् १९६७ के आम चुनाव में पच्चीस करोड़ से भी अधिक मतदाताओं ने भाग लिया। इनमें से ६० से ७० प्रतिशत ने मतदान में भाग लिया। १९७१ में मतदाताओं की संख्या २७ करोड़ २० लाख हो गई। इसमें लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के उम्मीदवार शामिल हैं। कुछ उम्मीदवार निर्विरोध भी चुने गए।

—**भारतज्ञानकोष** १९७१-७२, **पृष्ठ ७७-७८**

३ **होमगार्ड**—पन्द्रह जनबरी सन् १९६३ को सरकार ने होमगार्ड की स्थापना की। इसमें देश-भर से १० लाख व्यक्ति भरती करने का लक्ष्य रखा गया। होमगार्ड—(१) आन्तरिक सुरक्षा कायम रखने में मदद करेंगे। ये पुलिस की भी मदद करेंगे। (२) हवाई आक्रमण-आग-बाढ़ आदि के समान संकट आने पर मदद करेंगे। (३) ये संकटकालिक श्रमसेना का काम करेंगे। इसमें १६ से ४० साल की आयु के व्यक्ति भरती हो सकते हैं।

—**भारतज्ञानकोष**, १९७१-७२

४ **ओहदे के अनुसार उच्च पदाधिकारियों का क्रम**—

१ राष्ट्रपति
२ उपराष्ट्रपति
३ प्रधानमंत्री
४ उपप्रधानमंत्री
५ राज्यपाल
६ भूतपूर्व राष्ट्रपति
७ भूतपूर्व गवर्नर जनरल
८ ले० गवर्नर
९ सर्वोच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश
१० लोकसभा के अध्यक्ष
११ केन्द्रीय मंत्रिमंडल के मत्री
१२ भारतरत्न से विभूषित व्यक्ति
१३ १७ तोपों या अधिक की सलामीवाले भारतीय रियासतों के शासक
१४ राज्यों के मुख्यमंत्री
१५ उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश
१६ विदेश मंत्रालय के महासचिव
१७ चीफ ऑफ स्टाफ या वह जनरल जो उसके समकक्ष हो
१८ उच्च न्यायालय के प्रमुख न्यायाधीश
१९ संघ-लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष
२० लोकसभा के सदस्य

—**भारत ज्ञानकोष**, १९७१-७२

५ **भारत का राष्ट्रीय चिन्ह**—भारत सरकार ने २६ जनवरी १९५० ई० को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में सारनाथ व सांची में सम्राट् अशोक के बनाए सिंह-स्तम्भ को स्थान दिया है। राष्ट्रीय चिन्ह में तीन शेर हैं और नीचे उपनिषद् का वाक्य 'सत्यमेव जयते' अंकित है।

६ **भारत का राष्ट्रीय ध्वज**—२२ जुलाई १९४७ ई० को विधान-परिषद् ने राष्ट्रीय ध्वज स्वीकृत किया, यह ध्वज तिरंगा है। सबसे ऊपर केसरिया रंग, मध्य में श्वेत रंग और निचले भाग में हरा रंग है। इस ध्वज की लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात ३ और २ का है। इसके श्वेत रंग वाले भाग के बीचों बीच नीले रंग का एक धर्मचक्र बना हुआ है। यह सारनाथ के धर्मचक्र के समान है।

— सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति-परिचय, सन् ७२, पृष्ठ १२१, १२२

७ भारत के प्रमुख राजनीतिक दल एवं उनके चिन्ह—

कांग्रेस (नई)	गाय और बछड़ा
कांग्रेस पुरानी)	चर्खा कातती हुई महिला
कम्युनिस्ट पार्टी	गेहूँ की बाली और हंसिया
स्वतन्त्र पार्टी	तारा
कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)	हंसिया, हथौड़ा, तारा
जनसघ	दीपक
प्रसोपा	झोंपड़ी
संसोपा	बरगद का पेड़
रिपब्लिकन पार्टी	हाथी
भारतीय क्रांतिदल	हल लिए हुए किसान

—भारत ज्ञानकोष, सन् १९७१-१९७२ पृष्ठ ७८

८ **भारत का राष्ट्रीय-गान—**

जन-गण-मन अधिनायक जय हे ! भारत-भाग्यविधाता !
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल बंगा ।।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंगा ।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे ।।
गाएं तव जय गाथा, जन-गण-मन अधिनायक जय हे !
भारत-भाग्यविधाता ।
जय हे ! जय हे ! जय हे ! जय जय जय जय हे ।

—**रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विश्वकवि)**
(स्वीकृति २४ जनवरी सन् १९५०)

९ **राष्ट्र (भारत) की कतिपय ज्ञातव्य वस्तुएं—**

राष्ट्रध्वज	—तिरंगा (झंडा)
राष्ट्रगीत	—जन-गण-मन········
राष्ट्रपक्षी	—मोर
राष्ट्रग्रन्थ	—संविधान
राष्ट्रभाषा	—हिन्दी
राष्ट्रचिन्ह	—श्री अशोक स्तम्भ
राष्ट्रधन	—बालक
राष्ट्रनीति	—तटस्थता
राष्ट्रनिर्माता	—शिक्षक
राष्ट्रतारा	—सत्यमेव जयते
राष्ट्रपर्व	—१५ अगस्त, २६ जनवरी
राष्ट्रधर्म	—मानवता
राष्ट्रसंत	—श्री विनोबा भावे
राष्ट्रकवि	—श्री रामधारीसिंह दिनकर
राष्ट्रपिता	—महात्मा गांधी
राष्ट्रपति	—श्री वी० वी० गिरि
राष्ट्रखेल	—हॉकी
राष्ट्रआह्वान	—जय जवान-जय किसान !

३ राजनीतिज्ञ

१ राजनीतिज्ञ वह जंतु है, जो एक बाड़े पर बैठकर भी दोनों कान पृथ्वी पर सटाये रखता है।

२ राजनीतिज्ञ पारे की तरह है, अगर तुम उस पर अंगुलि रखने की कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता।

—आस्टिन

३ राजनीतिज्ञ भावी निर्वाचन के विषय में सोचता है जबकि राजनीतिकुशल भावी-पीढ़ी के विषय में चिन्ता करता है।

४ राष्ट्रपति-पद के विषय में चिन्तन

१ **जॉर्ज वाशिंगटन**—"मैं राष्ट्रपति बनने के बजाय कब्र में रहना ज्यादा पसन्दकरूँगा।"

टामस जेफर्सन—"यह पद केवल अनवरत काम लादता है और नित्यप्रति किसी-न-किसी मित्र की क्षति होती है।"

अब्राहम लिंकन—"नरक के स्वामी को यदि ऐसी ही दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, जैसी मुझे यहाँ उठानी पड़ रही हैं तो मुझे शैतान पर भी दया आती है।"

थियोडोर रूजवेल्ट—"मैं राष्ट्रपति पद का आनन्द भोगता हूँ, और काम करना पसन्द करता हूँ। लेकिन यह परेशानी पैदा करने वाला तथा चक्कर में डालने वाला है।"

वुड्रो विल्सन—"कभी-कभी ऐसे अवसर आते हैं, जब मैं भूल जाता हूँ कि मैं राष्ट्रपति हूँ।"

हरवर्ट हूवर—"राष्ट्रपतियों को एकान्त के दो ही अवसर प्राप्त होते हैं—एक प्रार्थना का और दूसरा मछली मारने का।

स्वर्गीय राष्ट्रपति **जॉन एफ कैनेडी** ने अमरीकी राष्ट्रपति के पद को "उच्च और एकाकी" बताया था।

(ये सभी अमरीकी राष्ट्रपति थे)

—**हिंदुस्तान, नवम्बर ५,** १९६४

२ भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति पद को कैद मानते थे। मुक्त होने पर उन्होंने कहा था—आज मुझे इतना आनन्द है, जितना छुट्टी होने पर बच्चों को होता है।

५ राजा, राजा की महिमा

१ पर्जन्यमिव भूतानामाधारः पृथिवीपतिः ।

—कविताकौमुदी

राजा प्राणियों को मेघ की तरह आधार भूत है ।

२ न राज्ञः परं दैवतम् । —चाणक्यसूत्र ३७२

राजा से बढ़कर कोई देवता नहीं है ।

३ राजा बन्धुरबन्धूनां, राजा चक्षुरचक्षुषाम् ।
राजा पिता च माता च, सर्वेषां न्यायवर्तिनाम् ।।

—पञ्चतंत्र १।३७७

राजा अबन्धुओं का बन्धु है, अंधों की आंख है तथा सभी न्यायवर्ती व्यक्तियों का माता-पिता है ।

४ बुद्धिशस्त्रः प्रकृत्यङ्गो, धनसंवृतिकञ्चुकः ।
चारेक्षणो दूतमुखः, पुरुषः, कोऽपि पार्थिवः ।।

—शिशुपालवध

बुद्धि जिसका शस्त्र है, सेना, अमात्य आदि जिसके अंग हैं । दुर्भेद्य-मंत्र की सुरक्षा जिसका कवच है, गुप्तचर जिसके नेत्र हैं और संदेशवाहक दूत जिसका मुख है—राजा इस प्रकार का कोई अलौकिक पुरुष ही है ।

५ राजानं प्रथमं वन्दे, ततो भार्यां ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकेऽस्मिन्, कुतो भार्या कुतो धनम् ।।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १४७

पहले राजा को और बाद में स्त्री एवं धन को नमस्कार करता हूँ क्योंकि राजा की अविद्यमानता में कहां स्त्री और कहाँ धन ?

(६) राजा का शरीर—

इन्द्रात् प्रभुत्वं ज्वलनात् प्रतापं, क्रोधो यमाद्वैश्रवणाच्च वित्तम् ।
पराक्रमं रामजनार्दनाभ्या-मादाय राज्ञः क्रियते शरीरम् ॥
—**भावदेव सूरि**

इन्द्र से प्रभुता, अग्नि से प्रताप, यम से क्रोध, वैश्रवण से धन और रामकृष्ण से पराक्रम लेकर राजा का शरीर बनाया जाता है।

(७) राजा के गुण—

पात्रे त्यागी, गुणे रागी, भोगी परिजनैः सह ।
भावबोद्धा रणे योद्धा, प्रभुः पञ्चगुणो भवेत् ॥
—**सुभाषितरत्नभांडागार**, पृष्ठ १४८

पात्र को दान देने वाला, गुणों का प्रेमी, परिजनों के साथ वस्तु का उपभोग करने वाला, दूसरे के भावों को भांपने वाला और युद्ध करने में वीर राजा इन पांच गुणों से युक्त होना चाहिए।

(८) राजा का अपमान—

बालोऽपि नावमन्तव्यो, मनुष्य इति भूमिपः ।
महती देवता ह्येषा, नररूपेण तिष्ठति ॥ —**मनुस्मृति-७।८**

बालक और मनुष्य समझकर राजा का कभी अपमान नहीं करना चाहिए क्योंकि राजा में मनुष्य के रूप से एक बड़ी देवी विराजमान है।

(९) राजा के विषय में विविध—

(क) राजा करे सो न्याव, पासो पडै सो दाव,
० राजा मानै सो राणी, और भरे पाणी।
—**राजस्थानी कहावतें**

(ख) वरे मानी ते घरे मानी। —**गुजराती कहावत**

(ग) राजा री आस करणो, पण आसंगो नहीं करणो।
रावलो तेल पल्लै झेल।

० राजा बिना नगरी सूनी।
० मादलियो मर्‌यो र गोठ बिखरी। —**राजस्थानी कहावतें**

६ श्रेष्ठ राजा

१ योऽनुकूल-प्रतिकूलयोरिन्द्र-यमस्थानं स राजा ।

—नीतिवाक्यामृत, ५।१

राजा वस्तुतः वही है, जो अनुकूल जनों के लिए इन्द्र एवं प्रतिकूल जनों के लिए यम के समान है ।

२ जो देश के कड़े बोल सहता है, वही देश का स्वामी है ।
जो देश के लिए दुःख सहता है, वही सच्चा राजा है ।

—ताओ उपनिषद्, ७८

३ सत्यं शौर्यं दया त्यागो, नृपस्यैते महागुणाः ।

—हितोपदेश, ३।१२९

सत्य, शूरता, दया और त्याग—ये चार राजा के बड़े गुण माने गए हैं ।

४ न्यायेन मेदिनीनाथो राजते ।

राजा न्याय से शोभा पाता है ।

५ विजितात्मा तु मेधावी, स राज्यमभिपालयेत् ।

—महाभारत

जो आत्मविजयी एवं बुद्धिमान होता है, वही राजा अच्छी तरह से राज्य करता है ।

६ व्यक्तक्रोध-प्रसादश्च, स राजा पूज्यते जनैः ।

जो राजा समयानुसार क्रोध करना एवं प्रसन्न होना जानता है, जनता द्वारा वही पूज्य होता है ।

७ चक्षुषा मनसा वाचा, कर्मणा च चतुर्विधम् ।
प्रसादयति यो लोकं, तं लोकोऽनुप्रसीदति ।

—विदुरनीति, २।२५

जो राजा प्रेम दृष्टि से, मन से, प्रिय वचनों से और जनहित कार्यों से प्रजा को प्रसन्न करता है, प्रजा उसी राजा से प्रसन्न रहती है।

८ प्रतापवति राज्ञि निष्ठुरे सति न भवन्ति राष्ट्रकण्टकाः।

—**नीतिवाक्यामृत**, ८।२२

जिस देश में राजा प्रतापी (पुण्यशाली-राजनीतिज्ञ-तेजस्वी) तथा कठोर शासन करने वाला होता है, उसके राज्य में राष्ट्रकण्टक—प्रजा को पीड़ित करने वाले अन्यायी-चोर-डाकू आदि नहीं होते।

९ परिपालको हि राजा सर्वेषां धर्मषष्ठांशमवाप्नोति।

—**नीतिवाक्यामृत**, ७।२३

जो राजा समस्त वर्णाश्रम-धर्म की रक्षा करता है, वह उस धर्म के छठे भाग के फल को प्राप्त होता है।

१० न रामसदृशो राजा, पृथिव्यां नीतिमानभूत्।
न कूटनीतितत्त्वज्ञः, श्रीकृष्णसदृशो नृपः।

श्री राम जैसे नीतिमान् और कृष्ण जैसे कूटनीतिज्ञ राजा इस पृथ्वी पर नहीं हुए।

११ **न्यायी विक्रमादित्य—**

कहा जाता है कि विक्रमादित्य राजसभा में सोने के सिंहासन पर और घर में चटाई पर बैठते थे।

इनके राज्यकाल में दो मित्र सेठ थे—एक था लखपति और दूसरा था करोड़पति। अकस्मात् दोनों की सेठानियां एक साथ गर्भवती हो गईं। करोड़पति का आग्रह था कि अपने गर्भस्थ-बालकों का रिश्ता कर लें। चाहे मेरे पुत्र हो और तेरे पुत्री हो अथवा तेरे पुत्र हो एवं मेरे पुत्री हो! भावीवश दोनों के पुत्र या पुत्रियां हो जायें तो बात अलग है।

लखपति ने काफी आना-कानी की किन्तु मित्र के आग्रह से आखिर सगपन तय हो गया और दोनों के हस्ताक्षरों वाली लिखा-पढ़ी भी कर ली गई। अस्तु! लखपति के पुत्र एवं करोड़पति के पुत्री हुई। कुछ ही

समय के बाद व्यापार में नुकसान होने के आघात से लखपति की मृत्यु हो गई। मां-बेटे एक फूटे-टूटे मकान में रहकर दुःखी जीवन बिताने लगे।

इधर करोड़पति की नीयत बिगड़ गई। उसने अपनी पुत्री का रिश्ता राजा विक्रमादित्य से कर दिया। उस गुप्त लिखा-पढ़ी का राजा को बिल्कुल पता नहीं था। राजा ज्यों ही बरात लेकर ब्याहने जा रहा था, त्यों ही माता से भेद पाकर लड़का एक ऊँचे मकान की छत पर चढ़ बैठा और जोर-जोर से चिल्लाकर कहने लगा—राजन्! अन्याय हो रहा है, मैं महादुखी हूँ, सुनिये मेरी फरियाद!

राजा ने उसको मकान की मुंडेर से अपने हाथी पर ले लिया। बालक ने लिखा-पढ़ी का कागज राजा के हाथ में दे दिया। ढुकाव के स्थान पर ज्योंही सेठ जी आए, राजा ने लिखा-पढ़ी दिखाकर सारा हाल पूछा। सेठ शर्मिंदा हुआ। न्यायी राजा ने अपनी बिनोली पोशाक उस बालक को पहनाकर करोड़पति की कन्या के साथ उसका ब्याह कर दिया और धन देकर उस गरीब को श्रीमंत बना दिया। कहा जाता है कि उसी समय से राजा ने प्रतिबन्ध लगा दिया कि अन्तर्जातीय विवाह न किया जाए।

— **कालूगणी से श्रुत**

१२ **न्यायी नसीरुद्दीन** (बादशाह) की बेगम रसोई कर रही थी। हाथ जले, दासी रखने के लिए कहा। बादशाह बोला—गरीब को दासी कहां से? खुद मेहनत करो! खजाने का पैसा प्रजा का है।

१३ महाराज रणजीतसिंह एक दिन शिकार करने गए। वह न मिली अतः जंगल में विश्राम करने लगे। एक मिट्टी का ढेला अचानक आ लगा। बुढ़िया पकड़ी गई। पूछने पर उसने कहा—हम माँ-बेटे तीन दिनों के भूखे हैं। इसलिए आम खाकर भूख मिटाने की नीयत से मैंने यह ढेला मारा था। दुर्भाग्यवश आपके लग गया। राजा बुढ़िया की भूख से गद्-गद हो गए एवं उसे १०० मोहरें देकर एक महीने के भोजन की व्यवस्था करवाई।

—राष्ट्रदूत, ३ जून, १९७२

७ राजा के धर्म-कर्तव्य

१ प्रजाकार्यं स्वयमेव पश्येत् ।

—नीतिवाक्यामृत, ११।३२

प्रजा का कार्य राजा को स्वयमेव देखना चाहिये ।

२ राज्ञो हि दुष्टनिग्रह-शिष्टपरिपालनं धर्मः ।

—नीतिवाक्यामृत, ५।२

दुष्टों का निग्रह एवं शिष्टों का पालन करना राजा का धर्म (कर्तव्य) है।

३ दुष्टस्य दण्डः सुजनस्य पूजा, न्यायेन कोषस्य च संप्रवृद्धिः ।
अपक्षपातो रिपुराष्ट्र-चिन्ता, पञ्चापि धर्मा नरपुङ्गवानाम् ।

दुष्टों को दण्ड देना, सुजनों की पूजा करना न्याय से खजाने की वृद्धि करना, न्याय करते समय पक्षपात नहीं करना, रिपुराष्ट्रों की चिंता करते रहना—राजाओं के ये पाँच धर्म माने गए हैं ।

४ अपराधानुरूपो दण्डः पुत्रेऽपि प्रणेतव्यः ।

—नीतिवाक्यामृत, १७।१०

अपराध के अनुरूप दण्ड पुत्र को भी देना चाहिए ।

५ पिता वा यदि वा भ्राता, पुत्रो वा यदि वा सुहृत् ।
नीतिच्छेदकरा राज्ञा, हन्तव्या भूतिमिच्छता ॥

—चंदचरित्र, पृष्ठ ८९

पिता हो, भाई हो, पुत्र हो और चाहे मित्र हो, जो नीति का छेदन करने वाले हों, समृद्धि-इच्छुक राजा को, उन्हें मार देना ही उचित है ।

६ यदवध्यवधात् पापं, वध्यत्यागात् तदेव हि ।

—योगवाशिष्ठ, ३।९०।३

अवध्य का वध करने से जो पाप होता है, वध्य को छोड़ने से भी राजा के लिए वही पाप माना गया है।

७ प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रशक्तिश्च, क्षत्रियस्य समासतः॥ —मनुस्मृति, ५।८९

महर्षि मनु ने संक्षिप्त रूप से क्षत्रियों के लिये ये पांच कर्म निश्चित किए हैं—(१) प्रजाजनों की रक्षा करना, (२) दान करना, (३) यज्ञ करना, (४) अध्ययन करना (५) विषयों, (गीत-नृत्यादि) में आसक्त न होना।

८ **राजाओं के चिंतन करने योग्य छः गुण—**

संधिं च विग्रहं चैव, यानमासनमेव च।
द्वैधीभावं संश्रयं च, षड्गुणांश्चिन्तयेत् सदा॥

—मनुस्मृति, ७।१६०

संधि (मेल-जोल), विग्रह (लड़ाई), यान (चढ़ाई), आसन (घेरा डालना), द्वैधीभाव (दो शत्रुओं के बीच फूट डलवाना), संश्रय (बलवान का आश्रय लेना), राजाओं को इन छः गुणों का चिंतन सदा करते रहना चाहिए।

० एकया द्वे विनिश्चित्य, त्रींश्चतुर्भिर्वशे कुरु।
पञ्च जित्वा विदित्वा षट्, सप्त हित्वा सुखी भवे॥

हे राजन्! एक (बुद्धि) से, दो (कर्तव्य-अकर्तव्य) का निश्चय करके, चारों (शाम-दाम-दंड-भेद) द्वारा, तीन (शत्रु-मित्र-उदासीन) को वश कर। पांच (इन्द्रियों) को जीतकर, छः गुणों (संधि-विग्रह-आदि) को समझकर एवं सात व्यसनों को छोड़कर सुखी बन।

९ **राजाओं के त्यागने योग्य सात व्यसन—**

स्त्रियोऽक्षा मृगया पानं, वाक्पारुष्यं च पञ्चमम्।
महच्च दण्डपारुष्य-मर्थदूषणमेव च॥

—विदुरनीति, १।९७

(१) स्त्रियों का अधिक संसर्ग, (२) जुआ खेलना, (३) शिकार खेलना, (४) शराब आदि नशीली चीजें पीना, (५) कटु वचन बोलना, (६) बड़ा कठोर दण्ड देना और (७) धन का अपव्यय करना। राजा को ये सातों व्यसन छोड़ देने चाहिए।

१० **न्याय की सात बातें—**

प्रथम अकल बहू होय, लोभ मन रती न राखै।
भय न जबर को करै, दीन-खल दया न दाखै।
शत्रुन को उर आन, शत्रु को शत्रु न जाने।
मित्रन को उर आन, मित्र को मित्र न माने।
आलस न करे नृप एक छिन, सबे कसर प्रभु माफ की।
प्रताप वदै निश्चय कियां, सात बात इन्साफ की।

११ मंत्रपूर्वः सर्वो व्यापारः क्षितिपतीनाम्।

— **नीतिवाक्यामृत**, १०।२२

राजाओं को अपने समस्त कार्यों (संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैधीभाव) का प्रारम्भ मंत्रपूर्वक सुयोग्य मंत्रियों के साथ निश्चित करके करना चाहिए।

८ राजा की कमियाँ

१ पर्वता इव राजानो दूरतः सुन्दरा लोके ।

—नीतिवाक्यामृत, ३२।३३

पर्वतों की तरह राजा दूर से ही अच्छे लगते हैं ।

२ काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं,
सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः ।
क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता,
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ।

—पञ्चतंत्र, १।१५८

क्या किसी ने काक में शुद्धि, जुआरियों में सत्य, सांप में क्षमा, स्त्रियों में विकार की शांति, नपुंसकों में धैर्य, मद्यपान करने वालों में तत्त्वचिन्तन तथा राजा में मित्रता, ये गुण देखे-सुने हैं ? अर्थात् प्रायः देखने-सुनने में नहीं आते ।

३ गणयन्ति न राज्याग्रेऽपत्यस्नेहं महीभुजः ।

राजा लोग राज्य के लिये सन्तान का स्नेह भी नहीं गिनते ।

४ राजा कानां रा काचा ।

—राजस्थानी कहावत

५ राजानी माया ते ताड़नी छाया ।

० राजानी कृपा ते ठीकरे दूध ।

० राजा, बाजा नें वानरा जेंम भमावे तेम भमे ।

—गुजराती कहावतें

६ केवलिया किसी का काका भी नहीं और मामा भी नहीं ।

—हिन्दी कहावत

७ रामरै घर रो आईज्यो पण राजरै घर रो मत आईज्यो ।

—राजस्थानी कहावत

८ **राजपूतों के प्रति व्यंग—**

(क) राजपूत ते गरजपूत ।

— गुजराती कहावत

(ख) दारु मांस दपट्ट, अमल अणमाप अरोगै ।
चंवरपोस स्यूं चींठ, भँवर मादक सुख भोगै ।।
परणी नें परिहरै, गैर सुत गोदी धारै ।
जोवनवय में जोध, सटक सुरलोक सिधारै ।।
शश-शिकार तीतर सुभट, कुरजां, चिड़ी-कबूतरां ।
भायां स्यूं नित उठ भिड़ै, परम धरम रजपूतरा ।।

— भाषाश्लोकसागर

९ अयोग्य राजा

१ स किं राजा, यो न रक्षति प्रजाः ।

—नीतिवाक्यामृत, ७।२१

वह राजा क्या काम का, जो प्रजा की रक्षा नहीं करता ।

२ स खलु नो राजा, यो मंत्रिणोऽतिक्रम्य वर्तते ।

—नीतिवाक्यामृत, १०।५८

जो राजा मंत्रियों की बात का उल्लंघन करता है, वह राजा नहीं रह सकता ।

३ क्षितिपतिः को नाम नीतिं विना ।

—सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

नीति बिना का राजा क्या काम का ।

४ अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्तं निरोद्धुं क्षमः ।

—सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

जब राजा ही अन्याय करने लग जाए तो फिर उसे रोकने वाला है ही कौन !

५ स्थाल्येव भक्तं चेत् स्वयमश्नाति, कुतो भोक्तुर्भुक्तिः ।

— नीतिवाक्यामृत, १०।१०८

यदि खुद थाली ही खाने लग जाय तो खाने वाला कहां से खाए ।

६ समुद्रस्य पिपासायां कुतो जगति जलानि ।

—नीतिवाक्यामृत, ८।७

यदि समुद्र ही प्यासा हो जाए तो फिर जगत में पानी कहां से आए !

७ आग जले तो जल को कहूं, जल जले तो किसको कहूं ?

—हिन्दी पद्य

८ बाड़ चीभड़ा गले तो धणी ने शुं पाके।
राजा कई लूंटी ले तो रैयत कोनी आगल जई कहे।

—**गुजराती कहावतें**

९ **अन्यायी राजा की गति—**

(क) मोहाद् राजा स्वराष्ट्रं यः, कर्षयत्यनवेक्षया।
सोऽचिराद् भ्रश्यते राज्याद्, जीविताच्च सबान्धवः।

—**मनुस्मृति**, ७।१११

जो राजा अज्ञानवश धन लेकर या मार-पीटकर अपने देश को पीड़ित करता है, वह स्वजन-बान्धवों सहित शीघ्र ही राज्य और जीवन से भ्रष्ट हो जाता है।

(ख) जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवसि नरक-अधिकारी।
सोचिय नृपति जो नीति न जाना,
जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।

—**रामचरितमानस-अयोध्याकाण्ड**

१० **मूर्खराजा की विचित्र खीझ और रीझ :**—पुराने जमाने में एक राजा अत्यन्त ऋद्धिशाली था। उसकी सवारी के समय हाथी को अत्यधिक श्रृंगारा जाता था। हाथी पर एक झूल ओढ़ाई जाती थी, उसमें लाखों की कीमत के सैकड़ों रत्न लगे हुए थे। एक दिन धूम-धाम से राजा की सवारी निकल रही थी। उस समय एक नाई ने झूल का एक रत्न चुरा लिया। पता लगते ही खीझकर राजा ने हुक्म दिया कि इसे तालाब में डुबो-डुबोकर मार दो। बस, नाई की मौत आ गई। राजा के सिपाहियों ने उसे तालाब में डुबो-डुबोकर मृतप्राय कर दिया।

आखिर नाई के दिमाग में एक बात आई। उसने सिपाहियों से कहा—मुझे एक बार महाराज के दर्शन करवा दो। ज्योंही उसे राजा के सामने लाया गया, उसने चिल्लाकर कहा—हजूर ! मैंने सुना था कि आपकी रीझ व खीझ दोनों विचित्र हैं। दुर्भाग्यवश खीझ तो मैंने देख ली है

लेकिन रीझ देखने का मौका नहीं मिल सका । अगर बिना देखे मर गया तो मेरे मन की मन में ही रह जायेगी । राजा बोला—अच्छा ऐसी बात है ? तो, लो ! दिखलाता हूँ अपनी विचित्र रीझ । बस, तत्काल उसी झूल से हाथी सजाया गया और नाई को उस पर बिठाकर गाजे-बाजे से सवारी निकाली गई । फिर झूलसहित हाथी को बख्शीश देकर नाई को सदा के लिए अपने घर भेज दिया गया । अस्तु ! (राजा की मूर्खता तथा नाई की बुद्धिमत्ता विचित्र थी) ।

११ वरमराजकं भुवनं न तु मूर्खो राजा ।

— **नीतिवाक्यामृत, ३८।२३**

अराजकता अच्छी है किंतु मूर्ख राजा का होना अच्छा नहीं ।

१० राजाओं के प्रकार

१ राजा, महाराजा, मांडलिक, सम्राट्, वासुदेव, बलदेव, प्रतिवासुदेव, चक्रवर्ती एवं धर्मचक्रवर्ती। इस तरह राजा अनेक प्रकार के होते हैं।

२ **राजा**— किसी देश या जाति का प्रधान शासक राजा कहलाता है।

महाराजा - बड़े राजा को महाराजा कहते हैं।

मांडलिक—किसी मंडल या प्रांत का शासक मांडलिक कहा जाता है।

सम्राट्—अनेक राजाओं पर शासन करने वाला राजा सम्राट् माना जाता है।

—नालन्दा-विशालशब्द-सागर के आधार से

३ **वासुदेव** - वासुदेव पूर्वभव में अवश्य निदान (नियाणा) करके आते हैं। इनके शरीर का वर्ण कृष्ण होता है। इनमें बीस लाख अष्टापद जितना बल होता है और प्रतिवासुदेव को मारकर ये त्रिखण्डाधीश बनते हैं। सोलह हजार देश इनके अधीन होते हैं, सोलह हजार नरेश एवं आठ हजार देवता इनकी सेवा करते हैं। इनके सोलह हजार रानियां होती हैं, चक्र-खड्ग आदि सात रत्न होते हैं तथा इनकी माता सात स्वप्न देखती है।

४ **बलदेव**—ये वासुदेव के मातेर-बड़े भाई होते हैं। छोटे भाई के साथ इनका इतना अधिक प्रेम होता है कि मरने के बाद छः महीनों तक उसके शरीर को अपने पास रखते हैं एवं प्रेमवश उसे जीवित ही समझते हैं। इनकी माता चार स्वप्न देखती है। इनमें दस लाख अष्टापद की ताकत होती है। चार हजार देवता इनकी सेवा करते हैं। हल-मूसल आदि इनके शस्त्र होते हैं। अधिक प्रेम होने के कारण दोनों भाई साथ ही राज्य

करते हैं। वासुदेव की मृत्यु के बाद बलदेव दीक्षा लेते हैं और घोर तपस्या करके कई मोक्षगामी एवं कई स्वर्गगामी होते हैं।

५ **प्रतिवासुदेव** – ये भी पूर्वजन्म में नियाणा करके आते हैं और प्रायः तीन खण्ड के राजा होते हैं। इनकी ऋद्धि वासुदेव से कुछ कम होती है। ये निश्चित रूप से वासुदेव के हाथ से मारे जाते हैं एवं नरक में जाते हैं।

६ **चक्रवर्ती**—मनुष्यलोक के सबसे बड़े राजा को चक्रवर्ती कहते हैं। ये समूचे भरत के, ऐरावत के अथवा महाविदेह की एक विजय के स्वामी होते हैं। गर्भ में अवतरते समय इनकी माता १४ स्वप्न देखती हैं। बत्तीस हजार देशों पर इनका अधिकार होता है। बत्तीस हजार नरेश इनकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। पच्चीस हजार देवता इनकी सेवा में रहते हैं। नवनिधान व चौदह रत्न इनके हाजिर रहते हैं। इनके चौसठ हजार रानियां होती हैं। बीस-बीस हजार सोने-चाँदी की एवं सोलह हजार रत्नों की खानें होती हैं। चौरासी-चौरासी लाख हाथी-घोड़े और सांग्रामिक रथ होते हैं। छियानवे करोड़ पैदल सेना होती है, निन्नाणवें लाख अंगरक्षक होते हैं, सोलह हजार मंत्री होते हैं तथा चालीस लाख अष्टापद जितना इनमें बल होता है। मनुष्यलोक में चक्रवर्ती, वासुदेव, बलदेव एवं प्रतिवासुदेव जघन्य बीस और उत्कृष्ट एक-सौ पचास तक हो सकते हैं।

७ **धर्मचक्रवर्ती (तीर्थंकर)**—जो विशेष त्याग-तपस्यादि द्वारा तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन करके तीसरे भव में माता को १४ स्वप्न दिखाकर राजकुल में जन्म लेते हैं। फिर कई राज्य करके एवं कई बिना राज्य किये (कुमारावस्था में) ही संयम लेकर घातिक कर्मों का नाश करके केवलज्ञानी बनते हैं एवं साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूप चार तीर्थों की स्थापना करते हैं, वे **तीर्थंकर** कहलाते हैं। उनमें चौंतीस अतिशय (विशेषताएं) होती हैं, उनकी वाणी में पैंतीस गुण होते हैं तथा उनके शरीर में एक हजार आठ शुभ लक्षण होते हैं। तीर्थंकर जघन्य बीस और उत्कृष्ट एक-सौ सत्तर होते हैं।

– **लोकप्रकाश, पुञ्ज ४**

८ जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में नव वासुदेव, नव बलदेव, नव प्रतिवासुदेव, बारह चक्रवर्ती एवं चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। समवायांग सूत्र के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं—

नव वासुदेव :—

(१) त्रिपृष्ठ (२) द्विपृष्ठ
(३) स्वयंभू (४) पुरुषोत्तम
(५) पुरुषसिंह (६) पुरुषपुण्डरीक
(७) दत्त (८) लक्ष्मण
(९) कृष्ण

नव बलदेव :—

(१) अचल (२) विजय
(३) भद्र (४) सुप्रभ
(५) सुदर्शन (६) आनन्द
(७) नन्दन (८) राम
(९) बलभद्र

नव प्रतिवासुदेव :—

(१) अश्वग्रीव (२) तारक
(३) मेरक (४) मधु
(५) निशुम्भ (६) बलि
(७) प्रह्लाद (८) रावण
(९) जरासन्ध

बारह चक्रवर्ती :—

(१) भरत (२) सगर
(३) मघव (४) सनत्कुमार
(५) शान्ति (६) कुन्थु
(७) अर (८) सुभूम
(९) महापद्म (१०) हरिषेण
(११) जयसेन (१२) ब्रह्मदत्त

चौबीस तीर्थंकर :—

(१) ऋषभ प्रभु
(२) अजित प्रभु
(३) संभव प्रभु
(४) अभिनन्दन प्रभु
(५) सुमति प्रभु
(६) पद्मप्रभ प्रभु
(७) सुपार्श्व प्रभु
(८) चन्द्रप्रभ प्रभु
(९) सुविधि प्रभु
(१०) शीतल प्रभु
(११) श्रेयांस प्रभु
(१२) वासुपूज्य प्रभु
(१३) विमल प्रभु
(१४) अनन्त प्रभु
(१५) धर्म प्रभु
(१६) शान्ति प्रभु
(१७) कुन्थु प्रभु
(१८) अर प्रभु
(१९) मल्लि प्रभु
(२०) मुनिसुब्रत प्रभु
(२१) नमि प्रभु
(२२) अरिष्ठनेमि प्रभु
(२३) पार्श्व प्रभु
(२४) महावीर प्रभु

५ **शलाकापुरुष :—**नव बलदेव, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव, बारह चक्रवर्ती, चौबीस तीर्थंकर—ये तिरेसठ विश्व में शलाका पुरुष माने जाते हैं। इनके परस्पर मिलने के विषय में यह मान्यता है कि तीर्थंकर-तीर्थंकर, चक्रवर्ती-चक्रवर्ती, वासुदेव-वासुदेव तथा वासुदेव-चक्रवर्ती प्रायः कभी नहीं मिल सकते।

—लोकप्रकाश, पुंज ४

●●

११ राज-गुरु

१ वंश-वृत्त-विद्याभिजनविशुद्धा राज्ञामुपाध्यायाः ।

—**नीतिवाक्यामृत**, ५।१३

राजगुरु वंश, चरित्र, विद्या एवं कुल से विशुद्ध होने चाहिए।

पुरोहितमुदितोदितकुल—शीलं षडङ्गवेदे दैवे निमित्ते दंडनीत्यामभिनीतमापदां दैवीनां मानुषीणां च प्रतिकर्तारं कुर्वीत ।

—**नीतिवाक्यामृत**, ११।१

जो कुलीन, सदाचारी और छह वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष) चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद अथर्ववेद एवं सामवेद अथवा प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग), ज्योतिष, निमित्त ज्ञान और दडनीति-विद्या में प्रवीण हों एवं दैवी (उल्कापात-अतिवृष्टि-अनावृष्टि आदि) तथा मानुषी आपत्तियों को दूर करने में समर्थ हों—ऐसे विद्वान् पुरुष को राजपुरोहित-राजगुरु बनाना चाहिए।

१ अम्भांसि जलजन्तूनां, दुर्गं दुर्गनिवासिनाम्।
स्वभूमिः श्वापदादीनां, राज्ञां मन्त्री परं बलम्।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १७०

जैसे—मत्स्यादि जलजन्तुओं का बल पानी है, दुर्गनिवासियों का बल दुर्ग—किला है और श्वापद—हिंसक पशुओं का बल भूमि है, उसी प्रकार राजाओं का बल मंत्री माना गया है।

२ अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं, दान्तं कुलोद्भवम्।
स्थापयेदासने तस्मिन्, खिन्नः कार्येक्षणे नृणाम्।

—मनुस्मृति, ७।१६०

राजकार्य की देख-भाल में खिन्न होने पर राजा को अपने आसन पर प्रधानमंत्री को स्थापन कर देना चाहिए लेकिन वह मंत्री धर्मज्ञ, प्राज्ञ, दान्त एवं कुलीन होना चाहिए।

३ राज्ञो हि मन्त्रिपुरोहितौ मातापितरौ अतस्तौ न केषुचिद् वाञ्छितेषु निरस्तयेत्।

—नीतिवाक्यामृत, ११।२

मंत्री-पुरोहित हितैषी होने के कारण राजा के माता-पिता हैं, इसलिए उनको किसी भी अभिलषित पदार्थ में निराश नहीं करना चाहिए।

४ मन्त्रिणो राजद्वितीयहृदयत्वान्न केनचित् सह संसर्गं कुर्युः।

—नीतिवाक्यामृत १०।५५

मन्त्री लोग राजा के दूसरे हृदयरूप होते हैं। इसलिए उन्हें किसी के साथ स्नेहादि सम्बन्ध न रखना चाहिए।

१३ मंत्री कितने हों ?

१ एको मंत्री न कर्तव्यः ॥६६॥

एको हि मन्त्री निरवग्रहश्चरति मुह्यति च कार्येषु कृत्स्नेषु ॥६७॥

—नीतिवाक्यामृत, १०

राजा को केवल एक ही मन्त्री नहीं रखना चाहिए क्योंकि अकेला मन्त्री स्वतन्त्र होने से निरंकुश हो जाता है। इसलिए वह अपनी इच्छा के अनुसार राजा का विरोधी होकर हरएक कार्य कर डालता है। और विकट परिस्थिति में निश्चय करने योग्य कार्यों में मोह (अज्ञान) को प्राप्त हो जाता है।

२ त्रयः पंच सप्त वा मन्त्रिणस्तैः कार्याः।

—नीतिवाक्यामृत, १०।११

राजाओं को तीन, पाँच या सात मन्त्री नियुक्त करने चाहिए। सारांश यह है कि विषम संख्यावाले मन्त्रिमंडल का परस्पर एक मत होना कठिन है। इसलिए वे राज्य के विरुद्ध षड्यन्त्र करने में असमर्थ रहते हैं।

३ परस्परकलहो नियोगिषु भूभुजां निधिः।

नीतिवाक्यामृत

मन्त्रियों की आपसी अनबन राजाओं की निधि मानी गई है।

१४ अयोग्य मंत्री

१ स मन्त्री शत्रुर्यो नृपेच्छयाऽकार्यमपि कायतयाऽनुशास्ति।

—नीतिवाक्यामृत १०।५२

वह मन्त्री शत्रु है, जो राजा की इच्छा के अनुसार अकार्य को भी कार्य-रूप में अनुशासित करने लगता है।

२ वैद्यो गुरुश्च मन्त्री च यस्य राज्ञः प्रियंवदाः।
शरीर-धर्म-कोषेभ्यः, स क्षिप्रं परिहीयते॥

—हितोपदेश, ३।१०४

जिस राजा के वैद्य, गुरु और मन्त्री मीठी बात करने वाले हों, वह राजा शरीर, धर्म एवं कोष से शीघ्र ही क्षीण हो जाता है।

३ शस्त्राधिकारिणो न मन्त्राधिकारिणः स्युः।

—नीतिवाक्यामृत, १०।१०१

शस्त्र-संचालन करने वाले अर्थात् केवल वीरता प्रकट करने वाले क्षत्रिय लोग मंत्रणा करने के योग्य नहीं हैं।

४ दुर्मन्त्री राज्यनाशाय।

—सुभाषितरत्नभांडागार

दुष्ट मंत्री राज्य का नाश कर देता है।

५ कुमंत्री राज्यस्य दूषणम्।

दुष्ट मंत्री राज्य का एक दोष है।

६ धूर्तः स्त्री वा शिशुर्यस्य, मन्त्रिणः स्युर्महीपतेः।
अनीतिपवनक्षिप्तः कार्याब्धौ स निमज्जति॥

—हितोपदेश, ३।१३१

जिस राजा के धूर्त, स्त्री अथवा बालक मंत्री हों, वह अनीतिरूपी पवन से उड़ाया हुआ कार्यरूपी समुद्र में डूब जाता है।

७ स किं भृत्यः स किं मन्त्री, य आदावेव भूपतिम्।
युद्धोद्योगं स्वभूत्यागं, निर्दिशत्यविचारितम्॥

— **हितोपदेश**, ३।३८

जो पहले ही राजा को बिना विचारे युद्ध के उद्योग का और अपनी भूमि के त्याग का उपदेश करता है, वह निंदित सेवक तथा निन्दित मन्त्री है।

१५ राजदूत

१ दूत एव हि संधत्ते, भिनत्त्येव च संहतान् ।
दूतस्तत्कुरुते कर्म, भिद्यन्ते येन मानवाः ।।

—मनुस्मृति, ७।६६

दूत ही बिगड़े हुओं को मिलाता है और मिले हुओं को फोड़ता है । दूत ऐसा काम करता है, जिससे (शत्रु-पक्ष का) जन-बल छिन्न-भिन्न हो जाता है ।

२ दूतं चैव प्रकुर्वीत, सर्वशास्त्रविशारदम् ।
इङ्गिताकारचेष्टज्ञं, शुचिं दक्षं कुलोद्गतम् ।।

—मनुस्मृति, ७।६३

जो सब शास्त्रों में कुशल, इंगित (इशारा), आकार (मुख-नेत्र के भाव) और चेष्टा से मन का भाव समझने वाला, पवित्र चरित्र, चतुर और कुलीन हो, उसे राजदूत बनाना चाहिए ।

३ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः, स्मृतिमान् देश-कालवित् ।
वपुष्मान् वीतभीर्वाग्मी, दूतो राज्ञः प्रशस्यते ।।

—मनुस्मृति, ७।६४

अपने स्वामी में अनुरक्त, पवित्र हृदय, दक्ष, स्मरण शक्तिवाला, देश-काल का ज्ञाता, सुन्दर शरीर वाला, निर्भय और वक्ता—इन गुणों वाला राजदूत प्रशंसनीय माना गया है ।

४ स्वामिभक्तिरव्यसनिता, दाक्ष्यं, शुचित्वममूर्खता, प्रागल्भ्यं, प्रतिभावत्त्वं, क्षान्तिः, परमर्मवेदित्वं, ज्ञातिश्च प्रथमे दूतगुणाः ।

—नीतिवाक्यामृत, १३।२

स्वामिभक्त, द्यूतक्रीड़न—मद्यपानादि व्यसनों में अनासक्त, चतुर, पवित्र, निर्लोभी, निर्मल शरीर तथा शुद्ध वस्त्रयुक्त, विद्वान्, उदार, बुद्धिमान, सहिष्णु, परमर्म का ज्ञाता और कुलीन—ये दूत के मुख्य गुण हैं।

५ अनासन्नेष्वर्थेषु दूतो मन्त्री।

—**नीतिवाक्यामृत**, १३।१

राजा का दूर देश सम्बन्धी कार्य (सन्धि-विग्रहादि) दूत द्वारा ही सिद्ध होता है, अतः वह मन्त्री तुल्य माना गया है।

६ **दूत के तीन प्रकार** :—

स त्रिविधो, निसृष्टार्थः, परिमितार्थः, शासनहरश्चेति।

– **नीतिवाक्यामृत**, १३।३

दूत तीन प्रकार का होता है :—(१) निसृष्टार्थ, (२) परिमितार्थ, (३) शासनहर।

जिसके द्वारा निश्चित किये हुए संधि-विग्रह को उसका स्वामी प्रमाण मानता है, वह **निसृष्टार्थ** है। जैसे—पांडवों के श्रीकृष्ण।

इसी प्रकार राजा द्वारा भेजे हुए संदेश और शासन (लेख) को ज्यों का त्यों शत्रु के पास कहने या देने वाले दूत को क्रमशः **परिमितार्थ** एवं **शासनहर** जानना चाहिए।

७ **दूत अवध्य** :—

उद्यतेष्वपि शस्त्रेषु बन्धुवर्गवधेष्वपि।
परुषाण्यपि जल्पन्तो, वध्या दूता न भूभुजा।

—**पञ्चतन्त्र**, ३।८८

राजदूत राजा के लिए अवध्य होते हैं। चाहे वे शस्त्र उठा लें, बन्धुवर्ग का वध कर दें या कटुवचन बोल जाएं।

१६ विदेशों में भारतीय दूतावास एवं उच्चायुक्त

१ अफगानिस्तान
२ अलजीरिया
३ अर्जेण्टाइना
४ आस्ट्रिया
५ बेलजियम
६ ब्राजील
७ बर्मा
८ कम्बोडिया
९ चिली
१० चीन
११ कांगो
१२ चैकोस्लोवाकिया
१३ डेनमार्क
१४ इथोपिया
१५ फिनलैंड
१६ फ्रांस
१७ जर्मनी
१८ गुएना
१९ हंगरी
२० इंडोनेशिया
२१ ईरान
२२ ईराक
२३ आयरलैंड
२४ इटली
२५ जापान
२६ कुवैत
२७ लाओस
२८ लेबनान
२९ मालागासे
३० मैक्सिको
३१ मोरक्को
३२ नेपाल
३३ नीदरलैंड
३४ नार्वे
३५ फिलीपीन्स
३६ पोलैंड
३७ रूमानिया
३८ सऊदी अरब
३९ सेनेगाल
४० सोमालिया
४१ दक्षिणी यमन
४२ स्पेन
४३ सूडान
४४ स्वीडन
४५ स्विट्जरलैंड
४६ सीरियन अरब गणराज्य

४७ थाईलैंड
४८ तुर्की
४९ संयुक्त अरब गणराज्य
५० संयुक्त राज्य अमेरिका
५१ रूस
५२ यूगोस्लाविया

उच्चायुक्त

१ आस्ट्रेलिया
२ कनाडा
३ श्रीलंका
४ घाना
५ गुयाना
६ केन्या
७ मलावी
८ मलेशिया
९ मारीशस
१० न्यूजीलैंड
११ नाइजीरिया
१२ पाकिस्तान
१३ सिंगापुर
१४ तंजानिया
१५ ट्रिनिडाड एण्ड टोबेगो
१६ युगांडा
१७ ब्रिटेन
१८ जांबिया

—भारतज्ञानकोष, सन् १९७१-७२

१७ भारत में विदेशी दूतावास एवं उच्चायुक्त

१ अफगानिस्तान
२ अलजीरिया
३ अर्जेण्टाइना
४ आस्ट्रिया
५ बेलजियम
६ ब्राजील
७ बर्मा
८ कम्बोडिया
९ चिली
१० चीन
११ कोलंबिया
१२ कांगो
१३ क्यूबा
१४ चैकोस्लोवाकिया
१५ डेनमार्क
१६ इथोपिया
१७ फिनलैंड
१८ फ्रांस
१९ जर्मनी
२० ग्रीस
२१ हंगरी
२२ इंडोनेशिया
२३ ईरान
२४ ईराक
२५ आयरलैंड
२६ इटली
२७ जापान
२८ जोर्डन
२९ कुवैत
३० लाओस
३१ लेबनान
३२ मेक्सिको
३३ मंगोलिया
३४ मोरक्को
३५ नेपाल
३६ नीदरलैंड
३७ नार्वे
३८ पेरू
३९ फिलीपीन्स
४० पोलैंड
४१ रूमानिया
४२ सऊदी अरब
४३ स्पेन
४४ सूडान
४५ स्वीडन
४६ स्विट्जरलैंड

४७ सीरियाई अरब गणराज्य
४८ थाईलैंड
४९ तुर्की
५० रूस
५१ संयुक्त-अरब गणराज्य
५२ संयुक्त राज्य अमेरिका
५३ उरुग्वे
५४ वेनेजुएला
५५ यूगोस्लाविया
५६ बल्गारिया

उच्चायुक्त

१ आस्ट्रेलिया
२ ब्रिटेन
३ कनाडा
४ श्रीलंका
५ घाना
६ मलेशिया
७ मारीशस
८ न्यूजीलैंड
९ नाइजीरिया
१० पाकिस्तान
११ सिंगापुर
१२ तंजानिया
१३ युगांडा

—भारतज्ञानकोष, सन् १९७१-७२

१८ राज-कर्मचारी

१ अधिकारमदं पीत्वा, को न मुह्यात् पुनश्चिरम् ।

—शुक्रनीति

अधिकार रूपी मद्य पीकर कौन पागल नहीं होता ।

२ राज्ञो हि रक्षाधिकृताः, परस्वादायिनः शठाः ।
भृत्या भवन्ति प्रायेण, तेभ्यो रक्षेदिमाः प्रजाः ।।

—मनुस्मृति, ७।१२३

राजकर्मचारी प्रायः परधन को लेने वाले एवं वंचक—ठग होते हैं । अतः उनसे प्रजा को बचाना चाहिये ।

३ किसी भी राज्य को चलाने के लिए अच्छे कानूनों की उतनी जरूरत नहीं है, जितनी अधिक अच्छे अधिकारी की ।

—अरस्तू

४ नालम्पटोऽधिकारी ।

—नीतिवाक्यामृत, १०।१०५

जो मनुष्य निःस्पृह (धनादि की चाह नहीं रखने वाला) होता है, वह अधिकारी (मन्त्री आदि कर्मचारी) नहीं हो सकता ।

५ **पुलिस की बुराइयां**—रिश्वत, मद्यपान, जुआ, व्यभिचार एवं चोरों से मिलना ।

६ जो नृप से अधिकार ले, करे न पर-उपकार ।
पुनि ताके अधिकार में, आदि न रहत अकार ।।

७ यस्यानियमितं कर्म, साधुत्वं वचनेष्वपि ।
सदैव कुटिलः सोऽयं, स्वपदाद् द्राग् विनश्यति ।।

—शुक्राचार्य

जिसके कार्य नियमित न हों और सज्जनता केवल वचन में हो, वह कुटिल अधिकारी अपने पद से शीघ्र ही पतित हो जाता है ।

१६ गुप्तचर

१ स्व-परमण्डलकार्याकार्यावलोकने चाराः खलु चक्षूंषि क्षितिपतीनाम् ।१।
अलौल्यममान्द्यममृषाभाषित्वमभ्यूहकत्वं चारगुणाः ।२।
तुष्टिदानमेव चाराणां वेतनम् ।३।
ते हि तल्लोभात् स्वामिकार्येषु त्वरन्ते ।४।

—**नीतिवाक्यामृत, १४**

गुप्तचर स्वदेश-परदेश सम्बन्धी कार्य-अकार्य का ज्ञान करने के लिए राजाओं के नेत्र हैं । (१)

सन्तोष, आलस्य का न होना, उत्साह अथवा नीरोगता, सत्यभाषण और विचारशक्ति—ये गुप्तचरों के गुण हैं । (२)

कार्य-सिद्धि हो जाने पर राजा द्वारा जो सन्तुष्ट होकर प्रचुर धन दिया जाता है, वही गुप्तचरों का वेतन है । (३)

क्योंकि उस धन-प्राप्ति के लोभ से ही वे लोग अपने स्वामी की कार्य सिद्धि शीघ्रता से करते हैं । (४) ।

प्रजा

१ राष्ट्राणि वै विशः।

—ऐतरेयब्राह्मण, ८।२६

प्रजा ही राष्ट्र है।

२ विशि राजा प्रतिष्ठितः।

—यजुर्वेद, २०।९

राजा की स्थिति प्रजा पर ही निर्भर है।

३ विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु।

—अथर्ववेद, ४।८।४

हे राजन्! समस्त प्रजा तुम्हें चाहती रहे।

४ त्वां विशो वृणतां राज्याय।

—अथर्ववेद, ३।४।२

हे राजन्! प्रजाओं द्वारा ही तुम राज्य के लिए चुने जाओ।

५ ध्रुवाय वै समितिः कल्पतामिह

—अथर्ववेद, ३।४।२

तुम्हारी अविचल स्थिति समिति—लोकसभा पर ही निर्भर है।

६ दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति है लोकमत, और वह सत्य-अहिंसा से ही पैदा हो सकती है।

—गांधी

७ प्रजा सुखे सुखं राज्ञः, प्रजानां च हिते हितम्।
नात्मप्रियं प्रियं राज्ञः, प्रजानां तु प्रियं प्रियम्॥

—कौटलीय अर्थशास्त्र, १।१९

प्रजा के सुख में राजा का सुख है और प्रजा के हित में राजा का हित है। अपना प्रिय कार्य वस्तुतः राजा को प्रिय नहीं होता किन्तु प्रजा का प्रिय कार्य ही प्रिय होता है।

८ प्रजां न रञ्जयेद् यस्तु, राजा रक्षादिभिर्गुणैः।
अजागलस्तनस्येव, तस्य जन्म निरर्थकम् ।।१२१।।
प्रजापीडनसंतापात्, समुद्भूतो हुताशनः।
राज्ञः कुलं श्रियं प्राणान्, नादग्ध्वा विनिवर्तते ।।१२३।।
हिरण्यधान्यरत्नानि, गजेन्द्राश्चापि वाजिनः।
तथान्यदपि यत्किंचित्, प्रजाभ्यः स्यान्महीपतेः ।।१२६।।

—**सुभाषितरत्नभांडागार**, पृ० १५१

जो राजा प्रजा को प्रसन्न नहीं रखता, उसका जन्म बकरी के गलस्तन की की तरह व्यर्थ है ।।१२१।।
प्रजा के सन्ताप की आग इतनी भयंकर है कि वह राजा के कुल, लक्ष्मी यावत् प्राणों तक को भस्म कर डालती है ।।१२३।।
हिरण्य, धान्य, रत्न, हाथी, घोड़ा एवं अन्य सभी वस्तुएँ राजा को प्रजा से ही प्राप्त होती हैं ।।१२६।।

९ हिन्दुस्तान के बादशाह ने एक पत्र देकर अपना दूत चीनपति के पास भेजा। उसमें लिखा था—**आप लोग अधिक कैसे जीते हैं ?** चीननरेश ने पढ़कर कहा—पांच सौ वर्ष पुराना बड़वृक्ष जल जाने के बाद उत्तर दूँगा। आगंतुक अब हरदम यही भावना करने लगे कि यह बड़ जल्दी से जले तो ठीक। बस, दो ही महीने में वह वृक्ष जल गया। अब उत्तर माँगा। बादशाह ने कहा—प्रजा का प्रेम बढ़ाओ एवं उसका आशीर्वाद प्राप्त करो। हम इसी से अधिक जीते हैं।

२१ यथा राजा तथा प्रजा

१ प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते ।

—**शिशुपालवध**

लोक राजा के चित्त के पीछे ही चला करते हैं ।

२ यथाभूमिस्तथा तोयं, यथा बीजं तथाङ्कुरः ।
यथा शास्त्रं तथा कर्म, यथा राजा तथा प्रजाः ।

भूमि के अनुसार पानी निकलता है । बीज के अनुसार अंकुर होता है । शास्त्र के अनुसार कर्म किया जाता है । और राजा के अनुसार प्रजा चला करती है ।

३ राज्ञि धर्मिणि धर्मिष्ठाः, पापे पापाः समे समाः ।
राजानमनुवर्तन्ते, यथा राजा तथा प्रजाः ।

—**चाणक्यनीति, १३।७**

राजा धर्मी होने पर प्रजा धर्मी, पापी होने पर पापी और सम होने पर सम होती है, क्योंकि प्रजा राजा के पीछे ही चला करती है । जैसा राजा होता है, वैसी ही प्रजा होती है ।

४ **तोते की करामात**—दो मित्र थे—एक के पास घोड़ी थी और दूसरे के पास गाय । एक दिन रात को दोनों ही एक साथ ब्या गईं । गाय का मालिक जाग रहा था । उसकी नीयत बिगड़ गई । उसने जन्मते ही अपने बछड़े को घोड़ी के स्तनों से और घोड़ी के बछेड़े को गाय के स्तनों से जोड़ दिया । अबोध बच्चे अज्ञानवश उन्हें ही अपनी माता समझकर स्तन-पान करने लगे । ज्योंही मित्र जागा धूर्तमित्र ने चिल्लाकर कहा भाई ! हलाहल कलियुग आ गया, अतः अनहोनी बातें होने लगी हैं । देख ! घोड़ी के बछड़ा और गाय के बछेड़ा उत्पन्न हो गया । मित्र ने कहा—ऐसी

असंभव बात नहीं हो सकती। बस, बात ही बात में विवाद बढ़ गया। घोड़ी के मालिक ने पचों एवं राजा के आगे पुकार की लेकिन कुछ भी सुनाई नहीं हुई। आखिर बेचारा हार कर घोड़ी और बछड़े को लेकर उन्हें चराने जंगल में जाने लगा अपनी किस्मत को रोने लगा।

एक दिन एक तोते ने आकर मनुष्य-वाणी से उसका दुख पूछा। बेचारे ने रोते हुए अपनी कर्म कहानी सुनाई। तोते ने कहा—मैं तेरा न्याय करवा दूंगा, तू मेरे शरीर को काला कर दे। उसने काजल आदि से उसका (गर्दन और चोंच को छोड़कर) सारा शरीर काला कर दिया। तोता राजदरबार में पहुंचा। कृष्णवर्ण देखकर राजा विस्मित हुआ और पूछने लगा।

राजा—पक्षिमध्ये शुकः श्रेष्ठः, तं प्रति पृष्टवान् नृपः।
नीलकण्ठः रक्तचञ्चुः, कथं कृष्णं वपुस्तव ?

पक्षियों में श्रेष्ठ तोते से राजा ने पूछा—शुकराज ! तेरी गर्दन नीली है और चोंच लाल है, फिर शरीर काला कैसे हुआ ?

तोता—समुद्रेषु गतस्तत्र, वह्निज्वाला प्रवर्तते।
तया दग्धमिदं गात्रं, राजन् ! तेनास्ति कृष्णकम्।

राजन् ! मैं उड़ता-उड़ता एक बार समुद्र में चला गया वहां अग्निज्वाला से जलकर मेरा शरीर काला हो गया।

राजा—रे ! रे ! पक्षि-दुराचारि-ननृतं भाषसे कथम् ?
समुद्रेषु कुतो वह्निः कुतो ज्वाला प्रवर्तते ?

अरे ! दुराचारी पक्षी ! क्यों झूठ बोलता है ? समुद्र में कहां तो आग और कहां उसकी ज्वाला।

तोता—प्रसूते ह्यश्विनी वत्सं, कामधेनुस्तुरंगमम्।
अन्यायग्रथिलो राजा, यथा राजा तथा प्रजा॥

राजन् ! जहां गाय बछेड़े को और घोड़ी बछड़े को पैदा करती है, वहां असंभव कुछ भी नहीं कहा जा सकता। क्योंकि तुम्हारे जैसे अन्यायी राजा के राज में जैसा राजा है, वैसी ही प्रजा है।

राजा चौंका और उन दोनों मित्रों को बुलाकर उनका न्याय किया।

—प्राचीन संग्रह से

५ किमत्र चित्रं यदि कामसूर्भू—
वृत्ते स्थितस्याधिपतेः प्रजानाम्।

—रघुवंश

चरित्रवान राजा की प्रजा को यदि पृथ्वी मनइच्छित फल दे तो कोई आश्चर्य नहीं।

२२ राज्य

१ राज्ञः पृथ्वीपालनोचितं कर्म राज्यम् ।

—**नीतिवाक्यामृत ५।४**

राजा पृथ्वी की रक्षा के योग्य कर्म—षाड्गुण्य (संधि, विग्रह, यान, आसन, संश्रय और द्वैधीभाव) को **राज्य** कहते हैं ।

२ सरकार जनशक्ति का छोटा-सा अंश है । —**विनोबा**

३ सत्ये राज्यं प्रतिष्ठितम् । —**अध्यात्मरामायण**

राज्य सत्य में प्रतिष्ठित होता है ।

४ राजरीत आवै जठै राज आयो रैवे । —**राजस्थानी कहावत**

५ **तीन प्रकार के राज्य** —

१ **कुराज्य**—जहां शोर-गुल कम और दुःख ज्यादा हो ।
२ **स्वराज्य**—जहां शोर-गुल ज्यादा और दुःख कम हो ।
३ **सुराज्य**—जहां न ज्यादा शोर-गुल हो और न ज्यादा दुःख हो ।

६ **राज्य के तीन अंग**—

अन्न, फौज और प्रजा का विश्वास । —**कन्फ्यूशियस**

७ **राज्य के आठ अंग**—

स्वाम्यमात्यश्च राष्ट्रं च दुर्गं कोशो बलं सुहृत् ।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः, पौराणां श्रेणयोऽपि च ।।

—**हितोपदेश ३।१४३**

१. स्वामी २. मंत्री ३. राष्ट्र ४. किला ५. कोश ६. सेना ७. मित्र ८. पुरवासियों के समूह—ये राज्य के आठ अंग हैं ।

२३ सुराज्य (अच्छी सरकार)

१ अच्छी सरकार वह है, जो प्रभावशाली हो। प्रभावशाली तब होगी, जब उसके पास जनता के लिये भोजन का प्रबन्ध, अस्त्र-शस्त्र और उसके प्रति जनता का विश्वास होगा।

विपत्ति के समय सब से पहले अस्त्र-शस्त्र का त्याग करना और फिर आवश्यक हो तो भोजन का भी त्याग कर देना किंतु प्रजा का विश्वास कभी न खोना चाहिए।

—**कांगफ्यूत्सी**

२ **रामराज्य का चित्र** :—

दैहिक दैविक भौतिक तापा,
रामराज्य नहिं काहूहि व्यापा।
सब नर करहि परस्पर प्रीति,
चलहि सुधर्म-निरत श्रुति-रीति।
वैर न करहि काहु मन कोई,
राम प्रताप विषमता खोई।
नहीं दरिद्र कोउ दुखी न दीना,
नाहि कोउ अबुध सुलक्षण हीना।

—**रामचरितमानस**

३ चाहे सोनो उछालता जावो।

—**राजस्थानी कहावत**

२४ कुराज्य

१ वरं न राज्यं न कुराजराज्यम् ।

—**चाणक्यनीति** ६।१३

राज्य का न होना अच्छा है किंतु दुष्ट राजा का राज्य होना अच्छा नहीं।

२ कुराजराज्येन कुतः प्रजासुखम् ।

—**चाणक्यनीति** ६।१४

दुष्ट राजा के राज्य में प्रजा को सुख कहां ।

३ लूण कपूर गिणैं इक आगर,
गुणी निगुणीय पड़ै नहिं जाहर ।
कायर-सूर सबे इकसे,
अकुलीन-कुलीन अजाहर नाहर ।
शाह रु चोर न जान पड़े,
अतिलीक-अलीक की ठीक न ठाहर ।
कौन पे जाय के कीजे पुकार सो,
जा दरबार में बुंब न बाहर ।

—**भाषाश्लोकसागर**

४ अन्याय नगरी, अबूझ राजा ।
टकै सेर भाजी, टकै सेर खाजा ।

—**राजस्थानी कहावत**

५ **पोपांबाई का राज्य**—पुर शहर (उदयपुर) में राजा पोपसिंहजी राज्य करते थे । वहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलते थे । विहार करते-करते गुरु-शिष्य वहां आए । भिक्षा में अच्छा भोजन मिला । लोलुप होकर शिष्य वहीं रहने लगा । गुरु ने वहां नहीं रहने के लिए काफी

कहा किंतु हठीला शिष्य न माना तब विवश गुरु भी वहीं रहे। सरस भिक्षा मिलने से दोनों के शरीर काफी ताजे-मोटे हो गए। चौमासे में अधिक वृष्टि हुई और दीवार गिरने से एक आदमी मर गया। दरबार जुड़ा एवं पोपसिंहजी ने निर्णय दिया कि सेठ की दीवार से आदमी मरा है, अतः उसे शूली चढ़ा दो !

सेठ ने अपील की—महाराज ! मैंने तो मिस्तरी को पूरे पैसे दिये थे। उसने दीवार कच्ची क्यों बनाई ?

राजा—हां-हां ! मिस्तरी को चढ़ाओ शूली पर !

मिस्तरी—मजदूर ने गारा पतला कर दिया, इससे दीवार कच्ची रह गई। अतः दोष तो मजदूर का है।

राजा—हां ! मजदूर ही दोषी है, उसे चढ़ा दो शूली पर।

मजदूर—पखालिये ने पानी ज्यादा डाल दिया एवं मेरे पास सूखी मिट्टी नहीं थी। अतः गारा पतला रह गया। इसमें मेरा क्या दोष ?

राजा—अच्छा ! जाओ पखालिये को शूली पर चढ़ाओ, उसी का सब दोष है।

पखालिया—राजन् ! मैं पानी डाल रहा था, उस वक्त सेठ की बहू रमझम-रमझम करती हुई निकली, मैं उसे देखने लगा—इधर पानी ज्यादा पड़ गया। अब मैं क्या करूं ?

राजा—अच्छा ! सेठ की बहू को शूली पर चढ़ा दो, उसने ऐसे जेवर क्यों पहने, जिससे मनुष्य की हत्या हो गई।

सेठ—राजन् ! मेरी बहू का क्या दोष ? दोष उस सुनार का है, जिसने ऐसे जेवर घड़े।

राजा—हां-हां ! सुनार दोषी है, उसे चढ़ाओ शूली पर।

सुनार—राजन् ! दोष मेरा नहीं लोहार का है, उसी ने हमारे औजार घड़े हैं। हम चाहे कितना ही प्रयत्न करें, जेवर रमझम-रमझम किये बिना नहीं रहते।

राजा—ठीक-ठीक ! मूल दोषी लोहार ही है, उसे चढ़ाओ जल्दी शूली पर।

एक ग्रामीण लोहार शहर में आया ही था, उसे सिपाही पकड़ लाए। उसको बात का कुछ भी पता नहीं था। वह मृत्युभय से कांपने लगा। आखिर लोगों के समझाने पर बोला—स्वामिन् ! यद्यपि मैं ही गुनाहगार हूँ लेकिन दुबला-पतला हूँ अतः शूली माता मेरे से तृप्त नहीं हो सकेगी।

राजा—अच्छा ! ऐसी बात है तो जाओ शहर में जो भी ताजा-मोटा हो, उसे पकड़कर शूली चढ़ा दो।

सिपाहियों ने उसी चेले को आ पकड़ा, जो माल खाकर मोटा-ताजा बन रहा था। वह रोता-बिलखता गुरु के पास आया और भविष्य में आपकी आज्ञानुसार चलूंगा, यह प्रण करके प्राण-भिक्षा मांगने लगा।

कृपालु गुरु शिष्य सहित शूली के निकट पहुंचे एवं एक-दूसरे को धक्का देकर कहने लगे कि मैं चढ़ूंगा शूली पर। राजा ने धक्कम-धक्की का कारण पूछा। गुरु ने कहा—इस समय पल, बेला एवं लग्न इतने श्रेष्ठ हैं कि जो भी इस शूली माता की गोद में बैठेगा, वह सदेह स्वर्ग में पहुंच जाएगा।

राजा—यदि सदेह स्वर्ग मिलता है, तब तो शूली चढ़ेंगे खुद हम। बस, मूर्ख राजा शूली चढ़कर मर गया। उसी दिन से पोपसिंहजी का नाम पोपांबाई हो गया और मूर्ख राजा के राज्य को पोपांबाई के राज्य की उपमा लगने लगी, अस्तु !

- एक बार दो व्यापारियों में काली मिर्च का सौदा हुआ। मिर्चें कुछ तेज हो गईं। व्यापारी उल्टी पायली से नापकर देने लगा। ग्राहक सुल्टी पायली से लेना चाहता था। आखिर दोनों राजदरबार में पहुंचे। पोपसिंहजी ने निर्णय दिया कि तेरी उल्टी गई और इसकी सुल्टी गई जाओ, आड़ी पायली से भरकर माप लो ! ग्राहक बोला हुजूर ! आड़ी पर तो एक दाना भी नहीं ठहर सकेगा। पोपसिंहजी ने कहा—बस, चले

जाओ चुपचाप ! जो कुछ कह दिया, वही ठीक है। यह दृश्य देखकर एक कवि ने कहा—

पोपांबाई रा राज में, पूरो घोर अंधार।
ऊंधी सूंधी छोड़ के, आड़ी भरो गिवार।

६ **नव पेठे-तेरह लगवाड़—**

मालिन बेचने को नव पेठे लेकर बैठी—

(१) दीवान, (२) कोतवाल, (३) पुरोहित, (४) तहसीलदार, (५) थानेदार, (६) जमादार, (७) चोहटिया, (८) न्यायाधीश, (९) वकील—ये सब क्रमशः आते गये और एक-एक फल उठाते गये। माल सारा उठ गया, पैसा किसी ने नहीं दिया। फिर नगरसेठ, वैद्य आदि चार ग्राहक और आये एवं पेठा न मिलने से मालिन की साड़ी एवं गदहे को भी खींचने लगे। तब मालिन ने कहा—यहां तो नव पेठों पर तेरह लगवाड़ हैं।

७ बुरी सरकार के शासन में अच्छे स्त्री-पुरुषों के लिये जेल को छोड़कर और कोई भी स्थान नहीं रहता।

—गांधी

८ कोई यहां प्रबन्ध नहीं है,
आलोचना लोच से खाली,
अब मज़ाक में मज़ा न गम है।
सत्ता में सत कहा रहा है,
सिर्फ अहम् में हम ही हम है।

—हिन्दुस्तान, ४ जुलाई, १९६६

९ अल्ला री मां रो चालीसो।

० ऊंट खुड़ावै र गधो डामीजै।

० काम करै ऊधोदास र जीम जावै माधोदास।

० घोड़ै ही वेगा चढ़ावै र गधै ही वेगा चढ़ावै।

० घोड़ो दौड़-दौड़ मरै र, सवार री हूंस ही को पूरीजै नी।

—राजस्थानी कहावतें

१० राणी रुए रोटला ने अने गोली खाए गोल ।

—गुजराती कहावत

११ अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां तु विमानता ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥

—पञ्चतंत्र ३।१६१

जिस राज्य में अपूज्यों का पूजन और पूज्यों का अपमान होता है, वहां ये तीन बातें अधिक होती हैं—दुर्भिक्ष, मरण और भय ।

१२ कांदा खाधा कमधजां, घी खाधो गोलांह ।
चूरू चाली ठाकरां ! वाजंतां ढोलांह ॥

—राजस्थानी दोहा

१४ गोला घणा नजीक, अमरावां आदर नहीं ।
तिण ठाकर नै ठीक, रण में पड़सी राजिया !

—सोरठासंग्रह

२५ अराजकता

१ नाराजके जनपदे, स्वकं भवति कस्यचित् ।
मत्स्या इव जना नित्यं, भक्षयन्ति परस्परम् ।

—वाल्मीकिरामायण

बिना राजा के देश में किसी की कोई वस्तु अपनी नहीं रहती । मछलियों की भांति सब लोग सदा परस्पर एक-दूसरे का भक्षण करते ही रहते हैं ।

२ नहिं पति बहुपति निबलपति, पति कुमार पति नार ।
और पुरन की कहा चली, सुरपुर होत उजार ।

—राजस्थानी दोहा

३ यत्र स्त्री यत्र कितवो, बालो यत्र प्रशासिता ।
तद् गृहं क्षयमायाति, भार्गवो हीदमब्रवीत् ।।

—पञ्चतन्त्र ५।१०८

जहां स्त्री, कितव-धूर्त और बालक शासन करता है, वह घर नष्ट हो जाता है—यह शुक्राचार्य का कथन है ।

२६ स्वराज्य-प्रजातंत्र राज्य

१ जनता के लिए जनता द्वारा संचालित—जनता की ही शासन-प्रणाली का नाम प्रजातंत्र है।

—लिंकन

२ मैं प्रजातन्त्र में इसलिए विश्वास करता हूं कि वह प्रत्येक मनुष्य की शक्ति को उन्मुक्त करता है।

—वुडरो विल्सन

३ प्रजातंत्र इस दृढ़ विश्वास की आधारशिला पर स्थित है कि साधारण मनुष्य में भी असाधारण कार्य करने की शक्ति निहित है।

—हैरी इमर्सन फासडिस

४ अविश्रमो लोकतन्त्राधिकारः।

—अभिज्ञानशाकुंतल

प्रजातन्त्र-शासन हमेशा प्रगतिशील होता है।

५ कोई भी सरकार प्रबल विरोधीदल के बिना अधिक दिन टिक नहीं सकती।

—डिजराइली

२७ राष्ट्र–देश

१ पशु-धान्य-हिरण्यसम्पदा राजते इति राष्ट्रम् ।

—नीतिवाक्यामृत, १९।१

देश, गाय-भैंस आदि पशु, गेहूं-चावल प्रभृत अन्न एवं हिरण्य-सुवर्ण आदि धन-सम्पत्ति से शोभायमान होता है, इससे इसकी 'राष्ट्र' संज्ञा है।

२ भर्तुर्दण्ड—कोशवृद्धि दिशतीति देशः ।

—नीतिवाक्यामृत, १९।२

यह स्वामी को सैन्य और कोष की वृद्धि देता है, अतः इसकी 'देश' संज्ञा है।

३ श्रीर्वै राष्ट्रम् ।

—शतपथब्राह्मण, ६।७।३।७

लक्ष्मी—धन से ही राष्ट्र चलता है ।

४ कुराजान्तानि राष्ट्राणि ।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

बुरा राजा राष्ट्र का नाश कर देता है ।

१ न गजानां सहस्रेण, न लक्षेण च वाजिनाम् ।
तथा सिद्ध्यन्ति कार्याणि, यथा दुर्गप्रभावतः ॥६३॥
विषहीनो यथा नागो, मदहीनो यथा गजः ।
सर्वेषां वश्यतां याति, दुर्गहीनस्तथा नृपः ॥६५॥
एकः शतं योधयते, प्राकारस्थो धनुर्धरः ।
शतं सहस्राणि तथा, सहस्रं लक्षमेव च ॥६७॥
दुर्गाणि राज्ञा कार्याणि, सजलानि दृढानि च ।
द्रव्यमन्नं च तेष्वेव, स्थापनीयं प्रयत्नतः ॥६८॥

—**सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १४९**

हजार हाथियों से और लाख घोड़ों से जो काम सिद्ध नहीं होते, वे एक दुर्ग से सिद्ध हो सकते हैं ॥६३॥

दुर्गहीन राजा—विषहीन सर्प और मदहीन हाथी की तरह हरएक दुश्मन के काबू में आ जाता है ॥६५॥

दुर्ग पर रहा हुआ एक धनुर्धर सौ सुभटों से, सौ हजार सुभटों से और हजार लाख सुभटों से युद्ध कर सकते हैं ॥६७॥

इसलिए राजाओं को चारों तरफ जलवाले एवं सुदृढ़ दुर्ग बनाकर उनमें अन्न व दूसरी समस्त युद्ध की सामग्री स्थापित करनी चाहिए ॥६८॥

२६ राज्यकोष—खज़ाना

१ कोशो हि भूपतीनां जीवनं, न प्राणाः ।।५।।
क्षीणकोशो हि राजा पौर—जनपदानन्यायेन ग्रसते, ततो राष्ट्र-शून्यता स्यात् ।।६।।

—**नीतिवाक्यामृत, २१**

वास्तव में कोष ही राजाओं का जीवन है, प्राण नहीं ।।५।।
कोषविहीन राजा देशवासियों के निर्दोष होने पर भी उन्हें अन्याय से दण्डित कर जुर्माना आदि द्वारा उनसे प्रचुर धनराशि ग्रहण करने को सतत प्रयत्नशील रहता है । फलस्वरूप अन्याय से पीड़ित प्रजा वहाँ से भाग जाती है, जिससे राज्य में शून्यता हो जाती है ।

२ नियोगिषु लक्ष्मीः क्षितीश्वराणां द्वितीयः कोशः ।

—**नीतिवाक्यामृत, १८।६७**

अधिकारियों की सम्पत्ति राजाओं का दूसरा खजाना है । क्योंकि संकट पड़ने पर उनके काम आ जाती है ।

३ अतिव्ययोऽनवेक्षा च, तथार्जनमधर्मतः ।
पोषणं दूरसंस्थानं, कोषव्यसनमुच्यते ।।

अधिक व्यय करना, देख-रेख न करना, अन्याय से प्राप्त करना तथा दूरस्थ संस्था के पोषण में लगाना—ये चार कोष का नाश करने वाले हैं ।

बल–सेना

१ सेना के चार अंग हैं—हाथी, घोड़े, रथ और पायक—पैदल सुभट।

२ बलेषु हस्तिनः प्रधानमङ्गं स्वैरवयवैरष्टायुधा हस्तिनो भवन्ति।

—नीतिवाक्यामृत २२।२

चतुरङ्ग सेना में हाथी प्रधान माने जाते हैं, क्योंकि वे अष्टायुध हैं अर्थात् वे अपने चारों पैर, दो दान्त, पूंछ और सूंड रूप आठ शस्त्रों से युद्ध में शत्रुओं का विनाश करते हुए विजयश्री को प्राप्त करते हैं।

३ अश्वबलं सैन्यस्य जङ्गमः प्रकारः।

—नीतिवाक्यामृत २२।७

घोड़ों की सेना चतुरङ्ग सेना का चलता-फिरता भेद है, क्योंकि वे अत्यन्त चपल व वेग से गमन करने वाले होते हैं।

० अश्व के ९ उत्पत्तिस्थान (जातियां) हैं—

(१) तार्जिका (२) स्वस्थलाणा (३) करोखरा (४) गाजिगाखा (५) केकारवा (६) पुष्टाहारा (७) गाव्हारा (८) सादुपारा (९) सिन्धुपारा।

४ **सैनिक के तीन आदर्श**—

(१) **मुट्ठीबन्द**—किसी के सामने हाथ न पसारे।

(२) **कमरबन्द**—देशरक्षा के लिये सदा तत्पर रहे।

(३) **लंगोटबन्द**—चरित्र का पक्का हो।

५ स्वयमनवेक्षणं, देयांशहरणं, कालयापनां, व्यसनाप्रतीकारो, विशेष-विधावसंभावनं च तस्य विरक्तिकारणानि।

—नीतिवाक्यामृत, २२।१७

राजा के निम्नलिखित कार्यों से, उसकी सेना उसके विरुद्ध हो जाती है—स्वयं अपनी सेना की देख-रेख न करना, सैनिकों को देने योग्य वेतन में से कुछ भाग हड़प लेना, आजीविका के योग्य वेतन को यथासमय न देकर विलम्ब से देना, उन्हें विपत्तिग्रस्त देखकर भी सहायता न करना और विशेष अवसरों (पुत्रोत्पत्ति, विवाह व त्यौहार आदि खुशी के मौकों) पर उन्हें धनादि से सम्मानित न करना।

६ **अक्षौहिणी सेना—**

गज इकबीस हजार, आठ-सौ सत्तर गज ही।
रथ इकबीस हजार, आठ-सौ सत्तर रथ ही।
एक लाख नव सहस, सुभट नर-सेना नायक।
तिण ऊपर शत तीन अधिक पच्चास सुपायक।
सोहत तुरंग पैंसठ सहस, छव सौ दस फिर और लिय।
इहविध अभंग चतुरंग दल, अक्षौहिणी परमाण किय।

—**भाषाश्लोकसागर**

(कौरवों के पास ग्यारह एवं पाँडवों के पास सात अक्षौहिणी सेना थी।)

७ **५६ देशों की सेना और उस पर १६॥ खरब रु० वार्षिक खर्च**—विश्व के ५६ राष्ट्र प्रतिरक्षा पर प्रतिवर्ष १६ खरब ५० अरब (१,६५,००० करोड़) रु० खर्च कर रहे हैं। यह सूचना युद्ध अध्ययन इन्स्टीट्यूट की अन्तिम रिपोर्ट (१९६८-६९) में दी गई है। इस राशि में अधिकांश अफ्रीकी, लेटिन अमरीकी, कृष्णसागरीय तथा अटलाण्टिक राज्यों—फारस की खाड़ी के सुल्तानों तथा और भी अनेक देशों का सैनिक व्यय शामिल नहीं हैं।

इन ५६ देशों की सेनाओं में २,८४,७५,००० सैनिक है तथा इनके पास ४५,९६० सैनिक विमान हैं।

१३ कम्युनिस्ट देशों की सैनिकशक्ति १४ पश्चिमी राष्ट्रों (इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस आदि) से अधिक है लेकिन पश्चिमी राष्ट्रों का सैनिकव्यय कम्युनिस्ट देशों से दुगुना है। कम्युनिस्ट देशों के पास ८१,१४,५००

सैनिक और १६,००० विमान हैं, जबकि पश्चिमी राष्ट्रों के पास ६५,१६,६६० सैनिक हैं और ६,४४५ फौजी विमान हैं। सेण्टो और सी ए टो देशों (ब्रिटेन, फ्रांस, तुर्की और अमरीका को छोड़कर) के पास ८,१३,४७० सैनिक हैं और ८८८ सैनिक विमान हैं।

१६ निर्गुट देशों (भारत, इंडोनेशिया, संयुक्त अरब गणराज्य और युगोस्लाविया आदि) के सैनिकों की संख्या ४०३४,४०० है और इनके पास ३,६४७ विमान हैं। इन देशों का फौजी खर्च ४,५८२ करोड़ रु० है। भारत का फौजी खर्च दस अरब रुपये है।

चार देशों का (जापान, द० कोरिया, स्पेन, ताइवान) जिनका अमरीका से रक्षा समझौता है, सैनिक खर्च ६०० करोड़ रु० है। इनके पास १७,०३,००० सैनिक और १,३६० विमान है। कम्बोडिया, लाओस व द० विएटनाम का फौजी खर्च १७८ करोड़ रु० है। इनके पास ६,३४,००० सैनिक और २२० विमान हैं,

—हिन्दुस्तान, ३१ मार्च

शस्त्र

१ दसविहे सत्थे पन्नत्ते, तं जहा—

सत्थमग्गी विसं लोणं, सिणेहो खारमंबिलं।
दुप्पउत्तो मणो वाया-काया भावो य अविरई॥

—स्थानांग १०।७४३

जिससे प्राणियों की हिंसा हो, उसे **शस्त्र** कहते हैं। वे शस्त्र दस प्रकार के बताए गए हैं—

(१) **अग्नि**—यह अपनी जाति से भिन्न विजातीय-अग्नि की अपेक्षा स्वकायशस्त्र है और पृथ्वीकाय, अप्काय आदि की अपेक्षा परकाय शस्त्र है।

(२) **विष**—स्थावर और जंगम के भेद से विष दो प्रकार का है।

(३) **लवण**—अनेक प्रकार का नमक।

(४) **स्नेह**—तेल, घी आदि स्निग्ध पदार्थ।

(५) **क्षार** – राख-चूना आदि।

(६) **अम्ल**—काञ्जी आदि एक प्रकार का खट्टा रस, हरे शाक वगैरह में डालने से वह अचित्त हो जाता है। (ये छः द्रव्यशस्त्र हैं एवं शेष चार भाव शस्त्र हैं।)

(७) **दुष्प्रयुक्त मन**—हिंसा आदि में प्रयुक्त मन।

(८) **दुष्प्रयुक्त वचन**—हिंसा आदि में प्रयुक्त वचन।

(९) **दुष्प्रयुक्त शरीर**—हिंसा आदि में प्रयुक्त शरीर।

(१०) **अविरति**—किसी प्रकार का प्रत्याख्यान न करना अप्रत्याख्यान या अविरति कहलाता है।

२ **चार प्रकार के शस्त्र**—(१) पाणिमुक्त (२) यन्त्रमुक्त (३) अमुक्त (४) मुक्तामुक्त।

(१) **पाणिमुक्त**—शक्ति आदि।

(२) **यन्त्रमुक्त**—तीर आदि।

(३) **अमुक्त**—छुरी, कटारी, तलवार आदि।

(४) **मुक्तामुक्त**—लाठी आदि।

—**अभिधानचिन्तामणि** ३।४३८

३ **लाठी के गुण**—

लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग।
ऊंडा पानी अथग जल, तहां बचावत अंग।
तहां बचावत अंग, झपट कुत्ता कूं मारै।
घर में नार कुनार, ताहि कूं लट्ठ सुधारै।
कहै **गिरधर कविराय**, मित्र कूं लिखणी चिट्ठी।
छोड़ ढाल-तलवार, हाथ में रखणी लट्ठी।

० डंडा पीर है बिगडियां, तिगडियां दा।

—**पंजाबी कहावत**

४ **आधुनिक युग के संहारक अस्त्र**—

इन्टर कांटीनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल (आई० सी० बी० एम०) इस युग का संहारक अस्त्र है। यह बड़ी दूर (५,००० से १०,००० मील) तक की मार, मार सकता है। तोप का निकला गोला जिस मार्ग से जाता है, उसी से यह भी जाता है। इस कारण इसको बैलिस्टिक विस्फोट कहते हैं। इसकी गति १०,००० मील प्रति घंटा है। २६ अगस्त १९५७ को रूस ने सफलतापूर्वक यह रॉकेट चलाया था। इस नूतन आविष्कार से पश्चिमी जगत का हृदय दहल गया। अमेरिका ने इसके जवाब में 'इन्टर-मीडिएट रेंज बैलिस्टिक मिसाइल' तैयार किया है।

—**विश्वज्ञान कोष**

५ **शस्त्रों पर प्रतिवर्ष १४,६०० करोड़ रु० व्यय—**

जनेवा, २९ फरवरी (यून्यू) विश्व में शस्त्रस्पर्धा पर प्रतिवर्ष १४,६,०० करोड़ रु० खर्च किये जा रहे हैं। उक्त सूचना निरस्त्रीकरण सम्मेलन में संयुक्तराष्ट्र-महासचिव श्री कुर्त वाल्दहीम ने दी।

उन्होंने बताया कि रूस तथा अमेरिका के पास इतने परमाणु-आयुध हैं कि इनसे वे न केवल एक-दूसरे को अपितु सारी मानवजाति को नष्ट कर सकते हैं।

—नवभारत २ मार्च, १९७२

६ **तीर**—निशाने पर लग जाय उसे ही तीर कहते हैं—चतुर निशानेबाज तीर चलाने से पहले निशाना अच्छी तरह साधता है।

—बोस्ता

७ **सर्वोत्तमशस्त्र—**

बादशाह ने पूछा—शस्त्र कौनसा बढ़िया ? सभासदों ने यथारुचि शस्त्रों के नाम लिये। बीरबल ने समय को सर्वोत्तम शस्त्र कहा। बादशाह ने सबूत मांगा। बीरबल ने कहा—मौका आने पर सबूत दूंगा। कुछ समय के बाद एकदिन बीरबल कचहरी जा रहा था। सामने से मदोन्मत्त हाथी आ पहुंचा। बीरबल ने एक सोए हुए कुत्ते को घुमाकर हाथी के सिर पर दे मारा। हाथी चौंका और रास्ता छोड़कर भाग गया। बीरबल ने कचहरी पहुंचकर सारा हाल सुनाते हुए कहा—देखिये हजूर ! समय पर कुत्ता तलवार-बन्दूक से भी बढ़िया शस्त्र बन गया। अतः सर्वोत्तम शस्त्र "समय" ही है।

● ●

३२ युद्ध (युद्धनिषेध)

१ युद्ध विनाशविद्या का नाम है ।

—जॉन एस० सी० एबट

२ संग्रामो वै क्रूरम्, संग्रामे हि क्रूरं क्रियते ।

—शतपथ ब्राह्मण १।२।५।१९

संग्राम क्रूरता का रूप है, क्योंकि संग्राम में क्रूर कर्म किए जाते हैं ।

३ संसार में आजतक अच्छा युद्ध और बुरी शांति कभी नहीं हुई ।

—फ्रैंकलिन

४ युद्ध में सत्य की हत्या सबसे पहले होती है ।

—अंग्रेजी कहावत

५ युद्ध निषेध—

(क) युद्ध करना गलत है, युद्ध के लिए सेना खड़ी करना गलत है

—कांगफ्यूत्सी

(ख) युद्ध करना गलत है, सेना में भरती होना गलत है, सेनापति अपराधी है, किसी प्रदेश पर लोगों की इच्छा के बिना कब्जा करना गलत है ।

—मैनशियस (कांगफ्यूत्सी का अनुयायी)

(ग) हथियार चाहे जितने नक्कासीदार हों, वे सुख के साधन नहीं हो सकते । हथियार अशुभ के सूचक हैं । ज्ञानी पुरुष उनका प्रयोग नहीं करते । लाचारी की बात दूसरी है ।

—ताओपनिषद् ३१

(घ) पुष्पयुद्धमपि नीतिविदो नेच्छन्ति, किं पुनः शस्त्रयुद्धम् ।

—नीतिवाक्यामृत ३२।३०

नीतिज्ञपुरुष फूलों से लड़ना भी पसन्द नहीं करते, फिर शस्त्र की तो बात ही कहां !

(ङ) सामसाध्यं युद्धसाध्यं न कुर्यात् ।

—नीतिवाक्यामृत ३०।३५

शान्ति से बन सकने वाला कार्य युद्ध से सिद्ध मत करो !

(च) साम्ना दानेन भेदेन, समस्तैरथवा पृथक् ।
साधितुं प्रयतेतारीन् न युद्धेन कदाचन ॥

—हितोपदेश ३।४०

मीठे वचन से, धन देकर और तोड़-फोड़ करके, इन तीनों उपायों से एक साथ ही अथवा अलग-अलग, शत्रुओं को वश करने का यत्न करना चाहिये, पर युद्ध से कभी नहीं ।

३३ युद्ध से पहले विचारणीय बातें

१ चपलौ किल शूराणां, रणे जय-पराजयौ ।

—कथासरित्सागर

संग्राम में शूर-सुभटों की जय-पराजय अस्थिर रहती है ।

२ विचित्रा हि रणे गतिः ।

— त्रिषष्ठि शलाकापुरुषचरित्र ४।१

संग्राम की गति विचित्र है ।

३ समस्यासमेन सह विग्रहे, निश्चितं मरणं, जये संदेहः ।

--नीतिवाक्यामृत ३०।६८

असमान के साथ युद्ध करने में मरना निश्चित है, विजय में संदेह है ।

४ बुद्धियुद्धेन परं जेतुमशक्तः शस्त्रयुद्धमुपक्रमेत् ।

—नीतिवाक्यामृत २१।३

बुद्धि के युद्ध से न जीत सकने पर शस्त्रयुद्ध करना चाहिए ।

५ न यथेषवः प्रभवन्ति यथा प्रज्ञावतां प्रज्ञा ।

—नीतिवाक्यामृत २१।२

तीर उतना काम नहीं कर सकते, जितनी बुद्धिमानों की बुद्धि ।

६ मित्रामात्यसुहृद्वर्गा, यदा स्युर्दृढभक्तयः ।
शत्रूणां विपरीताश्च, कर्त्तव्यो विग्रहस्तदा ॥

—हितोपदेश ३।६५

मित्र, मन्त्री और अपने लोग, जब दृढ़ शुभचिन्तक हों और शत्रुओं के विपरीत हों, तब युद्ध करना चाहिए ।

७ भूमिर्मित्रं हिरण्यं वा, विग्रहस्य फलत्रयम् ।
नास्त्येकमपि यद्येषां, विग्रहं न समाचरेत् ।।

—पञ्चतन्त्र ३।१५

युद्ध के तीन फल हैं—भूमि, मित्र और धन की प्राप्ति । जहाँ इनमें से एक भी फल न मिले, वहां युद्ध नहीं करना चाहिए ।

८ यत्रायुद्धे ध्रुवं मृत्यु-र्युद्धे जीवितसंशयः ।
तमेव कालं युद्धस्य, प्रवदन्ति मनीषिणः ।।

—हितोपदेश २।१७०

जिस समय, युद्ध के नहीं करने में मृत्यु का होना निश्चय हो, और युद्ध में जीने का संदेह हो, उसी काल को पंडित लोग युद्ध का समय कहते हैं ।

९ पड़वे पोढंतांह, करड़ावण हर कोइ करै ।
धारा में धसतांह, आंसू आवै ईलिया !

—सोरठा-संग्रह

३४ युद्ध के कतिपय नियम

१ न च हन्यात् स्थलारूढं, न क्लीबं न कृताञ्जलिम् ।
न मुक्तकेशं नासीनं, न तवास्मीति वादिनम् ।।९१।।
न सुप्तं न विसन्नाहं, न नग्नं न निरायुधम् ।
नायुध्यमानं पश्यन्तं, न परेण समागतम् ।।९२।।

—मनुस्मृति, अध्याय-७

स्थल पर खडे हुए, नपुंसक, हाथ जोड़ने वाले, खुले केश वाले, आसन पर बैठे हुए और 'मैं तुम्हारा हूं' यों कहने वाले शत्रु को नहीं मारना चाहिए ।।९१।।

जो सोया हुआ हो, सन्नाह रहित हो, नग्न हो, शस्त्ररहित हो, युद्ध से विमुख केवल देखने के लिए आया हो, और दूसरे से युद्ध में जुटा हुआ हो, ऐसे शत्रु को नहीं मारना चाहिए ।।९२।।

२ स्त्री-विप्र-लिङ्गि-बालेषु, प्रहर्तव्यं न कर्हिचित् ।
प्राणत्यागेऽपि संजाते, विश्वस्तेषु विशेषतः ।

—पञ्चतन्त्र ४।४०

स्त्री, ब्राह्मण, साधु-संन्यासी, बालक और विश्वस्त व्यक्ति इन सब पर प्राण-त्याग का प्रसंग आ जाने पर भी प्रहार नहीं करना चाहिए ।

३ चरणेषु पतितं भीतमशस्त्रं च हिंसन् ब्रह्महा भवति ।

—नीतिवाक्यामृत ३०।७५

पैरों में पड़ते हुए, भयभीत एवं शस्त्रहीन को मारने वाला **ब्रह्मघाती** होता है ।

३५ युद्ध का प्रोत्साहन

१ जये च लभते लक्ष्मी —मृते चापि सुरांगना।
क्षणविध्वंसिनः कायाः, का चिन्ता मरणे रणे।।

—हितोपदेश २।१७२

विजय होने पर लक्ष्मी मिलती है और मर जाने पर देवांगनायें प्राप्त होती हैं। ये शरीर क्षण-विनश्वर हैं, फिर संग्राम में मरने की क्या चिन्ता!

२ समोत्तमाधमै राजा, त्वाहूतः पालयन् प्रजाः।
न निवर्तेत संग्रामात्, क्षात्रं धर्ममनुस्मरन्।।८७।।
संग्रामेष्वनिवर्तित्वं, प्रजानां चैव पालनम्।
शुश्रूषा ब्राह्मणानां च, राज्ञां श्रेयस्करं परम्।।८८।।
आहवेषु मिथोऽन्योन्यं, जिघांसन्तो महीक्षितः।
युध्यमानाः परं शक्त्या, स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः।।८९।।

—मनुस्मृति, अध्याय ७

प्रजा का पालन करता हुआ क्षात्रधर्म के अनुसार समबल, अधिकबल या कमबल वाले राजा से युद्धार्थ बुलाये जाने पर युद्ध से मुंह न मोड़े।।८७।।

युद्ध में पीठ न दिखाना, प्रजा का पालन और ब्राह्मणों की सेवायें राजाओं के लिए परम कल्याणकारक हैं।।८८।।

युद्ध में परस्पर एक-दूसरे को मारने की इच्छा करने वाले और सम्पूर्ण शक्ति लगाकर लड़ने वाले राजा युद्ध में पीठ न दिखाकर सीधे स्वर्ग को जाते हैं।।८९।।

३ यस्तत्र हन्यते देवि ! गजस्कन्धगतो नरः ।
ब्रह्मलोकमवाप्नोति, रणेष्वभिमुखो हतः ।।
रथमध्यगतो वापि, हयपृष्ठगतोऽपि वा ।
हन्यते यस्तु संग्रामे, शक्रलोके महीयते ।।
स्वर्गे हताः प्रपूज्यन्ते, हन्ता त्वत्रैव पूज्यते ।
द्वावेतौ सुखमेधेते हन्ता यश्चैव हन्यते ।।

—महाभारत, अनुशासनपर्व, अध्याय १४५

महादेव पार्वती से कह रहे हैं—देवि ! जो संग्राम में हाथी की पीठ पर बैठा हुआ युद्ध के मुहाने पर मारा जाता है, वह ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है ।

रथ के बीच में बैठा या घोड़े की पीठ पर चढ़ा हुआ जो वीर युद्ध में मारा जाता है वह इन्द्रलोक में सम्मानित होता है । मारे गये योद्धा स्वर्ग में पूजित होते हैं, किंतु मारने वाला इसी लोक में प्रशंसित हो जाता है । अतः युद्ध में दोनों ही सुखी होते हैं । जो मारता है वह, और जो मारा जाता है वह ।

४ युद्ध करने की अनिच्छा प्रकट करने पर अर्जुन से श्री कृष्ण ने कहा —

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं, संग्रामं न करिष्यसि ।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च, हित्वा पापमवाप्स्यसि ।।३४।।

यदि तू इस धर्मयुक्त संग्राम को नहीं करेगा तो स्वधर्म को और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त हो जाएगा ।।३४।।

० हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय ! युद्धाय कृतनिश्चयः ।।३७।।

—गीता-अध्याय-२

अतः युद्ध करना तेरे लिए सब प्रकार से अच्छा है, क्योंकि या तो मरकर स्वर्ग को प्राप्त होगा अथवा जीतकर पृथ्वी को भोगेगा, इससे हे अर्जुन ! युद्ध के लिए निश्चयवाला होकर खड़ा हो जा !

प्राचीन युद्ध के चित्र

१ शरजाल - तिरस्कृतदृष्टिपथं,
पथरोधसमाकुल - तीव्रभटम् ।
भटकोटिविपाटित - कुम्भितटं,
तटविभ्रमहस्तिशरीररचितम् ।।१।।

रचितप्रथितोरुसुहस्तिघटं,
घटनागतभीरुकृतार्तरवम् ।
रवपूरित-भूधरदृग्विवरं ।
वरहेतिनिवारित-खिन्ननृपम् ।।२।।

नृपभिन्नमदोद्धुर-वैरिगणं,
गण-सिद्ध-नभश्चरघुष्टजयम् ।
जयलम्पट-योधशतैश्चटुलं,
चटुलाश्वसहस्र-विमर्दकरम् ।।३।।

करसृष्टसरौघविवर्णरथं,
रथभंगविवर्धित-बोलबलम् ।
बलशालिभटेरित-सिंहनदं,
नदभीषणरक्तनदीप्रवहम् ।।४।।

—प्राचीनसंग्रह से

वह युद्ध इतना भयंकर था कि बाणों की भरमार के कारण कुछ नहीं दीख रहा था और सारे मार्ग बलशाली सुभटों द्वारा आकीर्ण होने के कारण निरुद्ध थे। हजारों योद्धाओं ने हाथियों के समूह को नष्ट कर डाला था और ऐसा लग रहा था कि नदी का तट हाथियों के शरीर से उपचित हो रहा है ।।१।।

युद्ध-स्थल विशाल उरु वाले हाथियों की घटा से संकुल था। वहां आये हुए कायर व्यक्तियों का आर्त्तस्वर गूंज रहा था और वह पहाड़ों की गुफाओं में प्रतिध्वनित हो रहा था। अग्नि चारों ओर से घेर कर, संग्राम में खिन्न हुए नृपों को भस्मसात् कर रही थी ॥२॥

राजाओं ने मद से उच्छृंखल हुए अपने शत्रुओं को मार डाला, तब आकाश में विचरण करने वाले विद्याधरों ने जयनाद किया। वह युद्ध विजय की लालसा रखने वाले सैंकड़ों योद्धाओं से चपल और हजारों चंचल आंखों द्वारा शत्रु के मान का विमर्दन करने वाला था ॥३॥

राजाओं ने अपने हाथ से छोड़े बाणों द्वारा रथों को विवर्ण (छिन्न-भिन्न) कर डाला। रथ टूटने के कारण सारे रण-स्थल में कोलहल हुआ और शक्ति-शाली सुभटों ने सिंहनाद किया। युद्ध ने बल पकड़ा और देखते-देखते रक्त की नदी भीषण कलरव करती हुई प्रवाहित हो गई ॥४॥

२ दुवसेन उदग्गन खग्ग समग्गन,
अग्ग तुरग्गन वग्ग लई।
मचि रंग उतंगन दंग मतंगन,
सज्जि रनंगन जंग जई।
लगी कंप लजाकन भीरु भजाकन,
वाक कजाकन हाक बढ़ी।
जिम मेह असंबर यों लगि अंबर,
चंड अडंबर खेह चढ़ी ॥१॥

फहरक्कि दिशान-दिशान बड़े,
बहरक्कि निशान उड़ैं विथरैं।
रसना अहिनायक की निकसैं कि,
पराझल होलिय की प्रसरैं।

गजघंट ठनंकिय भेरी भनंकिय,
रंग रनंकिय कोप करी ।
पखरान भनंकिय बान सनंकिय,
चाप तनंकिय ताप परी ॥२॥

धमचक्क रचक्कन लग्गि लचक्कन,
कोलमचक्कन तोल कढ़्यो ।
पखरालन भाल खुभी खरतालन,
व्याल कपालन साल बढ़्यो ।
डगमग्गि शिलोच्चय शृंग डुले,
भगमग्गि कृपानन अग्गि भरी ।
बजि खल्ल तबल्लन हल्ल उभल्लन,
भुम्मि हमल्लन घुम्मि परी ॥३॥

—कवि सूर्यमल

उछलते हुए अग्र भागवाली दोनों ही सेना के सैनिकों ने कृपाण उठाकर घोड़े आगे बढ़ाए, रणविजयी और सज्जित उन्नत हाथियों ने युद्ध मचाया। वीरों की ललकार सुनकर लज्जित होने वाले तथा भागने वाले कायर काँपने लगे। सजल बदलों के सदृश आकाश में धूलि छा गई ॥१॥

दशों दिशओं में उड़ती हुईं बड़ी और छोटी ध्वजाएं ऐसी प्रतीत होने लगीं, मानो ! शेषनाग की जिह्वा निकल रही है। अथवा होली की ज्वाला निकल रही है। हाथियों के घंटों ठनकार और भेरी (दुन्दुभि) की भनकार होने लगी। कवच-कडियें बजने लगीं। घोड़ों के लोह बख्तरों की झनकार से, बाणों के सनसनाने से और धनुष-टंकार से भयंकरता छा गई ॥२॥

पृथ्वी-धारक वराह, युद्ध-टक्करों से झुकने लगा। कितने बोझ से वाराह मचक सकता है, भूमि के लचकने से इसका अन्दाजा लग गया। पाखर-

युक्त घोड़ों के भार और उनके चुभने वाली खुरतालों से शेषनाग के कपाल में दर्द बढ़ गया। पर्वत हिलकर उनके शिखर डुलने लगे और जगमगाती तलवारों से आग झड़ने लगी। उस हल्ले के बढ़ाव से तबलों के समान खालें (चमड़ी) बजने लगी और हमलों से पृथ्वी घूमने लगी ॥३॥

३ खड्ग आदि छत्तीस आयुधों से युद्ध करते हुए वीर सुभट—

लड़ रहे हैं खंग[1] मुद्गर[2] मुशल[3] शस्त्री[4] बाण[5] से,
जुड़ रहे हैं दंड[6] कौशल[7] चक्र[8] कुंत[9] कृपाण[10] से,
गदा[11] छुरियाँ[12] लकुट[13] कस[14] करपत्र[15] सेल्ल[16] चला रहे,
असिपत्र[17] अर्धमुखी[18] भुशुं[19] गांडीव[20] खूब घुमा रहे।
नाराच[21] नाली[22] क्षुरमुखी[23] तोमर[24] परशु[25] कई ले गदा[26]।
भिड़ रहे हैं वज्र[27] भल्ली[28] शक्ति[29] लांगल[30] से मुदा।
विस्फोट[31] पाल[32] त्रिशूल[33] भिंदिपाल[34] ले कई मस्त हैं।
खुहा[35] पट्टिश[36] आदि युत भट, युद्ध-व्यस्त समस्त हैं।

—संक्षिप्त जैन महाभारत १।३५

३७ विश्व के कतिपय उल्लेखनीय युद्ध

१ **मेरेथन का युद्ध**—यह ४९० ई० पू० यूनानियों तथा फारसवासियों के बीच हुआ और इसमें यूनानियों की विजय हुई।

२ **शतवर्षीय युद्ध**—यह १३३८ से १४५३ ई० तक फ्रांस तथा इंगलैंड के बीच होता रहा, अन्त में इंगलैंड को झुकना पड़ा।

३ **सप्तवर्षीय युद्ध**—१७५६-१७६३ ई० में इंगलैंड ने जर्मनी के सहयोग से फ्रांस और सोवियत-संघ को पराजित किया।

४ **अमेरिकी-स्वतन्त्रतायुद्ध**—१७८३ ई० में जार्ज वाशिंगटन ने ब्रिटेन के सैनिकों को पराजित कर के अमरीका को स्वतंत्रता दिलाई।

५ **वाटरलू का युद्ध**—१८१५ ई० में वैल्जली ने नेपोलियन को हराकर उसे बन्दी बना लिया।

६ **नीलनदी का युद्ध**—१८९९ ई० में नेल्सन ने फ्रांसीसी बेड़े को हराया और भू-मध्य सागर पर ब्रिटेन का अधिकार हो गया।

७ **अमरीकी सिविल वार**—१८६१-६६ ई० में अब्राहम लिंकन के नेतृत्व में उत्तरी राज्यों ने दक्षिणी राज्यों को हराया और संघीय राज्य की स्थापना की।

—सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति परिचय, सन् १९७२, पृष्ठ २८

८ **प्रथम विश्वयुद्ध**—प्रथम विश्वयुद्ध से पहले **सर्विया** नामक एक छोटा-सा प्रदेश था, जो आजकल युगोस्लाविया में मिल गया है। वहां के एक नवयुवक ने **आर्कड्यूकफार्डनेड** (उस समय के आस्ट्रिया-हंगरी के उत्तराधिकारी) को गोली का निशाना बना दिया। इसके ठीक एक महीने बाद २८ जुलाई, सन् १९१४ को आस्ट्रिया-हंगरी ने सर्विया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस तरह प्रथम विश्वयुद्ध की शुरूआत हुई। लड़ाई

समाप्त होने तक इस युद्ध में ६ करोड़ व्यक्ति भाग ले चुके थे और ८५ लाख व्यक्ति मौत के घाट उतारे जा चुके थे।

आस्ट्रिया-हंगरी की युद्धघोषणा के बाद कुछ ही दिनों में यूरोप के अन्य राष्ट्र भी युद्ध में उतर पड़े। एक ओर आस्ट्रिया-हंगरी, जर्मनी, तुर्की और बलगारिया थे। इन्हें **मध्ययूरोपीयराष्ट्र** कहा जाता था। दूसरी ओर **ब्रिटेन** और उसके आधीनस्थ देश तथा फ्रांस, इटली बेल्जियम, और जापान थे, जो **मित्रराष्ट्र** कहलाते थे।

आखिर जर्मनी, आस्ट्रिया और तुर्की की सेनाएं समूचे यूरोप में पीछे हटने लगी तब ११ नवम्बर, १९१८ को उत्तरी फ्रांस में एक रेल के डिब्बे में युद्ध-विराम समझौते पर हस्ताक्षर हो गए।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप का नक्शा बदल गया और भविष्य में युद्ध रोकने के लिए **राष्ट्रसंघ** की स्थापना हुई।

० **द्वितीय विश्वयुद्ध**—इस युद्ध का मूल कारण १ सितम्बर १९३९ को **पौलैण्ड** पर जर्मनी का आक्रमण था। इस युद्ध में एक ओर जर्मनी, इटली और जापान थे, जो **धुरीराष्ट्र** कहलाते थे और दूसरी ओर फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका और रूस थे, जो **मित्रराष्ट्र** कहलाते थे।

अमेरिका ने अणुबम का प्रथम प्रयोग इसी महायुद्ध में किया था। फलस्वरूप जापान के दो महत्वपूर्ण नगर **हिरोशिमा** और **नागासाकी** बुरी तरह नष्ट हो गए। यह युद्ध लगभग पांच साल तक चला। युद्ध में मित्रराष्ट्रों की विजय हुई। कहा जाता है कि दुनिया की जितनी तबाही इस विश्वयुद्ध में हुई, उतनी इससे पूर्व प्रायः कभी न हुई।

हरिजन-सेवक—समाचार पत्र के अनुसार इस विश्वयुद्ध में हमलों से स्त्रियां, बालक व वृद्ध लगभग डेढ़ करोड़ एवं दो करोड़ से अधिक नवजवान मारे गये। ढाई करोड़ घायल, लूले, अपाहिज तथा लंगड़े बने।

नोट—१. द्वितीय विश्वयुद्ध में अकेले रूस के २५ खरब रूबल (२८ खरब रुपये) खर्च हुए थे।

—**हिन्दुस्तान दैनिक २८ अगस्त १९६६**

लगभग तीन करोड़ व्यक्ति बेघर हो गए। पांच करोड़ निर्वासित तथा कैदी बने एवं १५ करोड के लगभग व्यक्ति अनेक प्रकार की बीमारियों के शिकार बने।[1]

युद्ध में प्रतिदिन का खर्च इतना था कि भारत की वार्षिक आय मात्र डेढ़ दिन में लग जाती थी। इतनी रकम यदि वर्तमान दुनिया के (लगभग २३४ करोड़) मनुष्यों में वितरित की जाती तो प्रति मनुष्य के हिस्से में तीस हजार रुपये आते अर्थात् प्रतिकुटुम्ब (चार प्राणी-स्त्री, पुरुष एवं दो बच्चे) के पास अपना चालीस हजार का मकान, पन्द्रह हजार की कार, चालीस हजार की पूंजी (खेती-व्यापार आदि के लिए) और इसके अतिरिक्त, पच्चीस हजार रुपये बैंक में जमा होते।

—**हरिजन सेवक**

—विश्वकोष भाग ६

—जैनभारती १५ मई, १६५५ के आधार

६ मलाया में मेंढ़कों का युद्ध—

कुआलालम्पुर ५ जुलाई—यहां से कुछ ही दूर पर स्थित झील के दोनों तटों पर मेंढ़कों की दो बड़ी फौजों में घमासान युद्ध हो रहा है। दर्शकों का कहना है कि ५०-५० मेंढकों की अनेक टुकड़ियां एक दूसरी टुकड़ी पर हमला कर रही हैं। अनेक मरे हैं, एवं घायल हुए हैं। अनुभवियों का कथन है कि लम्बे समय तक बरसात न होकर अचानक मूसलाधार पानी

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान के अनुसार द्वितीय विश्वयुद्ध में मृतकों की संख्या—

रूस के २१० लाख	अमेरिका के १० लाख ७० हजार
जर्मनी के १२५ लाख	अंग्रेजी साम्राज्य के १४ लाख ३० हजार
पोलैंड के ६६ लाख	फ्रांस के १५ लाख २० हजार
चीन के ३० लाख	
जापान के २७ लाख	

पड़ने से मेंढकों में उग्र कामवासना पैदा होती है, उसी का यह परिणाम है।

—हिन्दुस्तान, ६ जुलाई १९६४ के आधार से

१० मुक्ति देने वाला युद्ध—

(क) इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।

—आचारांग ५।३

अपने अन्तर के विकारों से ही युद्ध कर। बाहर के युद्ध से तुझे क्या मिलेगा!

(ख) जुद्धारिहं खलु दुल्लभं।

—आचारांग ५।३

विकारों से युद्ध करने के लिए फिर यह अवसर मिलना दुर्लभ है।

(ग) सद्धं नगरं किच्चा, तवसंवरमग्गलं।
खन्ति निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥२०॥
धणुं परक्कमं किच्चा, जीवं च इरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा, सच्चेण पलिमन्थए ॥२१॥
तवनारायजुत्तेण, भेत्तूणं कम्मकंचुयं।
मुणी विगयसंगामो, भवाओ परिमुच्चए ॥२२॥

—उत्तराध्ययन, अध्ययन ९

श्रद्धा को नगर, तप और संयम को अर्गला, क्षमा को (बुर्ज, खाई और शतघ्नी स्थानीय) मन, वचन और काय-गुप्ति से सुरक्षित, दुर्जेय और सुरक्षा-निपुण परकोटा बनाकर ॥२०॥

फिर पराक्रम को धनुष, ईर्यासमिति को उसकी डोर और धृति को उसकी मूठ बनाकर उसे सत्य से बाँधे ॥२१॥

तप-रूपी लोहबाण से युक्त धनुष के द्वारा कर्म-रूपी कवच को भेद डाले। इस प्रकार संग्राम का अन्त कर मुनि संसार से मुक्त हो जाता है ॥२२॥

३८ जय-पराजय

१ विजय कितनी सुन्दर है किन्तु कितनी मूल्यवान् भी ।

—वाउफर्ल्स

२ प्रलोभनों के प्रतिरोध का प्रत्येक क्षण एक महान् विजय है ।

—फेबर

३ कई युद्ध ऐसे भी हैं जिनमें हारना ही विजय है ।

—गांधी

४ हार मानी र झगड़ो मिट्यो ।

—राजस्थानी कहावत

५ तुलसी तहां न जीतिये, जहां जीते हु हार ।

६ न तं जितं साधु जितं, यं जितं अवजीयति ।
तं खो जितं साधु जितं, यं जितं नावजीयति ।।

—जातक १।७०।७०

वह विजय अच्छी विजय नहीं है, जो बाद में पराजय में बदल जाए । वह विजय श्रेष्ठ विजय है, जो कभी पराजय में नहीं बदलती ।

७ शासक सत्ता बढ़ाने में, व्यापारी धन इकट्ठा करने में, शत्रु शत्रु को पराजित करने में, दुकानदार ग्राहक को ठगने में और ग्राहक दुकानदार को ठगने में अपनी जीत मानते हैं, किन्तु वस्तुतः वे हार ही खाते हैं ।

८ हारे उसकी जीत है, जीते उसकी हार ।
हार जीत के भेद को, क्या समझे संसार ।।

—दोहा सन्दोह

० एक विद्वान् ने अनेक पंडितों को जीता । सर्वजित् का पद लेने के लिए माता के पास आया । माता ने कहा—संत कबीर अभी बाकी हैं । विद्वान्

कबीर के पास जाकर बोला या तो चर्चा करो या हार स्वीकार करो ! कबीर ने चर्चा नहीं की और लिखकर दे दिया कि **कबीर हारा और मैं जीता** । मां के पास आकर वह पत्र दिया तो उसमें लिखा था—**मैं हारा और कबीर जीता** । माता ने समझाया कि दूसरे को हराने की भावना अपनी ही हार है । ज्ञान हुआ एवं संत कबीर का शिष्य बना ।

- **सर्वजित्**—राजा ने दिग्विजय करके 'सर्वजित्' का पद लेना चाहा । माता ने कहा—मन को जीते बिना मैं तो तुझे सर्वजित् नहीं मानती । आखिर उसने मन को जीता ।

- सम्राट् अशोक ने गद्दी पर बैठने के आठ वर्ष बाद कलिंग-विजय की । उसमें एक लाख व्यक्ति मारे गए और डेढ़ लाख कैदी बने । अशोक माता से आशीर्वाद लेने आया । माता ने कहा—"लड़ाई में अगर तू मारा जाता तो मेरी और तेरी रानियों की क्या दशा होनी ?" सम्राट् को इस वाक्य से ज्ञान हुआ एवं भविष्य में लड़ाई न करने की प्रतिज्ञा की ।

९ **जय का कारण**—

नयेनाङ्कुरितं शौर्यं, जयाय न तु केवलम् ।
अन्ययुक्तविषं युक्तं, पथ्यं स्यादन्यथा मृतिः ।।

न्याय से प्रफुल्लित शूरता ही जय देने वाली है, न्यायशून्य नहीं । अन्य वस्तु मिश्रित विष भी उचित-पथ्य बन जाता है, अन्यथा उसी से मरण हो जाता है ।

१० जयं वेरं पसवति, दुक्खं सेति पराजितो ।
उपसन्तो सुखं सेति, हित्वा जय-पराजयं ।।

—धम्मपद, १५।५

विजय से वैर की परंपरा बढ़ती है, पराजित व्यक्ति मन में कुढ़ता रहता है । जो जय और पराजय को छोड़ देता है, वह सदा सुखी होता है ।

तीसरा कोष्ठक

१ नेता

१ मस्तक पर नेतृत्व की पट्टी चिपकाने मात्र से व्यक्ति नेता नहीं बन जाता। नेता बनने के लिए विशेष स्वभाव व गुण होने चाहिये।

२ महान नेताओं में कतिपय ऐसे गुण होते है, जो समूचे राष्ट्र को प्रेरणा देते हैं।

—नेहरू

३ तर्क और निर्णय एक नेता के गुण हैं।

—टेलीटस

४ प्रगतिशील नेता के लिए दो बातें आवश्यक हैं—
दिमाग में बर्फ और दिल में आग।

—विनोबा

५ **नेता में ये पांच गुण आवश्यक—**

१. अन्तर्मुखता, २. धैर्य, ३. आचार दृढ़ता, ४. सुविधा-असुविधा से ऊपर, ५. अनासक्ति।

६ **नेता बनने के इच्छुक अपने आपको पूछें—**

१ क्या तुम शारीरिक व मानसिक थकान में भी प्रसन्नचित्त रहकर आवश्यक कार्य सलटा सकते हो ?

२ क्या तुम अपने सुधार के लिए कुछ पढ़ते हो ?

३ क्या तुम अपने कार्य में उत्साही हो एवं दूसरों में उत्साह भर सकते हो ?

४ क्या तुम अपने कार्य के लिए योग्य व्यक्तियों को प्राप्त कर सकते हो ?

५ क्या तुम्हारे में अधिकांश लोगों के साथ अच्छा सम्बन्ध बनाए रखने की कुशलता है ?

६ क्या तुम्हारा निर्णय सामान्यतया ठीक होता है ?

७ क्या तुम दुष्टों का विरोध करने में साहस रखते हो ?

—व्याख्यान के मसालों से

७ सफल नेता वही है जो पहले ही से यह समझ ले कि भीड़ किधर जाएगी और दौड़कर भीड़ के आगे-आगे चलने लगे।

—एक बड़ा राजनीतिज्ञ

८ विद्वान् पथ पुर एता ऋजुनेषति।

—ऋग्वेद ५।४६।१

समझदार नेता ही ठीक रास्ते से ले जाता है।

९ उस्ताद बैसे पास, तो काम आवे रास **—गुजराती कहावत**

१० यदि नेत्रहीन को नेत्रहीन नेता मिल जाये तो दोनों कूप में गिर पड़ेंगे।

—बाइबिल

११ जेनो आगू आंधलो, तेनो कटक कूवामां। **—गुजराती कहावत**

१२ लीडरों की धूम है, फालोअर कोई नहीं।
सभी जनरल हैं यहां, आखिर सिपाही कौन है ? **—उर्दू शेर**

१३ न गणस्याग्रतो गच्छेत्, सिद्धे कार्ये समं फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्याद्, मुखरस्तत्र हन्यते॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६०

गण के आगे नेता बनकर पूरा सोचे-समझे बिना मत चलो, क्योंकि कार्य-सिद्धि होने पर सभी को समान फल मिलता है और विपरीत अवस्था में नेता मारा जाता है।

१४ **नेतृत्व का भ्रम**—जिस समय हम समझते हैं कि हम नेतृत्व कर रहे हैं, प्रायः दूसरों के नेतृत्व में होते हैं। **—बायरन**

२ स्वामी

१ आत्मातिशयं धनं वा यस्यास्ति स स्वामी ।

—नीतिवाक्यामृत ११।३

जिसके पास आत्मातिशय हो अर्थात् धर्म, कुलाचार, कुलीनता व नैतिकता आदि गुणों के कारण विशुद्ध भाग्यशालिता हो तथा धन हो, उसे स्वामी कहते हैं ।

२ अकर्णदुर्बलः शूरः, कृतज्ञः सात्त्विको गुणी ।
वदान्यो गुणरागी च, प्रभुः पुण्यैरवाप्यते ॥

ऐसा स्वामी पुण्यों से ही मिलता है, जो कानों का कच्चा न हो, वीर हो, कृतज्ञ हो, सात्त्विक हो, गुणी हो, उदारवृत्तिवाला हो और गुणों का प्रेमी हो ।

३ दोषा गुणा गुणा दोषा, दोषा दोषा गुणा गुणाः ।
रक्ते विरक्ते मध्यस्थे, स्वामिनि त्रिविधा गुणाः ॥

स्वामी में तीन गुण होते हैं—जब वह प्रसन्न होता है तब सेवक के दोषों को गुण समझता है । अप्रसन्न दशा में गुणों को दोष समझता है और मध्यस्थ-अवस्था में यथारूप अर्थात् गुणों को गुण और दोषों को दोष समझता है ।

४ **स्वामित्व—**

आधिपत्यं हि प्रायोऽन्धीकरणं नराणाम् ।

—त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र

अधिपतित्व (स्वामित्व) प्रायः मनुष्यों को अंधा करने वाला है ।

३ स्वामी के कर्तव्य

१ भक्तं शक्तं कुलीनं च, न भृत्यमपमानयेत् ।
पुत्रवल्लालयेन्नित्यं, य इच्छेच्छ्रियमात्मनः ॥

—पञ्चतन्त्र १।३८२

भक्त, शक्त एवं कुलीन सेवक का कभी अपमान नहीं करना चाहिए। स्वामी को अगर अपनी शोभा रखनी हो तो सेवक का पुत्रवत् लालन-पालन करना चाहिए।

२ कारुण्यं संविभागश्च, यस्य भृत्येषु सर्वदा ।
संभवेत् स महीपाल-स्त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे ॥

—पञ्चतंत्र २।२७

जो स्वामी सेवकों के प्रति सदा दयाभाव एवं संविभाग की भावना रखता है, वह तीनों लोकों की रक्षा करने के लायक बन सकता है।

४ स्वामी का प्रसाद

१ प्रभु प्रसादो हि मुदे न कस्य । —कुमारसंभव

स्वामी का प्रसाद किसे आनन्द नहीं देता ।

२ स्वामिनाधिष्ठितो मेषोऽपि सिंहायते।

—नीतिवाक्यामृत १०।४८

साधारण (कमजोर) मेंढा भी अपने स्वामी से अधिष्ठित होने पर सिंह के समान बलवान हो जाता है, फिर मनुष्य का तो कहना ही क्या ?

३ स्वामिप्रसादः संपदं जनयति,
न पुनराभिजात्यं, पाण्डित्यं वा । —नीतिवाक्यामृत १०।६५

स्वामी की कृपा संपदा दे सकती है किंतु कुलीनता और पंडिताई नहीं दे सकती ।

४ **सूखी मेहरबानी—**

लेके मैं ओढ़ू बिछाऊँ, या लपेटूं क्या करूं ?
रूखी-फीकी सूखी-साखी, मेहरबानी आपकी ।।

—इशाअल्लाखां

५ न क्वापि सौख्यमपराधकृतः प्रभूणाम् ।

स्वामी का अपराध करने वाले को कहीं भी सुख नहीं ।

६ प्रभुप्रसादे विश्वासं, न कुर्यात् स्वप्नसन्निभे ।
नन्देन मंत्री निक्षिप्तः, शकडालोऽपि बन्धने ।।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १६१

स्वामी का प्रसाद स्वप्न के समान है। उसका विश्वास नहीं करना चाहिए। नन्दराजा ने शकडाल जैसे मंत्री को कैद कर लिया । (अथवा राजा के निमित्त से उसे मरना पड़ा) ।

५

निन्दनीय स्वामी

१ स किं प्रभुर्यश्चिरसेवकेष्वेकमप्यपराधं न सहते । ११।५४
स किं स्वामी य आश्रितेषु व्यसने न प्रविधत्ते । २२।२४

—नीतिवाक्यामृत

वह स्वामी क्या काम का, जो अपने चिरकालीन सेवक का एक भी अपराध नहीं सहता । ११।५४

वह स्वामी व्यर्थ है, जो संकट के समय में भी अपने सेवकों की सहायता नहीं करता । २२।२४

२ याचते कार्यकाले यः, स किं भृत्यः स किं सुहृत् ।
यो न संभावयेद् भृत्यान्, कार्यकाले स किं प्रभुः ।।

—हितोपदेश २।३२

कार्य के समय मांगने वाले सेवक और मित्र किस काम के तथा कार्य के समय सेवकों को याद न करने वाला स्वामी किस काम का ।

३ क्रूरं व्यसिननं लुब्ध-मप्रगल्भं सदामयम् ।
मूर्खमन्यायकर्तारं, नाधिपत्ये नियोजयेत् ।।

ऐसे व्यक्ति को कभी स्वामी नहीं बनाना चाहिए, जो क्रूर हो, व्यसनी हो, लोभी हो, नासमझ हो, सदा रोगी रहता हो, मूर्ख हो एवं अन्याय करने वाला हो ।

६ **सेवक**

१ इङ्गितज्ञा हि सेवकाः ।

— त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र ४।१

सेवक स्वामी के इंगित को समझने वाले होते हैं ।

२ नवं वस्त्रं नवं छत्रं, नव्या स्त्री नूतनं गृहम् ।
सर्वत्र नूतनं शस्तं, सेवकान्ने पुरातने ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६६

नया वस्त्र, नया छाता, नई स्त्री और नया घर—ये सभी जगह अच्छे माने जाते हैं किंतु सेवक और चावल पुराने अच्छे होते हैं ।

३ नवसेवकः को नाम न भवति विनीतः ।

—नीतिवाक्यामृत ३२।६९

नया सेवक कौन विनीत नहीं होता ? प्रायः थोड़े दिन तो विशेष भक्ति दिखलाता ही है ।

४ **सेवक की आवश्यकता—**

(क) वधा पालखी मां बैसे त्यारे उपाड़े कौन ?
सौ घोड़े चढ़े त्यारे आगल कोण दौड़े ?

० हुं राणी तुं राणी, कोण भरे पाणी ।

—गुजराती कहावतें

(ख) नायांरी जान में सगला ही ठाकर ।

—राजस्थानी कहावत

५ **सेवक के कर्तव्य—**

(क) यमनुजीवेत् तं नापवदेत् ।

—कौटलीय अर्थशास्त्र

जिसके सहारे से जीना हो, उस स्वामी की निन्दा नहीं करनी चाहिए।

(ख) वरमात्मनो मरणं, नाहितोपदेशः स्वामिषु।

—नीतिवाक्यामृत ५।१९

सेवक के लिए स्वयं मर जाना अच्छा है किन्तु अपने स्वामी को अहित-कारी उपदेश देना अच्छा नहीं।

(ग) स्वामी सूं किसो संग्राम।

—राजस्थानी कहावत

६ कर्त्तव्यहीन सेवक—

आहारे बडवानलश्च शयने यः कुम्भकर्णायते,
संदेशे बधिरः पलायनविधौ सिंहः शृगालो रणे।
अन्धो वस्तुनिरीक्षणेऽथगमने खञ्जः पटुः क्रन्दने,
भाग्येनैव हि लभ्यते पुनरसौ सर्वोत्तमः सेवकः॥

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०२

जो खाने में बडवानल है, सोने में कुंभकर्ण है, संदेश सुनने में बहरा है, पलायन करने में सिंह है, संग्राम में गीदड़ है, वस्तु को देखने में अन्धा है, काम के लिए कहीं जाने में खोड़ा लंगड़ा है और रोने में निपुण है—इन गुणों वाला सर्वोत्तम सेवक भाग्य से ही मिलता है अर्थात् पूरे दुर्भाग्य से मिलता है।

७ सेवक की दयनीय दशा

१ स्वाभिप्रायपरोक्षस्य, परचित्तानुवर्तिनः ।
स्वयं विक्रीतदेहस्य, सेवकस्य सुखं कुतः ॥

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०१

जो अपने अभिप्राय के प्रतिकूल दूसरों के चित्त के पीछे चलने वाला है एवं अपने शरीर को भी बेचा हुआ-सा रखने वाला है, उस सेवक को सुख कहां ?

२ परसेवैकसक्तानां, कुतः स्नेहो निजे जने ।

—सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

दूसरों की सेवा में आसक्त व्यक्तियों का अपने लोगों में स्नेह कहां ?

३ प्रणमत्युन्नतिहेतो,—र्जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान् ।
दुःखीयति सुखहेतोः, को मूढः सेवकादन्यः ॥

—हितोपदेश २।२७

सेवक को छोड़कर दूसरा ऐसा मूर्ख कौन हो सकता है, जो उन्नति के लिए नीचा झुके, स्वामी को जीवित रखने के लिए अपने प्राणों का त्याग करे और सुख के लिए दुःख का अनुभव करे ।

४ सेवया धनमिच्छद्भिः, सेवकैः पश्य ! यत्कृतम् ।
स्वातन्त्र्यं यच्छरीरस्य, मूढैस्तदपि हारितम् ॥

—हितोपदेश २।२०

सेवावृत्ति से धन की इच्छा करने वाले मूर्ख सेवकों ने जो कुछ किया है, उसे देखो तो सही ! बेचारों ने अपनी शारीरिक स्वतन्त्रता भी हार दी ।

५ भूशय्या ब्रह्मचर्यं च, कृशत्वं लघुभोजनम् ।
सेवकस्य यतेर्यद्वद्, विशेषः पापधर्मजः ।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १०१

जमीन पर सोना, ब्रह्मचर्य पालना, दुर्बल रहना और थोड़ा भोजन करना—सेवक की ये चारों क्रियाएं मुनि के समान ही होती हैं। अंतर इतना ही है कि सेवक की उक्त क्रियाएं पाप के लिए होती हैं और मुनि की धर्म के लिए।

१ मौनान्मूकः प्रवचनपटुश्चाटुको जल्पको वा ।
धृष्टः पार्श्वे वसति च यदा दूरतश्चाप्रगल्भः ।।
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः ।
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ।।

—भर्तृहरि-नीतिशतक ५८

सेवक यदि मौन रखे तो मूक, चतुरता से बोले तो बातूनी अथवा वाचाल, निकट बैठा रहे तो धीठ, दूर रहे तो मूर्ख, सहनशील हो तो डरपोक एवं सहन न करे तो प्रायः अकुलीन कहा जाता है। तत्त्व यह है कि सेवाधर्म अत्यन्त कठिन है और योगियों द्वारा भी इसे निभाना कठिन है।

२ सेवा श्ववृत्तिराख्याता, यैस्तैर्मिथ्या प्रजल्पितम् ।
स्वच्छन्दं चरति श्वाऽत्र, सेवकः परशासनात् ।।

—पञ्चतन्त्र १।२६१

सेवा को श्वानवृत्ति कहने वाले झूठे हैं, क्योंकि श्वान स्वतन्त्र रूप से घूमता है और सेवक को स्वामी के आदेशानुसार चलना पड़ता है।

३ सेवा से लाभ—

(क) करै सेवा तो मिलै मेवा । —राजस्थानी कहावत

० करे सेवा तो मले मीठा मेवा ।

० चाकरी करतां भाखरी मले । —गुजराती कहावतें

(ख) अप्रधानः प्रधानः स्यात्, काले चात्यन्तसेवनात् ।
प्रधानोऽप्यप्रधानः स्यात्, सेवालस्यादिना यतः ।।

—शुक्रनीति

समय पर सेवा करने से अमुख्य-मुख्य बन जाता है तथा सेवा में आलस्यादि करने से मुख्य भी अमुख्य हो जाता है।

★ ★

१ अहो ! अहीनामपि खेलनेभ्यो, दुःखानि दूरं नृप सेवनानि ।
एकोहिना मृत्युमुपैति दष्टः, सपुत्र-पौत्रस्तु नृपेण दष्टः ॥

सर्पों का खेल करने से भी राजाओं की सेवा ज्यादा खतरनाक है । सांप का काटा हुआ तो सिर्फ एक ही मरता है किंतु राजा का काटा हुआ, पुत्र-पौत्रों सहित मरता है ।

२ अत्यासन्ना विनाशाय, दूरस्था न फलप्रदाः ।
सेव्यन्तां मध्यभावेन, राजा वह्निर्गुरुः स्त्रियः ॥११॥
अग्निरापः स्त्रियो मूर्खः सर्पो राजकुलानि च ।
नित्यं यत्नेन सेव्यानि, सद्यः प्राणहराणि षट् ॥१२॥

—चाणक्यनीति १४

१ राजा, २ अग्नि, ३ गुरु, ४ स्त्री—ये चारों अधिक निकट रहने से विनाश कर देते हैं और दूर रहने से फल नहीं देते अतः इनकी मध्यमभाव से सेवा करनी चाहिए ॥११॥

१ अग्नि, २ पानी, ३ स्त्री, ४ मूर्ख, ५ सर्प, ६ राजकुल—ये छहों शीघ्र प्राणनाशक हैं, अतः इनकी सेवा सावधानीपूर्वक करनी चाहिए ॥१२॥

१ ताडितोऽपि दुरुक्तोऽपि, दण्डितोऽपि महीभुजा ।
न चिन्तयति यः पापं, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥८९॥

योऽनाहूतः समभ्येति, द्वारे तिष्ठति सर्वदा ।
पृष्टः सत्यं मितं ब्रूते, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९०॥

अनादिष्टोऽपि भूपस्य, दृष्ट्वा हानिकरं च यः ।
यतते तस्य नाशाय, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९१॥

न क्षुधा पीड्यते यस्तु, निद्रया न कदाचन ।
न च शीतातपाद्यैश्च, स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥९२॥

—**सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १५०**

जो ताड़ने पर, धमकाने पर एवं दण्ड देने पर भी राजा के प्रति बुरा विचार नहीं करता, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥८९॥

जो बिना बुलाए आ जाता है, सदा द्वार पर खड़ा रहता है और पूछने पर ही परिमित एवं सत्य बोलता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९०॥

जो न कहने पर अनिष्ट को दूर करने का प्रयत्न करता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९१॥

जो भूख, नींद एवं सर्दी-गर्मी से हैरान न होता हुआ सदा राज-सेवा में लगा ही रहता है, वह सेवक राजाओं के योग्य कहलाता है ॥९२॥

२ राजवल्लभ सेवक—

अंतःपुरचरैः सार्धं, यो मन्त्रं न समाचरेत्।
न कलत्रैर्नरेन्द्रस्य, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६३॥
संमतोऽहं प्रभोर्नित्य—मिति मत्वा व्यतिक्रमेत्।
कृच्छ्रेष्वपि न मर्यादां, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६४॥
द्विषि द्वेषपरो नित्य--मिष्टानामिष्टकर्मकृत्।
यो नरो नरनाथस्य, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६५॥
द्यूतं यो यमदूताभं, हालां हालाहलोपमाम्।
पश्येद्दारान् वृथाकारान्, स भवेद्राजवल्लभः ॥२६६॥

—सुभाषितरत्नभण्डागार पृष्ठ १५४

जो अन्तःपुर में रहने वालों से और राजरानियों से कभी सलाह मशविरा नहीं करता, वह सेवक राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६३॥

मैं राजा का प्रेमपात्र हूं, यह सोचकर जो कभी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६४॥

जो राजाओं के शत्रुओं से शत्रुता और इष्ट-मित्रों से मित्रता रखता है, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६५॥

जो द्यूत को यमदूत, मदिरा को हलाहल जहर एवं सुन्दर-परस्त्री को व्यर्थ रूपवाली मानता है, वह राजा का प्रीतिपात्र होता है ॥२६६॥

※

११ नौकरी

१ पार की नौकरी साँप खिलावणै कै बराबर है।—राजस्थानी कहावत

२ उत्तम खेती, मध्यम वेपार ने कनिष्ठ चाकरी।

० भूंडां मां भूंडी चाकरी। —गुजराती कहावतें

३ नोकरी रै र नकारै रै वैर। —राजस्थानी कहावत

४ प्यारी तो मरने पड़ी, बच्चे दुखी अथाह।
फिर भी छुट्टी नहिं मिले, हाय! नौकरी हाय!
रोटी थाली में पड़ी, लग रही भूख अथाह।
छोड़ उसे जाना पड़े, हाय! नौकरी हाय!
खाट-बिछौने हैं बिछे, आ रही नींद अथाह।
छोड़ उसे जाना पड़े, हाय! नौकरी हाय!
पढ़ा-लिखा बिल्कुल नहीं, मालिक मूर्ख गदाह।
भरनी उसकी हाजरी, हाय! नौकरी हाय!
काम करो अच्छी तरह, चाहे चित्त लगाय।
ऊपर से ठोला वही, हाय! नौकरी हाय!
दिल तो डरता पाप से, फिर भी हद अन्याय।
परवश हो करना पड़े, हाय! नोकरी हाय! —दोहा-संदोह

५ बिगड़ी खेती र सुधरी चाकरी बराबर। —राजस्थानी कहावत

६ **राष्ट्रपति व प्रधानमंत्रियों का वेतन :—**

अमेरिका के राष्ट्रपति—	२,००,००० डालर वार्षिक
ब्रिटिश प्रधानमंत्री—	१०,००० पौंड वार्षिक
भारत के राष्ट्रपति—	१०,००० रुपये मासिक
जापान के प्रधानमंत्री—	१,१०,००० येन मासिक

—भारत ज्ञान कोष सन् १९७०-७१

१२ नौकर

१ नौकर को एक नहीं नौ-नौ काम करने पड़ते हैं। —हिन्दी कहावत

२ नौकर खाय ठोकर, दास ते सदा उदास।

० घासिया घोड़ा ने पेटिया चाकर। —गुजराती कहावतें

३ चाकर है तो नाचा कर, ना नाचे तो ना चाकर।

० चाकर से कूकर भला, सोवे अपनी नींद। —हिन्दी कहावतें

४ पांच रो मालिक र पचास रो गुमास्तो। —राजस्थानी कहावत

५ ईमानदार नौकर बहुत थोड़े होते हैं। —धनमुनि

६ **नौकर के विषय में विशेष—**

(क) नौकर रखते समय यह सोचना चाहिये कि इसके घर का खर्चा कितना है? अगर खर्चे से नौकरी कम होगी तो संभव है, नौकर को चोरी के लिए विवश होना पड़ेगा।

(ख) नौकर के साथ खाने-पीने में भेदभाव नहीं रखना चाहिये और उसकी शक्ति से अधिक काम नहीं कराना चाहिये अन्यथा वह ज्यादा दिन नहीं टिकेगा।

(ग) नौकर को नौकर न समझकर यदि तुम अपने भाई और पुत्र के समान समझोगे तो वह सदा के लिए तुम्हारा बन जायेगा। —धनमुनि

७ **नौकरी काटने वाला सेठ**—एक सेठ आने में देरी होने पर मुनीम की नौकरी काट लेता था। एक दिन सेठ को चोरों ने घेर लिया। उसने मुनीम को आवाज दी। उसने कहा—आधा घंटा की नौकरी काट लेना, नहीं आता मैं तो। चोर सेठ का धन लूट कर ले गये एवं मार-पीट कर गए।

१३ स्वाधीन-स्वतन्त्र

१३ स्वाधीन-स्वतन्त्र

१ स्वावलम्बी सदा सुखी।

—संस्कृत कहावत

स्वतन्त्र व्यक्ति सदा सुख का अनुभव करता है।

२ आपरी नींद सोवै र आपरी नींद जागै।

—राजस्थानी कहावत

३ मिले खुश्क रोटी जो आजाद रहकर,
(तो वह) खोफ व जिल्लत के हलुवे से बेहतर।

—उर्दू शेर

४ स्वाधीनता और दासता मन के खिलवाड़ हैं, जिसका मन स्वाधीन है, वह विष्ठा का टोकरा ढोता हुआ भी राजा है।

—गांधी

५ जो व्यक्ति अपना स्वामी (इन्द्रियजित) नहीं, वह कभी स्वतन्त्र नहीं।

—इपिकटेट्स

६ जिसे सत्य ने स्वाधीन बना दिया, केवल वही स्वाधीन है, शेष सभी दास हैं।

—कूपर

७ उनसे अधिक दयनीय दासता किसी की भी नहीं, जो भ्रम में रहते हैं कि हम स्वतन्त्र हैं।

—गेटे

८ कानून आदमियों को कभी आजाद नहीं बनाएगा, आदमियों को ही कानून को आजाद बनाना पड़ेगा।

—थोरो

स्वतन्त्र

१ स्वतन्त्रता-स्वदमन अर्थात् इन्द्रिय-मन को वश करना। स्वतन्त्रता में संयम की आवश्यकता है—पृथ्वी से बंधा हुआ वृक्ष फलता है, किनारों से बंधी हुई नदी समुद्र से मिलती है, कील से बंधे हुए तार मनोहर शब्द सुनाते हैं और नियन्त्रित भाप मोटर, स्टीमर व बड़ी-बड़ी मशीनों को चला देती है।

—व्याख्यान के मसालों से

२ स्वतन्त्रता राष्ट्र का शाश्वत यौवन है। **—फोय**

३ व्यक्तिगत स्वतन्त्रता ही मानव समाज की मर्यादा एवं प्रसन्नता का प्रथम सोपान है।

—बुल्वरलिटन

४ वासना की भूमि पर कभी स्वतन्त्रता अंकुरित नहीं होगी। वह ज्ञान के बीच उदित होती है।

—टी. एल. वास्वानी

५ गांधी जी के पास सर्वप्रथम १९ आदमी थे और अंग्रेजों के पास करोड़ों। किंतु सत्य एवं संयम के बल से ही वे स्वतन्त्रता प्राप्त कर सके।

६ क्षुधित जनता को कितनी भी राजनीतिक स्वतन्त्रता की बातें कहो, संतुष्ट नहीं कर सकतीं।

- लेनिन

७ स्वतन्त्रता अनेक प्रकार की है। जैसे—वाणी-स्वतंत्रता, मुद्रण-स्वतंत्रता भ्रमण-स्वतन्त्रता, आचार-स्वतन्त्रता एवं विचार-स्वतन्त्रता।

० स्वतन्त्रता योग्यतानुसार ही दी जा सकती है। क्रोधी को वाणी-स्वतन्त्रता अंधे को भ्रमण स्वतन्त्रता, दुराचारी को—आचार स्वतन्त्रता और मूर्ख को विचार स्वतन्त्रता देने से नुकसान ही होगा।

—व्याख्यान के मसालों से

१५ स्वाधीनता-आजादी

१ स्वाधीनता विकास का प्रथम चरण है।

—विवेकानन्द

२ नागरिक स्वाधीनता के मानी है, साधारण कानून की मर्यादा के अन्दर रहते हुए, आदमी जो चाहे, कहे और करे!

—गांधी

३ उस स्वाधीनता को तिलांजली दे दो, जो पाप की अनुचरी हो।

—रामकृष्ण

४ **आजादी—**

(क) दो किस्म की आजादी है। **झूठी**—जहां कोई जो चाहे, करने को आजाद है। **सच्ची**—जहां वह वही करने को आजाद है, जो उसे करना चाहिए।

—किंग्सले

(ख) पाप की गुलामी करने वाली आजादी को नष्ट कर दो!

—रामतीर्थ

(ग) अपनी आजादी को मुहम्मद, ईसा, बुद्ध या कृष्ण के हाथ न बेच दो!

—रामकृष्ण

(घ) भारत के लिए आजादी कोई नयी चीज नहीं, क्योंकि यहां प्रत्येक आस्तिक दर्शन का लक्ष्य कर्मों से मुक्त होना है। महात्मा तिलक कहा करते थे कि आजादी भारत का जन्मसिद्ध अधिकार हैं, किंतु जैन शास्त्रानुसार आत्मसिद्ध-अधिकार माना गया है। भगवान महावीर व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के पुजारी थे।

(ङ) किसी की मेहरवानी मांगना अपनी आजादी खोना है।

—गांधी

१६ पराधीनता

१ रोग, शोक, मरण, नीरस भोजन, सत्ताधीनता, याचना, इष्ट-वियोग, अनिष्ट-संयोग आदि न चाहने पर भी कर्मवश प्राप्त होते हैं—यह एक बड़ी भारी पराधीनता हैं।

२ राजा प्रजा पर, सेठ मुनीम पर, पति पत्नी पर—ऐसे एक दूसरे पर हुक्म चलाना चाहते हैं। पराधीन होकर रहना कोई नहीं चाहता।

—व्याख्यान के मसालों से

३ पराधीन सपने सुख नाहीं।

—रामचरित मानस

४ पराधीनं वृथा जन्म।

पराधीन होकर जीना व्यर्थ है।

० कष्टः खलु पराश्रयः।

पराधीनता निश्चित रूप से कष्टमयी है।

० धिगस्तु परवश्यताम्

—सुभाषितरत्नखंड मंजूषा

परवशता को धिक्कार है।

५ पर की आशा सदा निराशा।

—हिन्दी कहावत

६ कवलः शक्यते क्षेप्तुं, नाक्रष्टुं हस्तिनो मुखात्

—त्रिषष्ठि शलाकापुरुषचरित्र

हाथी के मुख में ग्रास देना अपने हाथ में है किन्तु वापिस निकालना नहीं।

७ यद्-यत् परवशं कर्म, तत्तद् यत्नेन वर्जयेत्।

जो-जो काम परवश हैं, उन्हें यत्नपूर्वक छोड़ते रहो।

८ परायत्तः प्रीतेः कथमिव रसं वेत्ति पुरुषः

—मुद्राराक्षस नाटक

पराधीन पुरुष प्रीति के रस को कैसे जान सकता है ?

९ वरं मानिनो मरणं, न परेच्छानुवर्तनादात्मविक्रयः।

—नीतिवाक्यामृत, २९।५९

स्वाभिमानी को मर जाना अच्छा है, परन्तु पराई इच्छानुसार चलकर अपने आप को बेचना अच्छा नहीं।

१० स्ववश रंकपणो भलो, शुं परवश रंगरोल।
वर पोतानी पातली, शूं पर घरनों झोल॥

—चंदराजानो रास

१७ शासक

१ प्रजा दण्डधराभावे, मात्स्यं न्यायं श्रयन्त्यमूः ।

—**महापुराण**

यदि दण्ड देने वाला न हो तो प्रजा मछलियों की तरह एक-दूसरे को खाने लग जाय ।

२ शासक के लिए एक सर्वोपरि गुण है—अव्यग्रता ।

—**विलियमपिट**

३ धर्मशील-पुरुष राष्ट्र पर शासन करे, व्यूह-विद्या में निपुण व्यक्ति सेनापति बने एवं व्यवहार-साधनों से अलिप्त व्यक्ति राजा बने । अनुभव ऐसा है कि जब निरोधक कानून लोकव्यवहार पर अंकुश लगाते हैं तो देश गरीब हो जाता है, जब हथियारों की खुल्ली छूट दी जाती है तो सरकार खतरे में पड़ जाती है, लोग जितने ही धूर्त बनते हैं, बनावटी बातें बढ़ती हैं और हाथ सफाई का सम्मान होता है तो दग़ाबाजों की बन आती है ।

—**ताओउपनिषद् ७।५७**

४ जो शासक रखता नहीं, जनमानस का ध्यान ।
चन्दन ! रह सकती नहीं, उस शासक की शान ।

—**दोहा-द्विशती**

५ **क्रूर शासक—**

चीन का सम्राट् च्यांग चैंट (१९४३-४८) संसार का सबसे बड़ा क्रूर-शासक माना जाता है । गद्दी पर बैठने के दिन उसने छ लाख पुरुष, चार लाख स्त्रियां, तीन लाख सैनिक एवं ७०० राज कर्मचारियों को मारा था ।

—**हिन्दुस्तान, २८ अगस्त १९६९**

१ **उत्पथ-प्रतिपन्नस्य, दण्डो भवति शासनम् ।**

—पञ्चतंत्र

उन्मार्गगामी को दण्ड देने का नाम शासन है ।

२ शासन का उद्देश्य जनता का कल्याण एवं उन्नति है । राजा जनता के लिए है, पर जनता राजा के लिए नहीं ।

—कांगफ्युत्सी

३ कठोर दंड देने वाला शासन जनता में क्षोभ उत्पन्न करता है, मृदुदंड देने वाले शासन की जनता अवहेलना कर देती है और उचित दण्ड देने वाले शासन के प्रति जनता नत होती है । जो शासन दंड का समुचित उपयोग करता है वह जनता को धर्म-अर्थ-काम से युक्त करता है और जो अनुचित प्रयोग करता है, वह गृहस्थों में ही नहीं, अपितु परिव्राजकों में भी विद्रोह की भावना उत्पन्न कर देता है ।

—कौटिल्य

४ एक स्वतंत्र देश में संतापों की अल्पता होने पर भी क्रंदन अधिक रहता हैं । किंतु स्वेच्छाचारी शासन में संतापों का बाहुल्य रहते हुए भी क्रंदन अल्प रहता है ।

—कारनट

५ **हकारादि दंड**—पहले हकार, मकार एवं धिक्कार के दंड थे । फिर हाथ-पैर कटवाना, हाथी के पैरों नीचे घिसवाना एवं शूली-फांसी आदि चले । फांसी का दंड अब भी विद्यमान है ।

६ **पांच प्रकार का दंड**—१—अर्थदंड २—अनर्थदंड ३—हिंसादंड ४—अकस्मातदंड ५—दृष्टिविपर्यासदंड ।

—'पांच बात' पुस्तक से

७—संसार में चार प्रकार के शासन चलते हैं :—

१. धन का शासन २. बल का शासन ३. बुद्धि का शासन ४. प्रेम का शासन ।

सत्ता

१ सत्ता एक ऐसा मद है, जो आदमी को अंधा बना देता है। सत्ता मिलने के बाद साधारण व्यक्तियों पर प्रायः नजर नहीं टिकती।

—धनमुनि

२ सत्ता का सदुपयोग करने वाले विरले हैं। दुरुपयोग तो दुनिया करती ही है।

० सत्ता पाकर जो दुनियां का कुछ भला कर गए, वे राम की तरह अमर बन गए और जो बुरा कर गए वे रावण की तरह सदा के लिए बदनाम हो गए। सत्ता चली जाती है, लेकिन भलाई-बुराई नहीं जाती।

—धनमुनि

३ **सत्ता का महत्व—**

(क) सत्ता में वह अद्‌भुत तेज है, जिससे साधारण आदमी भी चमकने लगता है और उसके चारों ओर वाह-वाह होने लगती है।

—धनमुनि

(ख) धन से सत्ता बड़ी।

—हिन्दी कहावत

(ग) जेनां हाथमां डोई तेनां सौ कोई,

० सत्ता आगल शाणप शा कामनु ं।

० सौ तारी दलील ने एक मारो हुकम।

—गुजराती कहावतें

२० क्रांति और संघर्ष

१ क्रांति—

(क) क्रान्तियां छोटी-छोटी बातों के विषय में नहीं होती, किंतु उनसे उत्पन्न होती हैं।

—अरस्तू

(ख) क्रान्तियां उत्पन्न की नहीं जाती, वे स्वयं उत्पन्न होती हैं।

—बैन्डेलफिलिप

(ग) क्रान्ति में महत्त्व सामाजिक-परिवर्तन का है न कि संघर्ष और रक्तपात का।

—दादा धर्माधिकारी

(घ) क्रान्तियों में सर्वोच्च शक्ति अंत में सबसे त्याज्य व्यक्ति के हाथ में पहुंच जाती है।

—डान्टन

२ संघर्ष—

(क) संघर्षों को पर्याप्त समय के लिये स्थगित नहीं किया जा सकता, उन्हें तय करना होगा।

—एंजिल्स

(ख) संघर्षों को देखकर, चन्दन ! धैर्य न छोड़।
लाते हैं संघर्ष ही, जीवन में कुछ मोड़।
करवाता भूकंप ज्यों, भूमि-गर्भ का ज्ञान।
त्यों जीवन का जलजला, करता नवनिर्माण।

—चन्दन मुनि

२१ कानून

१ कानून तो जैसे मकड़ी के जाले हैं। छोटे-छोटे जीव उनमें फंस कर प्राण खो बैठते हैं, जबकि बड़े-बड़े जीव उन्हें भी तोड़ डालते हैं।

२ कानून एक ऐसे गड्ढे के समान है, जिसका कोई थाह नहीं।

—अबूर्थनॉट

३ कानून दुष्टों द्वारा दुष्टों के लिए ही बनाये जाते हैं।

—इटालियन कहावत

४ क्या बिल्ली चूहों के लिए कभी उचित कानून बना सकती है।

—जॉन ब्राइट

५ मक्कारों और गद्दारों के लिए कोई कानून नहीं हैं।

—रस्किन

६ छोटे-छोटे कानून बड़े-बड़े अपराधों को जन्म देते हैं।

—उइदा

७ नये कानून, नये स्वामी और नए धोखे।

—हिन्दी कहावत

८ निर्धनों पर कानून शासन करता है और धनी कानूनों पर शासन करते हैं।

—ओलिवर गोल्डस्मिथ

९ कानून मनुष्यों को अधिकार देता है लेकिन उसके उपयोग की शक्ति नहीं देता। कानून मनुष्य को मौका देता है पर उससे फायदा उठाने की कुब्बत पैदा नहीं करता। कानून घोड़े को पानी दिखा सकता है किन्तु पिला नहीं सकता।

—दादा धर्माधिकारी

१० अत्यंत शिष्ट कानूनों का पालन प्रायः कम ही होता है जबकि अत्यंत कठोर कानूनों का उल्लंघन कम होता है।

—फ्रैंकलिन

११ रजाबंदी के साथ लगाई गई पाबंदियाँ ही फायदा पहुंचा सकती हैं।

—गांधी

१२ कभी आपको इतना उच्च मत समझो ! कानून तुमसे भी ऊपर है।

—थामस फूलर

१३ वेपारमां वायदो ने शास्त्र मां कायदो।

—गुजराती कहावत

१४ **अजब कानून—**

न्यूयार्क में ऐसा कानून है कि सड़क पर चलता हुआ कोई भी व्यक्ति कीड़े को बिना कुचले निकल जायगा तो उस पर ५० डालर जुर्माना होगा।

—सरिता, अप्रैल १६४६

२२ नियम

१ न नियमं भिन्द्यात् ।

—चरक संहिता-सूत्रस्थान ८।२५

नियम को मत तोड़ो ।

२ कदापि मर्यादां नातिक्रमेत् ।

—कौटलीय-अर्थशास्त्र

मर्यादा का उल्लंघन कभी नहीं करना चाहिए ।

३ भंग मर्यादा हुए पर, दुर्दशा होती बड़ी ।
बाग से बाहर झुका, तरु भी व्यथा पाता बड़ी ॥

—हिन्दी पद्य

४ नियमों का विधान मनुष्य के लिए है, पर मनुष्य का निर्माण नियम के लिए नहीं ।

—रामतीर्थ

२३ न्याय

१ युक्त्यार्थपरीक्षणं न्यायः ।

—भिक्षु-न्यायकर्णिका १।१

साध्य-साधन के अविरोध को **युक्ति** कहते हैं। युक्ति द्वारा वस्तु की परीक्षा करना न्याय है ।

२ नियमयुक्त व्यवहार का नाम न्याय है ।

३ सत्य का कर्म में परिणत होना न्याय है ।

—डिजरायली

४ न्याय का थोड़ा-बहुत व्यवहार वर्षों की झूठी भक्ति से लाख दर्जे अच्छा है ।

—रस्किन

५ ईश्वरी न्याय की चक्की यद्यपि मंदगति से चलती है, किन्तु चलती अवश्य है ।

—जार्ज हार्वर्ट

६ अगर न्याय से काम लोगे तो ईश्वर तुम्हारा साथी बन जाएगा ।

—मिनेन्दर

७ अल्लाह ने तराजू इसलिए बनाई है कि तुम दूसरों के साथ बे-इन्साफी मत करो !

—कुरान ५५।७

८ प्रामाणिक पद गहि तुला ! यह तुम करो अन्याय ।
गति अध देत गरिष्ठ को, लघु उन्नत पद पाय ।।

९ आज का हमारा न्याय बुरी तरह बेलगाम, खुले आम अंधा है और बेकसी की दीर्घ मार से वह पीड़ित है।

—रस्किन

१० ढबां न्याय र ढबां खेती।

० राजा करै सो न्याव र पासो पड़ै सो दाव।

० भाठो र न्याय बैठावै ज्यूं ही बैठ जावै।

—राजस्थानी कहावतें

११ न्याय में विलम्ब करना न्याय को अस्वीकार करना है।

—ग्लेडस्टन

१२ बलात्कृतमन्यायकृतं राजोपाधिकृतं न प्रमाणम्।

—नीतिवाक्यामृत २८।११

जबरदस्ती से किया हुआ, अन्याय से किया हुआ एवं राजा की उपाधि से किया हुआ कार्य प्रमाण नहीं है।

१३ हम प्रेम का दरिया बहा सकते हैं, पर न्याय के नाम से नानी मर जाती है।

—रस्किन

१४ अन्यायोपेक्षा सर्वं विनाशयति।

—नीतिवाक्यामृत ८।२०

अन्याय की उपेक्षा सर्वनाश करने वाली है।

२४ न्यायाधीश

१ न्यायाधीश सेकिण्ड गोड (दूसरा ईश्वर) माना जाता है।

२ न्याय के पद पर बैठने वाले मनुष्य को पक्षपात और द्वेष से मुक्त होना चाहिए।

३ योर जजमेंट श्युड बी इम्पार्शल, जस्ट एण्ड फर्म।

—**हैडमास्टर रामचन्द्र**

तुम्हारा निर्णय पक्षपातरहित, न्यायपूर्ण एवं अविचल होना चाहिए।

४ न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।

—**मैथिलीशरण गुप्त**

५ **न्यायाधीश में चार बात अवश्य होनी चाहिये—**

(१) शिष्टतापूर्वक सुनना (२) बुद्धिमत्तापूर्वक उत्तर देना। (३) गंभीर होकर विचार करना (४) निष्पक्ष होकर न्याय करना।

६ सुण हाकिम ! संग्राम कहे, आंधो मत व्है यार !
दूजांरै दो आंखियां, थारै चहीजै चार।
थारै चहीजै चार, दोय देखण कूं बारै।
दोय हृदयरै मांय, ताहि सों न्याय निहारै।
जश-अपजश रहसी अखी, समय वार दिन चार।
सुण हाकिम ! संग्राम कहे, आंधो मत व्है यार !

—**संग्रामदास**

७ नए-नए हाकिम और नई-नई बातें।

८ हाकिम बदल जाता है, हुक्म नहीं बदलता।

—**हिन्दी कहावतें**

८ अजब न्यायाधीश—

(क) उत्तरप्रदेश में किसी के खेत में चर लेने से मजिस्ट्रेट ने भैंस को दो साल की कैद दी। जेलर ने कहा—हजूर! जेल मनुष्यों के लिए है।

(ख) पोलेण्ड में भवननिर्माण के मजदूरों ने अपने मैनेजर को गाडी में लादकर कूड़े में फेंक दिया। क्रुद्ध होने पर उन्होंने एक आदेश पत्र दिखाया। जिसमें "मैनेजर को फैंक दो" ऐसा उसी की सही वाला हुक्म था।

९ निर्णय के अजब तरीके—

(क) दो-सौ वर्ष पहले विवाद का फैसला लाडुएल-कुस्तो से होता था। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने इसे रोका।

(ख) वि० सं० २०१२ संगरूर में कंजड़ों के चोरी हुई। विरादरी मिली, दो आदमी तालाब में कुदाये गये। जिस पक्ष का पहले बाहर निकला, उस पक्ष को चोरी का सारा धन-माल देना पड़ा।

—श्रुति के आधार पर

(ग) **टोकरी का न्याय**—चाय और चावल के व्यापारियों में टोकरियों के स्वामित्व के विषय में झगड़ा हो गया। वे न्यायार्थ राजा के पास गये। राजा ने पूछा—टोकरी! तेरा स्वामी कौन है? नहीं बोलने पर उसके २० डण्डे लगवाये। चाय की पत्तियां झड़ पड़ी। न्याय हो गया।

—कथालोक

(घ) **सात हाथी**—पिता ने बड़े पुत्र को संपत्ति का आधा हिस्सा, दूसरे को चौथाई हिस्सा और तीसरे को आठवां हिस्सा लेने के लिए कहा। स्वयं मर गया, संपत्ति में सात हाथी थे। तीनों भाई लड़ने लगे, निपटारा नहीं हो सका। बुद्धिमान्-मन्त्री ने एक हाथी अपना मिलाकर न्याय किया। पहले को चार, दूसरे को दो और तीसरे को एक हाथी दिया (लोक चमत्कृत हुए) **—अध्ययन के आधार पर**

●

पंच

१ चाड़ी चोरी चौकसी, चतुराई परपंच।
चार करे सो चौधरी, पांच करे सो पंच।

—राजस्थानी दोहा

२ न्याय की रीति तो जानें नहीं, झगड़ा सुनि के जियरा हुलसावै।
चोर की ओर तो पक्ष करै, साहुकार के हाथ में गोला धरावै।
साखि भरै अपराधिन की निकलंक की ओर कलंक लगावै।
नर्क परे जमराज घरे जु करे परपंच, ओ पंच कहावै॥

— भाषाश्लोकसागर

३ **परमेश्वर रूपी पंच—**

स्वारथ त्यों परमारथ मांह, यथारथ बात कहै सनमानी।
रंक रु राव को एक हि भाव, निसंक सो न्याव निवेड़त छानी।
संकट प्राण कि हाण जु होय, तोउ मुख आन न भाषत बानी।
लांच की ओर कबू न लखै, तिन पंचन को परमेश्वर जानी॥

— भाषाश्लोकसागर

४ **पंचों में परमेश्वर वाली बात झूठ**—एक सेठ बहुत पंचायती करता था और कहता था कि जब हम न्याय करते हैं तब हमारे हृदय में परमेश्वर विराजमान हो जाते हैं। अतः हमारे से अन्याय हो ही नहीं सकता। विधवा बेटी को यह काम अच्छा नहीं लगा। उसने पिता से पंचायती छोड़ने के लिये बहुत कहा, लेकिन वह नहीं माना। बेटी ने भाभियों और भाइयों से तानाकसी शुरू की और कहने लगी—तुम लोग जो यह अच्छा खा-पी रहे हो,सब मेरी ही मेहरबानी है। उन्होंने पिता से शिकायत की। पिता ने पूछा-क्यों करती है तानाकसी ? बोल क्या मांगती है हमारे में ? बेटी ने कहा—मैं आपमें पांच हजार रुपये मांगती हूं। विधवा होने पर दो-सौ

तोला सोने का जेवर आपको दिया था। बस, यह कहते ही लड़ाई शुरू हो गई और गालियों की बौछार करता हुआ बाप कहने लगा—रांड, क्यों झूठा कलंक लगाती है? तूने हमें एक तार भी नहीं दिया। चल निकल जा हमारे घर से!

विधवा बेटी पंचों के पास जाकर रोयी-पीटी और उनसे न्याय मांगा। इसका रोना-बिलखना देखकर पंचों को सेठ की नीयत पर संदेह हो गया और उन्होंने फैसला दे दिया कि इसे फौरन दस हजार रुपये (पांच हजार मूल रकम और पांच हजार बारह वर्ष का ब्याज) दे दिये जायें। बाप बहुत रोया-पीटा लेकिन पंचों ने उसकी एक भी नहीं सुनी। आखिर हार कर विधवा बेटी को दस हजार की दस थैलियाँ देनी पड़ीं। रुपये भी गये और बेइज्जती भी हो गई। एक साथ दो धक्के लगने से बूढ़े ने उसी दिन से खाट पकड़ ली, वह मरने की तैयारी करने लगा। पांच-सात दिन दूसरे किसी घर में रहकर बेटी आई और बोली—पिताजी! कहां गये पंचों के परमेश्वर? ये लीजिये आपके दस हजार रुपये! मैंने तो केवल आपको समझाने के लिए यह काम किया था। पिता को ज्ञान हुआ और उसने पंचायती का परित्याग कर दिया।

—'**व्याख्यान-मणिमाला' के आधार से**

२६ न्यायकर्ताओं के उदाहरण

१ (क) रामराज्य में ब्राह्मण ने एक निरपराध कुत्ते पर लाठी मार दी। उसने राम से न्याय मांगा। राम ने कुत्ते से पूछा कि तू क्या चाहता है? उसने कहा—इस ब्राह्मण को कलिंजर द्वीप में मठ का महंत बना दो ताकि "मठवासी-नरकवासी" इस कहावत के अनुसार यह स्वयमेव नरक-गामी बन जाएगा।

० **विक्रमादित्य राजा** ने एक समय रात को शहर में घूमते समय देखा कि चौकीदार ताला तुड़वा रहा है, जमादार चोर की सीढ़ी पकड़े खड़ा है, कोतवाल चोरी के माल का हिस्सा ले रहा है, न्यायाधीश रिश्वत ले रहा है। दीवान से सारी बातें कहीं। उसने कहा—यह तो पुरानी परंपरा है, सदा से ऐसे होता ही आया है। प्रातःकाल हुआ। राजा ने सबको किले पर से पटक-पटक कर मारा एवं कहा अन्यायियों को मारना हमारी पुरानी परंपरा है।

० काशी की महारानी ने सर्दियों में तापने के लिए एक बार गरीबों की झौंपड़ी सुलगा दी। न्यायी नरेश ने उसे भीख मांगकर झौंपड़ी बनाने की सजा दी।

० **सिकन्दर** भारत से लौटते समय एक गांव से गुजरा। वहां पंडित के पास दो व्यक्ति विवाद कर रहे थे। एक कहता था—मैंने मकान बेच दिया, अब जमीन के निधान का मालिक यह है। दूसरा कहता था—नहीं, यह निधान मेरा नहीं हो सकता। पंडित ने निर्णय दिया कि तुम दोनों अपने पुत्र-पुत्रियों को ब्याह कर उन्हें निधान दे दो! सिकन्दर पंडित की निःस्वार्थता एवं भारतीयों की नैतिक-स्पर्धा पर मुग्ध हुआ एवं पंडित को यूनान चलने की प्रार्थना करने लगा।

० **मोहम्मद गजनवी** का भानजा गरीब स्त्री से अत्याचार करता था। उसके घरवालों ने पुकार की। बादशाह ने कहा—मुझे आंखों से दिखाओ! तीसरे दिन दिखाया। बादशाह ने दीपक बुझाकर उसे कत्ल किया एवं बाद में जलपान किया। कारण, प्रण कर रखा था कि पापी को मार कर ही खाऊँ-पीऊँगा। (तीन दिनों तक भूखा-प्यासा रहा)

० **जहांगीर** के साले के मुँह लगा नौकर एक क्षत्रिय स्त्री से बलात्कार करने लगा। शिकायत की गई। बादशाह ने प्राणदडकी सजा दी। भाई की प्रेरणा से बेगम नूरजहां ने उसे बचाने की काफी चेष्टा की। किन्तु बादशाह नहीं माना, तब बेगम ने कहा—"नूर के इशारे पर जान कुर्बान करनेवाले आप मेरा मनचाहा फैसला भी नहीं कर सकते," बादशाह ने जवाब दिया "जान बेची है पर ईमान नहीं बेचा।"

० **सवाई जयसिंह** (जयपुर नरेश) एक बार अचानक छत पर चले गये। नहाती हुई नग्न स्त्री पर नजर पड़ी। नीचे आकर राजपुरोहित से इस पाप का प्रायश्चित्त पूछा। उसने बहन-बेटी के रूप में उस स्त्री का धन-धान्य से सम्मान करने के लिए कहा। महाराज ने पांच हजार रुपये दिये और भविष्य में शहर में खबर कराए बिना छत पर जाने का प्रण किया।

—अध्ययन के आधार पर

२ बीकानेर नरेश **महाराज गंगासिंह** का फौजी कप्तान एक स्त्री से दुराचार करता था। उसकी सास ने पुकार की। महाराज वेष बदल कर रात को उसके घर पहुंचे। पापी आकर पलंग पर बैठा। महाराज ने उसे ललकारा (दीपक बुझा दिया गया था) उसने तीन गोलियां चलाई. कुछ नहीं हुआ। महाराज ने एक गोली से उसे मार डाला एवं घसीट कर सड़क पर फेंक दिया। बुढ़िया गिरफ्तार हुई। दरबार जुड़ा, मिसलें महाराज के पास पहुंचीं। उन्होंने निर्णय देते हुए कहा—इसे मैंने मारा है और भी जो ऐसा कर्म करेंगे, उनकी भी यही गति होगी।

० एक बार प्लेग का उपद्रव हुआ, सूरतगढ़, हनुमानगढ़ आदि स्टेशनों पर महाराज गंगासिंह ने डाक्टर नियुक्त किए ताकि उधर के प्लेगरोगी बीकानेर न आ सकें। काम उल्टा हो गया, डाक्टर मुसाफिरों को हैरान

करने लगे और उनसे खूब पैसे झाड़ने लगे। एक यात्री ने महाराज के नाम पर तार किया। महाराज पगड़ी बांधकर सेठ बने एवं हजार-हजार के ५०-६० नोट जेब में रखकर फस्टक्लास में यात्रा करते हुए उन्हीं स्टेशनों पर आए। डाक्टरों ने रोकना चाहा, उन्होंने नोट निकाले। डाक्टर इन्कार करते गए और नोटों की संख्या बढ़ती गई। बात करते-करते प्लेटफार्म पर आ गए एवं सीटी बजाई। बस, सिपाही आए, कुर्सी लगी, महाराज ने उस पर बैठकर पगड़ी उतारी और मूँछों पर ताव लगाया। डाक्टर हक्के-बक्के हुए। सबको नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया।

—श्रुति के आधार पर

२७ वैश्य-वणिक

१ पशूनां रक्षणं दान-मिज्याध्ययनमेव च ।
वणिक्पथं कुसीदं च, वैश्यस्य कृषिमेव च ।।

—मनुस्मृति १।९०

पशुओं की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना, पढ़ना, रोजगार, सूद पर रुपया देना और कृषि करना, ये वैश्यों के कर्म हैं।

२ कृषिः पशुपालनं वणिज्या च वार्ता वैश्यानाम् ।

—**नीतिवाक्यामृत** ८।१

खेती, पशुपालन और व्यापार करना ये वैश्यों की जीविका (जीवन-निर्वाह) के साधन हैं।

३ **वणिक् की प्रकृति**—

(क) वाणियो वाण न वीसरे, जो अमरापुर जाय ।
साहिब सूं सौदो करै, तो टको-पईसो खाय ।।

० **गताय्-शतायु की कहानी**—वैष्णवी मान्यता के अनुसार कल्पना की गई है कि एक बनिए को यमदूतों ने धर्मराजजी के दरबार में उपस्थित किया। उन्होंने उसके हिसाब की बही (ख़ाता) देखी तो उसमें **गतायु** लिखा था। बस, तत्काल हुक्म दे दिया कि इसकी आयु समाप्त हो गई और इसने पाप-ही-पाप किए हैं, अतः इसे नरक में डाल दो। बनिए ने बात-ही-बात में बही अपने हाथ में लेकर चुपके से 'गतायु' के 'ग' को 'श' बनाकर **शतायु** कर दिया एवं कुछ समय के बाद कहा—महाराज ! जरा बही मुझे भी दिखला दीजिए ! ज्यों ही धर्मराज जी ने बही खोली तो उसमें 'शतायु' मिला। देखते ही बनिया कहने लगा—मेरी आयु सो

वर्ष की है, अभी तो मुझे सत्तर ही आये हैं। अब मैं धर्म करके सब पापों को नष्ट कर दूंगा। धर्मराज चुप हो गए और बनिए को वापस घर भेज दिया।

—श्री कालूगणी से श्रुत

(ख) बैठतो वाणियो र ऊठती मालण।

० वाणियो लिखै, पढ़ै करतार।

(ग) वणिक पुत्र कागद लिखै, काना-मात न देत।
हींग मिरच जीरो लिखै, हंग मर जर कर देत॥

— राजस्थानी दोहा

(घ) एक वणिकपुत्र ने अपने भाई को पत्र लिखा—

'बाबोजी अजमेर गया, हमा अठे रुई लीना छैं, तमा बठै रुई लीजो।' लेकिन मोडी लिपि बिना काना-मात की होने से उसने पढ़ा कि 'बाबोजी आज मर गया, हमा अठे रोय लीना छै तमा बठै रोय लीजो।' बस, पढ़ते ही रोना-पीटना शुरू हो गया।

० वखत देख र नहीं विणजै जिको वाणियों गिंवार

—राजस्थानी कहावतें

(च) जट्टी दा कोई जठेरा नहीं, बनियां दा कोई खेड़ा नहीं।

—पंजाबी कहावत

४ **वणिकों की कमजोरी**—

जग्यां-कुजग्यां गांव रो गोरवों, वेला-कुवेला दिनरी उगाली। चारचौर चौरासी वाणिया, एक-एक चौर इक्कीस-इक्कीस ताणियां, क्या करे विचारा एकला वणियां।

—राजस्थानी कहावत

५ वाणियैरी बैटी ने मांस री कांई ठा!

—राजस्थानी कहावत

वणिक्-प्रसंशा

१ सकल नगर सुखदाय, न्याय-मारग नहिं मूकै ।
देखी जसरो दाव, चाव अवसाण न चूकै ।
न करै मुख नाकार, अंग अभिमान न आणै ।
अवर घरां आधार, बार आपण न बखाणै ।
गम खाय घणी सारै गरज, क्यावर कर ऊंचा करे ।
मानिये दीप ! दरबार में, शाह तिको सारा सिरै ।।

—दीप कवि

२ विन एकण वाणिये, प्रथम रावण पिछताणो,
विन एकण वाणिये, कोरवां युद्ध मचाणो ।
विन एकण वाणिये, खरी ऋद्धि बीसल खोई
विन एकण वाणिये, काम सरियो नहिं कोई ।
वाणिया सीख दीजै विडम, राजभार मोटा सहे ।
वाणियो एक परधान विन, किसो राज रामो कहे ।।

३ सुनार तो निजर बांको, दृष्टि वांको काणियों ।
रजपूत तो तलवार बांको, विणज बांको वाणियों ।।

४ विणज करैला वाणिया, और करैला रीस ।
विणज करा था कादिर खोजे, कर लिए सौ के तीस ।

५ **सेठानी की बुद्धिमत्ता**—सेठ के धन पर राजा को ईर्ष्या हुई । धन हड़पने के लिए चार ऐसी चीजें मांगी, जो (१) **घटे ही घटे**, (२) **बढ़े ही बढ़े**,

(३) **घटे भी नहीं बढ़े भी नहीं**, (४) **घटे भी-बढ़े भी**। सेठानी उत्तर देने गई। राजा को दूध का प्याला और सभासदों को घास दिया तथा उत्तर के रूप में यह दोहा कहा—

आयु घटे, तृष्णा बढ़े, जग घट-बढ़त हमेश।
प्रारब्ध घटे न जीव की, सुन नरपति सुरतेश !

सभासद और राजा आश्चर्यचकित हुए। राजा ने पूछा—दूध का प्याला क्यों और घास क्यों ? उसने कहा—आप के लिए दूध लाई हूँ क्योंकि आप बच्चे हैं ! (अन्यथा नगरसेठ की पत्नी को सभा में नहीं बुलाते) सभासद पशुतुल्य हैं, अतः इनके लिए घास लाई हूँ।

६ **मृत चूहे से करोड़पति**—

वणिकपुत्र संसार में, कर नहिं सकता क्या ?
मृत चूहा ले बन गया, क्रोड़पति कीका।

—दोहासंदोह

राधनपुर से ४० मील दूर २००-२५० घरों की आबादी वाले **लहरिया** गांव में प्रेमचन्द जैन रहते थे, वे अत्यन्त गरीब थे। उनको धोती-जूते भी पूरे नसीब नहीं हो पाए। ब्याह के तीन चार साल बाद ही उनकी अचानक मृत्यु हो गई। बाद में उनके एक पुत्र हुआ, उसका नाम 'कीका' रखा गया। गरीबी से तंग आकर मां-बेटे सायला (सौराष्ट्र) चले गए। वहाँ कीका का ननिहाल था। चार-पाँच वर्ष वहाँ काटे। कीका १२ वर्ष का हो गया और पढ़-लिखकर काफी होशियार बन गया। फिर मां-बेटे अपने गांव आए। माता ने कुछ व्यापार करने के लिए कहा। कीका सेठ **अमथालाल** के पास व्यापारार्थ कुछ कर्ज लेने के लिए **सामलिया** गांव गया। कीका के पिता भी उनसे कर्ज लिया करते थे। ज्यों ही सेठ की दुकान पर कीका पहुंचा, वह गर्म होकर एक आसामी से लड़ रहा था कि बेशर्म ! अगले पचास तो दिये ही नहीं, फिर लेने आ गया। देख ! बनिये का बेटा इस मृत चूहे (सामने एक चूहा मरा पड़ा था) से

भी कमा-खा सकता है। तुझे कुछ शर्म आनी चाहिए। सेठ की गर्मा-गर्मी से कीका डर गया और उससे बिना मिले ही चुपके से मृत चूहे को कागज में लपेट कर वापस चल पड़ा। रास्ते में एक मियां मिला। उसके पास एक सुन्दर बिल्ली का बच्चा था। मियें ने चूहे की कीमत पूँछी, कीके ने दो आने मांगे। मियें ने दो आने देकर चूहा ले लिया। कीका घर आकर छ पैसों के चने एवं एक पैसे की मिट्टी (घर लीपने के लिए) लाया। एक पैसा बचाकर खजाने में रखा।

गांव से दो-ढाई-मील एक ढक्रियाना था, वहाँ बीस-पच्चीस लकड़हारे आते एवं सूखी लकड़ियाँ काटकर उन्हें घूम-घूमकर गांवों में बेचते। दोपहर में धूप से हैरान होकर जब वे एक वटवृक्ष के नीचे विश्राम करते, कीका उन्हें भुने हुए चने खिलाकर ठण्डा पानी पिलाता। वे उसे लकड़ियां देते एवं शाम को उन्हें गदहों पर लादकर उसके घर पहुँचा देते। इस प्रकार कीका प्रतिदिन डेढ़-दो आने कमाने लगा। कुछ समय के बाद रुपये की साढे चार मन के हिसाब से कीका उनकी लकड़ियां खरीदने लगा। होनहार की बात, उन्हीं दिनों डीसा-छावनी बन रही थी। वहाँ से लकड़ियों के लिए कैंपवालों की मोटरें आती थीं और कीका उन्हें अपनी लकड़ियां बेच देता था। एक बार उसके पास पचास हजार मन लकड़ियां एकत्रित हो गईं। इधर भावीवश भारी बरसात होने से सूखी लकड़ियों का अभाव हो गया। अतः कीके की वे लकड़ियां चार रुपये मन बिकीं और कीका के पास दो लाख की पूंजी बन गई। माता के कहने से कीके ने २० भरी सोने का एक चूहा बनाया और उसे सेठ अमथालाल के सामने रखकर मृत चूहेवाला सारा हाल सुनाया। सेठ कीका पर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और पुत्री ब्याह कर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया। (सेठ के कोई पुत्र नहीं था, एक पुत्री ही थी।)

अब कीका व्यापारार्थ बम्बई गया। उन दिनों दादर-माटुंगा-शिव आदि स्टेशनों पर एक आना गज में जमीनें बिक रही थीं। कीका ने दो लाख की जमीनें खरीदीं। उस समय बम्बई शहर बस ही रहा था। अतः जमीनों

की कीमत दिनोंदिन बढ़ती जा रही थी। एक आने गज में खरीदी हुई जमीन तीन रुपया गज तक बिकी एवं कीका भाई करोड़पति बन गया। फिर सोना-चांदी, रुई एवं शेयरों का अनाप-सनाप व्यापार करने लगा। उसने अपनी माता राजाबाई की स्मृति में 'राजाबाई टॉवर' बनवाया, जो बोम्बे यूनिवर्सिटी की एक मंजिल वाली पत्थर की सादी बिल्डिंग पर मानो सोने का कलश है। अस्तु ! (यह ११० वर्ष पुरानी घटना है।)

—जैन भारती (वर्ष २ अंक ४४)

७ नवम्बर, सन् १६५४, पृष्ठ ८८८-६० के आधार पर

२९ वणिक्-निन्दा

१ नहि वणिग्भ्यः सन्ति परे पश्यतोहराः ।

—नीतिवाक्यामृत, ८।१०

बनियों से बढ़कर आँखों के सामने चोरी करने वाले कोई नहीं हैं ।

२ मानेन किंचिच्च मूल्येन किंचित्,
तुलयापि किंचित् कलयापि किंचित् ।
किंचिच्च-किंचिच्च गृहीतुकामाः,
प्रत्यक्षचौरा वणिजो भवन्ति ।

—वल्लभदेव

कुछ माप से, कुछ मूल्य से, कुछ तोल के द्वारा एवं कुछ कला चतुराई के द्वारा, ऐसे थोड़ा-थोड़ा करके हड़पने के इच्छुक वणिक् प्रत्यक्ष चोर होते हैं ।

३ विकट मार मारे भरवाड़ो,
विकट रान खेड़े विणजारो,
हांफलो फांफलो ब्राह्मणनों प्राणियो,
धोरो रहो लूंटे बाजारे बाणियो ।

—गुजराती पद्य

४ सौ सोनारां एक ठग, सो ठग ठाकर एक ।
सतरै ठाकर भांज के, घड्यो वाणियो एक ।।

५ एक किसान बीस रुपयों की हांसली गिरवी रखकर सेठ से दस रुपये लेने आया। सेठ ने दस की लिखा-पढ़ी करके पाँच रुपये दिये । किसान बोला—हुजूर ! ये तो पांच ही हैं । सेठ ने कहा—जा-जा ! घर जाकर गिन लेना, दस हो जाएंगे । किसान न माना. तब सेठ बोला—देख एक नजराने का, एक कमीशन का, एक स्टांप का, एक रसीद का और एक ब्याज का यों पांच

तो कट ही गए, शेष पांच रह गए। किसान बोला—ये पांच और रख लीजिए। एक बड़ी सेठानी के नजराने का, एक छोटी सेठानी के नजराने का, एक बड़ी सेठानी के पान का, एक छोटी सेठानी के पान का और एक आपको सौ वर्ष पहुंचने के बाद क्रियाकांड करने के लिए।

—**प्रेमचन्द**

६ पुत्र के अभाव में एक सेठ ने भैंरुजी से मिनौती की। "बाबा ! अगर पुत्र हो जायगा तो मैं एक भैंसा चढ़ा दूंगा।" कुछ समय के बाद पुत्र तो हो गया, लेकिन दिल में दया होने से भैंसे का बलिदान करना सेठ को असंभव प्रतीत हुआ। इधर बाबे का भय भी लग रहा था। आखिर उसने एक भैंसा ले जाकर भैंरूंजी की मूर्ति के साथ रस्सी से बांध दिया और यह कह कर अपने घर आ गया कि बाबा ! तेरे चरणों में भेंसा हाजिर है। "भूखा-प्यासा भैंसा घटा-दो धंटा तो शांत रहा, फिर धूम मचाने लगा और अन्त में अत्यन्त व्याकुल होकर उसने जोर से एक झटका लगाया, जिससे बाबे की मूर्ति उखड़ गयी। भैंसा दौड़ने लगा और बंधे हुए भैंरूजी घसीटे जाने लगे। रास्ते में माताजी का स्थान आया। माता जी ने हंसकर कहा—बाबा ! आज क्या बात हैं—ऐसे कैसे घसीटे जा रहे हो ? भैंरूजी ने सच्चा हाल सुनाते हुए उक्त राजस्थानी कहावत कही—

"माताज़ी ! मठ में बैठा ही मटका कर्‌या है, वाणियै रै धक्के को चढ़्‌यानी।"

७ वाघना पंजामां आववुं सारूं पण मारवाड़ी(वाणिया)नां चोपड़ामां आववुं भूंडुं।

—**गुजराती कहावत**

८ वाणियो मित्र न वैश्या सती, कागो हंस न बुगलो जती।

—**राजस्थानी कहावत**

९ वणिक् के प्रति व्यंग्य—

(क) रूठोड़ो भोपाल, र, तूठोड़ो वाणियों।

—**राजस्थानी कहावत**

(ख) देश नराधिप तूठत है तब देवत गाम बड़ो वनशाली,
गाम का ठाकर होत खुशी तब, देवत खेत बड़ो-सो निहाली।
खेत को नायक होत खुशी तब, देवत धान की पाली दो पाली,
रीझत है वनिया जब ही तब, काढ़त दाँत बजावत ताली।

—**भाषा श्लोकसागर**

३० वाणिज्य-व्यापार

१ वणिक के कर्म को **वाणिज्य** कहते हैं।

२ सत्यानृतं तु वाणिज्यम्।

—अभिधानचिंतामणि ३।५३१

साच-झूठ का नाम व्यापार है।

३ ट्रेड इज दी मदर ऑफ मनी।

—अंग्रेजी कहावत

० वाणिज्ये वसति लक्ष्मीः।

—संस्कृतकहावत

व्यापार में लक्ष्मी निवास करती है।

४ हता भिक्षा भेकैर्वितरति नृपो नोचितमहो!
कृषिः क्लिष्टा विद्या गुरुविनयवृत्यातिविषमा।
कुसीदाद् दारिद्र्यं परकरगतग्रन्थिशमनाद्।
न मन्ये वाणिज्यात्किमपि परमं वर्तनमिह॥

—पञ्चतन्त्र १।११

भिक्षा क्षुद्रव्यक्तियों द्वारा सेवित है एवं मांगने पर श्रीमंत लोग उचित वस्तु देते भी नहीं। खेती में कष्ट बहुत हैं। विद्यापाठ भी विषम है, उसमें गुरु आदि की गुलामी करनी पड़ती है, ब्याज के काम से भी रकम डूब जाने से क्वचित् दरिद्रता आ जाती है अतः व्यापार से बढ़कर आजीविका का उत्तम साधन दूसरा कोई भी नहीं है।

५ **व्यापार के विषय में विशेष ज्ञातव्य—**

(क) थावर कीजे थरपना, बुध कीजे व्यापार।
(ख) बेच र पिछतावणो, राख र नहिं पिछतावणो।
(ग) ओछी पूंजी धणी नै खाय।
(घ) साझो बाप रो ही खोटो, साझै री हांडी चौराहे फूटे।

६ सीर रो धन स्यालिया खाय, सीर री होली हुवै।

—राजस्थानी कहावतें

७ **व्यापार के सात प्रकार—**

(१) **गान्धिक व्यवहार**—इत्र आदि सुगंधित वस्तु का व्यापार
(२) **निक्षेप प्रवेश**—ब्याज पर रुपये देकर आभूषणादि रखना
(३) **गौष्ठिक कर्म**—गाय-भैंस आदि पशुओं का व्यापार
(४) **परिचित ग्राहकागम**—परिचित ग्राहक का आगमन होना
(५) **मिथ्याक्रयकथन** खरीद के विषय में झूठ बोलना
(६) **कूट तुलामान**—तोल-माप में कमी-वेसी करना
(७) **देशान्तराद् भाण्डानयन**—देशान्तर से माल लाना या वहाँ भेजना।

इन सब में अंतिम प्रकार श्रेष्ठ माना गया है।

७ **व्यापार में हिसाब—**

(क) हिसाब कौड़ी का, बक्शीस लाख की।

—हिन्दी कहावत

(ख) आंगली ने टेरवै बधो हिसाब।

० संभारी ने नामु लखे ने ऊंट चढ़ी ने ऊंघै।

० भींते नामुं, जोड़ा ने तलिए नामुं, तेने बधुं नकामुं।

—गुजराती कहावतें

(ग) लिख के दे! दे के लिख।

—हिन्दी कहावत

३१ व्यापारी

१ व्यापारी को चाहिए कि ग्राहक रूप वृक्ष के फल खाए पर उसकी जड़ न उखेड़े ।

—संकलित

२ जो व्यापारी चिन्ता से लड़ना नहीं जानते, उन्हें अकाल मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है ।

—डा० केरेल

३ **ग्राहक के अनुसार माल की कीमत**—बादशाह जहांगीर ने एक गांव में एक दूकानदार से दो अण्डे माँगे । व्यापारी ने अण्डे देकर २० रुपये मांगे । जहांगीर ने पूछा -क्या अंडे कम हैं ? उत्तर मिला—अण्डे तो कम नहीं हैं, लेकिन बादशाह कम हैं ।

४ **व्यापारियों के निर्माण की कल्पना—**

आसीत्सत्ययुगे बलिस्तदनु च त्रेतायुगे भार्गवो,
रामः सत्यपराक्रमोऽथ भगवान् धर्मस्तथा द्वापरे ।
दाता कोऽपि न चास्ति संप्रति कलौ जीवन्ति केनार्थिन-
श्चेत्येवं कृतनिश्चयेन विधिना व्यापारिणो निर्मिताः ।

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १०२

सत्ययुग में बलिराजा दानी हुआ, त्रेतायुग में परशुराम तथा पराक्रमी राम हुए एवं द्वापरयुग में भगवान कृष्ण तथा युधिष्ठर हुए लेकिन इस कलियुग में अर्थीजनों को जीवन देनेवाला कोई दाता नहीं रहा । अतएव विधाता ने निश्चय करके दाता के रूप में व्यापारियों का निर्माण किया ।

४ **अनूठा व्यापारी एवं दानी**—**जौन डी० राकफैलर** ने तीन आश्चर्यजनक काम किये—प्रथम उसने संसार भर में सबसे अधिक धन बटोरा । जीवन

के प्रारम्भ में वह प्रचण्ड धूप में प्रतिदिन चार सेंट प्रति घंटा के हिसाब से खेत में आलू खोदा करता था। उन दिनों संयुक्तराज्य अमेरिका भर में कोई लखपति नहीं थे, परन्तु जौन डी० ने अरबों की संपत्ति उपार्जन की। फिर भी पहली युवती ने उसके विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया कारण ? युवती की माँ ने उससे कह दिया कि वह अपनी बिटिया को जौन डी० रॉक फैलर सरीखे दरिद्री के गले कदापि न मढ़ेगी।

दूसरी अद्भुत बात जो उसने की, वह यह कि संसार भर में सबसे अधिक धन उसने दान कर डाला। उसने ७५ करोड़ डॉलर दान में दे डाले—इसका अर्थ है, ईसा के जन्म दिन से लेकर आज तक प्रति मिनट उसने ७५ सेंट दान में दिये हैं।

अथवा यों कहिये कि प्रतिदिन ६०० डालर उसने दान में दिए हैं उस समय से, जब कि मूसा ने लाल सागर को इजराइल की संतान के साथ पार किया था और इस घटना को आज ३५०० वर्षों से अधिक हो गये।

और तीसरी अद्भुत बात जो रॉकफेलर ने की वह यह कि वह ९७ वर्षों तक जीवित रहा। अमरीका भर में उसको अनेक लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। सहस्रों ही पत्र उसके पास उसको मार डालने की धमकी से भरे हुए आते थे। सशस्त्र अंगरक्षक उसकी दिन-रात रखवाली करते थे। उसका व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था और उसी को सारा प्रबन्ध भी करना पड़ता था।

यह भी स्मरण रहे कि ३० लाख के पीछे केवल ३० जन ही ९७ वर्ष की आयु को पहुंचते हैं और १० करोड़ में एक भी ऐसा नहीं होता, जो ९७ वर्ष का हो जाये एवं उसके दाँत सही सलामत बने रहें। परन्तु जौन डी० के ९७ वर्ष की आयु में एक भी नकली दांत नहीं था।

जब वह ५५ वर्ष का हुआ, एक बार बीमार पड़ गया। ओषधियों के सपूर्ण इतिहास काल में यह एक बहुत ही सुन्दर घटना हुई। क्योंकि रोगग्रस्त होने के कारण जॉन डी० ने लाखों डालर औषधियों की खोज के लिए व्यय कर डाले।

उसके रोगग्रस्त होने से **रॉक् फैलर फाउण्डेशन** संस्था खुली, जो आज के दिन लगभग १० लाख डालर प्रतिमास संसार भर में स्वास्थ्य-प्रचार में व्यय कर रही है। रॉकफैलर-फाउण्डेशन ने संसार में हुकवर्म रोग को नष्ट करने का बीड़ा उठाया है, वह मलेरिया ज्वर से सफलता पूर्वक लड़ रहा है, और उसी के कारण डाक्टरों ने भयानक पीतज्वर के लिए एक वैक्सीन खोज निकाली है।

रॉकफैलर की संपत्ति आज भी एक सौ डालर प्रति मिनट के हिसाब से बढ़ती जा रही है।

—**'मानो न मानो' पुस्तक के आधार से**

३२ कृषक

१ जब कृषि—खेती होती है तभी अन्य कलाएँ पनपती हैं, अतः कृषक लोग ही मानव सभ्यता के निर्माता हैं।

—डे० नि० एल० वेक्टर

२ **कृषकों का परिश्रम—**

वरसा रहा है रवि अनल, भूतल तवा-सा जल रहा,
है चल रहा सन-सन पवन, तन से पसीना ढल रहा।
तब ही कृषक मैदान में, करते निरन्तर काम हैं,
किस स्वार्थ के हित वे अहो! लेते नहीं विश्राम हैं।
मध्याह्न उनकी स्त्रियाँ लेकर, रोटियां पहुंची वहीं,
रोटियां सूखी, खबर है---शाक की उनको नहीं।
संतोष से खाकर उन्हें, फिर काम में वे लग गए,
भर पेट भोजन पा गए तो, भाग्य मानो जग गए।

—**मैथिलीशरण गुप्त**

३३ कृषि—खेती

१ उत्तम कृषि मध्यम वणिज, निकृष्ट चाकरी भीख निदान ।

—हिन्दी पद्य

२ भूमि इतनी कृपालु है कि उसे पावड़े से कुरेदो और वह फसलों से भरकर मुस्कराती है ।

—जे० राल्ड

३ ऐसे कह रोते हुए को देखकर पृथ्वी हंसती है कि हाय ! मेरे पास रोटी नहीं है ।

४ कविता सौहे भाटनैं, खेती सौहे जाट नैं ।

—राजस्थानी कहावत

५ **दिव्य कृषि**—

० **दिव्वं भो ! किसिं किसेज्जा ।**

आया छेत्तं तवो बीयं, संजमो जुगलंगलं ।

अहिंसा समिती जोज्जा, एसा धम्मंतरा किसी ॥२॥

एयं किसिं कसित्ताणं, सव्वसत्तदयावहा ।

माहणे खत्तिए वेस्से, सुद्दे वावि य सिज्झति ॥४॥

—ऋषिभाषित अध्ययन २

भव्य जनों ! दिव्य खेती करो ! जिसमें आत्मा क्षेत्र है, तप बीज है, संयम युगलांगल है, अहिंसा और समिति जोतने लायक बैल हैं । यह धर्मान्तर कृषि है । प्राणीमात्र पर दया का झरना बहाने वाली इस खेती को करके ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र सभी सिद्ध हो जाते हैं । ऐसे ब्राह्मण-परिव्राजक पिंगल-आर्हतर्षि बोले ।

६ **खेती के सात कारण—**

एक कहे खेती होत वरसन से घनाघन,
दूजो कहे भूमी सेती खेती निपजती है।
तीजो कहे बीज सेती चोथो कहे हल सेती,
हाली सेती पांचमो बतावे सा अछती है।
छठो कहे बैल सेती सातमो निषेधै यार,
खेती भागां सेती ऐसी हियै दरसती है!
एक पक्ष तानैं यामें वही मिथ्यादृष्टि जीव,
सात बात मानैं वह साचो जैनमती है।

—**कवि भूधरदास**

३४ चारण—चारण जाति की विशेषता

१ अकल विद्या, चित्त ऊजला, इधको घर आचार।
बधता रजपूतां विचै, चारण बातां च्यार ॥

—राजस्थानी दोहा

२ चारण में एक विशेषता अवश्य होती है, ऐसे एक बारहठ ने बादशाह के सम्मुख कहा। बादशाह ने गौ चराते हुए एक चारण के अनपढ़ बालक को लक्ष्य करके पूछा—कहो! इसमें क्या विशेषता है? बारहठ ने पता लगाकर बतलाया कि यह बाँसुरी बजाकर चाहे जिस गाय को बुला सकता है। परीक्षार्थ उसे सभा में लाया गया। उसने बांसुरी बजाकर अनेक गायें बुला दिखायीं। बादशाह एवं सभासद आश्चर्य चकित रह गये।

—गंगादान जी से श्रुत

३ **महाभारत में धक्का-मुक्की**—उदयपुर दरबार में पंडित जी छः महीनों से महाभारत की कथा कर रहे थे। मारवाड़ के एक बारहठ (चारण) वहां आ पहुंचे। कथा की बात चली तब बारहठ ने कहा—अगर वक्ता, वक्ता होता तो कथा इतनी लम्बी चल ही नहीं सकती। सात दिनों में ही तलवारें निकल जातीं। सभासदों ने अचंभित होकर पूछा—क्या आप ऐसी कथा सुना सकते हैं? बारहठ का उत्तर था—हां! सुना सकता हूं, लेकिन शर्त यह है कि आप (श्रोतागण) कोई शस्त्र नहीं रख सकते। इतना ही नहीं, उन्हें आयुधशाला में बन्द करके चाबियाँ भी मैं अपने पास रखूँगा।

दरबारियों का आश्चर्य और भी बढ़ गया। बस, बारहठजी के कथनानुसार सभी शस्त्रों को अन्दर रखकर चाबियाँ उन्हें दे दी गईं। महाभारत

का श्रीगणेश हुआ एवं पांचवे दिन ज्यों ही वीरों के भीषण युद्ध का वर्णन चला, श्रोताजनों का खून उबल आया। वे धक्का-मुक्की करते हुए एक-दूसरे पर टूट पड़े। बारहठ ने उन्हें रोकते हुए हँसकर कहा—देखा मजा महाभारत का ! कुछ समय के बाद श्रोतागण शान्त हुए एवं उन्होंने प्रसन्न होकर बारहठ को खूब दान दिया। —**गंगादान जी से श्रुत**

४ **बैजूबावरा**—कहा जाता है कि ये चारण जाति के थे। इनका मूल नाम **बीजानन्द** था। इनकी गायनकला इतनी गजब की थी कि जब ये गाते थे, पशु-पक्षी भी मुग्ध होकर बेभान-से बन जाते थे। एक बार चारणकन्याएँ नदी में स्नान कर रही थीं। ज्यों ही उन्होंने बीन बजाकर गाना शुरू किया। कन्याएँ नहाना भूलकर सुनने में लीन हो गई। इधर उनकी मधुर आवाज से आकृष्ट होकर अनेक हिरण भी वहां आ गये और स्तब्ध बनकर सुनने लगे। कन्याओं ने उन्हें गोद में ले लिया और अपने जेबर (कड़ी, कंठी आदि) पहना दिये। गाना बन्द होने से सारे हिरण एकदम छलांगें लगाते हुए दौड़ गये। जेबर भी उनके साथ चले गये। कन्याएँ बहुत चिन्तित हुईं। आखिर उन्होंने बैजू से पुनः गाने का आग्रह किया बैजू ने कहा तुम्हारे में से यदि कोई मेरे से शादी करो तो मैं पुनः गा सकता हूं। काफी विचार-विमर्श के बाद एक कन्या (सैणीजी) ने बादशाह की हुर्म का जेबर ला देने पर उनसे शादी कर लेगी इस शर्त पर पुनः गाना शुरू करवाया। पूर्ववत् सभी हिरण आ गये। एवं कन्याओं ने अपने अपने जेबर ले लिये।

अब बैजू दिल्ली पहुंचे, गाने से प्रसन्न होकर बादशाह ने उन्हें अपनी हुर्म का जेवर बक्शा।

इधर निश्चित तिथी पर न पहुँचने से सेणीजी ने हिमालय में गलना शुरू कर दिया।

बैजू दौड़ते-दौड़ते हिमालय गये और कहने लगे—ठहर-ठहर मैं आ गया हूं। तब कन्या ने कहा—

गलियो सारो गात, आधै में आधो रह्यो।
हिवै मसलता हाथ, बीजानंद पाछा बलो।

यों कहती हुई कन्या हिमालय में समा गई एवं बैजू बावरे (चितभ्रम) होकर जीवन भर गाते-बजाते घूमते रहे।

— गंगादान जी से श्रुत

- यह भी सुनने में आया है कि बैजू बचपन में ही साधु बन गये थे। एक बार साधुमंडली आगरा पहुंची। वहां तानसेन से प्रभावित बादशाह ने यह कानून बना रखा था कि यहाँ तानसेन के सिवा कोई भी गायन का आयोजन न करे। साधु-मंडली ने गाना-बजाना किया, फलस्वरूप उन्हें मार दिया गया। किन्तु बैजू को बालक समझकर छोड़ दिया गया। उसने किसी सिद्ध पुरुष की सेवा करके अद्भुत गायन विद्या पढ़ी। फिर प्रतिशोध की भावना से आगरा पहुँचा। अपनी संगीत कला से लोगों को ऐसा प्रभावित किया कि वे पागल होकर उसके पीछे ही घूमने लगे।

तानसेन ने शिकायत की। बादशाह ने बजू को बुलाया। राजसभा में तानसेन के साथ उनकी चर्चा हुई। तानसेन ने संगीत-सम्बन्धी जटिल प्रश्न पूछे। बैजू ने उसका समाधान किया। किन्तु बैजू के प्रश्नों का उत्तर तानसेन न दे सके। फिर तानसेन ने गाना गाकर जमुना का प्रवाह रोक दिया तो बैजू ने पानी को जमा दिया (उसे बर्फ के रूप में परिणत कर दिया) बैजू ने अपना मजीरा पानी में फैंका। वह पानी स्तब्ध हो गया, प्रयत्न करने पर तानसेन उसे न निकाल सके। आखिर बैजू विजयी एवं तानसेन पराजित घोषित कर दिये गये।

३५ सोनार

१ सौ नार (नाहर) एक सोनार।

—**राजस्थानी कहावत**

२ सोनार चाहे अपनी मां-बहन का जेबर भी क्यों न घड़े, प्राय: सोना अवश्य चुराएगा।

० एक सोनार बहन का गहना घड़ने के लिए सोना गाल रहा था। बहन पास बैठी थी। इधर बूढ़ा बाप राम-राम का जाप कर रहा था। सोना—चुराने का संकेत करते हुए उसने जाप की पंक्ति बदल दी और कहने लगा—"अरे राम, तेरे तो सारे बराबर है—अरे राम तेरे तो सारे बराबर हैं झुंझला कर पुत्र ने कहा– "क्यों चिल्ला रहा है, राम ने तो लंका कभी की लूट ली" अर्थात् सोना चुरा लिया।

३ **सोनारों की होशियारी**—अगर आप चोरी न कर सकेंगे तो प्राणदंड की सजा दूंगा—ऐसे कहकर एक राजा ने चारों तरफ पहरा लगाकर सोनारों से सोने का हाथी घड़वाना शुरू किया। हाथी तैयार हो गया एवं राजा के हिसाब से एक रत्तीभर सोना भी चोरा न जा सका। पालिश करने के लिए हाथी को नदी में ले गए और पानी में रखकर बालू रेत से उसकी पालिश की गई, फिर वह राजदरबार में पेश हुआ। तोला गया तो बराबर था। राजा ने कहा अब आप लोगों को मौत की सजा मिलेगी। सोनार मुस्कराए क्योंकि पानी में पालिश करते समय समूचा हाथी ही बदल दिया गया था। यह हाथी सोने का न होकर केवल पीतल का था भद खुला, सारी सभा विस्मित हुई।

३६ जाट

१ **जाट सिद्ध बन गया**—एक जैन मुनि जंगल में रास्ता भूल गये। जाट ने उन्हें रास्ते चढ़ाया। मुनि ने उसे कुछ नियम लेने को कहा। उसने एक नियम मांगा। **मन का जाना नहीं करना**—यह नियम दिलाकर मुनि तो चले गये। जाट ने खेत में जाकर काम करना चाहा। जाटनी रोटियां लाईं, उन्हें खाना चाहा। मच्छर काटने लगे, उन्हें उड़ाना चाहा तथा खड़े-खड़े थक जाने से बैठना चाहा। लेकिन ये सभी काम **मन के जाने** थे, अतः उसने नहीं किये एवं अडोल बनकर खड़ा का खड़ा ही रहा। मुनि को याद करते-करते उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। पूर्व जन्म में पाला हुआ संयम याद आने से उसने भाव-संयम ले लिया और सदा के लिये जन्म-मरण से मुक्त होकर वह सिद्ध बन गया।

—**'व्याख्यान मणिमाला' के आधार से**

२ **जाट ने पर्दा तोड़ दिया**—करोड़पति के दो पुत्र अलग हो रहे थे। घर की संपत्ति (हीरा, पन्ना, रुपया, आभूषण आदि प्रत्येक वस्तु) के दो हिस्से किये जा रहे थे पचासों मनुष्य काम कर रहे थे एवं एक अच्छी प्रदर्शनी-सी लग रही थी। एक जाट ने यह दृश्य देखा। और घर आकर अपनी स्त्री से कहने लगा—अलग होने में बड़ा आनन्द आता है, अतः मैं भी तेरे से अलग होऊंगा। स्त्री ने कहा—भाई-भाई, पिता-पुत्र, चाचे-भतीजे आदि अलग हो सकते हैं, लेकिन पति-पत्नी कभी अलग नहीं हुआ करते। जिद्दी जाट नहीं माना और दोनों अलग हो गए।

झोंपड़ी के बीच में एक पर्दा (टाटी) लगा दिया एवं चूल्हा-चक्की आदि दो-दो कर लिये। एक भैंस थी, जिसे जाट ने नहीं रखी, इसलिये वह जाटनी की तरफ रह गई। जाट रोटी बनाने लगा तो धोती जल गयी, रोटी कच्ची रह गई और शाक में नमक दुगुना पड़ गया। अतः वह एक

ही दिन में पूरा परेशान हो गया। इधर जाटनी कभी खीर, कभी रबड़ी, कभी पेड़ा ऐसे नये-नये माल बनाकर खाने लगी। खुशबू से जाट का दिल हिल गया और पर्दे को तोड़ कर जाटनी के साथ मिल गया एवं खीर-रबड़ी खाने लगा। (अज्ञान का पर्दा तोड़ने से मुक्ति रूपी खीर-रबड़ी आदि पदार्थ मिलते हैं)

३ जट्ट गन्ना नहीं दिंदा, भेली दिंदा है।

० जट्ट पिआई लस्सी, गल विच पालई रस्सी।

—पंजाबी कहावत

३७ असंभव

१ समानाधिकरण्यं, तेजस्तिमिरयोः कुतः ।

—शिशुपालवध २।६२

प्रकाश और अन्धकार एक ही स्थान में कैसे रह सकते हैं ?

२ एष बन्ध्यासुतो याति, खपुष्पकृतशेखरः ।
मृगतृष्णाम्भसि स्नातः, शशशृंगधनुर्धरः ॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ३७९

मृग-तृष्णा के जल में नहाकर, आकाश के फूल का मुकुट पहनकर एवं शशक के सींग का धनुष धारण करता हुआ यह वन्ध्या का पुत्र जा रहा है । (ये सब काम असंभव हैं ।)

३ जिसके घर में नौ-सौ गाय, वह क्या छाछ पराई खाय ।

—हिन्दी कहावत

४ आभ फाट्य त्यां थीगडुं क्यां देवुं ?
पेट फाट्युं त्यां पाटो क्यां बांधवो ?
नहातां मूतरै ते शी रीते पकड़ाय ?

—गुजराती कहावतें

५ फाड़णवाला नैं सीवणवाला को पूगै नी ।
देखती आंख्यां माख्यां को गिटी जै नी ।
कागद री हांडी चूल्है को चढ़ै नी ।
थावर-थावर गाम को बलै नी ।

- दाई सूं पेट छानो थोड़ो ही रैवे !
  तिस लाग्यां कूवो थोड़ो ही खुदै !
  मिनकी रै पेट में घी थोड़ो ही खटावै !
- रांड, भांड और उलड़ियो गाड़ो कै रे ही सारै थोड़ा ही रैवै !
- सेर री हांडी में सवा सेर कठै सूं खटावै !
- साणी किसा घोड़ा बगसै !
- लाय लाग्यां कूवो खोदै जिको काम कद पार पड़ै !
- सांप रै खायोड़ा नै अदीतवार कद आवै !
- घूड़ खायां किसो काल निकलै !
- नगांरा में तूती री आवाज कुण सुणै !
- डाकण बेटो दै क लै ?
- डाकण किण री मासी !
- ऊगतो ही को तप्यो नी जको आथमतो काईं तपसी !

—राजस्थानी कहावतें

६ (क) इट टेक्स टू पीपल टू मेक ए क्वरल !

—अंग्रेजी कहावत

एक हाथ से ताली नहीं बजती !

(ख) एक सूंठ रै गांठिये सूं पसारी को हुई जै नी।

- एक दिन पढ़ र किसो पण्डित हो जासी !
- एक बंदरियां रूस जाय तो किसो विंदरावन खाली हो जाय !
- एक गाड़ र तुवै तो कांईं र नहिं तुवै तो कांईं !

—राजस्थानी कहावतें

७ मेरेज इज आनरेबल इन आल एण्ड दि बैड एन डी फाइल्ड।

—अंग्रेजी कहावत

- सासरै जावती ने छिनाल कोइ को कैवैनी।

—राजस्थानी कहावत

८ इफ दी स्काइ फेल्स वी विल कैच लार्क् स । —अंग्रेजी कहावत
न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी ।

९ हींजड़े के घर बेटा हुआ ।
○ सब मर जायं और मैं लड्डू खाता ही रहूँ । —हिन्दी कहावत

१० मूल में मूलजी कुंवारा र सालै रा लगन पूछै ।
— राजस्थानी कहावत

○ मुल्ला नसीरुद्दीन से किसी ने कह दिया कि तेरी स्त्री के साथ बाग में रात के बारह बजे एक आदमी बात कर रहा था। मोला बन्दूक लेकर दूसरे दिन बाग में जा बैठा। रात के बारह बज गये, लेकिन कोई आदमी नहीं आया। एक सम्बन्धी ने पूछा मोला साहेब ! आज क्या कर रहे हैं ? मोले ने सारी बात सुनाई। तब सम्बन्धी ने हंसकर कहा—क्या तुम्हारी शादी हो गई ? अगर नहीं तो स्त्री कहां से आई ? मोला चौंका और बोला—अहो ! शादी वाली बात तो भूल ही गया।

११ बूहे आई जन्न, विन्नों कुड़ी दे कन्न ! —पंजाबी कहावत
बारात आ जाने के बाद कन्या के कान नहीं बींधे जाते ।

१२ केहरि-केस भुजंग-मिण, पतिवरता रो गात ।
सूरां ससतर कृपण-धन, मुवांज लागे हाथ ।।
(**जीते जी सम्भव नहीं**)

१३ कासारे स्फुटिते जले प्रचलिते पालो कथं बध्यते ! —शान्त-सुधारस
तालाब फूटकर पानी निकल जाने के बाद पाल कैसे बांधी जाय !

१४ **संभव**—
○ अकूरड़ी पर किसो आंबो को हुवैनी !
○ लंका में किसो दलदरी को हुवैनी !
○ मूंगां में किसो कोरडू को हुवैनो !
○ भलाई करतां किसी बुराई को हुवैनी !
○ धर्म करतां किसो पाप को हुवैनी ! —राजस्थानी कहावतें

३८ असमानता

१ वाजि-वारण-लोहानां, काष्ठ-पाषाण-वाससाम्।
नारी-पुरुष-तोयाना—मन्तरं महदन्तरम्।

—हितोपदेश २।४०

घोड़ा, हाथी, लोहा, काष्ठ, पत्थर, वस्त्र, स्त्री, पुरुष एवं पानी—ये सभी चीजें समान नहीं होतीं, इनमें बहुत बड़ा अन्तर होता है।

२ पाग भाग सूरति प्रकृति, वाणी बुद्धि विवेक।
अक्सर मिले न एकसे, देखे मुल्क अनेक॥

—हिन्दी दोहा

३ बनाई हुई कोई भी चीज एक-जैसी नहीं होती, कुछ-न-कुछ अन्तर रहता ही है। इसी सिद्धान्त के आधार पर अवधानकर्ता आंखें बन्द करके देखी हुई समान आकारवाली पुस्तकों को स्पर्शमात्र से खोज निकालते हैं।

—धनमुनि

४ कम-बेस गुलाब हुवै कलियां, इक-सी न हुवै कर आंगुलियां।

—जती रासा

५ पांचू आंगल्यां बराबर को हुवैनी।

—राजस्थानी कहावत

३९ समानता–बराबर

१ छुछु दर ना छए बराबर, टकशाली रुपिया बधा बराबर !

० एक बालनां त्रण कटका, तेमां कालो कयों ने गोरो कयों ?

० एक निभाड़ा ना ठाम, एक खाड़ा ना गलूड़िया ने एक निशाले भणेला

—गुजराती कहावतें

२ (क) खुदा जेहड़ा फरिश्ता।

० नकटा देव—सुरड़ा पुजारा।

० गुरु गुड़ - चेला शक्कर।

० धाई भलो न फत्ती, दोनू रांड कुपत्ती।

० आंधा ऊंदरा थोथो धान, जैसा गुरु वैसा जजमान।

—राजस्थानी कहावतें

(ख) ऊंट दुल्हा—गदहा पुरोहित।

० चाचा चोर—भतीजा काजी।

० अंधा मुल्ला—टूटी मस्जिद।

—हिन्दी कहावतें

(ग) यादृशी शीतला देवी, तादृशः खरवाहनः।

—संस्कृत कहावत

जैसी शीतला देवी, वैसी ही गधे की सवारी।

० चिल्ड्रन ऑफ दी सेम पॅरेन्ट्स।

—अंग्रेजी कहावत

एक ही माँ-बाप के दो बालक।

(घ) एक मूंग की दो फाड।

० लाडूगी कोर में किसी खारी र किसी मीठी !

—राजस्थानी कहावत

(ङ) एक तवे की रोटी, कौनसी छोटी – कौनसी मोटी !

० एक थैली के चट्टे-वट्टे, एक तर्कस के तीर।

—हिन्दी कहावतें

३ (क) नष्ट देव री भ्रष्ट पूजा, लाकड़ा रा देव नै ख्ंसड़ा री पूजा।

— राजस्थानी कहावत

(ख) जिसा भाई रा मोसाला, विसा ही बाई रा गीत।

— राजस्थानी कहावत

(ग) पसली भाई नी ने आशीष बाई नी।

—गुजराती कहावत

(घ) जैसा तेरा आव-भाव, वैसा मेरा आशीर्वाद।

—हिन्दी कहावत

(ङ) जिहो-जिहा तेरा लूण-पाणी, ओहो—जिहा मेरा कम्म जानी।

— पंजाबी कहावत

४ तेरा तेल गया—मेरा खेल गया तेरी रात गई—मेरी बात गई, तेरा तोल गया—-मेरा मोल गया।

—हिन्दी कहावतें

५ (क) बाप मरा घर बेटा हुआ, उसका टोटा उसमें गया।

—हिन्दी कहावत

(ख) बाबो मर्‌यो फूलकी जाई, रह्या तीन का तीन।

—राजस्थानी कहावत

६ भलां ही खरबूजो छुरी पर पड़ो, र भलां ही छुरी खरबूजे पर पड़ो !

० ढेढ़णी रे लगावो र भलाई बांथे पड़ो ।

—राजस्थानी कहावतें

७ केशोराय (कुआं) ऊंडा घणा, भांडेसरजी ऊंचा घणा ।
(ये दोनों बीकानेर में हैं ।)

—राजस्थानी कहावत

८ दूध का दूध में, ग—पाणी का पाणी में ।

० ब्याज का ब्याज में, राज का राज में ।

० बाई का फूल बाई नें र जमाई का जमाई नें ।

—राजस्थानी कहावतें

१ गड-गुंबड़ नालेर घटा, इंडा वण अफार।
इतरा तो फूटां भला, सुख पावै संसार॥

० आंख-कान-मोती-शरम, ढोल-बोल नैं नार।
इतरा नहीं फूटां भला, कुटुंब ताल परिवार॥

० जंवरी-चूड़ो-जायफल, विडंग-सुपारी-वैण।
इतरा तो भारी भला, शाह-मित्र अरु सैण॥

० वैद वैरागी बाकरो, चौथी विधवा नार।
इतरा तो करवा भला, माता करै बिगाड़॥

—राजस्थानी दोहे

२ दूध गायांरो, कंठ लुगायांरो, मेल नायांरो,
वैर भायांरो, वघार रायांरो, जीमण जमायांरो।

० घी गायांरो, दही भैंस्याँरो र, छा छाल्यांरी।

—राजस्थानी कहावतें

३ (क) नान्हों तो पण राई नो दाणो, कोह्या तोये सागना लाकड़ा,
नान्हुं तो पण सिंह नुं बच्चुं, बांको तो पण घऊंनो रोटलो।

—गुजराती कहावतें

(ख) टूटी तो ही गुजरात, भांगी तो ही नागोर।

० टूट्या तो ही टोड़ा।

० डांग भागी तो ही डोबरां जोगी परी है।

० जूतियां खाई तो ही मखमल की।

० सागो सेला रो ही चोखो।

—राजस्थानी कहावतें

४१ न्यूनाधिकता

१ अजवालो तोये रात, डाह्यापण तोये वायड़ी नुं,
डाह्यो तोये पशु, छास मीठी पण कांई दूध जेवी !

—गुजराती कहावतें

२ तीर्थंकर, गणधर, आहारकशरीर, अनुत्तर, ग्रैवेयक एवं क्रमशः कल्पभव-वैमानिक, भवनपति,ज्योतिषी, व्यतर देव, चक्रवर्ती, वासुदेव. बलदेव और महामांडलिक—ये ऊपर वालों की अपेक्षा नीचे वाले रूप में न्यून होते हैं।

३ स्त्री की अपेक्षा पुरुषों में रूप अधिक होता है, इसीलिए तो स्त्रियां सिंगार करती हैं। देखो ! शेर-शेरणी, मोर-मोरणी आदि पशु-पक्षियों में भी स्त्री से पुरुष सुन्दर होते हैं।

—व्याख्यान के मसालों से

४ लंदन—औद्योगिक-मनोविज्ञान की राष्ट्रीय संस्था के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि अधिकांश ब्रिटिश-लड़कियां अपने बॉस (अधिकारी) के रूप में पुरुषों को अधिक पसन्द करती हैं और एक तिहाई लड़कियों का तो विश्वास है कि पुरुष स्त्री से अधिक श्रेष्ठ होते हैं।

दो प्रतिशत से अधिक महिलाओं ने यह कहा कि पुरुष के निर्देशन में कार्य करने में उनके लिए अधिक आसानी होती है। उनकी राय में पुरुष अधिक रौब वाले, न्याय-श्रेष्ठ और धैर्यवान होते हैं तथा वे अधिक सम्मान के पात्र होते हैं।

बॉस के रूप मे महिला की तुलना कुछ लड़कियों ने 'बिल्ली' और 'कुतिया' से करते हुए कहा कि वे अस्थिर चित्त और बेढब होती हैं। कुछ लड़कियों ने तो कहा, महिलाएं कभी भी पुरुष के बराबर नहीं हो सकतीं।

—दैनिक हिन्दुस्तान

५ **भारत में कुँआरियों से कुँआरे अधिक**—सन् १९७१ की जनगणना के अनुसार भारत में कुँआरियों के मुकाबले ६ करोड़ कुँआरे अधिक हैं। उक्त जनगणना के अनुसार देश में १४ वर्ष की अधिक आयु वाले वर्ग में १२ करोड़ ६४ लाख अविवाहित महिलाएँ हैं और २० वर्ष से ऊपर के आयु वाले वर्ग में १८ करोड़ ७१ लाख अविवाहित पुरुष हैं।

कभी न शादी करनेवालों की संख्या इससे भी अधिक है। पुरुषों में आजन्म कुँआरों की संख्या १५ करोड़ ५८ लाख ९१ हजार है तथा आजन्म कुँआरियों संख्या ११ करोड़ ८८ लाख ४४ हजार ८०० है।

नाबालिग लड़कों और लड़कियों में शादियों का भारत में अब भी प्रचलन जारी है। १० से १४ वर्ष तक के आयु-वर्ग में १५ लाख विवाहित लड़के और ३७ लाख विवाहित लड़किया हैं। १५ से १९ वर्ष के आयु-वर्ग में ४३ लाख लड़के तथा १ करोड़ २५ लाख लड़कियां विवाहित हैं।

जो लोग विवाहित होने के बाद विधुर हो गए हैं, उनकी संख्या ८३ लाख ४० हजार है, जबकि विधवाओं की संख्या २ करोड़ ३१ लाख है। इन आंकड़ों से प्रतीत होता है कि विधवाओं के पुर्नविवाह की दर बहुत नीची है।

तलाकशुदा अथवा परित्यक्ता महिलाओं की संख्या ८ लाख है, जबकि तलाकशुदा पुरुषों की संख्या ५ लाख है। ऐसे व्यक्तियों में से लगभग ८० प्रतिशत शहर के रहनेवाले हैं।

—**हिन्दुस्तान**, २२ जनवरी, १९७३

बिगाड़

१ **बिगाड़ के पांच कारण—**

१—जवानी,
२—धन,
३—अधिकार,
४—अविवेक,
५—अज्ञान ।

—पांच बात पुस्तक से

२ शाक बगड़्युं तो दिवस बगड़्युं,
अथाणुं बगड़्युं तो वर्ष बगड़्युं,
जुवानी बगड़ी तेनुं जीवतर बगड़्युं,
दीकरो बगड़्यो तेनुं कुल बगड़्युं,
अने बायड़ी बगड़ी तेनुं भव बगड़्युं ।

—गुजराती कहावत

३ मारवाड़ मनसोबे डूबी, पूरव डूबी गाने से ।
खानदेश खुरदै से डूब्यो, दक्खिण डूबी खाणे से ।

४ फूंफोजी रूससी तो भूवाजी ने राख लेसी ।
(मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं)

० अब किसा मियां मरग्या र किसा रोजा घटग्या ।
(कुछ नहीं बिगड़ा)

—राजस्थानी कहावतें

० डुल्ले बेरां दा कुछ नहीं बिगड़िया ।

—पंजाबी कहावत

५ बिगड़ने के बाद प्रयत्न व्यर्थ—

(क) आफ्टर डैथ कम्स दी डॉक्टर।

—अंग्रेजी कहावत

मरने के बाद डाक्टर का आना व्यर्थ है।

(ख) का वर्षा जब कृषि सुखाने !

—हिन्दी कहावत

(ग) गतोदके कः सेतुबन्धः !

—संस्कृत कहावत

पानी निकल जाने के बाद पुल बांधने से क्या लाभ !

(घ) उल्लरि गाडो गयो तब **केशव** काम विनायक को फिर कैसो ?

(ङ) लुटायां पछी शा भो ! आथम्यां पछो असूरूं शुं ! कण मां पाणी पङ्युं ते पड्युं वतुं करावी ने बार शुं पूछवुं !

—गुजराती कहावत

(च) पाछै घोड़ो दौड़ो र घोड़ी दौड़ो।

—राजस्थानी कहावत

४३ वृद्धि

१ विज्ञान के युग में कृषि में (ट्रैक्टर-नहर आदि से), व्यवसाय में (रेल-मोटर-मिल-बैंक आदि से), विद्याध्ययन में (विद्यालयों की बहुलता से), वास्तुकला में (शतभौम महल आदि के निर्माण से) तथा शस्त्रास्त्र में (आणविक अस्त्रों से) क्रमशः वृद्धि हुई है।

—'**नया युग-नया दर्शन' पुस्तक से**

२ **विश्व की जनसंख्या में १० करोड़ की वृद्धि**—संयुक्तराष्ट्र संघ की जन-संख्या समिति की एक घोषणा के अनुसार इस वर्ष विश्व की जनसंख्या ३ अरब ६२ करोड़ २० लाख हो जाएगी।

१९७५ तक यह संख्या ४ अरब हो जाएगी। यदि वर्तमान जन्म दर जारी रही तो १९८० में जनसंख्या ४½ अरब और १९८५ में ५ अरब हो जाएगी।

—**हिन्दुस्तान, ८ फरवरी, १९७०**

३ वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि यदि दुनिया की आबादी इसी गति से बढ़ती रही। तो २००६ में वह दुगुनी हो जायेगी। नवीनतम आंकड़ों के अनुसार इस समय विश्व की जनसंख्या ३ अरब ७० करोड़ ६० लाख है और इसमें प्रतिवर्ष दो प्रतिशत के हिसाब से वृद्धि हो रही है।

—**हिन्दुस्तान, ३ दिसम्बर, १९७३**

४ न वृद्धिर्बहु मन्तव्या, या वृद्धिः क्षयमावहेत्।
क्षयोऽपि बहु मन्तव्यो, यो क्षयो वृद्धिमावहेत्॥

—**विदुरनीति ६।७**

वह वृद्धि बहुमान के योग्य नहीं, जिससे हानि हो, वह हानि भी अच्छी है, जिससे वृद्धि होती हो।

४४ लाभ और हानिकारक

१ **लाभकारक—**

(क) इट इज नॉट लास्ट व्हाट ए फ्रेन्ड गैट्स ।

—अंग्रेजी कहावत

घी खिचड़ी में ही ढुला ।

(ख) घी ढल्युं ते खिचड़ी मां । लपस्या तोये गंगामां। ढोर गयुं ते धणी नें घेर । **—गुजराती कहावतें**

(ग) आखड़्या जिसा पड़्या कोनी । **—राजस्थानी कहावत**

२ **हानिकारण—**

(क) ओछुं पात्र ने अदकुं भण्यो, बढ़कणो बहुए दीकरो जण्यो वानरो अने वींछीए करड़्यो, नकटी अने सलेखम थयुं, गधेड़ी ने फूलके चढ़ी, कारेला नों वेलो ने लीमड़े चढ़्यो, टेंढो अने हवलदारी मली । **—गुजराती कहावतें**

(ख) कपिरपि च कापिशायन - मदमत्तो वृश्चिकेन संदष्टः ।
अपि च पिशाचग्रस्तः, किं ब्रूमो वैकृतं तस्य ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ २४६

एक तो बन्दर स्वयं चंचल, फिर मदिरा पीकर मत्त हो गया, फिर उसे बिच्छु काट गया और भूत लग गया । अब वह यदि विक्रिया—नाच-कूद करता है तो उसे क्या कहा जाय ।

(ग) विधवा स्त्रियों के लिये पांच काम अत्यन्त हानिकारक —

(१) खेलकूद में अधिक रस लेना, (२) मेले-ठेले में जाना, (३) शरीर को सजाना, (४) हंसी-मजाक करना, (५) व्यसन का सेवन करना ।

—पांच बात पुस्तक से

●

४५ निरुपाय

१ छिन्ने बन्धे मत्स्ये पलायिते निर्विन्नो धीवरो भणति, धर्मो मे भविष्यति ।

—विक्रमोर्वशीयनाटिका

जाल के बन्धनों के टूट जाने पर जब मछली निकल कर भाग जाती है, तब खिन्न होकर धीवर कहता है - चलो ! मुझे पुण्य होगा ।

२ (क) आंख्यां मीच र अंधारो करै, जिकैरो कोई कांईं करै ?

० खावतो-पीवतो मरै, जिकैरो कोई कांईं करै ?

० ऊंट फिटकड़ी दिया ही अरड़ावै र गुड़ दिया ही अरड़ावै ।

(ख) मन चालै पण टट्टू को चालैनी ।

० मन (टट्टू) चालै पण पइसा कठै ?

—राजस्थानी कहावतें

१ (क) गरभे धीणो ब्याज-धन, नीलापत्तां धान,
बहू बछेरां दीकरां, नीविड़िया निरवाण। १।

० लोहां लाखां चामड़ां, पहली किसा बखाण,
बहू बछेरां दीकरां, नीविड़िया निरवाण। २।

(ख) लाडी ने पाडी नीवड़्ये बखाण,

० अणबोंध्यो मोती नीवड़्ये बखाण। —गुजराती कहावतें

२ मुंड्योड़ै माथैरी र वांट्योड़ी ओखधरी कांई ठा पड़ै!

० डूम कुण जाणै कठै जावतो दीवाली करसी!

० काजीजीरी कुत्ती कैनैं ठा, कठै जावती व्यासी!

० काईं गोडियो गावे र काईं पूंगी बाजै!

० काणी रै ब्याव में जोखा।

० गेहुं खेत में र बेटो पेट में। —राजस्थानी कहावतें

३ हाड़ीयां घर आवे तां जानीये। —पंजाबी कहावत

४ हड़-हड़ हसी कुंभारड़ी, देख मालण रा बूंट।
चाल गांव रे गोरवें, किस कड़ बैठे ऊंट?

० कुम्हारिन और मालिन अपना-अपना माल बेचने किसी गांव जा रही थीं। पहली के ऊंट पर मिट्टी के बर्तन थे और दूसरी के ऊंट पर चनों के बूंट थे। मालिन का ऊंट मुड़-मुड़ कर चनों को खा रहा था। कुम्हारिन देखकर हंसने लगी। तब मालिन ने कहा—क्या हंस रही है, गांव के गोरवें (निकट) चल! देखती हूं तेरा ऊंट किस करवट से बैठता है, अगर थोड़ा भी टेढ़ा बैठ गया तो तेरे सारे बर्तन फूट जाएंगे।

—श्री कालुगणी से श्रुत

१ नास्त्यदेयं महात्मनाम् । —सुभाषितरत्नखंडमंजूषा

महात्माओं के लिए कोई वस्तु अदेय नहीं है ।

२ नास्ति व्यसनिनां किंचिद्, भुवि पर्याप्तये धनम् ।

—कथासरित्सागर

व्यसनग्रस्तों के लिए पृथ्वी पर चाहे कितना ही धन हो, वह पर्याप्त नहीं होता ।

३ नास्ति सत्यं द्यूतकारे, न शौचं वृषलीपतौ ।
मद्यपे सौहृदं नास्ति, धूर्तेषु त्रितयं नहि ।।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १७२

जुआरियों में सत्य नहीं, शूद्र में शुद्धि नहीं, मद्य पीने वाले में मित्रता नहीं और धूर्तों में तीनों चीजें नहीं ।

४ नासत्यवादिनः सख्यं । —सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ ८७

असत्यवादियों में मैत्रीभाव नहीं ।

५ कड़ी ऊपर तालुं नहिं ने लाडु ऊपर बालुं नहिं ।
दगला ऊपर शाल नहिं, ने बखतर ऊपर ढाल नहिं ।
० उघाड़े बारणे धाड़ नहिं, उज्जड़ गामे राड़ नहिं ।
अने, उकरडाने बधतां वार नहिं ।
० घेली ने गोवालो नहिं, ने कुंवारां ने सालो नहिं ।
० चाटवा मां फाड़ नहिं, ने घर जमाई नो लाड़ नहिं ।
० हथेली मां बाल नहिं, ने गधेड़ा ने गाल नहिं ।

० च्वाड़िया के शरम नहिं, ने अघोरी ने धर्म नहिं।
० बांढा ने बक्कर नहिं, ने छासमां शक्कर नहिं।
अने ऊंहूं नो कोई औसड नहिं। — गुजराती कहावतें

६ नास्ति कामसमो व्याधि-र्नास्ति मोहसमोरिपुः।
नास्ति क्रोधसमो वह्नि-र्नास्तिज्ञानात् परं सुखम्।।
नास्ति मेघसमं तोयं, नास्ति चात्मसमं बलम्।
नास्ति चक्षुःसमं तेजो, नास्ति धान्यसमं प्रियम्।।

—सुभाषितरत्नभांडागार, पृष्ठ १६५-६६

काम के समान कोई व्याधि (मानसिक रोग) नहीं, मोह के समान कोई दुश्मन नहीं, क्रोध के समान कोई आग नहीं और ज्ञान के समान कोई सुख नहीं।

मेघ के समान जल नहीं, आत्मा के समान बल नहीं, आंख के समान तेज नहीं और धान्य के समान प्रिय वस्तु नहीं।

७ न च विद्यासमो बन्धु-र्न च धर्मो दयापरः।
न धर्मात्परमं मित्रं, न मुक्तेः परमा गतिः।।
न पुत्रात्परमो लाभो, नानृतात् पातकं परम्।

—सुभाषितरत्नखण्डमंजूषा

विद्या के समान बन्धु-स्वजन नहीं, दया के समान धर्म नहीं, धर्म के समान मित्र नहीं और मुक्ति के समान गति नहीं। पुत्र-प्राप्ति से बढ़कर कोई लाभ नहीं और असत्य से बढ़कर कोई पाप नहीं।

८ मौनं कालविलम्बश्च, प्रयाणं भूमिदर्शनम्।
भृकुट्यन्यमुखी वार्ता, नकारः षड्विधः स्मृतः।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार, पृष्ठ १६५

(१) चुप रहना (उत्तर न देना), (२) देरी करना, (३) उठकर चला जाना, (४) जमीन की तरफ देखने लगना, (५) भृकुटी चढ़ा लेना, (६) दूसरों की ओर मुंह करके बात करने लगना—इस तरह नकार छः प्रकार का है।

४८ नहीं के समान

१ चैत्र को मेह न दुर्बल देह, बिना त्रिय गेह कछू न कछू।
सावकी माय बिना पय गाय, बिना दल राय कछू न कछू।
करीर को पान घुरत्त को ध्यान, बिना स्वर गान कछू न कछू।
पातर प्यार अचातुर यार, कुपातर नार कछू न कछू।

—भाषाश्लोकसागर

(ये सब नहीं के बराबर हैं।)

२ (क) ए ड्राप इन दि ओसन।

—अंग्रेजी कहावत

(ख) दर्या में खश-खश।

—मराठी कहावत

(ग) ऊंट के मुंह में जीरा।

—हिन्दी कहावत

(बड़ों में छोटा कुछ महत्व नहीं रखता अर्थात् नहीं के समान है)।

३ हाथी उड़ै जठै पूण्यां रा के लेखा !

० हाथी तोलीजै जठै गधा पासंग में जावै।

—राजस्थानी कहावतें

४६ नहीं से कुछ अच्छा

१ (क) अकरणात् मन्दकरणं श्रेयः। —कालिदास

न करने की अपेक्षा मंदगति से करना भी अच्छा !

(ख) समथिंग इज बेटर दैन नथिंग। —अंग्रेजी कहावत

नहीं से कुछ अच्छा।

(ग) वैलेसूं वेगार आछी।

- लांघण स्यूं लापसी ही चोखी।
- आडे दिन स्यूं बासीड़ो ही चोखो।
- नहिं मामा सूं काणो मामो ही आछो।
- आंधां में काणो राजा।
- नहिं रूंख जठै एरंडियो ही रूंख। —राजस्थानी कहावतें

२ व्रत धारूं तो श्रावक **आनंद** जैसे अन्यथा धारूं ही नहीं।

सामायिक करूं तो **पूणिया** जैसी अन्यथा करूं ही नहीं।

तपस्या करूं तो **धन्ना मुनि** जैसी अन्यथा करूं ही नहीं।

खाऊं तो **अमृत भोजन** अन्यथा खाऊं ही नहीं।

पहनूं तो **दिव्य वस्त्र** अन्यथा पहनूं ही नहीं।

ओढ़ूं तो **रत्नकंबल** अन्यथा ओढ़ूं ही नहीं।

पढ़ूं तो **पूर्वों का ज्ञान** अन्यथा पढ़ूं ही नहीं।

(इस प्रकार सोचना भूल है। उत्तम कार्य जितना भी हो सके करो ! नहीं से कुछ अच्छा ही है)

—व्याख्यान के मसालों से

चौथा कोष्ठक

१ नीतमान और नैतिकता

१ अभयं मृदुता सत्यं, आर्जवं करुणा धृतिः ।
अनासक्तिः स्वावलम्बः, स्वशासनं सहिष्णुता ।।
कर्त्तव्यनिष्ठता व्यक्तिगतार्थस्य विसर्जनम् ।
प्रामाणिकत्वं यस्मिन् स्युः नीतिमान् उच्यते नरः ।।

—'नैतिक पाठमाला' की प्रस्तावना से

जिस मनुष्य में—(१) अभय, (२) मृदुता—अहं का विसर्जन, (३) सत्य, (४) आर्जव—कपट का विसर्जन, (५) करुणा, (६) धैर्य, (७) अनासक्ति, (८) स्वावलम्बन, (९) आत्मानुशासन, (१०) सहिष्णुता, (११) कर्तव्य-निष्ठा (१२) व्यक्तिगत संग्रह का विसर्जन, (१३) प्रामाणिकता—ये गुण मिलते हैं, उसे नीतिमान कहा जाता है ।

२ नैतिकता शून्य धर्म बिना फलों का वृक्ष है । धर्मरहित नैतिकता बिना मूल का वृक्ष है ।

—शेक्सपियर

३ **नैतिकता-विकास के चार स्तम्भ—**

(१) पूर्ण ईमानदारी,
(२) पूर्ण पवित्रता,
(३) पूर्ण निःस्वार्थता.
(४) पूर्ण प्रेम । **— मोरली दी-आरमामेंट की मान्यता**

१ (क) परदारं परद्रव्यं, परीवादं परस्य च ।
परिहासं गुरोः स्थाने, चापल्यं च विवर्जयेत् ।। -पृष्ठ १६७

(ख) हितोपदेशं शृणुयात्, कुर्वीत च यथोदितम् ।
विदुरोक्तमकृत्वाभूत्, कौरवः शोकशल्यभाक् ।। -पृष्ठ १६१

(ग) अवृत्तिकं त्यजेद् देशं, वृत्तिं सोपद्रवां त्यजेत् ।
त्यजेद् मायाविनं मित्रं, धनं प्राणहरं त्यजेत् ।। -पृष्ठ १५९

(घ) दूरस्थं जलमध्यस्थं, धावन्तं धनगर्वितम् ।
क्रोधवन्तं मदोन्मत्तं, नमस्कारेऽपि वर्जयेत् ।। -पृष्ठ १६१

(ङ) भक्तं रक्तं सदासक्तं, निर्दोषं न परित्यजेत् ।
रामस्त्यक्त्वा सती सीतां, शोकशल्याकुलोऽभवत् ।। -पृष्ठ १६१

(च) वहेदमित्रं स्कन्धेन, यावत्कालविपर्ययः ।
अथैवमागते काले, भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि ।। -पृष्ठ १६१

—**सुभाषितरत्नभांडागार**

(क) पर-स्त्री, पर-धन, पर-निन्दा, परिहास, गुरु-स्थान में चपलता—इन पांचों का परित्याग कर देना चाहिए ।

(ख) हित की बात सुननी चाहिए और तदनुसार काम करना चाहिए । विदुर का कहा न मानने से कौरव शोक-शल्य से पीड़ित हुए ।

(ग) जहाँ उदरपूर्ति न हो—ऐसा देश, जिसमें उपद्रव हो वह आजीविका, कपटी मित्र और प्राणापहारी धन, नीति के अनुसार ये चारों चीजें त्याग देनी चाहिए ।

(घ) दूर देशवर्ती, जल-मध्यवर्ती, दौड़ता हुआ, क्रोधी और मदोन्मत्त—इन पांचों को नमस्कार भी नहीं करना चाहिए।

(ङ) भक्त, अनुरक्त, नित्यप्रेमी और निर्दोष—इन चारों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। देखो! सीता को छोड़कर राम को शोक-शंकु से व्याकुल होना पड़ा।

(च) जब तक समय साथ न दे, तब तक अपने शत्रु को भी कंधे उठाकर चलते रहना चाहिए, किंतु मौका आते ही पत्थर पर पटक कर घड़े की तरह उसे फौरन फोड़ डालना चाहिए।

२ मीठा हलुवा न बन, जो चट कर जाये भूखे।
कड़वा नीम न बन, जो चखे सो थूके॥

३ खेलिये न जुआ, डाकिये न कुआँ।
जाइये न सांझ, सेविये न बांझ॥

० जैसा देश वैसा वेष। —हिन्दी कहावतें

४ पूत-कपूत कुलच्छन-नार, लड़ाक-पड़ोसी लजावन सारो।
भाई-अदेखो पुरोहित-लंपट, लोभियो-मित्र अतीत-धुतारो।
चाकर-चोर कठोर-मुसाहिब, साहिब-सूम दिवान-ठगारो।
ब्रह्म भनै सुन शाह अकब्बर! बारे ही बाँध कुआँ बिच डारो।

५ बोले बांसो बोलिये न बोलिये न बोले वासों,
डोले काज आपके तो वाके काज डोलिये!
सुने जासों कहिये न कहिये न सुने जासों,
खोले गुझ आपसों तो वासों गुझ खोलिये!
करे जासों प्रीत कीजे प्रीत की प्रतीत लीजे,
अंग को स्वभाव सो तो अंग ही से तोलिये!
एक बार बोले वासों बोलिये हजार बार,
आपसों न बोले वाके बाप सों न बोलिये!
—भाषाश्लोकसागर

६ चंगी है स्याणां दी सलाह पुच्छणी ।
नफा जो नहिं तो नुकसान कुछ नी ।।१।।
मंदा नहिं बोलिए ब्राह्मण-फकीर नूं ।
तत्ता नहिं छकिए प्रसाद खीर नूं ।।२।।
औरत-रसोइया नाल ना बिगाड़िये ।
जुड़दे सिरां चे भांजियाँ न मारिये ।।३।।
मुक्कदमा ना करिए जे सुख लोड़िए ।
रोटी बेले भूक्खा प्रावणा न टोरिए ।।४।।
कपड़ा न पहनिये मंगलवार नूं ।
बेहा टूक लस्सी ना दइये बिमार नूं ।।५।।
आपदा हथियार ना फड़ाइए होर नूं ।
जफी ना पाइए पाड वाले चोर नूं ।।६।।
टिच्चरां न करिये मिरासी जात नूं ।
जूती-सोटी बाज टुरिये ना रात नूं ।।७।।
घोड़े दी पिछाड़ी हाकमां दे मुहर दी ।
गल्ल ना उलट्टे बादस्यां दे कौंर दी ।।८।।
लंघिए ना कोलदे बड़खाणे उट्ठ दे ।
जूतियां ना मारिए जवान पुत्त दे ।।९।।
पिंड विच बन्न के ना मुख लगिए ।
वैरियां दे बार जाय के ना खगिए ।।१०।।
पहरे विच बैठ के ना गल्ल टुकिए ।
फूलां उत्ते आई ना बेल पट्टिए ।।११।।
आप गल्ल करके ना आप हंसिए ।
बच्छा चुंगे गऊ नुँ कदे ना दसिए ।।१२।।
जट्ट दा रुपैया ब्याज नुं ना लीजिए ।
वाणिए दा भांऊ चौगणा ही लीजिए ।।१३।।

काम किते जावन्दे न छेड़े जट्ट नूं ।
हाथ विच फड़िए न ठ्ंवे-सप्प नूं ॥१४॥

माई-बाप अगे ना ऊंचा बोलिए ।
दिलदार वाज भेद कानु खोलिए ॥१५॥

बैठक न बैठिए बन्दे खराब दी ।
संगत छड्दे तां चोर-जुवे बाज दी ॥१६॥

छेती दे कमां चै ना लगाइये देर जो ।
बिना हथियार न जगाइये शेर जी ॥१७॥

दुश्मनां दे नाल ना सलूक करिये ।
सियाल दे महीने ना तलाब तरिये ॥१८॥

जेठ दे महीने ना दुपहरे टुरिये ॥
जेडा काम कर लिया पीछे ना झूरिये ॥१६॥

न्हुवां-धीयां वाला ना लगावे बसमां ।
झूठियाँ ना चकिये सोगन्ध कसमां ॥२०॥

बोता शूम होवें ना लुटावे धन नूं ।
लाडला ना रखिये पुतर रन नूं ॥२१॥

—पंजाबी कविता

७ चालता बलद ने आर मारवी नहीं, दाट्या मुड़दा उखेलवा नहिं,
बेचातो कि जियौ बहोखो नहिं, ने सूतो सिंह जगाड़वो नहिं ।

—गुजराती कहावत

८ अजाण्ये पाणी नहिं उतरणो ।

० कांदा रा छूंतरा उतारणा चोखा कोनी ।
(कांदा रा छूंतरा उतारै जिता ही उतरै)

० सिलाम साटै मियांजी ने नाराज क्यूं करणा ।

—राजस्थानी कहावतें

९ सारा जाता देखिये, आधा दीजे बांट।
० मारते के पीछे और भागते के आगे।
० चिड़िया के शिकार में सिंह का सामान।

—हिन्दी कहावतें

१० (क) टू स्टाप दी माउथ ऑफ ए डॉग विथ ए सॉप।

—अंग्रेजी कहावत

(ख) भसता कूतराने रोटलो नांखवो, चाड़ियानुं मो चांपवुं।
० दुश्मननां डाचा मां नांखवा थी दबाय।
० मृदंग नुं चामडुं लोट लगावी कूटे तो मीठो स्वर नीकले।

—गुजराती कहावतें

११ (क) नो फिंसिंग लाइक फिंसिंग सी।

—अंग्रेजी कहावत

(ख) मारवो तो हाथी, लुंटवो तो भण्डार!
परणवी तो पदमणी, पहोंचवुं तो दरबार।
० चीरवो तो पाटडो चीरवो, देडकां शां डांभवा!
० एक रांय भांगवी ते हजारों सोयों थाय।

—गुजराती कहावतें

१२ कन्टेम्प्ट विल सून किल एन इंजरी दैन रिवेन्ज।

—अंग्रेजी कहावत

गुड़ देने से ही मर जाय, उसे जहर क्यों दिया जाये!

१३ त्रिः पक्षस्य केश-श्मश्रु-लोम-नखान् संहारयेत्।

—चरकसंहिता, सूत्रस्थान ८।१८

केश, दाढ़ी, मूंछ, रोम एवं नखों को पक्ष में तीन बार कटवाना चाहिए।

१४ रात्रौ संध्यासु विद्यादौ, क्षौरं नोक्तं तथोत्सवे ।

— विवेकविलास

रात्रि, संध्या, विद्याध्ययन के प्रारम्भ में तथा महोत्सव के समय हजामत कटाने का निषेध है ।

१५ आँखे अंजन दाँते मंजन, नितकर-नितकर-नितकर ।
दाँत कुचरणी कान कुचरणी, मतकर-मतकर-मतकर ।

—राजस्थानी कहावत

१६ जाये ते न जाये, जाये ते भालो ।
खाये ते न खाये, न खाये भालो ।

—बंगला कहावत

टट्टी जाऊं या न जाऊं—यदि मन में ऐसा विकल्प हो तो जाना अच्छा है। खाना खाऊं या न खाऊं—यदि ऐसा विकल्प हो तो न खाना अच्छा है ।

१७ जैनालये दुष्टकथाविलासो,
निष्ठ्यूत-निद्रा-कलहादिकानि ।
पानासन - स्वादिम - खाद्यसेवे-
त्यादि-प्रमादाचरणं निषिद्धम् ।।

— सेठ सुमेरमलजी से श्रुत

कुकथा, भोग-विलास, थूकना-सिनकना, नींद, लड़ाई, झगड़ा आदि तथा असन-पान-खादिम-स्वादिम—इन चारों प्रकार के आहार का सेवन इत्यादि प्रमादाचरण, (प्रमाद के कार्य) जैन मंदिर या जैन-उपाश्रम में कभी नहीं करने चाहिये । क्योंकि उक्त कार्य धर्मस्थान में निषिद्ध माने गये हैं ।

१८ **पाँच की बात पर ध्यान देना चाहिए—**

१—माता-पिता की बात पर, २—शिक्षक की बात पर, ३—धर्माचार्य की बात पर, ४—सन्मित्र की बात पर, ५—सुयोग्य पत्नी की बात पर ।

१९ सभा में पाँच बातें वर्जित हैं—

१—निद्रा लेना, २—अन्यमनस्क होना, ३—बातचीत या कानाफूसी करना, ४—बीच में होकर आगे बढ़ने की चेष्टा करना, ५—सभा के बीच में अकारण उठना।

२० स्त्रियों के पांच सामान्य कर्तव्य—

१—बिना देखे चूल्हा जलाना नहीं, २—छाने बिना पानी काम में लेना नहीं, ३—घरवालों को भोजन कराए बिना करना नहीं, ४—दूध, दही आदि के बर्तन खुला रखना नहीं, ५—कलह-कोलाहल में भाग लेना नहीं।

२१ पाँच धर्मसाधना में आलम्बन हैं—

१—षट्काय, २—गण, ३—राजा, ४—गाथापति या स्थानदाता, ५—स्वस्थ शरीर।

—'पाँच बात' पुस्तक से

१ (क) द्वाविमौ पुरुषौ लोके, सूर्यमण्डलभेदिनौ ।
परिव्राड्योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः ॥

(ख) द्वाविमौ पुरुषौ लोके, शिरःशूलकराविह ।
गृहस्थश्च निरारम्भो, यतिश्च सुपरिग्रहः ॥ —पृष्ठ १६१

(ग) निःसारस्य पदार्थस्य, प्रायेणाडम्बरो महान् ।
न सुवर्णे ध्वनिस्तादृग्, यादृक कांस्ये प्रजायते ॥ —पृष्ठ १६२

(घ) जीवन्तोऽपि मृताः पञ्च, व्यासेन परिकीर्तिताः ।
दरिद्रो व्याधितो मूर्खः, प्रवासी नित्यसेवकः ॥ —पृष्ठ १६२

(ङ) ब्राह्मणा गणका वैश्याः, सारमेयाश्च कुक्कुटाः ।
दृष्टेष्वन्येषु कुप्यन्ति, न जाने तस्य कारणम् ॥ —पृष्ठ १६२

(च) पुत्र-पौत्र-वधू-भृत्यैः सम्पूर्णमपि सर्वदा ।
भार्याहीनगृहस्थस्य, शून्यमेव गृहं मतम् ॥ —पृष्ठ १६२

(छ) आज्ञामात्रफलं राज्यं, ब्रह्मचर्यफलं तपः ।
परिज्ञानफलं विद्या, दत्त-भुक्तफलं धनम् ॥ —पृष्ठ १६३

(ज) अयुक्तं स्वामिनो युक्तं-युक्तं नीचस्य दूषणम् ।
अमृतं राहवे मृत्युर्विषं रुद्रस्य भूषणम् ॥ —पृष्ठ १६४

(झ) काकः पक्षिषु चाण्डालः स्मृतः पशुषु गर्दभः ।
नराणां कोऽपि चाण्डालः, स्मृतः सर्वेषु निन्दकः ॥ —पृष्ठ १६४

(ञ) कृतस्य करणं नास्ति, मृतस्य मरणं तथा ।
गतस्य शोचनं नास्ति, ह्येतद्वेदविदां मतम् ॥ —पृष्ठ १६६

(ट) असंमाने तपोवृद्धिः, संमानाच्च तपःक्षयः ।
पूजया पुण्यहानिः स्याद् निन्दया सद्गतिर्भवेत् ॥ —पृष्ठ १६६

—सुभाषितरत्नभाण्डागार

(क) दो आदमी सूर्यमंडल को भी भेद डालते हैं—योगयुक्त परिव्राजक और युद्ध में सन्मुख रहकर मरने वाला वीर।

(ख) दो आदमी सिर में शूल पैदा करने वाले हैं—निरुद्यमी गृहस्थ और परिग्रहधारी साधु।

(ग) निःसार पदार्थ का आडम्बर प्रायः अधिक होता है। देखो! कांसा जितनी ज्यादा आवाज करता है, सोना उतनी कभी नहीं करता।

(घ) दरिद्र, रोगी, मूर्ख, प्रवासी (देश-विदेश में घूमता रहने वाला) और सदा दूसरों की सेवा करने वाला। महर्षि व्यास ने कहा है कि ये पांच जीते हुए भी मृत के समान हैं।

(ङ) ब्राह्मण, ज्योतिषी, वेश्या, कुत्ते और मुर्गे—ये अपने साथियों को देखकर प्रायः क्रुद्ध होने लगते हैं, लेकिन इसका कारण क्या है—यह कुछ समझ में नहीं आता।

(च) भार्या—स्त्री से विहीन गृहस्थ का घर शून्यरूप माना गया है। चाहे वह पुत्र, पौत्र, बहू एवं भृत्यों से भरा हुआ भी क्यों न हो। संभवतः इसलिए यह कहावत चली आ रही है—"टाबरिया ही घर बसाय ले तो बाबो बूढली क्यूं लावे।"

(छ) राज्य का फल है—अखण्ड आज्ञा, तप का फल है—ब्रह्मचर्य की प्राप्ति, विद्या का फल है—चौतरफा ज्ञान और धनका फल है—दान एवं भोग।

(ज) समर्थ के लिए अयुक्तकार्य भी युक्त बन जाता है और तुच्छ व्यक्ति के लिए युक्तकार्य भी दोष बन जाता है। राहु के लिए अमृत भी मृत्यु बन गया और शंकर के लिए विष (सांप) भी आभूषण।

(झ) पक्षियों में चाण्डाल काक है, पशुओं में चाण्डाल गदहा है और मनुष्यों में यदि कोई चाण्डाल है तो केवल निन्दक—दूसरों की निन्दा करने वाला।

(ञ) विद्वानों का मत है कि किए हुए का पुनः क्या करना, मरे हुए का पुनः क्या मरना तथा गई वस्तु का पीछे से क्या सोच-फिक्र करना।

(ट) असम्मान से तप की वृद्धि होती है और सम्मान से तप का क्षय होता है। पूजा से पुण्य का नाश होता है किन्तु निन्दा में समभाव रहने से प्राणी सद्गति को प्राप्त होता है।

२ (क) कण्टकेनैव कण्टकम्। —संस्कृत कहावत

० काँटे सूं कांटो निकलै। —राजस्थानी कहावत

(ख) विषस्य विषमौषधम्। —संस्कृत कहावत

० पोइजन इज दी रीमेडी ऑफ पोइजन। —अंग्रेजी कहावत

० जहर स्यूं जहर दटै। —राजस्थानी कहावत

(ग) डायमण्ड्स कट डायमण्ड्स। —अंग्रेजी कहावत

हीरे से हीरा कटता है।
(दुष्ट से दुष्ट दबता है)

३ प्लैन्टी मैक्स डैड टी। —अंग्रेजी कहावत

जितना गुड़ डालो उतना मीठा।

४ गाड़ी भर धान री मुट्ठी भर बानगी। —राजस्थानी कहावत

५ फैटर्स दी मेड ऑफ गोल्ड आर फेटर्स स्टिल। —अंग्रेजी कहावत

सोने की बेड़ी क्या बेड़ी नहीं होती।

६ सोने की कटारी पेट में को मारीजैनी। —राजस्थानी कहावत

७ नया नौ दिन, पुराना सौ दिन। —हिन्दी कहावत

*

४

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

१ **प्रश्न**—उष्मा के प्रधान स्रोत क्या हैं ?

उत्तर—सूर्य, बिजली, रासायनिक प्रक्रिया और यान्त्रिक प्रक्रिया।

२ **प्रश्न**—क्या ठण्डे पानी में भी उष्मा होती है ?

उत्तर—उष्मा सभी पिंडों में होती है। शीतलतम बर्फ में भी और उष्णतम अग्नि में भी।

३ **प्रश्न**—हाइड्रोजन गैस किसे कहते हैं ?

उत्तर—यह जल का एक तत्त्व है। उक्त गैस इतनी जल्दी सुलगती है कि इसे ज्वलनशील गैस भी कहा जाता है। विश्व के विदित पदार्थों में यह सबसे हल्की है।

४ **प्रश्न**—ऑक्सीजन गैस के विषय में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—यह गैस जीवधारियों के जीवन के लिए अनिवार्य है और हाइड्रोजन से बहुत भारी होती है। यह लपट को चमक प्रदान करती है।

५ **प्रश्न**—नाइट्रोजन गैस किसे कहते हैं ?

उत्तर—यह एक अदृश्य गैस है, जो सामान्य हवा का मुख्य तत्त्व होती हैं। हवा के प्रत्येक पांच भागों में चार भाग नाइट्रोजन गैस होती है।

६ **प्रश्न**—कार्बोनिक एसिड गैस क्या है ?

उत्तर—कार्बन (या लकड़ी का कोयला) जब ऑक्सीजन से मिल जाता है, तब कार्बोनिक एसिड गैस बन जाती है।

७ **प्रश्न**—पानी से आग बुझ क्यों जाती है ?

उत्तर—पानी ईंधन पर नमी की एक परत चढ़ा देता है और इस तरह वहां वह हवा पहुंचनी बन्द हो जाती है, जिसकी ऑक्सीजन से आग भड़कती है।

८ **प्रश्न**—तेल, जरबी और मोम किन वस्तुओं द्वारा निर्मित होते हैं ?

उत्तर—ये मुख्यतः कार्बन और हाइड्रोजन गैस द्वारा निर्मित होते हैं। इनका ठोस अंश कार्बन और ज्वलनशील अंश हाइड्रोजन गैस है।

६ **प्रश्न**—प्राणी-ऊष्मा कैसे पैदा होती है ?

उत्तर—प्राणी-शरीर पर विद्यमान ऊष्मा, केशिका-तन्त्रिका में हाइड्रोजन गैस और कार्बन, जो प्राणी के खून में विद्यमान रहते हैं, उनके दहन से पैदा होती है। (केश जैसी बारीक होने के कारण इन्हें केशिका-तन्त्रिका कहते हैं। ये पूरे शरीर पर पाई जाती है।)

दहन—हमारे खून में मोजूदा कार्बन उस हवा की ऑक्सीजन के साथ मिल जाती है, जो हम सांस द्वारा ग्रहण करते हैं और इस तरह वह कार्बोनिक एसिड गैस बनाती है। उनकी यही मिलन-प्रक्रिया **दहन** कहलाती है।

१० **प्रश्न**—पानी किस तरह बनता है ?

उत्तर—पानी दो गैसों—हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मेल से बनता है।

११ **प्रश्न**—तारे छोटे-छोटे क्यों दीखते हैं ?

उत्तर—ये बहुत दूरी पर स्थित है। वास्तव में कुछ तारे तो इतने बड़े हैं कि हम उनके आकार का अनुमान भी नहीं लगा सकते। उदाहरण के लिये, **आर्द्रा** नामक नक्षत्र का आकार लगभग २,६००,०००,००० मील अर्थात् हमारी पृथ्वी के व्यास से कोई तीन लाख गुना अधिक है।

—सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति परिचय, सन् १९७२

पर्व–त्यौहार

१ होली-दिवाली-रामनवमी-जन्माष्टमी-रक्षाबंधन-शीतलासप्तमी गणेशचतुर्थी-मकर-संक्रान्ति-वसन्तपंचमी-अक्षयतृतीया-महावीरजयन्ती-संवत्सरी आदि कितनेक दिन वर्ष में महत्वपूर्ण एवं उत्साहवर्धक होते हैं और **त्यौहार** कहलाते हैं। इन दिनों में त्यौहार के आधारभूत महापुरुषों की जीवनियां पढ़कर जीवन को उन्नत बनाने का विशेष प्रयत्न करना चाहिए। त्यौहारों के रहस्य पर विशेष चिन्तन-मनन करना चाहिए। मात्र लड्डू-लापसी बनाकर खाने-खिलाने से एवं बाह्य आडम्बर करने से लाभ नहीं होता! दिवाली के दिन केवल दीप जलाने से, होली को रंग उड़ाने से, जन्माष्टमी को फलाहार या रात्रिजागरण करने से, रक्षाबन्धन के दिन रखियां बंधाने से या जनेऊ बदलने से, शीतला के दिन ठण्डा-बासी खाने से, संक्रान्ति के दिन तिल-गुड़ का भोजन करने से, एवं संवत्सरी के दिन नई मुंहपति धारण करने से सन्तुष्ट होने वाले व्यक्ति बहुत बड़े अन्धकार में भ्रमण कर रहे हैं। वास्तव में खाना-पीना, आमोद-प्रमोद करना और सिंगार-सजाना तो केवल त्यौहारों का शरीर है, किन्तु विचारों की पवित्रता एवं आचार शुद्धि त्यौहारों की आत्मा है अस्तु!

२ **पर्व के प्रकार**—

पर्व दो प्रकार के होते है—**लौकिक** और **लोकोत्तर**।

होली, दिवाली, दशहरा आदि पर्व लौकिक हैं—इनमें धन, विजय आदि ऐहलौकिक कामनाएँ रहती हैं। संवत्सरी, रमजान, क्रिसमिस आदि लोकोत्तर पर्व हैं। इनमें आत्मिक कल्याण की भावना मुख्य रहती है।

लौकिकपर्व तीन कारण से मनाये जाते हैं—भय से, लोभ से और विस्मय से।

नागपंचमी, गोगा, शीतला आदि भय के कारण से चलते हैं। दशहरा, लक्ष्मीपूजन, दुर्गापूजन आदि विजय या धन के लोभ से मनाए जाते हैं तथा अग्निपूजा, समुद्रपूजा आदि की प्रवृत्ति विस्मय के कारण से हुई है।

जैन एवं बौद्ध पर्व

१ **सांवत्सरी** – संवत्सर (वर्ष) के अनन्तर होने के कारण यह पर्व **सांवत्सरी** कहलाता है। (संवत्सर शब्द से पर्व के अर्थ में अण् प्रत्यय हुआ एवं स्त्रीलिंग में ईप् प्रत्यय हुआ।) इसका लक्ष्य है व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र में सुख-शांति स्थापित करना। इस दिन आत्मनिरीक्षण, अपनी भूलों का सुधार, इन्द्रियों या मन के द्वारा की गई गल्तियों के लिए छोटों-बड़ों सभी से क्षमायाचना करनी चाहिए। इस दिन मनुष्य निरामिष भोजी बने थे या बनेंगे अतः इसे पर्व का रूप दिया गया है। यह साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका सभी को अपने-अपने बही-खाते संभालने का संदेश देता है। इसका नाम **पर्युषण** पर्व भी है। **पर्युषण** अर्थात् कर्म-ईंधन को चारों ओर से जलाना है। (परि उपसर्ग है, 'उष दाहे' धातु है और अनट् प्रत्यय है।) आठ कर्मों का क्षय करना है अतः इस पर्व को आठ दिन मनाया जाता है। यह आत्मा को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

श्वेताम्बर जैन भाद्रकृष्णा १२-१३ से भाद्रशुक्ला ४-५ तक आठ दिन पर्युषण पर्व मनाते हैं। चौथ या पांचम की संवत्सरी करते हैं। दिगम्बर-जैन भाद्रशुक्ला पंचमी से चतुर्दशी तक इस पर्व को दस दिन तक मनाते हैं एवं इसे **दसलाक्षणी पर्व** की संज्ञा देते हैं।

२ **महावीर जयती**—यह पर्व चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन चौबीसवें तीर्थंकर भगवान श्री महावीर का जन्म हुआ था। भगवान के आदर्श जीवन का स्मरण करना एवं उनके निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण करना ही इस पर्व का मुख्य लक्ष्य है। मूर्तिपूजक जैन इस पर्व के दिन भगवान की सवारी भी निकालते हैं।

३ **वीर निर्वाण दिवस** (दिवाली)—यह पर्व कार्तिक कृष्णा अमावस को होता है। अमावस की रात को १२ बजे भगवान महावीर का निर्वाण हुआ था। निर्वाणमहोत्सव करने को इन्द्रादि देवों का समूह आया। उनके दिव्य रत्नों के प्रकाश से अंधेरी अमावश प्रकाशमय बन गयी एवं दीपावली पर्व के नाम से प्रसिद्ध हो गयी। इस दिन महावीर स्वामी तथा गौतमस्वामी का विशेष रूप से जाप किया जाता है। गौतमस्वामी को केवलज्ञान इसी रात को हुआ था।

४ **अक्षय तृतीया**—यह पर्व भगवान ऋषभदेव के वार्षिक तप की स्मृति को ताजा करता है। वैशाख शुक्ला तृतीया को प्रभु ने अपने प्रपौत्र **श्रेयांस कुमार** के हाथ से इक्षुरस द्वारा एक वर्ष की तपस्या का पारणा किया था। जो भी भाई-बहिन वार्षिक तप (एक वर्ष तक एकान्तर या बेले-तेले आदि करते हैं) वे प्रायः अक्षयतृतीया से अक्षयतृतीया तक ही करते हैं। इस पर्व के दिन भगवान ऋषभदेव का पवित्र जीवन अवश्य पढ़ना एवं सुनना चाहिये।

५ **जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के तीन महोत्सव—**

(क) **मर्यादा महोत्सव**—यह माघ शुक्ला सप्तमी के दिन होता है। इस मौके पर हजारों श्रावक-श्राविकाएँ एवं सैकड़ों साधु-साध्वियां एकत्रित होते हैं। इस दिन वर्तमान आचार्य तेरापंथ के संस्थापक श्री भिक्षुस्वामीकृत मर्यादायें सुनाते हैं एवं उन्हें प्रामाणिकता से पालन करने की प्रेरणा देते हैं। साधु-साध्वियों के भावी चातुर्मास की नियुक्ति भी आचार्य श्री प्रायः इसी समय करते हैं।

(ख) **चरम महोत्सव**—यह भाद्रशुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है। इस दिन भिक्षुस्वामी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हुआ था। वर्तमान आचार्य इस अवसर पर हजारों की सभा में जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के संस्थापक श्री भिक्षुस्वामी का आदर्श जीवन उपस्थित करते हैं। अन्य साधु-साध्वियां एवं श्रावक-श्राविकाएँ भी अपने आराध्य आदि गुरु को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

(ग) **पट्टारोहण दिवस**—जिस दिन वर्तमान आचार्य का पट्टारोहण होता है अर्थात् वे आचार्य पद पर नियुक्त होते हैं। उस दिन उक्त

महोत्सव मनाया जाता है। तेरापन्थ के वर्तमान आचार्य श्री तुलसी भाद्रशुक्ला नवमी को आचार्य बने थे।

—धनमुनि

६ **बौद्धपर्व**—वैशाखी पूर्णिमा बौद्धों के लिए पवित्र दिन है। इस दिन लुम्बिनी (नेपाल) में सालवृक्ष के नीचे रानी **माया** ने राजकुमार **सिद्धार्थ** को जन्म दिया था। एक अन्य वैशाखी पूर्णिमा के दिन गया में **गौतमबुद्ध** ने बोधिवृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध कहलाए। तथा एक अन्य बैशाखी पूर्णिमा के दिन ८० वर्ष की आयु में भगवान बुद्ध ने महा-परिनिर्वाण किया।

—'भारत ज्ञान-कोष' ७१-७२

हिन्दुपर्व

१ (क) **दीपावली**—भारत में दीपमाला का पर्व साधारणतः अक्टूबर-नवम्बर में होता है। यह रावण-विजय कर अयोध्या को लौटे श्रीरामचन्द्रजी के राज्याभिषेक का दिन है। भारत के कुछ भागों में इससे हिन्दुओं का व्यावसायिक वर्ष आरम्भ होता है।[1]

(ख) **दुर्गा पूजा**—बंगाल का यह सबसे महत्वपूर्ण पर्व है। यह सितम्बर-अक्टूबर में मनाया जाता है। यह असत्य पर सत्य की विजय का स्मरण कराता है और बताता है कि पाशविक व आसुरी शक्तियोंपर दैवी शक्तियों की विजय अवश्य होती है।

नोट—(१) दीपावली के सन्दर्भ—

१. लंकाविजय के अनन्तर भगवान राम का अयोध्या प्रवेश और राज्याभिषेक।

२ भगवान महावीर का परिनिर्वाण और उनकी ज्योतिर्मयी दिव्यता।

३ स्वामी दयानन्द द्वारा विषपान से अमरत्व की प्राप्ति।

४ स्वामी रामतीर्थ की गंगा की लहरों में समाधि।

५ सिक्खों के छठे गुरु हरगोविंदसिंहजी की जेल से स्वर्णमन्दिर तक की विजय यात्रा।

६ आयुर्वेद के आदि आचार्य धन्वन्तरी का आविर्भाव।

७ शक्ति-पुञ्ज हनुमान का जन्मदिन।

८ बलि का पाताल गमन।

९ काली का असुर-दमन।

१० नरकासुर का वध।

—कथालोक दीपावली विशेषांक

(ग) **विजयादशमी** (दशहरा)—भारत का यह राष्ट्रीय पर्व है। श्रीराम की लंका-विजय के उपलक्ष्य में रामलीला की जाती है। यह उत्सव भरत-मिलाप के साथ समाप्त होता है। यह सितम्बर-अक्टूबर में होता है। दुर्गा-पूजा का भी इसमें समावेश हो जाता है। मैसूर में दशहरा बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह बुराई पर भलाई की, पाप पर पुण्य की विजय का सूचक है। (यह मुख्यतया क्षत्रियों का पर्व है।)

(घ) **गणेश चतुर्थी**—गणेशजी कीपूजा पश्चिमी भारत में विशेष रूप से की जाती है। लोकमान्य तिलक ने गणेशोत्सव को राजनैतिक जागृति का साधन बनाकर महाराष्ट्र में इसका महत्व और अधिक बढा दिया। इसको **नारियल दिवस** भी कहा जाता है।

(च) **होली**—मार्च में पूर्णिमा के दिन यह पर्व मनाया जाता है। गुलाल उड़ाया जाता है और पिचकारियों से हर किसी पर रंग फैंका जाता है। (यह मुख्यतया शूद्रों का पर्व है।)

(छ) **जन्माष्टमी**—जुलाई-अगस्त मास में पूर्णिमा से आठवें दिन मनाई जाती है। यह भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मदिन माना जाता है।

(ज) **सरस्वती पूजा**—यह जनवरी-फरवरी मास में वसन्त पंचमी के मौके पर आती है। यह पूजा विद्या-देवी सरस्वती के सम्मान में की जाती है। यह छात्रों का उत्सव है। वे सरस्वती का जुलूस धूमधाम से निकालते हैं।

२ **रक्षाबन्धन**—यह पर्व मुख्यतया ब्राह्मणों का है। इसे श्रावणी या नारियल पूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन समुद्रयात्रा से शुरु हो जाती है। इस त्यौहार पर जनेऊ (यज्ञोपवीत) बदली जाती है। **जनेऊ में तीन तार होते हैं**। इसका अर्थ माता-पिता, ॠषि-गुरु और देवों से उॠण होना है। जैसे—'माता-पिता की सेवा करना, गुरुओं से प्राप्त ज्ञान को फैलाना, सूर्य, अग्नि, वरुण, पवन आदि देवों से प्रकाश-आग, जल, हवा, लेकर जगत का उपकार करना।' जनेऊ को त्यागकर ब्राह्मण सन्यासी बनता है अर्थात् लोकैषणा, पुत्रैषणा, वित्तैषणा का त्याग करता है।

० **रक्षाबन्धन का इतिहास**—बलिराजा के दानादि से भयभीत होकर इन्द्र आत्मरक्षार्थ विष्णु की शरण में गए। वामन-अवतार लेकर विष्णु यज्ञ-शाला में पहुंचे - बलि ने यथेष्ट मांगने के लिए कहा। संकल्प करते समय शुक्राचार्य झारी के मुख में घुस गए। पानी आना बन्द हुआ। विष्णु ने सलाई डाली। शुक्राचार्य की एक आंख गई। फिर वामन ने साढ़े तीन पैर जमीन माँगी। तीन पैर में तीनों लोक समाये। चौथा पैर बलि के सिर पर रखा एवं उसे पाताल में भेजा। इस प्रकार इन्द्रादि देवों की रक्षा हुई। रक्षा बांधते समय ब्राह्मण यह श्लोक बोला करते हैं :—

> येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
> तेन त्वां प्रतिबध्नामि, रक्षे! मा चल-मा चल।

जिस रक्षाबन्धन के बल से दानवेन्द्र महाबल **बलि** बांधा गया था। जजमान! मैं उसी से तुझे बांधता हूं। अतः भविष्य में सदा मेरी रक्षा करते रहना, इससे मुकरना मत।

इसी प्रकार रखिया बांधकर बहन भी भाई से रक्षा का वचन लेती हैं।

देवों-दानवों के युद्ध में इन्द्राणी ने भी इन्द्र के ब्राह्मणों से रक्षा बंधाई थी। फलस्वरूप इन्द्र की विजय हुई।

मुसलमान बादशाहों ने भी इस त्यौहार को मान्यता दी थी। गुजरातपति बहादुरशाह के आक्रमण से त्रस्त चित्तौड़ की राजमाता **कर्णावती** ने शाह **हुमायूं** को रखिया भेजी एवं हुमायूं ने युद्ध करके कर्णावती की रक्षा की। **आलमगीर** द्वितीय को उसके मंत्री **गाजीउद्दीन** ने मरवाकर लाश को यमुना के किनारे फेंक दिया। एक हिन्दुस्त्री ने उसकी रक्षा की। आलमगीर का पुत्र **आलम** उस स्त्री से राखी बंधवाता रहा। हुमायूं, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब ने इसे महत्व दिया। आलम से अकबर और बहादुरशाह तक यह त्यौहार धूमधाम से चलता रहा।

जैन ग्रन्थानुसार विष्णुकुमार मुनि ने नमुचि ब्राह्मण से तीन पैर जमीन मांगकर जैनधर्म की रक्षा की थी।

अध्यात्म दृष्टि से "आत्मा" इन्द्र है, "अहंकार" दैत्य है और "आत्मिक बल" विष्णु है। तीन पैंर में तीन लोक और आधे में सिद्धि प्राप्त करता है।

कलम-दवात-गज-बटखरे आदि पर राखी बांधने का तत्व यह है कि इनके द्वारा लिखा-पढ़ी, तोल-माप आदि में अप्रामाणिकता न करनी चाहिये।

—अध्ययन के आधार पर

८ ईसाई-पर्व

१ **अप्रैल-फूल**—१ अप्रैल को मूर्ख दिवस मनाया जाता है। यह सदियों से ईसाई-जगत में प्रचलित है। बुद्धिचातुर्य से पड़ोसी को मूर्ख बनाने का यह उत्सव है।

२ **आल-सोल्स डे**—यह प्रार्थना का दिन है। मृतकों की सद्गति के वास्ते प्रार्थना की जाती है।

३ **बैंक होली डे**—इग्लैंड में यह एक धर्म निरपेक्ष छुट्टी है। इस दिन बैंक बन्द रहते हैं। लोग भी इस दिन पैसों का लेन-देन नहीं करते। कल्पना कीजिए, किसी को उस दिन कर्ज पर सूद देना हो, तो वह अगले दिन दे सकता है। पहले न देने के कारण उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की जायेगी।

४ **कैंडलेमा डे**—इसे दो फरवरी को रोमन कैथोलिक लोग श्रद्धा से मनाते हैं। कुमारी **मेरी** की याद में यह उत्सव मनाया जाता है।

५ **क्रिसमस**—ईसा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में यह उत्सव मनाया जाता है। यद्यपि ईसा का जन्मदिन अज्ञात है। पांचवी सदी से ईसा का जन्मदिन २५ दिसम्बर को साधारणतः मनाया जाने लगा।

६ **ईस्टर-डे**—यह ईसाइयों का मुख्य पर्व है। ईसामसीह के पुनरुज्जीवन का यह दिन माना जाता है। यह उत्सव २२ मार्च और २५ अप्रैल के बीच में पड़ता है।

७ **हौलोवीन**—इसका अर्थ है—पवित्र दिन से पहले। यह १ नवम्बर को मनाया जाता है। यह शिशिर के आने की सूचना देता है।

८ **सेन्ट बैलेंटाइन दिवस**—यह पर्व १४ फरवरी को मनाया जाता है। इस उत्सव के मूल का पता नहीं। इग्लैंड और फ्रांस में युवा-युवती सेंटवैलेंटाइन से पहले दिन बड़ी संख्या में एकत्र होकर उत्सव मनाते हैं। यह प्रेमियों का उत्सव माना जाता है।

—भारत ज्ञानकोष सन् ७१-७२

६ मुस्लिम-पर्व

१ **आखिरी चहार-शम्बा**—यह 'सफर' के बुधवार को मनाया जाता है। पैंगम्बर मोहम्मद अपनी आखिरी बीमारी में इस दिन कुछ अच्छे मालूम हुए थे और उन्होंने इस दिन अन्तिम स्नान किया था।

२ **बकरीद**—यह इस्लामी वर्ष के अन्तिम मास के दशवें दिन मनाया जाता है। इस्लाम के अनुसार अब्राहम को परमात्मा का आदेश हुआ था कि वह अपने पुत्र इस्माइल की बलि दे ! उसने अपनी आंखें मूंद ली और पुत्र की हत्या कर दी। कपड़ा उठाने पर उसने देखा कि लड़का खड़ा है और वेदी पर दुम्बा मरा पड़ा है।

३ **मुहर्रम**—मुहर्रम मास का यह दसवां दिन है। शोक व दु:ख पहले दस दिन मनाया जाता है।हसन व हुसैन की शहादत की स्मृत में यह मनाया जाता है।

४ **ईद-उल-फितर**—रमजान के बाद दूज का चांद निकलने पर यह मनाया जाता है। यह पवित्र दिन है, क्योंकि कुरान पहले पहल इसी दिन प्रकाश में आया था।

५ **रमजान**—यह पर्व उपवास (रोजों) के महीने, रमजान की समाप्ति का द्योतक है।

१० आश्चर्य

१ आश्चर्य दर्शन का प्रथम कारण है ।

—अरस्तू

२ आश्चर्य ही उपासना का आधार है ।

—इमर्सन

३ वंडर इज दि इफैक्ट ऑफ इग्नोरैन्स ।

— अंग्रेजी कहावत

आश्चर्य मूर्खता ही है ।

४ कोई भी आश्चर्य तीन दिन से अधिक नहीं टिकता ।

—इटालियन लोकोक्ति

५ **क्या आश्चर्य !**

(क) वार्ता च कौतुकवती विशदा च विद्या,
लोकोत्तरः परिमलश्च कुरङ्गनाभेः ।
तैलस्य बिन्दुरिव वारिणि दुर्निवार—
मेतत् त्रयं प्रसरतीह किमत्र चित्रम् ।

—सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १८२

कौतुक भरी बात, पवित्र विद्या और कस्तूरी की लोकोत्तर-सुगन्धि—ये तीनों चीजें पानी में तैलबिन्दुवत् तत्काल ही फैल जाती हैं । यहां पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए ।

(ख) दाने तपसि शौर्ये वा, विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो नहि कर्तव्यो, बहुरत्ना वसुंधरा ।।

—चाणक्य नीति १४।८

दान में, तप में, शूरता में, विज्ञता में, विनम्रता में और नीति में विस्मय नहीं करना चाहिए क्योंकि पृथ्वी बहुत रत्नों को धारण करने वाली है ।

(ग) किं चित्रं यदि वेदशास्त्रनिपुणोविप्रो भवेत् पण्डितः,
किं चित्रं यदि राजनीतिकुशलो राजा भवेद् धार्मिकः ।
तच्चित्रं यदि रूपयौवनवती साध्वी भवेत् कामिनी,
तच्चित्रं यदि निर्धनोऽपि पुरुषः पापं न कुर्यात् क्वचित् ।

—**सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १८६**

वेदशास्त्र पढ़ा हुआ ब्राह्मण पंडित हो एवं राजनीतिकुशल राजा धार्मिक हो तो कोई आश्चर्य की बात नहीं किन्तु रूप-यौवन संम्पन्न स्त्री यदि सती हो तथा निर्धन आदमी यदि पाप का त्यागी हो तो आश्चर्य की बात है ।

६ महान् आश्चर्य—

अहन्यहनि भूतानि, गच्छन्तीह यमालयम् ।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति, किमाश्चर्यमतः परम् ।।

—**महाभारत-वनपर्व**

प्रतिदिन प्राणी मरण की शरण में जा रहे हैं, फिर भी शेष जीव स्थावरता—अमरता को चाहते हैं—इससे बढ़कर आश्चर्य क्या हो सकता है ?

७ आश्चर्य त्याज्य—

विस्मयः सर्वथा हेयः, प्रत्यूहः सर्वकर्मणाम् ।
तस्माद्विस्मयमुत्सृज्य, साध्यसिद्धिर्विधीयताम् ।।

—**सुभाषितरत्नभांडागार पृष्ठ १६१**

आश्चर्य सर्वथा त्याज्य है क्योंकि सभी कार्यों में विघ्न करने वाला है अतः इसका परित्याग करके साध्य की सिद्धि करनी चाहिए ।

११ आश्चर्य के भेद

१ **दस आश्चर्य** : (जैन आगम के अनुसार)

दस अच्छेरगा पन्नत्ता, तं जहा—
उवसग्ग-गब्भहरणं, इत्थीतित्थं अभाविया परिसा।
कण्हस्स अवरकंका-उत्तरणं चंद-सूराणं।
हरिवंसकुलुप्पत्ती, चमरुप्पाओ य अट्ठसयसिद्धा।
असंजएसु पूआ, दसवि अणंतेण कालेण।

—**स्थानांग १०।७७७**

जो बात सामान्यतया नहीं होती, किन्तु आश्चर्य रूप से कभी-कभी हो जाती है, उसे अच्छैरा अर्थात् आश्चर्य कहते हैं। इस अवसर्पिणीकाल में दस अच्छेरे हुए हैं। विवरण इस प्रकार है।

(१) **उपसर्ग**—केवलज्ञान होने के बाद तीर्थङ्करों को उपसर्ग नहीं हुआ करते, किन्तु भगवान महावीर पर गोशालक ने तेजोलेश्या छोड़ी और उससे प्रभु के शरीर में भीषण रक्त विकार हुआ।

(२) **गर्भहरण**—तीर्थङ्करों के गर्भ का संहरण नहीं होता, किन्तु भावीवश इन्द्र के हुक्म से हरिणैगमेषी देवता ने भगवान महावीर को देवानन्दा ब्राह्मणी की कुक्षि से निकाल कर त्रिशलारानी की कुक्षि में स्थापित किया।

(३) **स्त्री-तीर्थ**—तीर्थङ्कर "पुरुष" ही होते हैं, परन्तु होनहारवश उन्नीसवें तीर्थङ्कर श्री मल्लिप्रभु स्त्री के रूप में अवतरित हुए।

(४) **अभव्य परिषद**—तीर्थङ्करों का उपदेश कभी खाली नहीं जाता, उससे कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान अवश्य होता है, परन्तु मनुष्यों के अभाव में भगवान महावीर की पहली देशना खाली गई।

(५) **कृष्ण का अवरकंकागमन**—वासुदेव से वासुदेव नहीं मिला करते, लेकिन द्रौपदी को लेकर धातकी खंड द्वीप की अवरकंकापुरी से लौटते समय श्रीकृष्ण वासुदेव शंख द्वारा वहां के **कपिल** वासुदेव से मिले।

(६) **सूर्य-चन्द्र का अवतरण**—देवता मूलरूप से अपने स्थान को छोड़कर कहीं नहीं जाया करते (उत्तर—वैक्रिय करके ही जाते हैं) किन्तु भगवान् महावीर का दर्शन करने के लिए चन्द्र-सूर्य मूल रूप से आये थे।

(७) **हरिवंश कुलोत्पत्ति**—युगलिकों की गति देवलोक ही है, किन्तु पूर्व वैर वश एक देवता ने हरिवर्षक्षेत्र के एक युगलिक को इस भरतक्षेत्र में रखा और वह मद्य-मांसादि का सेवन करके नरकगामी हुआ एवं उसके नाम से हरिवंश कुल की उत्पत्ति हुई।

(८) **चमर का उत्पात**—भुवनपति देवता प्रथम स्वर्ग में नहीं जाया करते, किंतु असुरपति चमरेन्द्र ने भगवान महावीर की शरण लेकर प्रथम स्वर्ग में गया एवं वहां भीषण उत्पात मचाया।

(९) **एकसौ आठ सिद्ध**—उत्कृष्ट अवगाहना वाले एक साथ एक से अधिक सिद्ध नहीं हुआ करते, लेकिन ऋषभदेव भगवान के समय एक ही साथ एक सौ आठ सिद्ध होने का प्रसंग आ गया था।

(१०) **असंयत पूजा**—भगवान् सुविधिनाथ से लेकर भगवान् शांतिनाथ तक आठ तीर्थङ्करों के मध्यवर्ती सात अन्तरों में तीर्थ का विच्छेद हो गया था। उस समय असंयतों की पूजा बहुत अधिक मात्रा में हुई।

ये दस आश्चर्य इस **हुण्डा** नामक अवसर्पिणी काल में अनन्तकाल के बाद हुए हैं। इनका विशेष हाल अन्यान्य ग्रंथों से जानना चाहिए।

२ **प्राचीन युग के सात आश्चर्य**—

(१) पिरामिड (मिस्र)
(२) बेबीलोन के झूलते उद्यान (बगदाद से ६० मील दूर)
(३) माओ सोलुस का मकबरा (एशिया माइनर)
(४) डिआना का मन्दिर (इफेसुस)
(५) रोडस की प्रतिमा

(६) ओलंपिया में बृहस्पति की प्रतिमा
(७) एलेक्जेंडरिया का फॉरोस (प्रकाश-स्तम्भ)

- **मध्ययुग के सात आश्चर्य—**

(१) रोम का दीर्घकाय पीसा का बुर्ज
(२) अंकोरवाट कंबोडिया
(३) चीन की बड़ी दीवार (१२५६ मील लम्बी, १७ फीट चौड़ी, १६ फीट ऊंची)
(४) इंगलैंड का स्टोन हैज
(५) ताजमहल (भारत)
(६) नानकिंग पोरसीलेन बुर्ज
(७) इस्ताम्बुल में सेंटसोफिया की मस्जिद।

- **आधुनिक युग के नौ आश्चर्य—**

(१) मानव की चन्द्रयात्रा
(२) बेतार का तार व टेलीफोन
(३) रेडियो, टेलीविजन और चलचित्र
(४) वायुयान
(५) रेडियम का आविष्कार
(६) ऐनेस्पेटिक्स एण्टी टाक्सिन्स का आविष्कार
(७) मोटरकार व रेल्वे इंजिन
(८) स्पेक्ट्रम का विश्लेषण
(९) एक्स-रे का आविष्कार व परा-बैंगनी किरणों की खोज।

—भारतज्ञानकोष सन् १९७०-७१

१२ आश्चर्यजनक वृक्ष

१ **बंशी-वृक्ष**—पीरू देश में कई ऐसे पौधे पाये जाते हैं, जिनके तने से रात्रि के निस्तब्ध वातावरण में सुरीली आवाज निकलती है। यह सुरीली आवाज मनमोहक और कर्णप्रिय होती है।

० **चलने वाले पौधे**—कई पौधे ऐसे भी पाये जाते हैं जो चलते हैं। एक पौधा मद्रास से चलकर कुछ वर्षों में बंगाल पहुँच गया था।

—साप्ताहिक जनगण, ८ अक्टूबर ७३

२ ४०० **फीट ऊँचे वृक्ष**—अमेरिका के कैलोफोर्निया प्रदेश में **डगलसफर** नामक विशाल वृक्ष पाये जाते हैं। जिनकी ऊँचाई ३०० फीट से ४०० तक होती है। उक्त वृक्ष के तने की परिधि १५० फीट होती है। इस वृक्ष के तने को खोखला कर दिया जाय तो उसके अन्दर २०० बच्चों को पढ़ाने के लिये एक स्कूल सुगमता से बनाया जा सकता है। वृक्ष की आयु एक हजार वर्ष की है।

० **पीपल और बरगद**—भारत में पीपल की आयु २००० वर्ष से ३००० वर्ष तक होती है। कलकत्ता में रायल बॉटेनिकल गार्डन में एक विशाल बरगद का पेड़ है। इस पूरे वृक्ष का क्षेत्रफल १३५० वर्ग फीट है। इस वृक्ष में सन् १९५९ में ९४७ सहायक जड़ें थीं।

—साप्ताहिक जनगण, ८ अक्टूबर ७३

३ **बीस लाख वर्ष का पेड़**—तेहरान, ३ दिसम्बर (यू० एन० आई) ईरान के अलबुर्ज पहाड़ के दक्षिणी ढलान में एक अद्‌भुत पेड़ पाया गया है। वैज्ञानिकों का ख्याल हैं कि यह बीस लाख वर्ष से भी पहले का है। खोज करने वालों के अनुसार यदि देखभाल ठीक तरह से की जाये तो वह पांच-सौ साल तक और जिंदा रह सकता है।

—राजस्थान पत्रिका, ५ दिसम्बर १९७३

●

१३ आश्चर्यजनक पशु-पक्षी

१ **चार माह की दुधारु बकरी**—नागौर जिले की जायल पंचायत समिति के सुरपालिया ग्राम में एक चार मास की बकरी की बच्ची पिछले दो मास से नियमित दूध दे रही है। बकरी लोगों में कौतूहल बनी हुई है, जिसे देखने के लिए प्रतिदिन लोगों का मेला-सा लगा रहता है।

सुरपालिया ग्राम के एक कृषक सांवलदान चारण की उक्त बकरी की बच्ची प्रतिदिन तीन कप दूध देती है।

—राजस्थान पत्रिका, २२ जुलाई, १९७३

२ **दूध देने वाला बकरा**—उक्त विचित्र बकरा नेपाल से कलकत्ते के चिड़ियाखाने में लाया गया है। यह सुबह-शाम लगभग एक सेर दूध देता है। ऐसा ही एक और बकरा जयपुर के चिड़ियाखाने में भी है।

—मानो न मानो, पृष्ठ ८७

३ **नट का करतब दिखाने वाली हथिनी**—एक दीर्घकाय हब्शी ने (जिसका नाम इफ्राइम टॉमसन है) अपनी हथिनी "मैरी" के करतबों द्वारा लाखों डालर कमा डाले हैं। यह हथिनी टब के ऊपर चढ़ जाती है और अपने शरीर को सिर के बल साधे खड़ी रहती है। फिर तख्ते के ऊपर से कलामुंडी खाती हुई पैरों के बल पर खड़ी हो जाती है।

—मानो न मानो, पृष्ठ १४९

४ **सबसे ज्यादा ऊंचा रींछ**—अभी तक जितने भी रींछ हुए हैं, उनमें सबसे ज्यादा लंबा एक ध्रुवीय रींछ था, जिसकी लम्बाई ११ फुट, सवा इंच थी। यह रींछ १९६० में मारा गया था।

० **सबसे लम्बा सांप**—सबसे लंबा सांप दक्षिण अफ्रीका में १९४४ में पकड़ा

गया था। इसकी लंबाई ३७॥ फुट थी। यह **एनाकोंडा** जाति का था।

—साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २ जुलाई १९७२

५ **दो सिर वाला सांप**—इस अत्यन्त विषैले सांप के दो सिर, चार आंखें और दो जीभ है। यह सांप जीवित है और डर्बन म्यूजियम में सुरक्षित है। दो सिर वाले सांप संसार में बहुत कम पाये जाते हैं।

—मानो न मानो पृष्ठ १५०

६ **मुर्गी से मुर्गा**—१९३७ ई० की बात है। लंदन के जू (चिड़ियाघर) में एक जंगली मुर्गी मुर्गा हो गई। उसकी गर्दन पर न केवल नर के जैसे पर ही निकल आए, वरन् एक छोटी-सी कलगी भी। वैज्ञानिकों के लिए यह एक समस्या है जिसका वे अभी तक कोई हल नहीं खोज पाये हैं।

— मानो न मानो, पृष्ठ ३३

७ **चीन का गोल्डन फेजेंट मादा से नर**—यह मयूर जाति का पक्षी है। मादा का शरीर सादा भूरे रंग का होता है। नर फेजेंट के सिर पर सुनहरे बालों की शानदार कलंगी लगती है और शरीर सतरंगा होता है। गोल्डन फेजेंट का एक जोड़ा १९६० फरवरी मास में जयपुर के चिड़ियाघर ने खरीदा था। सन् १९७१ तक तो यह मादा फेजेंट अण्डे देती रही, किन्तु १९७२ में अण्डे देने का क्रम रुक गया।

इस पक्षी की आयु १३-१४ वर्ष की मानी गयी है, अतः अण्डे न देने का कारण वृद्धावस्था मानी गयी। १९७२ के अक्टूबर मास में मादा के पेट के ऊपरी भाग में लाल व हल्के सुनहरे रंग की धारियां नजर आने लगीं, जो धीरे-धीरे फैलती गयीं। नवम्बर मास में इसकी पूँछ में भी कई परों का रंग परिवर्तित होने लगा, साथ ही साथ गर्दन में भी लाल व हल्के सुनहरे रंग का आवर्तन प्रारम्भ हुआ। दिसम्बर मास में इसके सिर पर नर की तरह सुनहरी कलंगी बनने लगी। यद्यपि यह रंग में हल्की थी। दिसम्बर के तीसरे सप्ताह में इसके गर्दन पर नर की तरह 'कॉलर' बनने लगा और जनवरी १९७३ तक वह पूरा बन गया। अप्रैल १९७३ तक इस मादा के शरीर के रंगों की सारी रचना नर की भांति हो गई। पक्षी-जगत में यौन परिवर्तन की यह घटना संसार में अनूठी है। **—धर्मयुग, १६ सितम्बर, १९७३**

१४ आश्चर्यजनक बहुमूल्य-पुस्तकें

१ ब्रिटिश म्यूजिअम में एक इंजील है, जिसको रूस-सरकार ने १,००,००० पौण्ड में विक्रय किया था। कदाचित् इससे अधिक मूल्य और किसी पुस्तक का कभी नहीं दिया गया है।

० इटालिअन लेखक **मैरीनेत्री** ने १९३५ में एक किताब की जिल्द बंधवाई थी, जिसमें पतले शीशा धातु के पत्र लगे हैं और जिन पर रंग-बिरंगे वर्णों और चित्रों की भरमार है।

० स्वीडन के **अपसाला** नगर के पुस्तकालय में एक अमूल्य पुस्तक है, जो भोजपत्र पर लिखी हुई है। इसकी धरती लाल है और चाँदी के अक्षरों में लिखावट है।

० १९३० में बर्लिन में मैजारिन की इञ्जील ६५,००० पौंड में नीलाम हुई थी। इस इञ्जील के प्रति पृष्ठ में ४२ लाइनें हैं और यह सबसे पहली पुस्तक है, जो अलग-अलग छापनेवाले टाइप द्वारा छापी गई थी।

० शेक्सपियर के प्रथम फोलिओ का मूल्य ५,२५० पौंड है।

० ला फौन्तेन की कहानियों की छोटी-सी पुस्तिका जिसके लिए फ्रांगोनार्ड ने चित्र बनाये थे, १९३६ में बीस लाख फ्रांक में नीलाम हुई थी।

—मानो न मानो, पृष्ठ ४६

१५ आश्चर्यजनक प्रतियोगितायें

१ **(क) दाढ़ी बनाना**—लंदन में एक हजाम ने दाढ़ी बनाने का एक रिकार्ड स्थापित किया। उसने एक घंटे में ७७ व्यक्तियों की दाढ़ी बनाई। फिर गर्व से कहा—उसके सिवा अन्य कोई भी इतनी तेजी से उस्तरा चलाकर दाढ़ी नहीं बना सकता। इस क्षेत्र में वह अद्वितीय है। पर केन्ट शहर के एक अन्य हजाम ने इस रिकार्ड को भी तोड़ डाला। उसने एक घंटे में ८० व्यक्तियों की दाढ़ी बनाई। दाढ़ी वाले लोगों को रास्ते से बुला-बुला कर उसने चटपट ही कार्य समाप्त कर दिया था।

(ख) हाथ मिलाना—हाथ मिलाना तो एक प्रकार की सभ्यता है। पर इसकी भी प्रतियोगिता हो चुकी है। सन् १९५९ में नॉटिंघम में एक छात्र ने एक घंटे में ९००१ बार हाथ मिलाकर रिकार्ड की सृष्टि की थी। इस रिकार्ड को भी मात किया लंदन शहर के एक छात्र ने। उसने १ घंटे में ३७,५०० बार हाथ मिलाया। पर इतने से भी वह सन्तुष्ट न होकर फिर हाथ मिलाने लगा। इस बार उसने स्वयं अपना ही रिकार्ड तोड़ डाला। ४६,४२६ बार हाथ मिलाकर चैम्पियन हुआ।

(ग) शिशुजन्म—रूस की एक महिला ने २७ बार गर्भवती होकर ५३ शिशुओं को जन्म दिया, जिनमें से १६ बार एक शिशु का, ७ बार तीन शिशुओं का तथा ४ बार चार शिशुओं का जन्म हुआ था। यह महिला इतनी विख्यात हो गई कि रूस के जार द्वितीय ने भी उसे सम्मानित किया।

० फ्रांस की एक ग्रामीण नारी ने ६ वर्षों में २१ सन्तानों की मां बन कर रिकार्ड स्थापित किया। उसने प्रथम वर्ष में एक, द्वितीय वर्ष में दो, तृतीय वर्ष में चार, पांचवे में ५, तथा छठे वर्ष में एक साथ छः बच्चों

को जन्म दिया था। युगोस्लाविया के एक कृषक की पत्नी ने अट्ठाईस वर्षों तक लगातार प्रतिवर्ष एक शिशु को जन्म देकर धारावाहिकता की रक्षा की।

(घ) **नृत्य**—अकेले नाचने की प्रतियोगिता में **बेसिल** की बात कही जाती है। सन् १९५३ साल के अविराम नृत्य में उनका रिकार्ड कायम हुआ, उन्होंने ५१ दिनों तक नृत्य किया था, अवश्य ही वे प्रति घंटे के पश्चात् कुछ देर के लिए विश्राम करते थे।

(ङ) **प्रेम-पत्र**—चिट्ठियां लिखने की कोई प्रतियोगिता नहीं हुई है। पर **प्रेम-पत्र** लिखने के बहुत रिकार्ड स्थापित किए गए हैं। मनोवैज्ञानिक **फ्रायड** ने विवाह के पूर्व अपनी पत्नी को पत्र लिखे थे उनकी संख्या ९०० थी।

- रूपवती अभिनेत्री **जुलियट** ने लगातार पचास वर्षों तक **विक्टर ह्यूगो** को प्रेम-पत्र लिखे थे। उनके कुल पत्र प्रायः उन्नीस हजार थे।

- कनैकटिकाट के ४५ वर्षीय सज्जन ने एक महिला को बहुत से प्रेम-पत्र लिखकर प्रेम प्रकट किया था। उनमें से एक पत्र की पृष्ठ संख्या ४६५ थी।

- कोरिया के एक सैनिक को अपनी पत्नी के पास से जो पत्र मिला था वह ७५ फुट लम्बा था। सबसे अधिक मजेदार घटना आस्ट्रेलिया की एक युवती की थी। विदेश जाते हुए अपने पति के बैग में उसने ३६५ प्रेम-पत्र ठूंसकर रख दिए थे। उसकी आशंका यह थी कि उसका पति कहीं उसे भूल न जाए।

- ब्रिटिश म्यूजियम में एक प्रेम-पत्र अभी तक सुरक्षित है। चिट्ठी की पृष्ठ संख्या ४०० है, एवं उसमें ४,१०,००० शब्द व्यवहृत हुए हैं।

—हिन्दुस्तान, रविवारीय साहित्य (वर्ष १ अंक ३०) फरवरी २०, १९७२

नरेन्द्रकुमार के लेख से

२ लंबे नाखून—३० वर्षीय नवयुवक **मनमोहन आदित्य** विश्व-नखराज बनने की भावना से १८ साल तक अपने बायें हाथ के नखों को बढ़ाता रहा। इस समय उसके नाखूनों की सम्मिलित लम्बाई ४७ इंच है। ज्योंही आदित्य की खबर धर्मयुग, २२ अप्रैल १९७३ के अंक में छपी। दिल्ली निवासी—**रमेश शर्मा** ने धर्मयुग, १ जुलाई १९७३ के अंक में खुद नखराज होने का दावा किया क्योंकि उनके नाखूनों की सम्मिलित लंबाई ६१·५ इंच है। अक्टूबर, १९७१ में टोकियो टी० बी० पर 'दि स्पेशल सर्प्राइज आफ दि वर्ल्ड शो' के अलावा अन्य कई देशों में भी वे अपने नाखूनों का प्रदर्शन कर चुके हैं। देखिये दोनों के चित्र—

१६ आश्चर्यजनक-स्मरणशक्ति

१ थेमिसटोकल्स (पिथेगोरस) को एथेंस नगर में रहने वाले २० हजार निवासियों में से प्रत्येक का नाम याद था।

० लिथुआनियाँ का प्रधान **रवी एलिजा** एक बार जिस पुस्तक को पढ़ लेता था, उसे कभी नहीं भूलता था। इस तरह उसने २५०० विशालकाय ग्रन्थ एकदम कंठस्थ कर लिए थे।

० अंग्रेजी राज्य काल में एक ब्राह्मण ने गंगा किनारे नहाते समय सुने हुए दो अंग्रेज सैनिकों के वाद-विवाद को साक्षी-रूप में जज के सामने ज्यों का त्यों सुना दिया। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उक्त ब्राह्मण अंग्रेजी भाषा जानता नहीं था।

० पोलैंड के प्रथम इतिहासकार और ग्रन्थ-विज्ञानी **जोसेफ भंवसीमिलियन** (१७५०-१८२६) वृद्धावस्था में अंधे हो गये थे। लेकिन उनकी स्मरण-शक्ति बड़ी तीव्र थी। लेटिन भाषा के तीन विख्यात लेखकों (टीटस, लीवियस प्लाइनी और जुवेनल) के सम्पूर्ण ग्रन्थों का अपनी याददाश्त से पोलिश भाषा में अनुवाद उन्होंने बोलकर लिखा दिया था। उनका सेक्रेटरी रोज रात में उनके अनुवाद का मिलान कर लेता था, लेकिन उसे कभी एक भी छूट या अशुद्धि नहीं मिली।

० "मेखाइल कुनी" नामक एक साधारण व्यक्ति में भी अलौकिक दिमागी करिश्मा दिखाने की सामर्थ्य है। एक बार किसी थियेटर के मंच पर चार काले तख्तों पर बहुत से अंक लिखकर तख्तों को तेज रफ्तार से घुमाया गया। तख्तों की ओर पीठ रखकर उक्त "कुनी" ने सिर्फ एक क्षण के लिये मुड़कर तेज रफ्तार से घूमते हुए उन तख्तों की तरफ देखा और उन सब अंकों का सही योगफल बता दिया। योगफल था ८४५६।

० नब्बे वर्ष की आयु में **फू शेंग** नामक एक चीनी ने १०० खण्डों में लिखे गये 'चीन के इतिहास'' को शब्दशः मुँहजबानी सुना दिया था।

० सम्राट् **बाँग-ती** ने उक्त इतिहास को इसलिए नष्ट करा दिया था कि चीन का इतिहास उसके राज्यकाल से ही प्रारम्भ हो, लेकिन उसकी यह आकांक्षा पूरी न हो सकी, क्योंकि ३२ वर्ष बाद भी शेंग को उक्त पूरा ग्रंथ कण्ठस्थ था।

—विचित्रा, वर्ष ३ अंक ४, सन् १९७१

२ **अद्भुत ज्ञानशक्ति**—सन् १९४३ में पीटर हरकांस को एक दीवार पर पुताई करते हुए सीढ़ी से गिरने पर अलौकिक ज्ञानशक्ति मिली, जिससे वह भूत और भविष्य के बारे में काफी कुछ बता सकता था। गिरने पर जब उसे अस्पताल में लाया गया और वह कुछ स्वस्थ हो गया, तब उसने साथ के विस्तर पर पड़े रोगी की ओर आश्चर्य से देखते हुए कहा—"अरे, तुम्हारी माँ तो मरणासन्न है और तुम यहाँ हो। तुम्हें तुरन्त अपनी माँ के पास जाना चाहिये। उसी अस्पताल में दूसरे एक मरीज को उसने यह बताकर सबको आश्चर्यचकित कर डाला कि उसने सात दिन पूर्व एक दुकान से एक अटेची की चोरी की थी, जिसमें अमुक वस्तुएँ थीं। पहले तो डाक्टरों ने उसे मजाक समझा लेकिन जाँच करने पर सारी बातें सच निकलीं तो डाक्टर आश्चर्य में पड़ गये।

पीटर हरकांस ने प्राप्त दिव्य-ज्ञानशक्ति से लोगों की खोई हुई सम्पत्तियों एवं आदमियों के बारे में भी बताया। वह किसी मशीन को छूकर ही बता सकता था कि इस मशीन के किस पुर्जे को बदलना है, लेकिन सबसे अधिक प्रभावशाली उसका कार्य अपराधों का सुराग बताने का था। उसने अपहृत बच्चों, चोरों के गिरोहों और हत्याकांडों के अभियुक्तों के बारे में सही जानकारी दी। बाद में उसने अमेरिका में कई जगहों पर तेल तथा सोने की खानों की सही जानकारी देकर वैज्ञानिकों को भी चकित कर दिया। **—शशिकांत शर्मा (हिन्दुस्तान ५-११-७३)**

१७ अन्तरिक्ष में मानव की आश्चर्यजनक उड़ान

१ **यूरी गागारिन** (रूस)—१२ अप्रैल सन् १९६१, एक चक्कर, ग्रह-पथ में १ घंटा, ४८ मिनट, २५००० मील।

० **टीटोव** (रूस)—६-७ अगस्त सन् १९६१, ग्रह-पथ में सत्रह चक्कर, पच्चीस घंटा, १८ मिनट, ४,३७,००० मील।

० **गोर्डन कूपर** (अमेरिका)—१६ मई, सन् १९६३, २२ चक्कर. ३४ घंटा, १३ मिनट।

० **बालेरी बायकोवस्की** (रूस)—१४-१९ जून, सन् १९६३, ८२ चक्कर, ११९ घंटा, २०,६०,००० मील।

० **वालेंटीना तेरेस्कोवा** (स्त्री रूस)—१६-१९ जून सन् १९६३, ४९ चक्कर, ७१ घण्टा, १२,५०,००० मील'

० **ब्लादीमीर कोमारोव, कांस्टैण्टिन फिओक्टिस्टोव और कोमारोव** (प्रथम रूसी सामूहिक उड़ान)—१२ अक्टूबर, सन् १९६४, १६ चक्कर।

० **अलेक्सी लियोनोव, पावेल बेलायेव** (रूस)—१८ मार्च, सन् १९६५, पहली बार २० मिनट तक अन्तरिक्ष में विचरण।

० **फ्रैंक बोरमेन**, **जेम्स लोवेल** (अमेरिका)—८ दिसम्बर, सन् १९६५, जेमिनी-७ में दो सप्ताह की अन्तरिक्ष यात्रा।

० **वर्जिल, ग्रिसिम, एडवर्ड ह्वाइट व रोजर चेफी** (अमेरिका) –२९ जनवरी सन् १९६७ को अपोलोयान में आग लगने से मरे।

० **कर्नल ब्लादीमीर कोमारोव** (रूस)—२५ अप्रैल, सन् १९६७, सोयूज-१ पृथ्वी की ओर लौटते समय टकरा गया कोमारोव मारे गए।

० **वाल्टर इस्किरा, डोन इस्ले और वाल्टर कनिंघम** (अमेरिका)—अपोलो-७

में ११ अक्टूबर सन् १९६८ को ११ दिनों तक यात्रा की। पहला अमेरिकी अन्तरिक्ष-अभियान, जिसमें तीन यात्रियों ने भाग लिया।

० **ज्यार्जी बेरेगोवोय** (रूस)—क्रमशः २५ और २६ अक्टूबर सन् १९६८ को सोयूज-२ व ३ छोड़े गए। दोनों यानों की अन्तरिक्ष में भेंट हुई तथा सोयूज ३ से बाहर निकलकर ज्यार्जी बेरेगोवोय देर तक घूमे तथा ३० अक्टूबर को ४ दिनों की यात्रा के बाद धरती पर लौटे।

० **नील आर्मस्ट्रांग, एडविन एलड्रिन और माइकेल कॉलिस** (अमेरिका)—२१ जुलाई सन १९६९ की अपोलो-११ चन्द्रमा पर प्रशांत महासागर में उतरा। आर्मस्टांग व एलड्रिन चन्द्र-धरातल पर चले। ये १६ जुलाई को चले थे, २१ जुलाई को पहुँचे, २ घण्टा ४० मिनट वहां ठहरे और २४ जुलाई को पृथ्वी पर लौट आए। इस चन्द्रयात्रा पर १८९ अरब रुपये खर्च हुए।

० **एलनशेपर्ड, एडगर मिशेल और स्टुअर्ट ए रूसा** (अमेरिका)—५ फरवरी, सन् १९७१ को चन्द्रमा पर उतरे और नौ घण्टा तक भ्रमण किया। स्टुअर्ट एरूसा मुख्य यान में बैठा रहा। ९ फरवरी को चन्द्र-यात्रियों ने ह्यूस्टन-स्थित अनुसंधान केन्द्र के माध्यम से पत्रकार-सम्मेलन किया। अन्तरिक्ष यात्री चन्द्र-रिक्शा चन्द्रमा पर छोड़ आए। ये ३१ जनवरी को चले थे।

—**भारत ज्ञानकोष, सन्** १९७१-७२ **तथा सामान्य ज्ञान एवं**
—**व्यक्तिपरिचय सन्** १९७२

२ **स्काईलेब**—यह १४ मई, १९७३ में अमरीका द्वारा भेजा गया विशाल-अन्तरिक्षयान ८८ टन का है, ४ जनवरी १९७४ तक अनुसन्धान केन्द्र के रूप में यह पृथ्वीकक्ष में रहेगा। इसमें तीन आदमी आनन्द से सो सकते हैं। स्नानघर-रसोईघर आदि भी हैं। २१ देशों के २०२ अनुसन्धानकर्त्ता इसके द्वारा संगृहीत सामग्री का विश्लेषण करेंगे।

—**राष्ट्रदूत**, ३ **जून** १९७३

३ **पायनियर ११ और १०**

(क) केपकैनेडी, (फ्लोरिडा), ७ अप्रैल (यू० प्रे०) सौर-मण्डल के सबसे

बड़े ग्रह बृहस्पति के बारे में वैज्ञानिक जानकारी एकत्र करने के लिए कल रात अमरीका का दूसरा अन्तरिक्ष यान पायनियर-११ रवाना हो गया है।

२५८ किलोग्राम वजनी यह अंतरिक्ष यान पृथ्वी से इतनी तीव्रतम गति से रवाना हुआ कि केवल ११ घंटे में ही चन्द्रमा की कक्षा को पार कर गया। सूर्य-मण्डल से बाहर स्थित पांचवें ग्रह बृहस्पति तक पहुँचने के लिए उसे ९९ करोड़ ८० लाख किलोमीटर की यात्रा करने में २० महीने का समय लगेगा।

ए. प्रे. के अनुसार अमरीका के इस नवीनतम खोजी अंतरिक्षयान को गत बृहस्पतिवार की रात को एटलस-सेन्टौर राकेट से छोड़ा गया था। यान ४८,७६० कि. मी. प्रति घंटे की तीव्रतम गति से रवाना हुआ था। किसी भी मानवनिर्मित यान के लिए यह एक रिकार्ड-गति है।

अमेरिका ने गत वर्ष भी बृहस्पति के लिए एक अंतरिक्षयान पायनियर-१० भेजा था, जो अब तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है।

—हिन्दुस्तान, ८ अप्रैल, १९७३

(ख) पायनियर-१० बृहस्पति ग्रह के समीप से निकला—माउन्टेन व्यु (केलीफोर्निया) ४ दिसम्बर, अत्यन्त प्रखर वेग से बढ़ता हुआ प्रथम मानव-निर्मित अंतरिक्षयान पायनियर-१० सौरमण्डल के विशालतम ग्रह बृहस्पति की निकटतम दूरी—उसके एक मेघाच्छादित शिखर पर आज भारतीय समयानुसार प्रातः ७·५५ बजे पहुंच गया। पृथ्वी से लगभग १ अरब किलोमीटर दूर होने के कारण पायनियर-१० के लक्ष्य के समीप पहुंचने का रेडियो-संदेश प्राप्त होने और उसकी पुष्टि होने में वैज्ञानिकों को ४६ मिनट तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

……बृहस्पति की अत्यन्त सशक्त गुरुत्वाकर्षण-शक्ति के कारण अणुशक्ति चालित अंतरिक्षयान की गति बढ़कर एक बार तो १,३१,२०० कि. मी. तक पहुंच गई थी। ……पायनियर १० को अपने लक्ष्य तक पहुंचने में २१ मास लगे हैं।

पायनियर १० ने बृहस्पति के पिछले हिस्से में पहुंचकर हजारों सूचनाएँ और विवरण पृथ्वी पर भेजे हैं, जिनका विश्लेषण करने में अभी वैज्ञा-

निकों को महीनों लगेंगे। इन सूचनाओं के फलस्वरूप सौर-प्रणाली के निर्माण एवं पृथ्वी के जन्म के विषय में जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

बृहस्पति के समीप से निकलकर पायनियर १० उसके गुरुत्वाकर्षण को 'आधार बनाकर' गहन-अन्तरिक्ष में अन्य ग्रहों—शनि, यूरेनस, नेप्चून व प्लूटो की ओर बढ़ गया है। वह सन् १९८० ई० में सौरमंडल की बाह्य-तम परिधि में स्थित प्लूटो पर पहुंच जाएगा और उसके बाद सौर-प्रणाली से निकल कर गहन बाह्य अंतरिक्ष में ८० लाख प्रकाश वर्ष दूर स्थित वृष राशि की ओर बढ़ जायेगा।

—हिन्दुस्तान, ६ दिसम्बर, १९७३

१८ आश्चर्यजनक अन्य कई वस्तुएँ

१ **आंखों का अस्पताल**—गलियों-बाजारों को चौड़ा करने के लिए साधारण इमारतें तो गिरा दी जाती हैं किन्तु वे महत्वपूर्ण हों तो नींव के नीचे खुदाई करके उन्हें पहियों पर हटा लिया जाता है। हाल ही में एक आँखों का अस्पताल इतनी चतुराई से हटाया गया कि हटाते समय डाक्टरों को अपना काम भी नहीं रोकना पड़ा।

—अध्ययन के आधार पर

२ **मैसिक स्टोर**—(न्यूयार्क) में १७६ महकमे हैं। जगत् की हर एक चीज वहाँ मिलती है। इसमें सामान्यतया ग्यारह हजार एवं नवम्बर-दिसम्बर (सीजन के समय) इक्कीस हजार आदमी काम करते हैं। ग्राहक की शिकायत पर चीजों की कीमत घटा दी जाती है। उस स्टोर का यह दावा है कि यहां से कम कीमत में कोई चीज शहर में कहीं नहीं मिल सकती।

वहां ग्राहकों को सामान रखने के लिए पेटियां रखी हुई हैं। उनमें चौबीस घंटा के किराए के निश्चित दाम डालते ही चाबी बाहर आ जाती है। सामान रखकर बन्द करने पर चाबी घूमने लगती है। २४ घण्टे से एक मिनट ऊपर होते ही चाबी अन्दर चली जाती है। फिर किराये के पैसे दुबारा डालने पर ही चाबी बाहर आती है।

—विशनदयाल गोयल से प्राप्त

३ कलकत्ता के बिड़ला—म्यूजियम में पहुंचते ही द्वार अपने आप ही खुल जाते हैं। कमरे में कुर्सी पर बैठते ही पंखे चल पड़ते हैं एवं घंटी बजने लगती है। मेहमान के जाने पर पंखे एवं द्वार अपने आप बन्द हो जाते हैं।

—श्रुति के आधार पर

४ **डिब्बाबन्द हवाईजहाज**—एक विशेष प्रकार के नायलोन से बना यह विमान सामान्य विमानों में रखा जा सकता है। दुर्घटना के समय इसे हवाई छतरी से बाहर कर दीजिये। सहायतापेक्षी चालक को इसे खोल व फुला-फैलाकर उड़ान करने योग्य बनाने में कुल ६ मिनट का समय लगता है। यह विमान ६० मील प्रति घंटा की रफ्तार में पांच घंटे तक उड़ान भर सकता है। इस पर खर्च आता है कुल २० गैलन पैट्रोल। कीमत पन्द्रह हजार डालर। पैट्रोल तथा इंजिन से साथ यह हवाई जहाज सात फुट लम्बे कनस्तर में आसानी से रखा जा सकता है। ओहायो (अमेरिका) की गुडईयर एरोस्पेस कार्पोरेशन ने इसका निर्माण किया है और नाम है "इम्फ्लेटोबर्ड"।

—नवनीत, जनवरी, १९७२

५ **मोमबत्ती**—'द मुगल एम्परर्स' में श्री एडवर्ड एस०-हाल्डन ने लिखा है—एक बार बादशाह जहांगीर ने एक मोमबत्ती मक्का शरीफ भेजी थी, वह पूरी अम्बर की बत्ती थी, उसका वजन १८ रत्तल था और पूरी मोमबत्ती रत्नों से जड़ी थी। उन रत्नों में गोलकुण्डा से प्राप्त वह हीरा था जिसका मूल्य ७५ हजार डालर अर्थात् ३ लाख ७५ हजार रुपये था।

—नवनीत, दिसम्बर, १९५६

६ **कमाल का कुंआ**—नोखा तहसील (राजस्थान) के मूंगासर गांव में सात-सौ सत्तहतर फुट गहरा कुआँ है जिसमें चार ऊंट लगते हैं।

—श्रुति के आधार पर

७ **बेनिस नगर की अनोखी स्थिति**—यह नगर छोटे-छोटे टापुओं पर बसा हुआ है, जो ३७८ पुलों से जड़ा हुआ है।

—विश्वदर्पण-पृष्ठ ३८

८ **अजब विष और अमृत**—शत्रुओं का नाश करने के लिए एक राजा ने जहर एकत्रित किया। एक वैद्य चने की दाल जितना विष लेकर आया और उसकी उग्रता दिखाने के लिए हाथी का एक बाल तोड़कर विष का स्पर्श करके इसे पुनः हाथी के शरीर पर लगाया और उसी समय हाथी मूर्छित होकर गिर पड़ा। फिर एक बाल से अमृत का स्पर्श करके लगाते ही हाथी सचेत हो गया। **—व्याख्यान के मसालों से**

९ **अजीब तराजू**—कुछ तराजुएँ बड़ी नाजुक होती हैं। यदि कागज के एक टुकड़े को ऐसी तराजू में रखकर तोला जाय और फिर उस कागज पर एक शब्द लिखकर कागज को फिर तोला जाय तो उस एक शब्द की स्याही के कारण बढ़ा हुआ वजन मालूम किया जा सकता है।

—**विश्वकोष भाग ५, पृष्ठ ५३**

१० यूनान की एक २००० वर्ष पुरानी रंगशाला आज भी ऐसी है कि वक्ता मंच से अपनी आवाज ऊँची किए बिना १५,००० सीटों तक पहुंचा सकता है। देखिए चित्र—

—**साप्ताहिक हिन्दुस्तान मार्च ४, १९५९**

११ **अद्‌भुत यंत्र**—जगदीशचंद्र वसु ने **स्कोग्राफ** यंत्र बनाया, जिससे वनस्पति की गति-वृद्धि करोड़ गुनी बड़ी होकर दीखती थी।

—**विश्वकोष भाग ७, पृष्ठ ७८**

१२ **लंबे बाल**—दुनिया में सबसे ज्यादा लंबे बाल रखने का गौरव भी एक भारतीय संन्यासी को प्राप्त है। १९४९ में **स्वामी पंडारा सन्नाधि** के २६ फुट लंबे बाल थे। सबसे लम्बी दाढ़ी नार्वे के **हेन्स एन० लेंग्सेथ** की मानी गई है। उनकी दाढ़ी साढ़े सत्रह फुट लम्बी थी। मूँछें भारत की ही ऊंची रहीं। १९०८ में प्रतापगढ़ में जन्मे **मसुरियादीन** की मूँछें १९६२ में ८ फुट ६ इंच लंबी थी।

० १२-१२, १३-१३ **अंगुलियाँ**—एक विचित्र व्यक्ति के दोनों हाथों में १३-१३, तथा पैरों में १२-१२ अंगुलियां थीं।

—**साप्ताहिक हिन्दुस्तान, २ जुलाई, १९७२**

१३ **सुन्दर होठ**—मध्यवर्ती अफ्रीका की **सारस जिंगी** जाति की युवती के होठ विशेष विधि से बड़े किए जाते हैं। चार वर्ष की आयु की लड़की का भावी पति अपनी अबोध पत्नी के ऊपर-नीचे के दोनों होठों में चाकू छेदकर उनमें लकड़ी पिरो देता है। आयुवृद्धि के साथ-साथ लकड़ी भी बडी कर दी जाती है। पूर्ण युवती होने तक होठ खूब बड़े हो जाते हैं।

—मानो न मानो, पृष्ठ ३७

१४ **ऊँचा टोप**—बवेरिया (जर्मनी) के ग्रामों में कृषक त्यौहारों के दिन विचित्र टोप पहनते हैं। इस टोप पर मृत पक्षियों और अन्य जंतुओं की प्रदर्शनी की अपनी निराली ही छटा होती है। जितना ऊँचा जिसका टोप और जितनी भयावह उस टोप की आकृति, उतनी ही बड़ी उसकी सफलता भी। ऐसे टोपों पर पारितोषिक भी दिया जाता है।

—मानो न मानो, पृष्ठ ६६

१५ **पैट्रोल से आग बुझाई जाती है**—पैट्रोल और मिट्टी का तेल बहुधा जलती हुई रुई की गांठों को बुझाने के काम आते हैं, क्योंकि पानी बेकार सिद्ध होता है। वह गांठों के भीतर घुस नहीं पाता। पैट्रोल और मिट्टी का तेल जलने के स्थान में तुरन्त पहुंच जाते हैं। आक्सीजन के अभाव के कारण बिना स्वयं जले हुए प्रचण्ड अग्नि को बुझा देते हैं।

—मानो न मानो, पृष्ठ १३६

१६ **आश्चर्यजनक हिसाब**—सास दामाद में कुछ रुपये मांग रही थी। बहुत वर्षों के बाद एक बार पुत्री और दामाद का एक साथ आना हो गया। सास ने दामाद से रुपयों की चर्चा की और ब्याज भी मांगा। दामाद की हालत नाजुक थी, वह उदास हो गया। लड़की ने भेद पाकर पिताजी से सुपारी ला देने का आग्रह किया। पिता ने सहज भाव से कह दिया, जितनी जरूरत हो कह देना, मैं ला दूंगा। मौका पाकर बेटी ने कहा—

चार सुपारी चौगणी, सोलह बार गुणाय।
बाबल ! बेटी लाड़ली, गिण-गिण पल्ले पाय॥

सोलह सुपारियों को सोलह बार चार गुणा करने से सोलह खरब सतरह

अरब, सतरह करोड़, अठानवें लाख, उनहत्तर हजार, एक-सौ चौरासी सुपारियां होती हैं। ज्योंही यह हिसाब सामने आया, सास-ससुर चुप हो गए।

१७ **जीवनभर का लेखा-जोखा**—एक मांसाहारी मनुष्य ७० वर्ष की आयु तक कौन-सा पदार्थ किस परिमाण में खा-पी लेता है—यह निम्नलिखित तालिका से प्रकट है।

	टन		टन
अण्डे	३	कहवा	$\frac{1}{4}$
रोटी	६	अन्य शाक	४$\frac{1}{2}$
मास	६	फल	२$\frac{1}{2}$
दूध	६	मसाले	$\frac{3}{4}$
शराब	८	शक्कर	१$\frac{1}{2}$
मक्खन	१$\frac{1}{2}$	नमक	$\frac{1}{8}$
आचार	१	अन्य पदार्थ जिनमें	
जल	२७	मिठाइयाँ भी हैं।	१$\frac{1}{4}$
चाय	$\frac{1}{2}$		
		कुल	७० टन

अतिरिक्त वस्तुएँ, जिन्हें वह काम में लाता है—६५० दियासलाई के बक्स, २ लाख सिगरेट, २४० दर्ज़न उस्तरे और लगभग ४ मन तौल के जूते।

—**मानो न मानो, पृष्ठ ८२**

१८ **आकाश लेख**—आज-कल कुछ पश्चिमी देशों में आकाश में भी लिखाई होने लगी है। हवाई जहाज काफ़ी ऊँचाई पर उड़ता हुआ सफेद धुएं की एक धार छोड़ता जाता है, जिससे कुछ देर में कोई अक्षर बन जाता है। यह विज्ञापन का एक सबसे नया और प्रभावशाली तरीका है। इसे **स्काई राईटिंग** कहते हैं। इस प्रकार के एक संदेश के लिए कई हजार रुपये खर्च करने पड़ते हैं।

प्रत्येक अक्षर कोई एक मील लम्बा होता है। आकाश में लंबे संदेश नहीं लिखे जा सकते। हवा लगभग १० मिनट में अक्षर को मिटा देती है।

अंग्रेजी के कुछ अक्षर ऐसे हैं, जो सीधे, उल्टे हर तरह से पढ़े जा सकते हैं। जैसे O और X। कुछ अक्षरों के लिखने में कठिनाई होती है। जैसे K और S।

आकाश लेख के लिए अब ज्यादातर दो हवाई **जहाज** इस्तेमाल किए जाते हैं, जो एक साथ काम करते हैं। अगर एक **T** की ऊपर की लाइन बनाता है तो दूसरा नीचे की। दोनों लाइनें एक-दूसरे को छूती नहीं हैं। इनमें कोई ५० फुट का अन्तर होता है, पर वे नीचे की जमीन पर से मिली हुई नजर आती है।

सबसे पहला आकाश लेख ३० मई १९२२ को इंग्लैंड में लन्दन के निकट लिखा गया था और वह एक अंग्रेजी समाचार पत्र का नाम **डेलीमेल** था।

—विश्वकोष भाग ५, पृष्ठ ६

१९ **कलकत्ता १३०० रु० बिका**—९ नवम्बर १६९८ को कलकत्ता की भूमि १३०० रु० में बेची गई। जहां आज कलककत्ता की विशाल नगरी है, वहाँ उस समय कालीघाट, गोविन्दपुर और सुतनती—ये तीन गाँव थे। इन गांवों पर **स्वर्णाराम** चौधरी को जमीदार के अधिकार प्राप्त थे। कलकत्ता को बेचने वालों के वंशज आज भी बारीशा (उपनगर) में रहते हैं।

कलकत्ता बसाने वाले अंग्रेज "**जाब चैर्नोक**" ने मनोहरसिंह के साथ कलकत्ता के सौदे पर बातचीत की थी।

—हिन्दीमिलाप, १५ नवम्बर, १९७०

२० **तूफान में आदमी उड़ा**—पाली जिले के लखनगढ़ गांव में आँधी के तूफान में तिमंजले मकान की छत पर से सेठ की चद्दर समेटता हुआ एक आदमी उड़ गया एवं दो फर्लाङ्ग की दूर पर गिर कर मर गया।

— हिन्दुस्तान, २६ जून, १९६३

२१ **मस्तक के छेद द्वारा सिगरेट पीना**—एक सिपाही का नाम **फ्रेंक ब्राउन** है। इसके मस्तक में एक बार एक छेद हो गया। वह इस छेद से ही मुख के स्थान में सिगरेट पीने लगा। **—मानो न मानो, पृष्ठ ११४**

२२ **सांप के मुख से खून**—नौगांव-बांगला देश, २५ जून (ई० एन० ए०) सात फुट लम्बा जहरीला सांप एक ८ माह के बालक पर दो घंटे कुंडली मार कर बैठने के बाद, उसे जीवित छोड़कर चला गया एवं कुछ देर बाद वह सांप मर गया ।

दंतकथा जैसी यह घटना यहां से ४ किलोमीटर दूर **चक्र-परिसद** गांव में एक किसान के घर घटी ।

बालक के चारों तरफ भयभीत लोगों के रहते हुये भी सांप अपनी फन की छाया उस बालक के सिर पर किये रहा । इसके बाद सांप स्वयं ही बालक को सही सलामत छोड़कर वहां से हट गया । हटते ही सांप के मुंह से खून निकलने लगा और वह मर गया ।

—**राजस्थान पत्रिका**, २६ जून, १९७३

१६ कतिपय अद्‌भुत व्यक्ति

१ **दलाईलामा**—तिब्बत प्रदेश के पुरोहित और शासक को **दलाई-लामा** कहते हैं। इस शब्द का अर्थ है 'महा-समुद्र' अर्थात् जिसके पास सर्वाधिक ज्ञान और शक्ति हो, वह उत्तम व्यक्ति **अवलौकिता** देवी का अवतार होता है, ऐसा लामों का विश्वास है। दलाई-लामा का का चुनाव विचित्र ढंग से होता है। उसकी खोज की जाती हे। दलाई-लामा के देहान्त के समय देश भर में जो भी बालक पैदा होते हैं, उनकी विभिन्न प्रकार से परीक्षा की जाती है। जिस बालक में दलाई-लामा के पद के योग्य सर्वाधिक गुण अथवा लक्षण पाये जाते हैं, उसी को वह पद मिल जाता है। एक विशेष परीक्षा में दिवंगत दलाई-लामा की कोई वस्तु अनेक वस्तुओं के साथ मिलाकर रखी जाती है। जो बालक उस वस्तु को चुन लेता है, उसी को दलाई-लामा बना दिया जाता है।

१९३३ में दलाई-लामा की मत्यु हुई थी। खोजते-खोजते १९३९ में एक बालक मिला, जो उस सर्वोच्च पद के योग्य है। बालक को बहुत बुद्धिमान बताया जाता है।

दलाई-लामा की राजधानी **पोटाला** में है। यहां पर अनेक भव्य प्रासाद बने हुए हैं। परलोकगत दलाई-लामा की समाधि भी यहीं है। इस समाधि में अतुल धनराशि भरी हुई है।

—मानो न मानो

२ **संसार का सबसे ज्यादा वजनी आदमी**—अमेरिका के मान्टिसेलो में ४ जून, १९२६ को जन्मे **राबर्ट अर्ल ह्यूजस** का वजन जन्म के समय

ग्यारह पौण्ड का था। छह वर्ष की उम्र में उनका वजन साढ़ चौदह 'स्टोन' हो गया था[1]। छह फुट आधा इंच लंबे राबर्ट का वजन १९५८ में मृत्यु के समय १०४१ पौंड था। एक बड़े पियानो में हेर-फेर कर इनके लिए ताबूत बनाया गया और उस ताबूत को उठाया एक क्रेन ने। देखिए चित्र—

—**साप्ताहिक हिन्दुस्तान,**
जुलाई १, १९७२

अर्ल ह्य जस

३ **तीस वर्ष से अन्न-जल न लेने वाली रूपकुंवर बाईसा**—जोधपुर से जयपुर जाते हुए जोधपुर से ३२ मील दूर, **बाला** ग्राम में ६८ वर्षीय भक्त महिला श्रीमती रूपकुंवर बाईसा पिछले तीस वर्षों से बिना अन्न-जल ग्रहण किये अपना नित्यकार्य करती चली आ रही है। लोग उनको **दाता, महाराजा** या **सतीमाता** के नाम से पुकारते हैं।

जनसंघ के नेता श्री भैरोंसिंह शेखावत उनकी वंश-परंपरा के समीप हैं। उनके अनुसार रूपकुंवर बाईसा का जन्म पीपाड़ शहर से आठ मील दूर ग्राम रावणियाणा के ठाकुर लालसिंह शेखावत के यहाँ भाद्रपद शुक्ला अष्टमी संवत् १९६० विक्रमी (सन् १९०३ की जमाष्टमी) को हुआ था। संवत् १९७० वि० में उनका विवाह बाला ग्राम के **जुझारसिंह** के साथ हुआ।

विवाह के ठीक पन्द्रह दिन बाद ही अकस्मात् बाईसा के पतिदेव दिवंगत हो गये। बाईसा ने अपने पति के साथ सती होने की इच्छा प्रकट की

---

१ १४ पौंड का एक स्टोन होता है।

किन्तु परिवार वालों ने उनका मनोरथ पूरा नहीं होने दिया। उसी दिन से बाईसा ने संकल्पपूर्वक एक समय के भोजन का परित्याग कर दिया। ……निस्संतान होने के कारण पति के ज्येष्ठ भाई जालिमसिंह के पुत्र मानसिंह को उनका दत्तक पुत्र बनाया गया। लेकिन माघ शुक्ला ११ संवत् १९९९ (सन् १९४२) को दुर्भाग्य ने पुनः अपना रूप दिखाया और २३ वर्ष के उस युवक को मृत्यु निगल गई। दारुण दुःख के कारण पति और पुत्र से विहीन महिला ने फिर सती होना चाहा, किन्तु परिवार वालों ने फिर मना कर दिया। पहले उन्होंने अनुनय-विनय की, फिर अपने हठ पर अड़ गईं। तब परिवार वालों ने उनको एक कमरे में बंद कर दिया। उस दिन निर्जला एकादशी थी। कई दिनों तक वे बंद कमरे में घुटती रहीं, सिसकती रहीं। भोजन का तो प्रश्न ही कहाँ था, पानी की एक बूंद भी नहीं ली।

रूपकुंवर बाईसा

वह दिन और आज का दिन, बाईसा ने तब से अब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं किया है। बिना अन्न-जल के भी उनका जीवनक्रम नियमित है, न कोई रोग, न कोई व्याधि, न कोई अन्य शिकायत। जगत की मंगल-कामना ही उनका साध्य है। ……उनका एक ही उपदेश है—भाया! भगवान् राम को नाम लेवो। वो ही शक्ति देगो, बुद्धि देगो, चित्त निर्मल करेगो!

उनके कमरे में एक पटिया पर माला, एक चित्र और कुछ पुस्तकें, एक चटाई, एक मयूर-पंखी एव पंखा—बस, यह उनका सामान है। (देखिये चित्र……)

—हिन्दुस्तान, १८ दिसम्बर, १९७२

४ **चार सौ टन सोने के मालिक**—अर्जेण्टाईना (दक्षिण अमरीका) के वर्तमान राष्ट्रपति **जुआन पेरो** के पास चार-सौ टन सोना है, जो वर्तमान [४००) रु० प्रति तोला] भाव से चौदह अरब, दस करोड़, चालीस लाख रुपयों का होता है। राष्ट्रपति इस सोने को बेचना चाहते हैं। बेचने का.......... काम उन्होंने इटली के वित्तमंत्रालय के इंस्पेक्टर जनरल प्रोफेसर **विसेंजो दे नार्दो** को सौंपा है।

दुनिया की सबसे बड़ी सोनामंडियों में गिनी जाने वाली **ज्यूरिख** की सोनामंडी में सप्ताह भर में पन्द्रह से साठ टन सोने का कारोबार होता है। कहते हैं कि पूरा-का-पूरा चार-सौ टन सोना एक साथ खुले बाजार में आ जाये तो सोने का भाव ११० डालर (करीब ८०० रुपये) प्रति औंस से घटकर ४६ डालर (करीब ३७५ रुपये) प्रति औंस पर आ जाये।

उधर स्विट्जरलैंड की पुलिस ने इस सोने की वैधता को लेकर तहकीकात की, तो रोम से इस स्वर्णभंडार के मुख्य विक्रेता विसेंजो दे नार्दो ने बयान दिया कि यह सोना कानूनी है। सौदा होते ही सारा सोना, उसकी वैधता और खरेपन के प्रमाणपत्रों के साथ खरीददारों को सौंप दिया जायेगा।

—धर्मयुग, १४ अक्टूबर, १९७३ **के आधार से**

५ **बोलनेवाली तीन महीने की बालिका**—डीडवाना-पंचायत समिति के खाखोली ग्राम में एक तीन माह की बच्ची अभी से बोलने लगी है। खाखोली ग्राम में खाती परिवार की उक्त बच्ची प्रतिदिन तीन बार बोलती है तथा जब भी बोलती है तब आओ-जाओ बोलती है।

— **राजस्थान पत्रिका**, २२ **जुलाई**, १९७३

६ **विचित्र जुड़वां बालक**—कोटा (नि० स०) गत सप्ताह स्थानीय महिला-चिकित्सालय रायपुरा में छावनी (कोटा) की ३० वर्षीय मुस्लिम युवती **कनीज** पत्नी अजीजुर रहमान ने एक विचित्र बालक को जन्म दिया,

जिसके दो सिर, दो नाक, चार आंखे, चार कान, एवं दो मुंह थे। एक मुंह के दांत भी निकले हुए थे।

घटनाक्रम के अनुसार गत ९ फरवरी को जब उक्त युवती को प्रसव-वेदना हुई तथा घर पर बच्चा नहीं हुआ तो उसे स्थानीय रायपुरा स्थित महिला चिकित्सालय में लाया गया जहां उक्त चिकित्सालय की इंचार्ज डा० श्रीमती पी० के० जैन ने बड़ी कुशलता से आपरेशन कर बच्चे को बाहर निकाला। बच्चा मरी हुई अवस्था में था। देखिये चित्र

—अमर उजाला, दैनिक (आगरा), १३ फरवरी, १९७३

शकुन

१ किसी विशेष कार्य के आरम्भ में दिखाई देनेवाले शुभ या अशुभ लक्षण को शकुन कहते हैं।

—नालंदा-विशाल शब्दसागर, पृष्ठ १३१६

२ गौन समें जो अपशकुन, ते आवत सुखदाय।
गौन समें जो शुभशकुन, पुर पैठत दुखदाय ॥१॥
शकुन शुभाशुभ जानि, निकट होहि तो निकट फल।
दूर सों दूर बखान, कहै **भड्डली सहदेव** जू ॥२॥

—**शकुनावली**

३ **अशुभ शकुन—**

(क) अङ्गार-भस्मेन्धन-रज्जु-पङ्क-पिण्याक-कर्पास-तुषास्थि-केशाः।
कृष्णा-यवाऽवस्कर-कृष्णधान्य-पाषाण-विष्ठा-भुजगौषधानि ॥१॥
तैलं गडू-चर्म-वशाविभिन्नं, रिक्तं च भाण्डं लवणं तृणं च।
तक्रार्गला-शृङ्खल-वृष्टि-वाताः,कार्ये क्वचित् त्रिंशदिमे न शस्ताः ॥२॥

—**शकुनशास्त्र**

(१) अङ्गार, (२) राख, (३) लकड़ियां, (४) रस्सी, (५) कर्दम (कीचड़), (६) खल, (७) कपास, (८) तुष, (९) हड्डी, (१०) केश, (११) कृष्णा, (१२) यवधान्य, (१३) कूड़ा-करकट, (१४) काला धान्य (तिल माष आदि), (१५) पत्थर, (१६) विष्ठा, (१७) सर्प, (१८) औषधि, (१९) तेल, (२०) गड़ (गिलोय), (२१) चर्म, (२२) चर्बी, (२३) खाली पात्र, (२४) लवण, (२५) तृण, (२६) छाछ, (२७) अर्गला, (२८) शृङ्खला, (२९) वृष्टि (बिना ऋतु की), (३०) प्रतिकूल वायु—ये ३० प्रस्थानादि कार्य में शुभ नहीं माने जाते।

(ख) स्वपादयानस्खलनं दशानां, सङ्गः क्वचिद् यानपलायनं च ।
द्वाराभिघातोध्वजवस्त्रपातः,प्रस्थानविघ्नं कथयन्ति यातुः ॥१॥
मार्जारयुद्धारवदर्शनानि कलिः कुटुम्बस्य परस्परस्य ।
चित्तस्य कालुष्यकरं च सर्वं, गन्तुः प्रयाण-प्रतिषेधनाय ॥२॥
भूरयः खग-मृगाः समाकुला, स्तुल्यकालविहितारवाश्चये ।
ते भवन्ति परदेशयायिनां, देहिनां मरणकारिणो ध्रुवम् ॥३॥

—शकुनशास्त्र

अपने पैरों या सवारी का स्खलन होना, दस व्यक्तियों का साथ होना, सवारी (घोड़ा आदि) का भाग जाना, ध्वजरूप वस्त्र आदि का पतन होना (जैसे वणिक की पगड़ी, क्षत्रिय की तलवार, साधु के रजोहरण आदि का गिर जाना) उक्त कार्य यात्री के प्रस्थान में विघ्न का संकेत करने वाले हैं ।

बिल्लियों का युद्ध, शब्द एवं उनका दर्शन, कुटुम्ब का आपसी कलह और मन को कलुषित करने वाले सभी कार्य—ये यात्री के प्रयाण में प्रतिषेधक हैं ॥२॥

बहुत के खग-मृगों का एक साथ संत्रस्त होना एवं एक ही समय में चिल्लाना, परदेशगामी - यात्रियों के लिए निश्चित रूप से मरण का कारण होता है ॥३॥

२१ शुभाशुभ शकुन

१ शुभ— —शकुनावली के अनुसार

लिए सुहागनि सुमन उछंगा, कै घट भरे होहि जल गंगा[१] ।
या विधि मिलै आवती आगे, मनहु मनोरथ सोवत जागे ॥१॥
सनमुख धेनु पियावत बाछा, इहि तै शगुन कहहु का आछा ।
दधि मछली आगे जो आवै, इन शगुनन को कोउ न पावै ॥२॥
पोथी लिये विप्र दो मिलई, तौ कारज भयो जान हु दिलई ॥३॥

० अशुभ—

इक बकरो पुनि इक वृषभ, पाँच भैंस षट स्वान ।
तीन धेनु गज सात तजि, करहि निषेध प्रयान ॥१॥
रासभ-महिषी नर चढ़्यो, मिले लरत मंजार ।
स्वान-महिष-मानव लरै, येऊ अशुभ विचार ॥२॥
एक शूद्र दो वैश्य असार, तीन विप्र अरु क्षत्री चार ।
नव नारी जो सम्मुख आवै, तो मति चलियो शगुन बतावै ॥३॥

२ श्वान को शकुन (शुभ)—

दक्षिण पग तैं स्वान, दक्षिण अंग खुजावई ।
नैन कूख कर कान, रिद्धि-वृद्धि-जय-सुख करै ॥१॥
स्वान दाहिने पांवतैं, खनै खाज निज शीश ।
राज्यलाभ अरु उदरसुख, कंठ-गुदा-धन दीस ॥२॥

---

१ आगे थाके पाछे भालो, जोदि डाके माय ।
भोरा थाके खाली भालो, जोदि भोरते जाय ॥

—बंगला कहावत

हृदयकंध आदर अधिक, नाक महासुखकार ।
पीठ सुवाहन लाभ है, ठोड़ी सुयश अपार ।।३।।

० **अशुभ**—

जो इन अंगन स्वान, खनै खाज पग वाम सों ।
तो फल अशुभ बखान, काज न कीजै अपशकुन ।।१।।
गमन समै जो स्वान निज, फर-फरायदे कान ।
महा अशुभफल काज को, शकुनशास्त्र परमान ।।२।।
स्वान धुनै जो अंग, अथवा लौटे भूमि पर ।
तो निज कारज भंग, अति ही अशगुन जानिये ।।३।।

३ **स्वान एवं शृगाल आदि के शकुन** (शुभ)—

डावो कुत्तो, डावो श्याल, डावो खर भूंकै असराल ।
डावो धूघू घम-घम करै, तो, लंकारो राज्य विभीषण करै ।।१।।

० **शुभाशुभ**

बायें गीदड़ शबदतें, मनबंछित पावंत ।
आगे दहिने पीठ पै, महाअशुभ दरसंत ।।२।।

० **अशुभ**—

बायां भला न दाहिना, रोगी रीक्ष सुनार ।
चहुँ दिशि बोलै गीदरी, निशि में अशुभ विचार ।।३।।

४ **मृग के शकुन** (शुभ)—

मृग बायें तैं दाहिने, आवै जो तत्काल ।
लक्ष्मी की प्राप्ति करै, चलते प्रातःकाल ।।१।।
दाहिने तैं बायें हिरण आवै जो सुउताल ।
तो ततछिन ही सुख लहै, चलते संध्याकाल ।।२।।
मृगमाला कहुँ दाहिने, ह्वै करि कढ़ै तुरन्त ।
धन-गन-भूमि बहु मिलै, आदर करै महंत ।।३।।

० कुंभ करेवो कोचरी, हनुमत नें हिरणां ।
एता लीजै जीमणां दिन ऊग्यां निरणां ॥४॥

५ **शशक के शकुन** (शुभाशुभ)—

जो बोले बांये ससा, मीठे सुर सुप्रसन्न ।
तो सब शुभ फल जानिये, प्राप्त करै घर अन्न ॥१॥
भयकारी है सस्सा दहिने, आगे बोलत रोगहि हने ।
दरशनिषेध निपट निरधारै, ऐसे प्राणी शगुन विचारै ॥२॥

६ **काक के शकुन** (शुभ)—

गमन समै जो दाहिने, देखि परै कहुँ काक ।
धन गुन कीरति बहु मिलै, बढ़ै बहुत-सी साख ॥१॥

अशुभ—

बायस सूखे वृक्ष पर, सूरज सोहैं होई ।
करै विलाप कठोर तब, अति दुखदाई सोई ॥२॥

७ **काली चिड़िया आदि के शकुन** (शुभ)—

काली चिड़िया-उल्लू-स्वाना, रासभ-गीदड़-काग बखाना ।
जो चलते ये बायें चल हीं, तो धन लक्ष्मी प्राप्ति मिलहीं ॥१॥
बायें तीतर प्रातहि बोलै, गमन समै अति सुखद अमोलै ।
दुपहर तें जो बोलै दहिने, तो प्रानी सुख पावै सुघने ॥२॥
नीलयंस तोरन करै, जो कहु दरशन देहि ।
प्राणी पहुंचे कुशल सूं मनवांछित फल लेहि ॥३॥
दहिने से बायें तरफ, आवै अतिहि उताल ।
सांझ हि रूपारेल तो, सुख प्रापति ततकाल ॥४॥

शुभाशुभ—

साँ गौणी परभात, संझा मल्हारी[1] दुखद ।
मल्हारी परभात, संझा सांगौणी सुखद ॥५॥

---

१ रूपारेल (स्वर्ण चिड़िया) का दायीं से बांयी ओर जाना सांगौणी एवं बांयी से दायीं ओर जाना मल्हारी या माल्हाली कहलाता है ।

८ गौन समै पंछी रटै, फलित बिरछ पैर बैठि ।
भरी दिशा में तो भलो, अशकुन नाख ऐंठि ।।१।।
उत्तर अरु ईशान, पूरब प्रात भरी दिशा ।
सांज भरी दिशि जान, दक्षिण नैऋ्र्ंत पश्चिमे ।।२।।

९ **नकुल आदि के शकुन** (शुभ) -

जो कहु नकुल सुदरशन पावै, होय काज संपति मिलि जावै ।
सब विधि कुशल आव घर नीके, सबे मनोरथ पूगै जोके ।।१।।
बकुल-मोर सुखकार, इनको दरशन शकुन शुभ ।
कुक्कुर पिक शुकसार, बायें बोलें तो भले ।।२।।

शुभाशुभ—

काली चिड़िया वामदिशि, बोलै तो सुखकार ।
सूर सांप अरु गोह को, दर्शन दुखद अपार ।।३।।

२२ शकुनज्ञ एवं उनकी आश्चर्यजनक बातें

१ दादूजी महाराज एक जाट के खेत में ठहरे हुये थे। वे ज्योंही जाने लगे, चिड़िया ने अपशकुन किये। जाट ने कहा—भगवन् कुछ देर रुक जाइये। शकुन ठीक नहीं है। दादूजी नहीं रुके और चलते समय कहने लगे—

> दादू ! दुनियां झूठ है, झूठ चिड़ी का सूण ।
> लिखणवाला लिख गया, तो मेटणवाला कूण ।।

विदा होकर थोड़ी-सी दूर गए कि रास्ते में चोर-डाकू मिले। उन्होंने दादूजी के कपड़े और टोपी (सोने की थी) छीन लिए। दादूजी ने वापस आकर जाट को सारा हाल सुनाया और बोले—

> दादू ! दुनियां साँच है, साँच चिड़ी का सूण ।
> दो घड़ी पछै चालता, तो टोपी लेता कूण ।।

—**श्री कालुगणि से श्रुत**

२ **फलसूंड** के भाटी राजपूत कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक पथिक शकुन अच्छे न होने से इधर-उधर भटकता हुआ कह रहा था—"**आगे जाऊं मां मरे, और पीछे जाऊं तो मैं मरूं** ।" भाटी राजपूत ने कहा—"फेंक दे—फेंक दे !" उसने रोटियों से भरा थैला फैंक दिया, उसमें से एक सांप निकला।

• किसी व्यक्ति की सांडनी चोरी गई। उसने ठाकुर से फरियाद की। वे राइके (खोजी) को साथ लेकर खोजने चले। रास्ते में सांप मिला, वापस लौटे। प्रातः फिर रवाना हुए, रास्ते में सांप फण फैलाए तैयार था। ठाकुर ने मुंह फेर कर राइके के एक लाठी मारी। वही चोर था, बस सांडनी ला सौंपी।

० एक बरात जा रही थी। स्वर्ण चिड़िया बोली, एक शकुनज्ञ क्षत्रिय ने कहा—जिसको ब्याहने जा रहे हैं, वह लड़की गर्भवती है। लोगों ने पूछा—इसका क्या सबूत ? शकुनज्ञ का उत्तर था कि जिस टहनी पर चिड़िया बैठी है, उसको चीर कर देखो ! यदि उसमें कीड़ा (लट) हो तो समझ लेना कि कन्या सगर्भा है। विस्मित लोगों ने टहनी को चीरा तो लट निकली। सच्चाई की परीक्षा के लिए बरात आगे गई एवं पता लगाया तो लड़की गर्भवती निकली।

० एक सैनिक (जिसकी शादी अभी हुई थी) ससुराल जा रहा था। बीच में बहू का चचा (जो शकुनज्ञ था) कहने लगा—शकुन के अनुसार आप कल शाम तक मर जाएंगे। सैनिक घबराकर (पास की ढ़ाणी में) ससुर के पास पहुंचा।

हाल सुनकर ससुर (वह भी अद्भुत शकुनज्ञ था) ने कहा—तुम सुबह बिलाई-आंख वाली गाय का दूध लेकर चुपचाप चले जाना एवं भाई के घर के दाहिने द्वार की बाड़ पर—वह दूध डालकर—"तुम्हारे शकुन तुम्हें ही देता हूं" यों कहकर फौरन लौट आना। बाड़ से आग की ज्वाला निकलेगी एवं पकड़ो-पकड़ो ! कहकर मेरा भाई पीछे दौड़ेगा, लेकिन शीघ्रता से भाग आना। दामाद ने उक्त विधि की एवं चचा ससुर मर गया।

—बाड़मेर निवासी हस्तीमल जी से श्रुत

३ ऐसी दंतकथा है कि जन्मते बच्चे को यदि पक्षियों का ऐंठा हुआ पानी (कई जगह बर्तन में पानी भर कर एक छींके पर रखा जाता है, और पक्षी आ-आकर उसमें पानी पिया करते हैं, वह) पिला दिया जाय तो बच्चा पक्षियों की भाषा समझने लग जाता है।

० बीकानेर नरेश के पास एक आदमी पक्षियों की भाषा समझने वाला था। उसने एक दिन महाराज से कहा कि कमेड़ी (कबूतर से मिलता-जुलता पक्षी) कह रही है कि कल सबेरे यदि जोधपुर महाराज झारी का पानी (जिसमें महारानी का जहर डाला हुआ होगा) पी लेंगे तो तत्काल मर

जायेंगे उन्हें बचाना हो तो कोई जाकर बचाओ। बीकानेर नरेश को पहले तो विश्वास नहीं हुआ, फिर विशेष आग्रह देखकर वायुवेग से चलने वाली अपनी सांडनी दी। साथ एक पत्र भी दिया (उसमें लिखा था कि यदि इसकी बात झूठ निकले तो इसे वहीं मार दिया जाय)। वह शीघ्रातिशीघ्र चला और दिन निकलने से पहले ही जोधपुर पहुंचकर महाराज को पत्र दे दिया। महाराज ने महारानी को बुलाकर कहा—पिओ इस झारी का जल। वह पीने से इन्कार हुई। धमकाने से सब बात कह दी। पत्रलाने वाले को इनाम और महारानी को मौत की सजा दी गई।

—श्रुति के आधार पर

२३ जादूगर एवं उनके आश्चर्य

१ **जादूगर**—जादूगर असंभव बातों को संभव करके दिखाता हुआ मालूम होता है। वह एक खाली दीखनेवाले हैट से एक खरगोश निकालकर दिखा सकता है, एक बड़े से पिंजड़े को गायब कर सकता है, एक मजबूत जंजीर को तोड़कर बाहर निकल सकता है या एक आदमी को आरे से काटकर दो टुकड़े हुआ दिखा सकता है।

अनेक जादूगर बहुत मशहूर हो चुके हैं। इनमें सबसे मशहूर **हाउदिनी** था। उसका एक खेल पांच टन के एक हाथी को गायब कर देना था।

—विश्वकोष भाग ६, पृष्ठ ३८

२ **जादूगर पी० सी० सरकार**—इनका पूरा नाम प्रतुलचन्द्र सरकार था। २३ फरवरी, १९१३ को अशोकपुर जिला मैमनसिंह (बंगाल) में भगवानचन्द्र सरकार के घर इनका जन्म हुआ। पिता बाजीगरी एवं खेती का धंधा करते थे। इन्होंने कलकत्ता से बी० ए० पास करके जादू (इन्द्रजाल) की विद्या पढ़ी। विश्वविख्यात जादूगर हुए। खेल दिखाने के लिए ये ९ बार अमेरिका, ३६ बार यूरोप एवं ११ बार जापान गये। इन्हें १९६४ में भारत सरकार ने "पद्मश्री" का अलंकरण दिया। इनके खेल अद्भुत थे। ये मोटर या हाथी जैसी बड़ी चीज को भी गायब करके दिखा देते थे। आरे से आदमी के दो टुकड़े कर देते, लेकिन खून की एक बूंद भी नहीं निकलती। आंखों पर पट्टी बांधकर मोटर-साइकिल चला देते एवं बोर्ड पर रेखाचित्र बना देते। आदमी को फांसी के तख्ते पर खड़ा करके ज्योंही फांसी दी जाती, सरकार गोली दागते, गोली दागने के साथ ही वह आदमी गायब हो जाता और फांसी वाली रस्सी में सिर्फ एक चोटी लटकती रह जाती। थोड़ी देर बाद सभा में से मुस्कराता हुआ वह आदमी प्रकट हो जाता।

ये एक छोटा-सा पानी का कमंडल रखते और उसमें से बार-बार पानी गिराते ही रहते, किंतु वह कभी खाली नहीं होता। इनका कहना था कि राजा भोज, भानुमती रानी और राजा विक्रमादित्य भी जादू विद्या के विशेषज्ञ थे। (जादू के खेल को भानुमती का खेल भी कहते हैं।)

— **बालभारती, जून १९७१ के आधार से**

३ **कागे का बाग**—जोधपुर नरेश ने जादूगर का खेल करवाया। उसने अनार का बाग लगाकर सबको अनारें खिलाईं। "जादूगर को मार देने से उसकी बनाई हुई चीजें रह सकती हैं" ऐसी सलाह देने से राजा ने जादूगर का गला कटवा दिया एवं वह बाग स्थिर रह गया।

जादूगर की स्त्री गर्भवती थी, पुत्र हुआ एवं जादू विद्या सीखकर बाप का वैर लेने जोधपुर आया। राजा की आज्ञा से खेल शुरू हुआ। जादूगर ने अपनी विद्या से खरबूजे एवं चाकू बनाकर राजा के सिवा बुरी सलाह देने वाले मुतसद्दियों के हाथों में पकड़ा दिये। ज्योंही खरबूजों पर चाकू रखे, सबके सिर कट गए। जादूगर ने कहा—राजन्! इन दुष्टों ने मेरे पिता को मरवाया था, अतः मैंने उसका बदला लिया है। राजा हमारे लिये अवध्य है, इसलिये आपको छोड़ा है। क्रुद्ध होकर राजा ने उसे पकड़ना चाहा लेकिन उसने सबके **देखते**-देखते एक कुकड़ी आकाश में फेंकी और उसके धागे को पकड़कर आकाश में चला गया एवं अदृश हो गया।

० **सबकी घड़ी में ९ बज गये**—पटियाला नरेश ने जादूगर का खेल करवाया। समय रात को नौ बजे का था। जादूगर कुछ देर से आया। राजा आदि ने उस पर ऐतराज किया। किसी ने ९।१०, किसी ने ९।१२, किसी ने ९।१५ एवं किसी ने ९।१९ मिनट बतलाए। जादूगर ने कहा—आप असत्य बोल रहे हैं, देखिए दुबारा अपनी-अपनी घड़ी। विस्मित लोगों ने ज्यों ही घड़ियां देखीं, सब में ठीक नौ बजे थे। उपस्थित दर्शकों के आश्चर्य का पार न रहा एवं सभी ने क्षमा मांगकर खेल दिखाने की प्रार्थना की। हंसकर जादूगर ने कहा—बस, हो गया आज का खेल तो खत्म।

० मालेरकोटला (पंजाब) में जादूगर एक भैंस के मुख-द्वार से घुसकर

मलद्वार से निकल रहा था। लोग देखकर ताज्जुब हो रहे थे। इतने में घास का भारा लिए हुए एक मनुष्य वहाँ आ खड़ा हुआ (घास सिर पर हो तो जादू का कोई असर नहीं होता) और लोगों की मूर्खता पर हंसने लगा। जादूगर समझ गया एवं धक्का मारकर उसका घास नीचे गिरवा दिया। बस, उस पर भी जादू का असर हो गया।

—श्रुति के आधार पर

४ **एक जादूगर ने एक बच्चे को छाबड़ी में डाला एवं अदृश कर दिया। फिर उस छाबड़ी में से बच्चे को सर्प-युगल के रूप में दिखाया, फिर बच्चे को प्रकट करके उसके जीभ आदि काट कर दिखाए।**

—सन् १९६९, नवम्बर ३०, रानियां गांव में लोगों ने यह खेल देखा था।

५ **आवाज के जादूगर**—(वाणी के ऐन्द्रजालिक) अक्सर आवाज के इन जादूगरों के पास एक गुड़िया या नकली मनुष्याकृति रहती है। उनके तमाशे का कमाल यह होता है कि आवाज उस नकली मनुष्याकृति के मुंह से आती हुई लगती है। बोलते समय इनके ओंठ नहीं हिलने चाहिए। 'प' या 'ब' से शुरू होने वाले शब्दों का उच्चारण कर पाना ऐन्द्रजालिक के लिए बहुत कठिन होता है, क्योंकि ओंठों को हिलाए बिना इन अक्षरों का उच्चारण नहीं हो सकता। इनके मुंह से 'बहना' शब्द 'कहना' की तरह निकलता है। एक अच्छा ऐन्द्रजालिक किसी कोने में इस अन्दाज से देखता है, जैसे आवाज उसी ओर से आ रही है। देखने में लोग भी ऐन्द्रजालिक को न देखकर उसी दिशा में देखने लगते हैं। इस तरह ये लोग लोगों को बेवकूफ बना देते हैं।

—विश्वकोष भाग ५।१९

२४ ज्योतिष की जानकारी

१ उस विद्या या शास्त्र का नाम ज्योतिष है, जिसके द्वारा आकाशस्थित ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिणाम, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है।

—नालंदा विशाल शब्दसागर

२ ज्योतिष का ज्ञान करने वालों को आदित्य आदि सात वार, प्रतिपदा आदि सोलह तिथियाँ, चैत्र आदि बारह मास, मेष आदि बारह राशियाँ, सूर्य आदि नव ग्रह, अश्विनी आदि २७ नक्षत्र, विष्कंभ आदि सत्ताईस योग एवं बव आदि आठ करण अवश्य याद होने चाहिये।

३ **होडाचक्र के साथ वार तिथि आदि—**

० (१) आदित्य, (२) सोम, (३) मंगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) शुक्र, (७) शनैश्चर—ये **सात वार** हैं।

० (१) प्रतिपदा, (२) द्वितीया, (३) तृतीया, (४) चतुर्थी, (५) पंचमी, (६) षष्ठी, (७) सप्तमी, (८) अष्टमी, (९) नवमी, (१०) दशमी, (११) एकादशी, (१२) द्वादशी, (१३) त्रयोदशी, (१४) चतुर्दशी, (१५) अमावस्या, (१६) पूर्णिमा ये १६ **तिथियां** हैं।

० (१) चैत्र, (२) वैसाख, (३) ज्येष्ठ, (४) आषाढ़, (५) श्रावण (६) भाद्रपक्ष, (७) आश्विन, (८) कार्तिक, (९) मार्गशीर्ष, (१०) पौष, (११) माघ, (१२) फाल्गुन—ये **बारह मास—महीने** हैं।

० (१) वसन्त, (२) ग्रीष्म, (३) वर्षा, (४) शरद्, (५) हेमन्त, (६) शिशिर—ये **छः ऋतुएं** हैं।

० (१) दक्षिणायन, (२) उत्तरायन—ये **दो अयन** हैं।

(१) मेष, (२) वृषभ, (३) मिथुन, (४) कर्क, (५) सिंह, (६) कन्या,

(७) तुला, (८) वृश्चिक, (९) धनु, (१०) मकर, (११) कुम्भ, (१२) मीन—ये **बारह राशियाँ** हैं।

० (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) बृहस्पति, (६) शुक्र, (७) शनि, (८) राहु, (९) केतु—ये **नौ ग्रह** हैं।

० (१) अश्विनी, (२) भरणी, (३) कृत्तिका, (४) रोहिणी, (५) मृगशिरा, (६) आर्द्रा, (७) पुनर्वसु, (८) पुष्य, (९) आश्लेषा, (१०) मघा, (११) पूर्वाफाल्गुनी, (१२) उत्तराफाल्गुनी, (१३) हस्त, (१४) चित्रा, (१५) स्वाती, (१६) विशाखा, (१७) अनुराधा, (१८) ज्येष्ठा, (१९) मूल, (२०) पूर्वाषाढ़ा, (२१) उत्तराषाढ़ा, (२२) अभिजित्, (२३) श्रवण, (२४) धनिष्ठा, (२५) शतभिषा, (२६) पूर्वाभाद्रपदा, (२७) उत्तराभाद्रपदा, (२८) रेवती—ये **अट्ठाईस नक्षत्र** हैं।

(उत्तराषाढ़ा का चतुर्थ चरण, श्रवण के आदि का पन्द्रहवां भाग मिलकर अभिजित् नक्षत्र होता है। मुख्य सत्ताईस नक्षत्र ही हैं।)

० (१) विष्कंभ, (२) प्रीति, (३) आयुष्मान्, (४) सौभाग्य, (५) शोभन, (६) अतिगण्ड, (७) सुकर्मा, (८) धृति, (९) शूल, (१०) गण्ड, (११) वृद्धि, (१२) ध्रुव, (१३) व्याघात, (१४) हर्षण, (१५) वज्र, (१६) सिद्धि, (१७) व्यतिपात, (१८) वरीयान्, (१९) परिधि, (२०) शिव, (२१) सिद्ध, (२२) साध्य, (२३) शुभ, (२४) शुक्ल, (२५) ब्रह्म, (२६) ऐन्द्र, (२७) वैधृति—ये २७ **योग** हैं।

० बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि—ये **सात करण** हैं।

४ चन्द्रमा का निवास—

मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे,
वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुलायां च घटे प्रतीच्यां,
कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम्।

—**होडाचक्र**

मेष-सिंह-धनु, इन राशियों में पूर्व की ओर, वृष-कन्या-मकर, इन राशियों के दक्षिण की ओर, मिथुन-तुला-कुम्भ, इन राशियों में पश्चिम की ओर तथा कर्क-वृश्चिक-मीन, इन राशियों में उत्तर की ओर चन्द्रमा का निवास होता है।

५ चन्द्रनिवास का फल—

सम्मुखे त्वर्थलाभः स्याद्, दक्षिणे सुखसम्पदः।
पृष्ठतो मरणं चैव, वामे चन्द्रे धनक्षयः॥

—होडाचक्र

सम्मुख चन्द्रमा से धन का लाभ, दाहिने हाथ की ओर हो तो सम्पत्ति, बाएं हाथ की ओर हो तो धन की हानि और पीछे की ओर हो तो मृत्यु होती है।

६ राशियों के स्वामी—

मेष-वृश्चिकयोर्भौमः, शुक्रो वृषतुलाधिपः।
बुधः कन्यामिथुनयोः, प्रोक्तः कर्कस्य चन्द्रमाः।
जीवो मीन-धनुःस्वामी, शनिर्मकर-कुम्भयोः।
सिंहस्याधिपतिः सूर्यः, कथितो गणकोत्तमैः॥

—होडाचक्र

मेष-वृश्चिक का स्वामी मंगल, वृष-तुला का पति शुक्र, कन्या-मिथुन का स्वामी बुध, कर्क का स्वामी चन्द्रमा, मीन और धन का स्वामी बृहस्पति, मकर-कुम्भ का स्वामी शनि और सिंह का पति सूर्य है।

७ ग्रहों का राशि भोग—

मासं शुक्रो बुधः सूर्यः, सार्धमासं महीसुतः।
गुरुरब्दं तमः सार्धं, शनिः सार्धाब्दकद्वयम्॥
तथा सपादद्विदिवं, राशौ तिष्ठति चन्द्रमाः।
ग्रहाणां राशिजो भोग, एवमुक्तो विचक्षणैः॥

—होडाचक्र

शुक्र, बुध एवं सूर्य एक महीना, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति एक वर्ष, राहु डेढ़ वर्ष और शनि अढ़ाई वर्ष तथा चन्द्रमा सवा दो दिन तक एक राशि पर रहता है। ग्रहों का राशिभोग पंडितों ने इसी तरह कहा है।

८ घातक चन्द्र—

चन्द्रभूतग्रहा नेत्र-रसादिग्वह्निसागराः ।
वेदसिद्धिशिवार्काः स्यु-र्घातचन्द्राः क्रमान्नृणाम् ।।
रोगे मृत्युरणे भङ्गो, यात्राकाले तु बन्धनम् ।
विवाहे विधवा नारी, घातचन्द्रफलं त्विदम् ।।

—होडाचक्र

एक १, पांच ५, नव ९, दो २, छः ६, दस १०, तीन ३, सात ७, चार ४, आठ ८, ग्यारह ११, बारह १२, ये चन्द्रमा मेष आदि राशियों वाले मनुष्य के लिए क्रमशः घातक होते हैं। जैसे—मेष राशि वाले को पहला चन्द्रमा, वृष वाले को ५वां, इसी क्रम से आगे भी जान लेना चाहिये। घातक चन्द्रमा में रोग हो तो मृत्यु, युद्ध में जावे तो भय, यात्राकाल में बन्धन और विवाह में स्त्री विधवा हो, यह घातक चन्द्रमा का फल है।

९ जन्मादिराशिस्थित चन्द्र का शुभाशुभ फल—

आद्ये चन्द्रः श्रियं कुर्याद् मनोहर्षं द्वितीयके ।
तृतीये धनसम्पत्तिश्चतुर्थे कलहागमम् ।।
पञ्चमे ज्ञानवृद्धिश्च, षष्ठे सम्पत्तिमुत्तमाम् ।
सप्तमे राजसम्मानं मरणं चाष्टमे तथा ।।
नवमे धर्मलाभं च, दशमे मानसेप्सितम् ।
एकादशे सर्वलाभं, द्वादशे हानिमेव च ।।

—होडाचक्र

प्रथम चन्द्रमा में लक्ष्मी की प्राप्ति, दूसरे चन्द्रमा में मन को आनन्द, तीसरे में धन-सम्पत्ति, चौथे में कलह, पांचवें में ज्ञानवृद्धि, छठे में सुख-सम्पत्ति, सातवें में राजसम्मान, आठवें में मरण, नवे में धर्मलाभ, दशवें में मनचाहा काम, ग्यारहवें में सब तरह से लाभ और बारहवें में हानि होती है।

१० यात्रा में नक्षत्रों की शुभाशुभता—

(क) अनुराधात्रयं हस्तो, मृगाश्वौ वादितिद्वयम् ।
यात्रायां रेवती शस्ता, निंद्याऽऽद्रभिरणीद्वयम् ।।
मघोत्तरा विशाखा च, सार्पश्चान्ये च मध्यमा ।
सर्वदिग्गमने हस्तः, पूषा च श्रवणो मृगः ।।
सर्वसिद्धिकरः पुष्यो, विद्यायां च गुरुर्यथा ।

अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, हस्त, मृगशिरा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती— ये नक्षत्र शुभ हैं। आर्द्रा, भरणी, कृतिका, मघा, उत्तरा, **विशाखा,** अश्लेषा निन्दित हैं। अन्य नक्षत्र यात्रा में मध्यम हैं। हस्त, रेवती, श्रवण, मृगशिरा, ये नक्षत्र सब दिशा की यात्रा में शुभ हैं। पुष्य सब बातों को सिद्ध करने वाला है, जैसे— विद्या में गुरु (बृहस्पति)।

(ख) प्रवेशे अश्विनी नैव, प्रयाणेऽशनि-रोहिणो ।
गुरु-पुष्यं विवाहे च (दीक्षायां), सर्वथा परिवर्जयेत् ।।

—होडाचक्र

प्रवेश में अश्विनी नक्षत्र हो तो प्रवेश न करे, शनि के दिन रोहिणी हो तो प्रयाण न करे। गुरु के दिन पुष्य हो तो विवाह अथवा दीक्षा का परित्याग करे !

११ नन्दादि तिथियां एवं सिद्धियोग—

नन्दा भद्रा जया रिक्ता, पूर्णाश्च तिथयः क्रमात् ।
वारत्रयं समावर्त्त्य, तिथयः प्रतिपन्मुखा ।।१।।
नन्दा शुक्रे बुधे भद्रा, शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा तिथिर्ज्ञेया, सिद्धियोगाः शुभावहाः ।।२।।

—होडाचक्र

प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी **नन्दा**। द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी **भद्रा**। तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी **जया**। चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी **रिक्ता**। पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, **पूर्णा** कहलाती हैं। शुक्र को नन्दा, बुध को भद्रा, शनि

को रिक्ता, मंगल को जया, बृहस्पति को पूर्णा तिथि हो तो शुभ को बढ़ाने वाला सिद्धियोग होता है।

१२ अमृतसिद्धियोग—

हस्तः सूर्ये मृगः सोमवारे भौमे तथाश्विनी।
बुधे मैत्री पुरौ पुष्यं, रेवती भृगुनन्दने ॥१॥
रोहिणी रविपुत्रे च, सर्वसिद्धिप्रदायिका।
असावमृतसिद्धिस्तु, योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥२॥

—**होडाचक्र**

रविवार को हस्त नक्षत्र, सोमवार को मृगाशिरा, मंगल को अश्विनी, बुध को अनुराधा, गुरुवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार के दिन रोहिणी नक्षत्र, ये सब प्रकार की सिद्धि को देने वाले हैं। इसी को अमृतसिद्धियोग कहते हैं।

१३ मृत्युयोग—

नन्दा सूर्ये च भौमे च, भद्रा भार्गवचन्द्रयोः।
बुधे जया गुरौ रिक्ता, शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥

—**होडाचक्र**

रवि और मंगलवार को नन्दा तिथि, सोम और शुक्रवार को भद्रा तिथि बुधवार को जया तिथि, गुरुवार को रिक्ता तिथि, और शनि को पूर्णा तिथि हो तो मृत्युयोग होता है।

१४ कालयोग—

(क) पड़वा थावर परिहरो, बीज तिथी भृगुवार।
तीजे त्यागो सुरगुरु, चौथ दिने बुधवार ॥
पांचम मंगल सोम छठ, सातम बरजो भान।
एता ले चालो मती, कालयोग परमाण ॥

—**राजस्थानी दोहे**

(ख) अर्कोत्तरे वायुदिशां च सोमे, भौमे प्रतीच्यां बुध नैर्ऋते च।
याम्ये गुरौ बह्निदिशां च शुक्रे, मन्दे च पूर्वे प्रवदन्ति कालम् ॥

—**होडाचक्र**

रविवार के दिन उत्तरदिशा में, सोमवार को वायु दिशा में, मंगलवार को पश्चिम दिशा में, बुधवार को नैर्ऋतकोण में, बृहस्पति को दक्षिण-दिशा में, शुक्र को अग्निकोण में और शनि को पूर्व दिशा में कालयोग रहता है। कालयोग में सम्मुख गमन नहीं करना चाहिए।

१५ **ज्वालामुखी योग—**

एकम मूल पांचम भरणी, आठम, कृतिका नवम रोहिणी।
दसम अश्लेषा सुन ले भइया ! ए पाँच जोग ज्वालामुखी कहिया।

१६ **यात्राविचार—**

पिता पुत्रौ न गच्छेतां, न गच्छेतां च भ्रातरौ ।
नवाङ्गनास्त्रयो विप्रा, न गच्छेयुस्तथैव च ।।

पिता-पुत्र को या दो भाइयों को साथ नहीं जाना चाहिए, नौ स्त्रियों को तथा तीन ब्राह्मणों को साथ नहीं जाना चाहिए।

० रवि तुलचन्द्र गमन न कीजे, वृश्चिक सोम पाय न दीजै।
वैरी अर्थ कर्क अंगार, बुध-जीव मीन को काल।
शुक्रे मकर लाभ ना होय, सिंहे शनि चालै नहि कोय ।।१।।
सात वार षट् चन्द्रमा, जो नर जाणे भेव ।
ते नर पड़ै न कष्ट में, इम भाखै **सहदेव** ।।२।।

२५ ज्योतिषियों की चमत्कारी बातें

१ कई ज्योतिषी हस्तरेखा से, कई कुण्डली एवं कई प्रश्न के आधार पर भूत-भविष्य की घटनाएँ यथातथ्य रूप से बतला देते हैं। अगर उनके गणित और फलित के ज्ञान में गड़बड़ी न हो तो बातें प्रायः अक्षरशः सत्य निकलती हैं।

० ज्योतिषशास्त्र में कई-कई गणित तो इतने अद्‌भुत हैं, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्त्री के गर्भ में बालक है या बालिका ! अथवा यह भी बताया जा सकता है कि पहले पति की मृत्यु होगी या पत्नी की ? परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष निकला कि प्रायः ८०-९० प्रतिशत उत्तर सही होते हैं।

—धनमुनि

२ **हस्तरेखाविशेषज्ञ रुघराज जी भण्डारी**—जोधपुर के दीवान श्री उत्तमचन्दजी मेहता के विशेष आग्रह पर उनका हाथ देखकर भण्डारी जी ने कहा—आज से २७ वें दिन आपको दीवान पद से हटा दिया जायेगा। २४वें दिन महाराज मानसिंह जी ने कड़ी-कंठी आदि देकर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने मजाक करते हुए भण्डारी जी से कहा—कहां गया आपका ज्योतिष ? भण्डारी जी ने उत्तर दिया—अभी तीन दिन बाकी हैं। सत्ताईसवें दिन दीवान साहब पिंजस में बैठकर किले से आ रहे थे। भण्डारीजी से भेंट हुई और वे हंसकर कहने लगे भण्डारीजी ! आज सत्ताईसवाँ दिन है। भण्डारी जी बोले—अभी दिन अस्त नहीं हुआ है। बस इतने में ही पीछे से राजसिपाही दौड़ता हुआ आया और उन्हें वापस ले गया। किले में पहुंचते ही महाराज ने उनको दीवान पद से हटा दिया।

भेद पाकर नरेश ने भण्डारीजी को अपना हाथ दिखाया एवं दीवान बनाना चाहा। वे बोले—हस्तरेखा के अनुसार मेरी आयु बहुत कम है और कुल का क्षय होने वाला है, अतः मैं दीवान नहीं बनता।

कुछ समय के बाद तीन ही दिनों में उनके यहाँ १४ मौतें हुई, उनमें वे भी शान्त हो गए। पीछे केवल एक पुत्र डेढ़ साल का, **तेजराज** नाम का रहा।

—ह**नवतराज जी भण्डारी** (जोधपुर) **से श्रुत**

३ वि० सं० १९८५ में मध्याह्न १ बजे के लगभग **तोलारामजी** पारख (चूरू) ने प्रश्नकुण्डली के आधार पर मुनि श्री सक्तमलजी से कहा—आज शाम तक आपका बिहार हो जाएगा, बात सही निकली।

० वि० सं० २००३, **मन्नालाल जी** नवलखा ने मुझे वर्षकुंडली के आधार से कहा—इस वर्ष आपका चौमासा दक्षिण में होगा। आचार्यश्री ने महोत्सव के समय चातुर्मास हांसी फरमाया। लेकिन उसी रात को बदलकर बंबई की तरफ कह दिया।

० वि० सं० २०२७ में सुजानगढ़ निवासी **श्री गुलाबचन्दजी जोशी** ने मेरा वर्षफल देखकर कहा—आपके सिंघाड़े में से एक साधु जल्दी बदलने वाले हैं, प्रयत्न करने पर भी नहीं रह सकेंगे, (दूसरा साधु पहले से विशेष साताकारी मिलेगा), आपका चौमासा इस साल छोटे क्षेत्र में होगा। लेकिन वहां आपका प्रभाव विशेष रहेगा।

दूसरे ही दिन पूनममुनि (जो दो साल से साथ थे) बदले गये। लालमुनि (जो २५ साल से चंदनमुनि के साथ थे) मुझे मिले और टोहना (जहां श्रद्धा के लगभग ३५ घर हैं) चातुर्मास हुआ एवं आशातीत सफल रहा।

—धनमुनि

४ मुनसरिफ **दसाणीजी** के पूछने पर **फोजमल जी पगारिया** (खाटू) ने कहा—एक मास में आपका दो सेर वजन घट जाएगा। पौणे दो सेर घटा।

• फोजमलजी पगारिया के पूछने पर एक ज्योतिषी ने मेह-अंधेरी रात में हाथ की चार अंगुलियां पकड़ने के आधार पर कहा—१२ बजकर दस मिनट हुए हैं। बरसते मेह में पास के मन्दिर में जाकर पूछा तो १२ बजकर १३ मिनट थे। (तीन मिनट का रास्ता था)।

—फोजमलजी पगारिया से श्रुत

५ **प्रतापसिंह** (कोठारिया वाले) अहमदाबाद में हस्तरेखा के आधार से भविष्य बताते थे एवं लोगों की लाइन लग जाती थी। वे हर हफ्ते १॥-२ हजार का मनिआर्डर करवाते। पोस्टऑफिस वालों ने शिकायत की। पुलिसवाले पकड़कर उन्हें थाने में ले गए एवं मार-पीट करने लगे। उन्होंने अपनी सच्ची बात कही। थानेदार नहीं माना एव अपनी गुप्त बात पूछी—प्रतापसिंह ने कहा—आपने कल ही १४०० रुपये रिश्वत के लिए हैं एवं अमुक स्त्री से व्यभिचार किया है। थानेदार ने पैर पकड़े एवं उन्हें छोड़ दिया।

—हांसी में श्रुत

६ **रोशननाथ**—(पटेलनगर दिल्ली) के पास भिवानी-निवासी **सोहन पंसारी** आदि चार आदमी गये। प्रश्न पूछने पर एक से कहा—तेरी स्त्री अब जल्दी ही मर जायेगी—उसे एक महीने तक एक-एक केला खिलाओ तो बच सकती है। नहीं खिलाया गया एवं मर गई। दूसरे से कहा—दोनों भाई मिलकर काम करोगे तो ठीक रहेगा। तीसरे से कहा—तू महा व्यभिचारी है—रसोईदारिन एवं बर्तन मलनेवाली से भी नहीं टलता। चौथा बिना पूछे ही रवाना हो गया। वह भी ऐसा ही था।

—भिवानी में श्रुत

७ **भविष्यवक्ता जान डिक्सन**—उसने **कैनेडी** की हत्या, भारत का विभाजन, चीन के लाल होने आदि के बारे में काफी समय पूर्व ही भविष्य-वाणी कर दी थी। जीन डिक्सन ने स्वयं व्यक्तिगत रूप से

राष्ट्रपति कैनेडी को सलाह दी थी कि वह दक्षिण के दौरे पर न जायें, क्योंकि वहां उनकी हत्या हो सकती है। कैनेडी ने उनकी बात को हंसी में उड़ा दिया, पर बाद में जीन डिक्सन की भविष्यवाणी सच निकली।

जीन डिक्सन का कहना था कि वह एक कांच की गेंद अपने सामने रख कर उसमें भविष्य के साफ दृश्य देख सकता है।

—शशिकान्त शर्मा (हिन्दुस्तान—५।११।७३)

वायु

१ **पांच प्रकार की वायु**—(१) प्राण, (२) अपान, (३) समान, (४) उदान, (५) व्यान।

(१) **प्राणवायु**—यह सारे शरीर पर नियन्त्रण करती है। नासिका, हृदय, नाभि और पैर के अंगूठे तक जाती है। इसका वर्ण हरा है।

(२) **अपानवायु**—यह मल-मूत्र और गर्भ वगैरह को बाहर निकालती है। गर्दन के पीछे की नाड़ियाँ, पीठ, गुदा तथा पैर का पिछला हिस्सा इसके स्थान हैं। इसका वर्ण काला है।

(३) **समानवायु**—यह खाये-पिये आहार को उचित परिमाण में यथास्थान पहुंचाती है। हृदय, नाभि और सारी संधियां इसके स्थान हैं। इसका रंग सफेद है।

(४) **उदानवायु**—यह रस वगैरह को ऊपर की ओर ले जाती है। इसका हृदय, कंठ, तालु, भोंहों का मध्यभाग और मस्तक है तथा रंग लाल है।

(५) **व्यान वायु**—यह सब जगह व्याप्त रहती है। इसका रंग इन्द्रधनुष सरीखा है।

२ **वायु-विजय से लाभ**—प्राणवायु को जीतने पर जठराग्नि तेज हो जाती है। श्वासोच्छ्वास दीर्घ और गम्भीर हो जाते हैं। सभी प्रकार की वायु पर विजय प्राप्त होती है। शरीर हल्का मालूम पड़ता है।

समान और अपानवायु को वश में कर लेने पर घाव और फोड़े वगैरह जल्दी भर जाते हैं। हड्डी वगैरह टूट जाय तो जल्दी संध जाती है। जठराग्नि बढ़ती है। बीमारी जल्दी नष्ट होती है।

उदान के वश में होने पर अचिरादि मार्ग से अपनी इच्छानुसार उत्क्रांति अर्थात् जीव का ऊर्ध्वगमन होता है। कीचड़, पानी, कांटे वगैरह किसी वस्तु से नुकसान नहीं पहुंचता।

व्यान को जीत लेने पर शर्दी-गर्मी से कष्ट नहीं होता, शरीर की क्रांति बढ़ती है और वह स्वस्थ रहता है।

—जैनसिद्धान्त-बोलसंग्रह, भाग २, पृष्ठ ३०५-३०६

२७ रेलगाड़ी एवं मोटरें

१ **रेलगाड़ी**—रेल इंजन के निर्माता जार्ज **स्टीफेन्सन** थे। इनका जन्म इंगलैंड के एक छोटे से गांव में हुआ था। बाप की गरीबी के कारण विशेष पढ़ न सके। १४ वर्ष की आयु में ८ आने रोज पर बाप के साथ कारखाने में काम करने लगे। क्रमशः मिस्तरी एवं इंजीनियर बने। उस समय तक इंजन पड़े-पड़े ही काम करते थे। सन् १८१८ में इन्होंने एक इंजन बनाया, जिसने प्रति घंटा ४ मील की गति से चलकर आठ डिब्बे खींचे। सन् १८२० में चेस्टर-लिवर पुल के बीच रेलगाड़ी चली। उसकी गति प्रति घंटा ३० मील थी। फिर अन्य देशों में भी रेलगाड़ी का प्रचार हुआ। यह लगभग १५० वर्ष से चल रही है।

—**नवभारत, १८ अप्रैल, १९६६**

२ **भारतीय रेलवे**—भारत में रेलवे सरकारी क्षेत्र में है। कुल रेल लाइनें ५८,३०० किलोमीटर हैं। एशिया में यह सबसे बड़ी लाइन है और दुनियां में इसका स्थान छठा है। भारतीय रेलवे नौ क्षेत्रों (जोनों) में विभक्त है। जैसे—

१. दक्षिणी, २. मध्य, ३. पश्चिमी, ४. उत्तरी, ५. उत्तर-पूर्वी, ६. उत्तर-पूर्वीसीमा, ७. पूर्वी, ८. दक्षिण-पूर्वी, ९. मध्य-दक्षिणी। इन सबके ऊपर रेलवे बोर्ड है। जिसका कार्यालय नई दिल्ली में है। भारतीय रेलें प्रतिवर्ष लगभग ६० लाख सवारियां व ५-६ लाख टन माल ढोती हैं। हर रोज लगभग १०,००० रेलगाड़ियाँ, ६,००० रेलवे स्टेशनों से गुजरती है। (भारतीय रेलों की पूंजी ४००० करोड़ रुपये की है और इनमें १४ लाख से ज्यादा स्त्री-पुरुष काम करते हैं।)

(ख) रेलवे के पास इस वक्त (१९६७ तक) ६,४२५ (भाप) ५६९ (डीजल) और ४०२ (बिजली) ब्राडगेज पर चलने वाले इंजन थे।

सवारी-गाड़ियों के डिब्बों की संख्या २४,२३१ और मालगाड़ी के डिब्बों की संख्या. २,६१,६३४ ब्राडगेज और ६१,७२२ मीटरगेज थी।

(ग) यदि सब रेलों के यात्रीगाड़ी के डिब्बों को एक साथ जोड़ा जाय तो १२५ मील लम्बी रेल तैयार हो जायगी।

(घ) १६ अप्रैल सन् १८५३ को पहली भारतीय रेलवे बंबई-थाना के बीच १३ मील चली।

(ङ) सन् १६०५ के मार्च मास में लार्ड कर्जन के समय रेलवे बोर्ड की स्थापना हुई।

(च) सन् १६२५ को बिजली की पहली रेलगाड़ी विक्टोरिया टर्मिनस बंबई और कुर्ला के बीच चली।

(घ) चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स (रेलवे इंजन बनाने के कारखाने) का विधिवत् उद्घाटन सन् १६५१ जनवरी २६ को किया गया।

(ज) पिछले दस वर्षों में १,७०० नई गाड़ियाँ चलाई गई।

(झ) १६६६-६७ में प्रतिदिन रेलवे की कुल आय २,१०,००,००० रुपये हुई।

—**भारतज्ञानकोष**, १६७०-७१ **तथा ७१-७२**

३ **मोटर-गाड़ियाँ**—भारत में १६४७ में २,११,६४६ मोटर-गाड़ियाँ थीं। १६५० में इनकी संख्या २,६४,७२६ थी और १६६१ में ६,७५,२२१ हो गई। मार्च १६६४ में १,५०,६६१ मोटर साइकिलें व मोटररिक्शा, ३१,५३८ जीप, निजी कारें, टैक्सियां, ३,७५,३३४ मोटर कैब, ६५,०६२ सार्वजनिक मोटर-गाड़िया, मालवाही ट्रक २,१६,६३३ और ५०,१४७ विविधि प्रकार की गाड़ियां थीं। १६६६ के अन्त में लगभग दस लाख मोटर गाड़ियों का अनुमान था।

—**भारत ज्ञानकोष १६७१-७२**

डाक व तार

१ प्राचीन भारत में शासक लोग अपने पत्र-व्यवहार के लिए निजी व्यवस्थाएँ रखते थे। भारत में इस प्रकार की सबसे पहली व्यवस्था १४वीं सदी में मुहम्मद-बिन-तुगलक ने बनाई। मुगलों के समय हरकारे की सुन्दर व्यवस्था हुई। अकबर ने मुख्य-मुख्य सड़कों पर दस-दस मील की दूरी पर हरकारों और ऊंटों या घोड़ों की व्यवस्था की। १८वीं सदी की अस्थिरता में यह व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। क्लाइब ने सन् १७६६ में कपनी की डाक के लिए नियमित व्यवस्था की। १८३७ में स्थानीय सरकारों के मातहत सार्वजनिक डाक की व्यवस्था की गई तथा सभी निजी व्यवस्थाएँ मिटा दी गईं। १८५४ में इंडियन इम्पीरियल पोस्ट की स्थापना हुई। सर्वप्रथम जो डाकटिकट जारी किए गए वे तीन तरह के थे : सफेद कागज पर बिना रग का एमवास डिजाइन, सफेद कागज पर नीले रंग का एमबास डिजाइन और सिन्दूरी रंग पर एमबास डिजाइन। डाक-टिकट सबसे पहले १८२५ में सिंध में जारी किए गए थे। वर्तमान डाक-प्रणाली की व्यवस्था १८९८ के एक्ट ६ के अनुसार है।

२ **तार**—परीक्षणात्मक तार लगाने का सर्वप्रथम सम्मान भारत में इण्डियन मेडिकल सर्विस के एक डाक्टर को है, जिसने १८३९ में कलकत्ता से डायमंड हारबर तक २१ मील लंबा तार लगाया था। यह तार ७००० फुट नदी पार करके जाता था। उस समय दुनियां में यह सबसे बड़ी तार-लाइन थी। सरकारी तार इन दोनों स्थानों—कलकत्ता-डायमंड हारवर के बीच १८५१ में लगा। नवम्बर, १८५३ में दूरवर्ती स्थानों में कलकत्ता से आगरा तक तार लगाने की व्यवस्था की गई। पहला संदेश २४ मार्च, १८५४ में भेजा गया। बाद में इस लाइन को बंबई और पेशावर तक बढ़ाया गया। मार्च, १८६७ में १४,९०० मील तक तार लगा।

—भारतज्ञानकोष १९७१-७२

२६ संख्या

१ **तीन की संख्या में विशेषता**—तीन की संख्या में यह विशेषता है कि उसे गुणने पर वह दो बार तो बढ़ती है और तीसरी बार मूल रूप में आ जाती है। जैसे—

३ × २ = ६

३ × ३ = ९

३ × ४ = १२—१ + २ = ३

३ × ५ = १५—१ + ५ = ६

३ × ६ = १८—१ + ८ = ९

३ × ७ = २१—२ + १ = ३

२ **तीन-तीन चीजें**—

- जर, जोरू ने जमीन—ए त्रण कजियाना घर !
- उत्पत्ति, स्थिति ने प्रलय—ए त्रण जगत नां खेल !
- फरतुं, चरतुं नेतरतुं—ए त्रण जातनां वाहण !
- धार, अणी अने धुवाको—ए त्रण जातनां हथियार !
- जोशी, डोशी ने वटेमार्गु—ए त्रणे फोगटिया !
- वेद, वेश्या ने वकील—ए त्रणे रोकड़िया !
- भीख, भारो ने भणतर—ए त्रण सवार मां सारा।

—**गुजराती कहावतें**

३ तीन चीजें तीन चीजों के बिना नहीं रह सकती—दौलत बिना सौदागरी के, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशत के।

—गुलिस्ताँ

४ **तीन मुक्ति के मार्ग—**

हरड़-बेहड़े-आंवला, त्रिफला हरै त्रिदोष।
ज्ञान-दर्श-चारित्र त्रय, देत मनुज को मोक्ष ॥१॥
मेदा-सक्कर-घीय से, सीरो बणै सटाक।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, मिटे कर्म की छाक ॥२॥
तेल-बत्ती-दीपक मिलत, अन्धकार को नास।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, मिले मोक्ष को वास ॥३॥
दाम-ठाम-हिय तीन तें, बधै विणज-व्यापार।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तिहुं, करदे भवजल पार ॥४॥
जल-वायु-अरु अग्नि त्रय करे यन्त्र-विस्तार।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तें, छूटे आत्मविकार ॥५॥
नीम-गिलोय-चिरायता, ज्वरनाशक ये तीन।
ज्ञान-दर्श-चारित्र तिम, राग-द्वेष-क्षयलीन ॥६॥
मसि-कागज-अरु लेखिनी, लिखे जु मन का भाव।
ज्ञान-दर्श,चारित्र तें, समझे आत्म-स्वभाव ॥७॥
वर्षा-धरती-बीज तें, होवे शाख सवाय।
ज्ञान दर्श।चारित्र तें, क्रोड़ां अघ कट जाय ॥८॥

—मरुधर केसरी—ग्रंथावली पृष्ठ ५८६

५ **तीन अमूल्य रत्न**—देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रंथ, और धर्म केवलि-प्ररूपित।

६ **नौ की संख्या**—नौ की संख्या अक्षय है। इसका चाहे जितनी ही संख्या से गुणा कर लिया जाय, नौ के नौ ही रहेंगे। जैसे—

९ × २ = १८ — १ + ८ = ९

९ × ३ = २७ — २ + ७ = ९

९ × ४ = ३६ — ३ + ६ = ९

९ × ५ = ४५ — ४ + ५ = ९

९ × ६ = ५४ — ५ + ४ = ९

९ × ७ = ६३ — ६ + ३ = ९

९ × ८ = ७२ — ७ + २ = ९

९ × ९ = ८१ — ८ + १ = ९

३० प्रकीर्णक

१ **प्रकाश**—सूर्य का प्रकाश सबसे पहला है, सूर्य के अभाव में चन्द्रमा प्रकाश करता है, उसके अभाव में ग्रह, नक्षत्र, तारा एव दीप आदि प्रकाश देते हैं। इन सब के अभाव में शब्द, गन्ध एवं स्पर्श आदि भी प्रकाश करते हैं। जैसे घोर अन्धकार में शब्द के सहारे इच्छित स्थान मिल सकता है, गन्ध के सहारे व्यक्ति फूलों के पास पहुंच सकता है एवं स्पर्श के सहारे पीठ पर लगी हुई वस्तु का निश्चय कर सकता है।

—व्याख्यान के मसालों से

२ **उपचार**—अत्यन्त भिन्न शब्दों में भी सदृशता की विशेषता के कारण उनकी भिन्नता की उपेक्षा करना यानि किसी अपेक्षा से उन्हें एक मानना उपचार कहलाता हैं।

—मोक्षप्रकाश, २२५ पृष्ठ टिप्पण

३ **भारतीय जनगणना**—मोहन-जोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से पता चला है कि भारत में जनगणना का इतिहास ईसा के जन्म से तीसरी-चौथी सहस्राब्दि पूर्व का है लेकिन नियमित जनगणना १८७२ से ही शुरू हुई है।

—भारतीय जनगणना एक अवलोकन
निबंध-लेखक एस० सी० श्री बास्तव

४ **बहानाबाजी**—

(क) ए बैड वर्क मैन क्वारल्स विथ हिज टूल्स।

—अंग्रेजी कहावत

नांच न जाने आंगन टेढ़ा।

(ख) नाचवुं नहिं त्यारे आंगण बांकु, लखनु नहिं त्यारे लेखण नो बांक ।

—पंजाबी कहाव

५ एक के पीछे एक—

० घोड़ी पाछल बछेरु, भैंस पाछल पाड़ी ने, सोय पाछल दोरो ।

० खिसकोली हाले त्यारे पूंछड़ी पण हाले, मियां बोलै त्यारे दाढ़ी पण हाले । बाबो नाच्यो एटले बावली पण नाची ।

—गुजराती कहावतें

६ (क) सम हैव दी हैप, सम स्ट्रीक इन दी गैप ।

—अंग्रेजी कहावत

किसी का घर जले और कोई तापे ।

(ख) मियांजी री दाढ़ी बले र छोरा तापण नैं जावे ।

—राजस्थानी कहावत

७ (क) तुरकणीरै कात्योड़ा में ही फिदड़का । (ऊन का गुच्छा)

(ख) गाल-थापरो कितोक आंतरो ।

(ग) आई ही छाछनैं र बण बैठी घररी धणियाणी ।

(घ) कदे ई सुपनो साचो करणो क नहीं ।

(ङ) पागडी गई आगड़ी सिर सिलामत चाहीजै ।

(च) ना चैत चढ़ै र ना बैसाख उतरै !

६ ना सावण सूको ना भादवै हर्यो ।

(ज) लूल्ही भाड़ू दै जद एक टांग पकड़णै वालो चाहीजै ।

(झ) आंधा नैं नूंतै तो दो जिमावणा पड़ै ।

—राजस्थानी कहावतें

८ जब ओढ़ली लोई, क्या करेगा कोई ।

—हिन्दी कहावत

९ सर्वेपदा हस्तिपदं प्रविष्ठाः ।

—संस्कृत कहावत

० हाथी रा पग में सगलां रा पग आ गया।

—राजस्थानी कहावत

१० क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः।

—शिशुपालवध ४।१७

क्षण-क्षण में किसी वस्तु को जो नवीनता प्राप्त होती है, वही उसकी रमणीयता का स्वरूप है।

११ बीड़ी सीड़ी सीर सड़ापा, थोड़ा खाले रहे कलापा।

० अड भैण ! अड़नी, सुखाले रहे हडनी।

—पंजाबी कहावतें

(अलग रहना पसंद करने वाली बहनों का यह चिंतन है।)

१२ माचै मोटी खोड़, प्रथम तो पायो नहीं।

—राजस्थानी कहावत

१३ चोर पिछाणै चानणो, मोर पिछाणे मेह,
पांव पिछाणै पगरखी, नैण पिछाणै नेह।

० काणें काणाणे आवियो, जाचवा काणो,
काणे काणो मांगियौ, दे काणा ! काणो।

—राजस्थानी दोहे

[एक काना चारण काणाणे गांव में काने ठाकुर से काना घोड़ा लेने के लिये आया और मांगा।]

१४ **रामशब्द की महिमा—**

रा उच्चरतां मुख थकी, पाप पलाई जाय।
मति फिर आवै तेह थी, मनो किंवाड़ी थाय॥

राम शब्द में दो अक्षर हैं—रा और मा। 'रा' का उच्चारण किया जाता है, तब मुँह खुल जाता है एवं हृदय का पाप बाहर निकल जाता है। ज्योंही पाप वापस आने लगता है 'म' बोल दिया जाता है एवं मुँह बन्द हो जाता है। अतः पाप बाहर का बाहर ही रह जाता है।

—श्री कालुगणी से श्रुत

१५ **राक्षस-वानर आदि**—रामायण में आये हुए राक्षस-वानर और रीछ मनुष्य ही थे। राक्षसी आदि विद्या या अन्य कारणों से उनके राक्षस आदि नाम पड़े हों, ऐसी संभावना है। जैसे आज भी **जापानीज यलो मंकी**—(जापानी पीले बन्दर), **रूसियन वेर**—(रूसियन भालू), **ब्रिटिश लाइन** (ब्रिटिश सिंह) और **चाइनीज क्रोकोडायूल** (चीनी मगरमच्छ) कहे जाते हैं।

—अध्ययन के आधार पर

१६ **माला के मन के—**

जाति	मन के	जाति	मन के
जैन	१०८	यहूदी	९९ व ३२
बौद्ध	१०८	ईसाई	९९
जापानी बौद्ध	११२	पारसी	१०
हिन्दू	१०८	रोमन साधु	१००
मुसलमान	१०१ या ९९	रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय	१५०

—रविवारीय विश्वमित्र मई १३, १९७३

(माला के मनकों का रहस्य तत्तद्धर्म ग्रंथों से समझना चाहिये।)

३१ रामायण में प्रयुक्त किए जाने वाले भाषा-श्लोक

१ स्वयंवर के समय सीता की उक्ति—

मो मन में निशचे सजनी ! यह, तात हुतैं प्रण मेरो महा है।
रीत पतिब्रत राख चुकी, मुख भाख चुकी अपना दुलहा है ॥
सुन्दर स्वाम सुजान शिरोमणि, मो मन में रमि राम रहा है ।
चाप निगोड़ो अभी जर जाओ, चढ़े तो चढ़ो न चढ़े तो कहा है ॥

२ सूपर्णखा द्वारा सीता की प्रशंसा—

इन्द्र की परी है केधों घरी हैं विधाता आप,
चन्द्रमा तें चीर काढ़ी सीर अमी पान की।
कंचन वरन तनु रंच न दिखात खोड़,
सावन को तीज मानूं बीज आसमान की।
रूप को बखान भ्रात ! बात तें कह्यो न जात,
करत प्रशंसा मेधा भ्रमत सुरान की।
स्वरग पाताल-लोक मर्त्यलोक ढूंढ़ देख्यो,
कामिनी न दूजी ऐसी जैसी भ्रात जानकी ॥

३ राम के सन्मुख हनुमान की उक्ति—

कहो ! उड़ूं आकाश, इन्द्र-इन्द्रासन पाड़ूं ।
कहो ! पैसूं पाताल, शेष-सिर भार उतारूं ॥
कहो ! बांह बल करी, देव-दानव सब दट्टूं ।
कहो ! खड्ग ले हाथ, शीश दस रावण कट्टूं ॥
तुम प्रसाद रघुनाथ जी ! मैं बन्दर इतनी करूं ।
उठाय लंक रावण सहित, दक्षिण की उत्तर धरूं ॥

४ लंका में हनुमान—

कूदत फलंग कला जंग पेच-पेचनपै,
मलफ मलग वीर प्रबल निधान को।
कहे **घनश्याम** रामदूत, अंजनी को पूत,
फैलत-फैलात-फेर फांदत उड़ान को।
डाक गए छज्जे दरवज्जे, वो दिवाल कोट,
बागन मरोड़-तोड़ करत तोफान को।
आए बली वंका-दसकंध, खाय शंका जब,
लंका पर आय लग्यो डंको हनुमान को!

५ रावण को मन्दोदरी की फिटकार—

तोर डारे लंका के कंवाड़ मार लातन से,
खबर न पड़ी है अजों जबर जवान की।
देखत कहा हो अब हिम्मत दिखाओ क्यों न,
किम्मत कराओ क्यों न, बीसहु भुजान की।
वैर-वैर कहती यों मंदोदरी रावण से,
अब ना बचोगे फेट लगी हनुमान की।
जानकी मरोर कंत लायो नाथ जानकी या,
जानकी न लाओ है निशानी घर जानकी ॥

६ राम-हनुमान का संवाद—

एहो हनु ! तुम जानत हो, कहो ! जानकी है कितकी छित मांही ?
है प्रभु ! लंक कलंक विना, उस रावण के तरु की परछांही।
जीवित है ? कहिबेहि कु ं राम सों, क्यों न मुई हमसे बिछुराई।
प्राण बसे पद - पंकज में, जम आवत है परिपावत नांहीं।

७ लंका घिर जाने पर मंदोदरी रावण से कह रही है—

त्रिकुट धरानी ऐसी कंथ को कहानी कहा,
सीय को हरानी नीकी कैसे पहचानी तैं।
वाटिका वसानी नीके मुख ना दिखानी,
तोहि जीव घबरानी मोहि लागी अनमानी तैं।

लंक ही घिरानी सैन्य अमित परानी खेत,
होय रे सचेत ! अभिमानी ! नहीं जानी तैं।
भने **लिखमेश** कवि, रानी विलखानी हाय,
रे-रे शठ ! नार क्यों विरानी घर आनी तैं ?

८ लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम का कथन—

मात को मोह न द्रोह दुमात को,
तात को सोह न मृत्यु भए को।
राज का लोह न प्राण को थोह न,
बंधु-विछोह न औधि रहे को।
ना कोई जीव मैं आवत **केशव** !
सोच न लंक में सीत रहे को।
ता रनभूमि में राम कहे मोहि,
सोच विभीषन भूप कहे को ॥

० हनुमान का उत्तर—

निज मात से जाय मिलाय देऊं, भ्रत-राज गमाय रसातल को ।
जाय दुनीचल लाय संजीवनी, देऊं उठाय महाबल को ॥
दसकंध कुं मार विभीषण-राजतिलक्क जु देऊं महीथल को ।
दशरत्थ को प्रान-विछोह भयो, सौ तो दाव नहीं अपने बल को ।

९ मरते समय रावण का पश्चात्ताप—

धरणी धरब्रह्मंड, शेष को भार उतारूं ।
चंद करूं निकलंक, जाय जमपुर को मारूं ॥
पैसूं जाय पाताल, तिहा बलि-बंधन तोडूं ।
अमृतकुंड उठाय, लाय सागर में वोरूं ।
कियो होत करतार कौ, मनको कियो न होइयो ।
दसकंध प्राण छूटत कहै, आरंभ्यो यूं ही रह्यो ॥

—भाषाश्लोक सागर

परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग ८ और ९ में
प्रयुक्त ग्रंथ एवं व्यक्ति नाम सूची

ग्रन्थ सूची

१ अंगुत्तरनिकाय
२ अणुव्रत (मासिक)
३ अत्रिसंहिता
४ अत्रिस्मृति
५ अथर्ववेद
६ अध्यात्म रामायण
७ अनुयोगद्वारसूत्र
८ अभिज्ञान शाकुन्तल
० (शाकुंतल)
६ अभिधानचिन्तामणी
० (हैमकोष)
१० अमर उजाला (दैनिक)
११ अर्चना और आलोक
१२ आंकलैंड (दैनिक)
१३ आचारांग सूत्र
१४ आत्मविकास
१५ आत्मानुशासन
१६ आपस्तम्ब-धर्मसूत्र
१७ आवश्यकसूत्र
१८ इतिहासतिमिरनाशक
१६ इतिहाससमुच्चय
२० इवन्वतूता लिखित—
० भारतयात्रा विषयक पुस्तक
२१ उत्तराध्ययन टीका
२२ उत्तराध्ययन निर्युक्ति
२३ उत्तराध्ययनसूत्र
२४ उपदेश सुमनमाला
२५ उर्दू शेर
२६ ऋग्वेद
२७ ऋषिभाषित
२८ ऐतरेयब्राह्मण
२६ ओघनिर्युक्ति
३० औपपातिकसूत्र
३१ कथासरित्-सागर
३२ कमलनाहटा का संग्रह
३३ कल्याण-गोअंक
३४ कल्याण-सत्कथाअंक
३५ कविताकौमुदी
३६ कहावतें—
(क) अंग्रेजी कहावत
(ख) इटालियन ,,
(ग) ईरानी ,,
(घ) उर्दू ,,
(ङ) गुजराती कहावत
(च) चीनी ,,
(छ) जर्मनी ,,
(ज) जापानी
(झ) पंजाबी ,,
(ञ) पारसी ,,
(ट) बंगला ,,
(ठ) मराठी ,,
(ड) राजस्थानी ,,
(ढ) संस्कृत ,,
(ण) हिन्दी ,,
३७ किसनबावनी
३८ कुरान शरीफ

३९ कुमारसंभव
४० कौटलीय-अर्थशास्त्र
४१ गरुड़पुराण
४२ गीता (श्रीमद्भगवद्गीता)
४३ गीताञ्जलि
४४ गुजराती पद्य
४५ गुलिस्तां
४६ गोपथब्राह्मण
४७ गोतमकुलक
४८ चन्दचरित्र (संस्कृत)
४९ चन्द राजानो रास
५० चरकसंहिता
५१ चाणक्यनीति
५२ चाणक्यसूत्र
५३ चीनी सुभाषित
५४ चेतना (मासिक)
५५ छान्दोग्य-उपनिषद्
५६ जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्र
५७ जतीरासा
५८ जातक
५९ जापानी लोककथा
६० जीवनलक्ष्य
६१ जैनत्व की झांकी
६२ जैनभारती (मासिक)
६३ जैनसिद्धान्त बोलसंग्रह
६४ ज्ञानसार
६५ डेली मिरर (दैनिक)
६६ तत्त्वामृत
६७ ताओ उपनिषद (ताओ तेह किंग)
६८ तालमुद
६९ तैत्तिरीय-आरण्यक
७० तैत्तिरीय-उपनिषद्
७१ तैत्तिरीय-ब्राह्मण
७२ त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र
७३ दक्षस्मृति
७४ दशकुमारचरित्र
७५ दशवैकालिकसूत्र
७६ दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र
७७ दोहा-द्विशती
७८ दोहा-संदोह
७९ दोहे
क—राजस्थानी दोहे
ख—हिन्दी दोहे
८० धम्मपद
८१ धर्म के नाम पर
८२ धर्मयुग
८३ धर्मरत्नप्रकरण
८४ धर्मसंग्रह
८५ नवभारतटाइम्स (दैनिक)
८६ नयायुग-नयादर्शन
८७ नवनीत (मासिक)
८८ निरुक्त
८९ निशीथचूर्णि
९० नीतिवाक्यामृत
९१ नैतिकपाठमाला
९२ नैतिकविज्ञान

९३ नैषध (नैषधीयचरित्र)
९४ न्यायशास्त्र
९५ पंचतन्त्र
९६ पंचास्तिकाय
९७ पंजाबी कविता
९८ पंजाबी पद्य
९९ पद्मपुराण
१०० पराशरसंहिता
१०१ पातंजलयोगदर्शन
१०२ पुरानी बाइबिल (नीतिवचन)
१०३ प्रज्ञापना सूत्र
१०४ प्रशमरति
१०५ प्राचीन चरित्रकोष
१०६ प्राचीन-संग्रह
१०७ बाइबिल
१०८ बालभारती
१०९ बृहत्कल्प-भाष्य
११० बोधिचर्यावतार
१११ ब्रह्मवैवर्तपुराण
११२ ब्रह्मानन्दगीता
११३ भगवतीसूत्र
११४ भर्तृहरि-वैराग्यशतक
११५ भर्तृहरि-नीतिशतक
११६ भर्तृहरि-श्रृंगारशतक
११७ भविष्यपुराण
११८ भारतज्ञानकोष
११९ भारतसरकार द्वारा प्रकाशित-पत्रिका
१२० भाषाश्लोकसागर
१२१ भिक्षुन्यायकर्णिका
१२२ मनुस्मृति
१२३ महानिशीथसूत्र
१२४ महापुराण
१२५ महाभारत
१२६ मानो न मानो !
१२७ मार्कण्डेयपुराण
१२८ मुण्डकोपनिषद्
१२९ मुतालुल सादीन
१३० मुद्राराक्षस-नाटक
१३१ मृच्छकटिक
१३२ मेघदूत
१३३ मोरली दी आरमामेंट
१३४ मौनवाणी
१३५ यजुर्वेद
१३६ यज्ञरहस्य
१३७ याज्ञवल्क्यस्मृति
१३८ योगवाशिष्ठ
१३९ योगशास्त्र
१४० योगशिखोपनिषद्
१४१ योगसूत्र
१४२ रघुवंश
१४३ रश्मिमाला
१४४ रामचरितमानस
१४५ रामजशरसायण
१४६ राष्ट्रदूत (दैनिक)
१४७ रूपक

(क) गुजराती रूपक
(ख) राजस्थानी रूपक
१४८ लेटिन सूत्र
१४९ लोकोक्ति
० (क) चैक-लोकोक्ति
० (ख) स्पेनिश-लोकोक्ति
१५० वाल्मीकिरामायण
१५१ विक्रमचरित्र
१५२ विक्रमोर्वशीयनाटिका
१५३ विज्ञान के नये आविष्कार
१५४ विदुरनीति
१५५ विपाकसूत्र
१५६ विवेकचूड़ामणि
१५७ विवेकविलास
१५८ विशुद्धिमग्गो
१५९ विश्वकोष
१६० विश्वदर्पण
१६१ विश्वामित्र (दैनिक)
१६२ विश्वामित्रस्मृति
१६३ विष्णुपुराण
१६४ वीर अर्जुन (दैनिक)
१६५ वेदान्त (वेदान्तदर्शन)
१६६ वैदिकविचारविमर्शन
१६७ शंकर-प्रश्नोत्तरी
१६८ शकुनावली
१६९ शतपथ ब्राह्मण
१७० शाँतसुधारस
१७१ शास्त्रवार्तासमुच्चय
१७२ शिवपुराण
१७३ शिशुपालवध
१७४ शुक्रनीति
१७५ शुक्लयजुर्वेद
१७६ श्राद्धपितृमीमाँसा
१७७ श्राद्धविधि
१७८ श्रावकधर्म प्रकाश
१७९ श्रीमद्भागवत (भागवत)
१८० श्रीविलक्षण अवधूत
० स्वरोदय
१८१ श्रीविश्वविजयपंचांग
१८२ श्रुति
१८३ श्वेताश्वतरोपनिषद्
१८४ संक्षिप्त जैन महाभारत
१८५ संजीवनी बूंटी
१८६ समर्थाचे सामर्थ्य
१८७ समयसार
१८८ सरलमनोविज्ञान
१८९ सरिता (पाक्षिक)
१९० सांख्यकारिका
१९१ सांख्यदर्शन
१९२ साकेत
१९३ सामान्य ज्ञान एवं व्यक्ति परिचय
१९४ सुभाषितरत्नखंडमंजूषा
१९५ सुभाषितरत्नभाण्डागार
१९६ सुभाषितसंग्रह
१९७ सूत्रकृतांग सूत्र
१९८ सोरठा-संग्रह

१९९ सेक्षुवल लाइफ डरनिङ
० दि वर्ल्डवार
२०० स्कन्दपुराण
२०१ स्थानांग-टीका
२०२ स्थानांग-सूत्र
२०३ स्याद्वादमंजरी
२०४ स्वप्नवासवदत्ता
२०५ हजरत बुखारी और मुस्लिम
२०६ हरिजनसेवक
२०७ हरिभद्रीयाष्टक-टीका
२०८ हितोपदेश
२०९ हिन्दीमिलाप (दैनिक)
२१० हिन्दुस्तान (दैनिक)
२११ हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)
२१२ होडाचक्र

व्यक्ति नाम सूची

१ अगस्त्य मुनि
२ अरविन्दघोष
३ अरस्तु (जरथुस्त्र)
४ अबूर्थ नॉट (जान अबूर्थ नॉट)
५ अल्काट (एल्काट)
६ आदम स्मिथ
७ आइंस्टिन
८ आस्टिन मैले
९ ओलवर गोल्डस्मिथ
० (गोल्डस्मिथ)
१० ओविद
११ इ० एच० चैंपिन
१२ इन्दरचन्द नवलखा
१३ इपिकटेट्स
१४ इमर्सन
१५ इशा अल्लाखाँ
१६ ईसा
१७ उईदा
१८ उद्यमवादी
१९ उमास्वाति
२० ऊ थांट
२१ एंजिल्स
२२ एडिसन
२३ एनन
२४ एफ. एल. कीमैन्स
२५ ए. मिली
२६ एरियन यूनानी
२७ कन्फ्यूसियस (कांगफ्यूत्सी)
२८ कबीर
२९ कर्मवादी
३० कवि उदयराज
३१ कवि ऊमरदान
३२ कवि ऋद्धुलाल
३३ कवि कालीदास
३४ कवि कृष्णदास
३५ कवि केशव
३६ कवि क्षेमेन्द्र
३७ कवि गिरधर
३८ कवि जाल
३९ कवि जुगतदान
४० कवि दीप
४१ कवि देवीदास
४२ कवि ब्रह्म
४३ कवि भड्डली
४४ कवि भूधरदास
४५ कवि मान
४६ कवि मोहन
४७ कवि रणजीत
४८ कवि रतन
४९ कविराज हरनामदास
५० कवि राम
५१ कवि वृंद

५२ कवि वेताल
५३ कवि संग्रामदास
५४ कवि सहदेव
५५ कवि सुन्दरदास
५६ कवि सूर्यमल
५७ कवि हंस
५८ कारनट
५९ कार्डिनल
६० कार्लाइल
६१ कालवादी
६२ किंग्सले
६३ कूपर
६४ कैलाश जैन
६५ कोल्टन
६६ खलील जिब्रान
६७ गंगादानजी चारण
६८ गांधी
६९ गिर्लपिल
७० गुरु वशिष्ठ
७१ गेटे
७२ ग्लेडस्टन
७३ चाणक्य (कौटिल्य)
७४ चिलो
७५ चीकागो के डा. सेन
७६ चेम्फर्ड
७७ चेस्टर फिल्ड
७८ जयाचार्य
७९ जवाहरलाल नेहरू
८० जहोर्रस्किन (रस्किन)
८१ जान एस. सी. एबट
८२ जानब्राईट
८३ जानलोक
८४ जॉन स्टुआर्ट मिल
८५ जार्ज इलियट
८६ जार्ज हावर्ट
८७ जे. बी. हालैंड
८८ जे. रान्ड
८९ टी० एल० वास्वानी
९० टेलीटस
९१ टैगोर (रवीन्द्रनाथ टैगोर)
९२ डान्टन
९३ डॉ० एल्फ्रेड
९४ डॉ० करेले
९५ डॉ० जे. एच. केलोंग
९६ डा० डौग्लास मेकडोनल्ड
९७ डा० फोर्ड एम. डी.
९८ डा० रेन्टोल
९९ डा० लुकास शेम्पोनीअर
१०० डा० विलियमलेम्ब
१०१ डा० विलियम बोस
१०२ डा० बोन नुरडन
१०३ डा० सर जेम्स सियर—एम० डी० एफ० आर० ओ० पी०
१०४ डा० स्पैंस
१०५ डिजराइली
१०६ डैनियल विक्टर
१०७ तिरुवल्लुवर
१०८ तोमर
१०९ थामसपेन
११० थामसफूलर

१११ थोरो
११२ दवार
११३ दादा धर्माधिकारी
११४ देवीरानी विदुला
११५ धनमुनि
११६ नलिन
११७ नानक (गुरुनानक)
११८ नियतिवादी
११९ नेपोलियन बोनापार्ट
१२० पंत (सुमित्रानन्दनपंत)
१२१ पास्कल
१२२ पीथागोरस
१२३ पैरेक्लीज
१२४ प्रेमचंद
१२५ प्रो० किथ
१२६ प्लूटार्क
१२७ प्लेटन
१२८ फिलिप्स ब्रुक्स
१२९ फिल्डिंग
१३० फेबर
१३१ फ्रैंच सेना के सर्जन जनरल
१३२ फैंकलिन
१३३ फोय
१३४ बर्क
१३५ बाउफ्लर्स
१३६ बीडेल
१३७ बुडरो-विल्सन (विल्सन)
१३८ बुल्लेशाह
१३९ बुल्वर लिटन
० (लिटन)
१४० वेकन
१४१ बेली
१४२ बैण्डोल फिलिप्स
१४३ बो० बी०
१४४ भगवान् व्यास (वेदव्यास)
१४५ भावदेवसूरि
१४६ महर्षि मरीचि
१४७ महात्मा तिलक
१४८ महात्मा बुद्ध
१४९ माण्टेस्की
१५० मि० आर्थर एण्ड बुड
१५१ मि० जे० एच० ओलीवर
१५२ मि० थोमस जे० रोगन
१५३ मिनेन्दर
१५४ मिल्टन
१५५ मुनि बच्छराज
१५६ मैथिलीशरण गुप्त (राष्ट्रकवि)
१५७ मैनशियस
१५८ रामकृष्ण परमहंस
० (रामकृष्ण)
१५९ रामतीर्थ
१६० रामरतन डागा
१६१ रो० बी०
१६२ रोमसिन
१६३ रोमन कवि होमर
० (होमर)
१६४ रोशफूको
१६५ लाओत्से
१६६ लांग फेलो
१६७ लाफान्टेन

१६८ लाम्बेयर
१६९ लार्ड मेकाले
१७० लिंकन
१७१ लेनिन
१७२ वरले
१७३ वल्लभदेव
१७४ वायरटन
१७५ वायरन
१७६ विक्टर ह्यूगो
१७७ विनोबा भावे
१७८ विलियम जेम्स
१७९ विलियमपिट
१८० विवेकानन्द
१८१ विशनदयाल गोयल
१८२ विशप कम्बरलैंड
१८३ वोरूला
१८४ वोस्ता
१८५ व्यास
१८६ शिकागो के शरीरशास्त्री
१८७ शिलर
१८८ शीलनाथ
१८९ शुक्राचार्य
१९० शुभचन्द्राचार्य
१९१ शेक्सपीयर
१९२ श्री कालुगणी
१९३ संत आगस्तिन
१९४ सर टामस ए क्विनास
१९५ सर टी० लोडर ब्रण्टन
१९६ सरदार पटेल
१९७ सी० एन० पार्कहिटर्स
१९८ सुकरात
१९९ सूरदास
२०० सेनेका
२०१ स्पिनोजा
२०२ स्वेट मार्टन
२०३ हातिम-हासम
२०४ हाली ब्रटेन
२०५ हिटलर
२०६ हेलन केलर
२०७ हैजलिट
२०८ हैडमास्टर रामचन्द्र
२०९ हैनरी एडम
२१० हैरी इमर्सन फासडिस
२११ हैली बर्टन

वक्तृत्व कला के बीज

कृति और कृतिकार

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में आज प्रगति-शिखर पर पहुँच रहा है। मुनि श्री धनराज जी 'प्रथम' (श्री धनमुनि) इस धर्म-संघ के बहुश्रुत विद्वान, सरस कवि, लेखक कुशल संग्रहकार, मधुर-प्रवक्ता और सुयोग्य शिक्षक संत हैं। आप संघ के सर्वप्रथम शतावधानी हैं। वि० सं० २००४ माघ कृष्णा १४ रविवार को बम्बई में सर्वप्रथम आपने शतावधान का प्रयोग कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी तथा उर्दू आदि भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्रस्तुत कृति वक्तृत्वकला के बीज आपकी एक श्रमसाध्य अद्वितीय कृति है। वक्तृत्व एवं लेखन के योग्य इतना उपयोगी विशाल संग्रह सम्भवतः किसी भी भाषा [illegible] नहीं हुआ है। [illegible] कोश [illegible] याणा) [illegible] गढ़ (राज०)

राज जी 'प्रथम' (श्री धनमुनि) इस
संघ के बहुश्रुत विद्वान, सरस कवि,
कुशल संग्रहकार, मधुर-प्रवक्ता
योग्य शिक्षक संत हैं। आप संघ
प्रथम शतावधानी हैं। वि० सं० २००४
कृष्णा १४ रविवार को बम्बई में
प्रथम आपने शतावधान का प्रयो
लोगों को आश्चर्यचकित कर
संस्कृत, हिन्दी

आवरण पृष्ठ के मुद्रक : शैल प्रिन्टर्स, आगरा-२